

॥ ॐ॥ ॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्योनमः॥ वडोदरामां भरायेळी त्रीजी श्री जैन (श्वेतांबर) कॉन्फरन्सनो रिपोर्ट.

^{अने} [वर्तमानपत्रोना अभिप्रायो

< तथा

रिसेप्झन कमिटीना रिपोर्ट सहित.]



तैयार करनार

मगनलाल चुनीलाल वैद्य.

प्रसिद्ध करनार

रिसेप्झन कमिटी वडोद्रा.

वडोद्रा.

'' लक्ष्मीविलास '' एन्ड '' सयाजीविजय '' प्रेस.

संवत् १९६२. सने , पर रू

)

प्रस्तावना.

~~~~

श्री जैन श्वेताम्बरोनी कॉन्फरन्स मळवा मांडी त्यारथी तेमनामां जे अपूर्व उत्साह आव्यो छे तेनी नोंध आगल्या जमानामां रहे तेने माटे आ रिपोर्टी साधनरुप छे. एवं जाणी दरसाल कॉन्फरन्स पछी रेंकिडो रुपीआ खर्च करी रिपोर्टी छपाववानो ठराव थयो छे.

चालु वखतमां जैनोमां केवा प्रकारना हानिकारक रीवाजो हता, केवा प्रका-रनी तेमनी सामाजिक अने धार्भिक पद्धती हती अने तेनी नोंध थइ ते सुधारवा माटे कया नररत्नोए प्रयास कर्यो छे तेनो सामान्य प्रकारे उछिख आ रिपोर्टीमां जोवामां आवे छे. मुंबाइमां बीजी कॉन्फरन्सना रिपोर्टमां दरेक कमीटीना रिपोर्टी दाखल करवामां आव्या छे पण अत्रे तेम न करतां ते रिपोर्टनी टुंक हकीकत दाखल करी छे अने आम करी आ रिपोर्टनुं कद नानुं कर्युं छे पण आ प्रस्तावनामां ने जे गृहस्थोए आ कॉन्फरन्सने फतेहमंद उतारवा प्रयास कर्यों छे तेमना नामो साथे शुभ कार्योनी टुंक नोंध लेवी अनुचित छे एम आप धारशो नहीं.

सर्वथी प्रथम सेन्ट्र कमीटीनुं काम शरु थाय छे. आ कमीटीज कॉन्फरन्सन तत्व जेवी छे कारण तेणे विषयो विगेरे नक्की करवानुं अने तमाम छखाणोनुं काम करवानुं होय छे. आ कमिटीना प्रमुख धार्भिक ज्ञानमां कुशळता धरावनार शेठ गो कळमाइ दुर्छभदास तथा सेकेटरी वैद्य मगनछाछ चुनीछाछ जेओ धार्भिक ज्ञान साथे चालु जमानानुं अने इंग्रेजी माषानुं सारुं ज्ञान धरावनार हता. वास्तविक कहेवाथी आ भाइ मगनछाल्डेज सेकेटरीनुं तमाम काम कर्युं छे; मतछब प्रथमथी आ कार्यनी शरुवात करी छेवटे आ रिपोर्टने आप सङ्ग्रहस्थोनी रुवरु मूकनार तेज सुज्ञ भाइ छे. महीनाना महीना पोताना कामनी अगवड भोगवी आवी रीते धार्मिक छागणी बतावी श्रीसंघनी तेओए जे भक्ति करी छे ते खरेखर स्तुति पात्र छे अने ते बद्द छ तेमनो जेटलो उपकार मानवामां आवे तेटलो थोडो छे.

आ मि. मगनलालभाइ साथे तेमना राइट हेन्ड तरीके पादराना वकील

( २ )

रा. रा. मोहनलालभाइ हेमचंद तथा नंदलालभाइ ल्लुभाइ तेमणे जे अथाक मेहनत लीधी छे तेमनो पण उपकार मानवानो आ खरेखर योग्य प्रसंग छे. जे गृहस्थो धर्मनी लागणीथी पोतानी करणीने पवीत्र करे छे तेथी उमय लोकमा सत संपत्तिने प्राप्त करे तेमां आश्चर्य जेवुं नथी.

आ रींपोर्ट तैयार करवामां रा. रा. रुघनाथराव जाघव एमणे जैओ जैन धर्मी न छता पण दिवसोना दिवसो प्रयास कर्यो छे तेमनो उपकार मानवानुं भु-छवु ए फरजमा भुल कर्या जेवुं छे.

रा. रा. गवरिशंकर प्रभाशंकर एवोश्री पण जैन धर्मी न छतां पण कॉन्फ-रन्सना कार्यने उत्साहयी मदद आपवा माटे सेन्ट्रल कमीटीमां दाखल थया हता. अने छेवट सुधी तेमणे आ काममां मदद आपी छे ते बद्दल तेमनी उपकार मानवो योम्य छे. आ शिवाय डॉक्टर माणेकलाल अंबाराम तथा मि. चुनीलाल नरे।तम विगेरे जे गृहस्थोए आ रिपोर्टना काममां मदद करी छे तेमने धन्यवाद घटे छे.

जनरल सुपरवाइजर साहेबो अत्रेना सुप्रसिद्ध सरकारी माजी झवेरी तथा हालना झवेरी कल्याणमाइ अमीचंद अने झवेरी फकीरत्रंद घेहेलामाइ एवोए फंड भराववामां तथा पोतानो राज्य साथेनो संबंध होवाथी राज्यनी मदद मेळव-वामां जे सहाय आपी छे ते पण स्तुतिपात्र छे अने तेथी ते महापयोनो पण उपकार मानवामां आवे छे.

मंडप कमीटीना प्रमुख साहेब झवेरी बाळाभाइ छोटालाल तथा सेकेटरी गांधी फत्तेभाइ लालभाइना नामो आपना जोवामां आवशे तथा मंडपना काममां सेकेटरीए पोताना ओद्धाने अनुसरीने प्रयास लीघो छे, वळी पोतानी सा-धारण स्थीति छतां रात दिवस आ मंडपने सुशोभित करवामां अने तेनुं काम संपूर्ण करवामां भाइ मगनलाल रणछोडभाइए जे प्रयास लीघो छे ते बदल तेओ खरेखर धन्यवादने पात्र छे.

फंड कमीटीना प्रमुख रा. रा. चुनीलाल इश्वरभाइ तथा सेकेटरी गांधी गुला-बचंद काळीदास छे. तेओए पण आ काममां सारी मेहनत लीधी छे तेथी तेओने धन्यवाद घटे छे.

and a second and a second

उतारा कमीटीना प्रमुख अत्रेना सुप्रसिद्ध वैद्य बापुभाइ हीराभाइ अने से-केटरी गांधी जमनादास जगजीवनदासे जूदा जूदा ग्रहस्थो पासेथी उतारा मेळ्ववामां अने त्यां पधारनार ग्रहस्थोनां सन्मान करवामां अने व्यवस्था साचववामां पोताना झरीरने भोगे पण दीर्घ प्रयास कर्ये छे अने उतारा शिवाय बीजा कामोमां पण तेओए मदद करी छे. चालु उजागरा अने कामना बोजाथी आ कमीटीना श्रमुखनी प्रकृती बगडी अने ज्यारे तेमने फरजीआत कार्य करतां अचकाववामां आव्या त्या-रेज आ ग्रहस्थे कॉन्फरन्सने बीजे दिवसे आराम छीधो. आ प्रमुख अने तेमना सेके-टरीए पोताना कामने माटे तो ठुं पण ते शिवाय बीजा कामो पण उत्साहर्द् हमेश करता तेथी तेओए खरेखर पून्य उपार्जन कर्युं छे अने उभय लोकमां संघ-भक्तिथी पोतानो सुयश विस्तारी सत्कार पात्र थया छे.

भोजन कमीटीना प्रमुख मि. मोतीलाल लालदास मोदी तथा सेकेटरी झवेरी छो-टालाल लालचंद छे. जूदा जूदा गृहस्थोनी भोजन संबंधी व्यवस्था राखवानुं निय-मित वखत जोइती वस्तुओं पूरी पाडी संघनी भक्ति करवानुं काम आ गृहस्थोए जेवी रीते बमाव्युं छे तेवी रीते तमाम डेलीगेटेा तरफर्था तेओ स्तुतिपात्र थया इता, अने अग्रस्थाने खरा तनमनथी आ काममां मदद करनार मि. नेमचंद मलु-कचंद तथा बीत्रा गृहस्थोए खरेखरुं पून्य उपार्जन करी श्रीसंघ तरफर्थी घन्यवाद मेळव्यो छे.

बधायी सखत काम वॉलंटीयरोनुं छे, आ कमीटीमां प्रमुख रा. रा. मणीलाल बालाभाइ तथा सेकेटरी गांधी वाडीलाल लालभाइ हता. आ बन्ने भाइए पोताने। ओद्धो तथा पोताना ज्ञान तरफ नजर न करतां जाणे श्रीसंघनी भक्तिथी बने तेटलुं विरोष पुन्यउपार्जन करवानी सामाधीमांज होयनी तेम सामान्य वॉलंटीअरो साथ डेलीगेटोनी सगवड माटे खुरसीओ उचकवानुं काम पण करवामां पोताना म-नमां शंका के शरम आणी नथी. खावानो वखत मळे के न मळे तेनी तेओए ले-शमात्र पण दरकार करी नथी. पण पूर्ण खंतथी सम्यताथी अने पोताना ताबामां रहेला विनयी वॉलंटीयरो प्रत्ये विनयभावथी जे वर्तन कर्यु छे तेथी तमाम वॉलंटीयरो जाणे एक कुटुंबना होय एवी आ बंने जणाओ प्रत्ये तेमनी पूज्य लागणी दृष्टीए आवी हती. अने आ रिपोर्टमां तेमनां अने वॉलंटीयरोना कार्य सं-बंधे तेमनी उच्य भावना दर्शावतां जे शब्दो योजवामां आवे तेना करतां तेमनी वृतीओनुं शुभ कार्य चडी जाय तेम छे, माटे अन्य शब्दो के विरोषणोनो उपयोग न करतां तेओए संघभक्तिथी महत्पुन्य उपार्जन करी पोताना आत्माने निर्मळ कर्यों छे तेम उभय लोकमां ज़ुयश साथे धन्यवाद प्राप्त कर्यों छे.

रा. रा. बालामाइ साहेब महाराजा साहेबनी स्वारीमां हता, पण तेओनुं मन आ कॉन्फरन्स तरफ हमेश लागेलुं तेमना पत्रोथी तथा तेमने धर्म विषयमां जे प्रश्नो काढी लेखो लखेला तेपरथी सुविदत थयुं छे. सत कृत्य, मनथी वचनथी अने कायार्थी पण थाय छे ते सुप्रसिद्ध छे तो आवा शुभ चिंतनथी तेओश्री शु-भपुन्योपार्जन करे तेमां नवाइ नथी.

खास अनीवार्य कारणथी रिपोर्ट मोडो थयो छे ते बद्दल श्रीसंघ दरगुजर करशे.

आ रिपेर्टि छापवाना काममां श्रीसयाजीविजय अने लक्ष्मीविल्लास प्रेसना मेने-जर साहेबोए बतावेली काळजी माटे तेमनो आ स्थळे आभार मानवामां आवे छे.

आ काम उपर दर्शावेला माहाशयोना प्रयासथी नीर्विन्ने समाप्त थयुं छे अने केटलाक अत्रे जेमना नामोनो उल्लेख करवामां आव्यो नथी एवा आ कार्यमां मदद करनार तमाम माहाशयोनो उपकार मानी आ प्रस्तावना समाप्त करी रिपोर्ट वांच-वानी भलामण करीए छीए.

#### माणेकलाल घेहेलाभाइ.

प्रमुख, स्वागतमंडळ.

फत्तेभाइ अमीचंद झवेरी.

ची. सेकेटरी स्वा. मं.

# अनुक्रमणिका.

## रिसेप्शन कप्रीटी पृष्ट १-४८.

| रिसेप्सन कमिटीनो रिपोर्ट.                             | पृष्ठ       | e-9    |
|-------------------------------------------------------|-------------|--------|
| उतारा ,, ,,                                           | ,,          | ८९     |
| भोजन ,, ,,                                            | "           | १०     |
| तंदुरस्ती ,, ,,                                       | ,,          | १०     |
| मंडप ,, ,,                                            | ,,          | 88-83  |
| वॉलंटीयर ,, ,,                                        | "           | 85-58  |
| लाक्षणिक प्रदर्शन "                                   | ""          | 8-6-60 |
| उपज खर्च ,,                                           | • • • • • • | १८-१९  |
| रिसेप्दान कमिटीनुं लीस्ट.                             | नि. क ,,    | २०-२३  |
| श्रीमंत महाराजा सयाजीरावने बीन छागते सामान            | •           |        |
| आपवा तथा कॉन्फरन्समां पधारवा करेली अरजी.              | नि.ख,,      | २४–२६  |
| श्रीमंतनो जवाब.                                       | नि. ग ,,    | २७-२८  |
| कुकुंमपत्रिका.                                        | नि.घ "      | २९     |
| मंडपमां लगावेलां हितवचनना बोर्डो.                     | नि. ङ "     | ३०-३४  |
| लाक्षणिक प्रदर्शन कमिटीनुं लीस्ट.                     | नि. च ,,    | ३५     |
| ,, ,, ना सेकेटरी झवेरी छाल्लभाइ कल्याण-               |             |        |
| भाइनुं भाषण.                                          | नि. छ "     | ₹६–३७  |
| युवराज फतेसिंहरावे प्रदर्शन खुल्लुं मेलती वखते करेलुं |             |        |
| भाषण.                                                 | नि.ज,       | २८-४३  |
| स्वागत फंडमां नांणा भरनारनी यादि.                     | नि. झ.,,    | e8-88  |
| " " ना खर्चनुं तारवणी पत्रक.                          | नि. ञ "     | 85     |

## ( २ )

# त्रीजी वार्षिक परिषद् प्रष्ट १-२००.

| स्वागत मंडव  | ळना प्रमुखनुं भाषण.           |               | नि. १      | ३–४    | 82-99         |
|--------------|-------------------------------|---------------|------------|--------|---------------|
| श्रीमंत महार | ाना साहेबनुं भाषण.            |               |            | 8-9    |               |
|              | ाहेबनुं भाषण.                 |               | नि. २      | q_0    | <b>५२</b> −६३ |
| रा. ढड्ढाए म | गनेले महाराजानो आभार.         |               |            | લ−દ્   |               |
| मि. परमारनुं | कवित.                         |               |            | \$ – 0 |               |
| दिलसोजीना    | तारो अने पत्रो.               |               |            | 9-9    |               |
| सनजेक्ट क    | मेटीनी नेमणुक.                |               |            | 9-0    | ×             |
| श्रीमंत महार | राजानुं छेवटनुं भाषण.         |               |            | ۲ (    | ,             |
| ठुराव १-     | -ना. शेहेनशाह माटे प्रार्थन   | Τ.            |            | ९      |               |
| ठराव २-      | -श्री. महाराजा साहेबनो अ      | ाभार.         |            | १०     |               |
| ठराब ३-      | -ज. सेकेटरीओने धन्यवाद.       |               |            | १०     |               |
| डराब ४-      | -मर्हुम मि. फर्कारचंद प्रत्ये | दीलसोजी.      |            | १०     |               |
| डराव ५-      | -पूज्यमुनि महाराजा विगेरेने   | विनंती.       |            | १०     |               |
| ठराव ६-      | -धार्भिक तथा व्यवहारिक वे     | ळ्वणी.        | . ? ?      | -12    |               |
| रा           | गुलावचंद ढढ्ढानुं भाषण,       | মূষ্ট         | १२-१४      |        |               |
| ं मि         | . मोतीचंद गीरधर कापडी         | यानुं         |            |        |               |
|              | -                             | भाषण. ,,      | १४         | नि. ३  | ई ४-७०        |
| ন্থা         | ला माटु मलजी.                 | ,, ,,         | <b>१</b> ४ |        |               |
| मि           | . बाल्ल्चंद हीराचंद.          | <b>3</b> 7 77 | १५         | नि. ४  | ७१–७६         |
| वव           | <b>ही</b> ल छोटालाल काळीदास.  | """           | १९         |        |               |
| मि           | . मनसुख अनोपचंद.              | ,, ,,         | १९         | नि. ९  | 99-9 <b>9</b> |
| मि           | . मुळचंद नथुभाइ.              | 3 <b>9</b> 99 | 29         | नि. ६  | ८०-८३         |
| स            | I. कुंबर <b>जी आणंद</b> जी.   | " "           | १९         | नि. ७  | ८४-८ई         |
| मि           | . अनोपचंद मेल्रापचंद.         | <b>37 7</b> 7 | १६         | नि. ८  | ८७-९१         |
| डराव ७       | -कॉन्फरन्सनुं बंधारण.         |               | १६-१९      |        |               |
|              | ठ. लालभाइ दलपतभाइनुं भ        | ाषण. ,,       | i          | नि. ९  | 97-99         |
| मि           | , छखमसी हीरजी.                | <b>37 32</b>  | 89-86      |        |               |
|              |                               |               |            |        |               |

| डॉ. जमनादास प्रेमचंदनुं भाषण. ,, १८ नि. १० ९६-१००         |
|-----------------------------------------------------------|
| मि. जगजीवन मुळजी खनीया. ,, ,, १८ नि. ११ १०१-१०८           |
| <b>लाला माणेकचंद तथा व. हरिवलव. ,,</b> १८                 |
| मि. फतेचंद कर्पुरचंद लालन. ,, ,, १९                       |
| ठराव ८- शत्रुंजय तीर्थनी आशातना माटे                      |
| दिलगीरी. ,, २०                                            |
| ठराव ९-ज. सेकेटरीनी जग्या पुरवानी                         |
| सत्ता. ,, २१                                              |
| ठराव १०-जीर्ण चैत्योडार. ,, २१-२४                         |
| बाबुराय कुमारसिंधजीनुं भाषण. ,, २१-२२                     |
| बाबु विजयसिंघजी. ,, ,, २२-२३                              |
| मि. मोहनलाल पुंजाभाइ ,, ,, २३ नि. १२ १०९–११०              |
| मि. फतेचंद कॅंपुरचंद लालन ,, ,, २३                        |
| डेलागोआवेथी कॉन्फरन्सने मदद. २३-२४                        |
| ठराच ११-प्राचीन पुस्तकोद्धार. २४-२५                       |
| शठे अनुपचंद मलुकचंदनुं भाषण. ,, २४ नि. १३ १११-११४         |
| शा. अमरचंद घेलाभाइ. ,, २९                                 |
| शा. रवजीमाइ देवराज. ,, २९                                 |
| मि फतेचंद कर्पुरचंद. ,, २९                                |
| जेसलमेरनो भंडार उघडाववा विषे मि. ढढ्ढानो प्रयास. २९       |
| ठराव १२-सधर्माने आश्रय. २६                                |
| ठराव १३-जीवदया. २६                                        |
| ठराव १४-प्राचीन शोधलोळ. २६-२७                             |
| मि. दोल्रतचंद पुरुषोतम बरोडियानुं भाषण. २६ नि. १४ ११९–११७ |
| मि. मनमुख कीरतचंद. २७ नि. १९ ११८-१२४                      |
| <b>ठराच १</b> ५-डीरेक्टरी. · २७-२९                        |
| मि. भगुभाइ फतेहमंद कारभारीनुं भाषण. २७ नि. १६ १२५-१२६     |
| मि. जीवराज ओधवजी दोशी. ,, २८ नि. १७ १२७-१२८               |

| ठराव १६-हानिकारक रीवाजोनो त्याग.         | २८-१९     |
|------------------------------------------|-----------|
| रा. रा. ढड्ढानुं भाषण.                   | २८-२९     |
| प्रो. नथुभाइ मंछाचंद. ,,                 | २९        |
| फतेचंद कर्पुरचंद. ,,                     | २०        |
| श्रीमंत युवराज फतेसिंहरावनुं भाषण.       | ३०-३१     |
| श्रीमंत महाराजा साहेब तथा बीजा राजा महार | ाजानो     |
| मानेले आमार.                             | <b>२२</b> |
| प्रसुख साहेबनो मानेलो आभार.              | • ३४      |
| वडेादराना आगेवानो तरफथी मे. प्रमुख तथा   |           |
| डेल्लीगेटोने पानसोपारी.                  | इद-२७     |
| जैन प्रेज्युएट एसोसीएशननी स्थापना.       | ३७        |
| आचार्य श्रीकमलविजयसूरिनुं व्याख्यान.     | 30        |
| बाळ गंगाधर टिळकनुं भाषण.                 | ३८-४३     |
| मि. लाभशंकर लक्ष्मीशंकरनुं भाषण.         | ४३-४६     |
| श्रीमंत महाराजा साहेबे कॉन्फरन्सना       |           |
| फंडमां भरेली रकम.                        | 8 (9      |
| आचार्य श्री कमळ विजयसूरी तथा श्रीमंत     |           |
| महाराजा साहेब एमनो समागम.                | 08        |
| पत्रकारोना अभिप्राय.                     | ·         |
| डेर्लागेटोनुं लीस्ट.                     |           |
| कॉन्फरन्स वखते नाणां भरनारनी यादी.       |           |
|                                          |           |

१२९–१९५ १९६–१९२

, ·

# भाग पेहेलो.

# त्रीजी जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स

श्री.

रिसेप्जान कमीटीनो रिपोर्ट.

₩**₩**→22.4€Ě-

सर्वने सुविदित छे के, श्री जैन श्वेतांवर मूर्त्तिपूजक संघनी व्यवहारिक अने भुंबईनी कॉन्फरन्समां षडोदराना डेलोगेटोनुं सभाना सेकेटरी अने जयपुरना कलेक्टर तथा डिस्ट्रीक्ट जब. मेजीस्ट्रेट रा. रा. गुलावचंदजी ढढ्ढा एम. ए. एमणे प्रारंभेला स्तुत्य प्रयासने मान आपी मुंबई खाते भरायली बीजी जैन श्वेतांवर कॉन्फरन्समां वडोदरेथी १९ सद्ग्रहस्थोने डेलीगेटो तरीके पसंद करी मोकल्वामां आव्या हता.

२ ते डेलींगेटो अने बीजा प्रेक्षक तरीके सदर कॉन्फरन्समां भाग लेवा पधा-

रेखा सद्ग्रहस्थोए तेवा परमपवित्र भारतवर्षीय श्रीसंघना दर्शननो लाभ पोताने त्यांना श्रीसंघने मळी राके तेवा अ-नुकुळ संजोगो जोई छाणी, पाद्रा, दरापुरा विगेरे स्थळेथी

त्रीआं कॉन्फरन्स वडो-दरे भरबानुं आमंत्रण.

पधारेला सद्ग्रहस्थोनी सलाहपूर्वक त्रीजी कॉन्फरन्स वडोदरे भरवानुं आमंत्रण कहे-वडाव्युं हतुं अने ते स्वीकारवामां आव्यानी वात ता. २१ माहे सप्टेंबर सने १९०३ नी बेठकमां जाहेर थतां रा. रा. बापुभाई हीराभाई वैद्ये नींचे प्रमाणे विज्ञाप्ति करी हतीः—

" हुं अमारा वडोदराना श्रीसंघ तरफर्धा वे शब्दोमां विनंती करवानी रजा छउं छुं. आ अपूर्व मेळावडानां दर्शनथी अने अहीं जे उत्साह अने एक विचा-रथी काम थयुं छे तेथी अमे घणो संताेष मानीए छीए. आवती कॉन्करन्स वडेाद रामां भरवानुं अमारुं आमंत्रण स्वीकारवानी जेवी रीते छपा करी छे तेवीज रीते कॉन्फरन्सनो वखत मुकरर थाय ते वखते पधारवानी छपा करी आभारी करशोजी. हिंदुस्ताननां बीजां मोटां शहेरोनी जैनवस्तीना प्रमाणमां वडोदरा कंइज हिसाबमां नथी. तोपण अमे अमारी आजुबाजुना गामोना भाइओ साथे मळी आप साहेबनी यथाशक्ति सैको बजाववा यत्न करीडां; पण जे साहेबोना प्रयासथी आ कॉन्फरन्स पाका पाया उपर स्थापन थई छे तेज साहेबोए ए कॉन्फरन्सना कामने पुष्टि करवाने। प्रयत्न करवानो छे. तो आशा छे के, तेओ साहेब पोताना स्थानके रहीने अने पथावसर वडोदरे पधारीने शासननी उन्नति करवानी महेरबानी करशे."

३ ते पछी बीजे दिवसे मुंबईमां झवेरी जेरांगभाई मगनलालनी पेढीमां आ-मंत्रण करवामां सामेल थयेला सद्गृहस्थो एकठा थया हता मंत्रण करवामां सामेल थयेला सद्गृहस्थो एकठा थया हता अने कॉन्फरन्सनुं काम फतेहमंदीथी पार उतारवा माटे नाणांनी पहेली तजवीज करवी जोईए एम सौनी ध्यानमां बेसतां स्वागत फंडनी रारुवात करवामां आवी हती, जेमां रु. १२३१ तो त्यांने त्यांज भराइ गया हता.

8 सदर डेलीगेटो विगेरे वडोदरे पाछा फर्यो त्यारे तेमना मुखथी मुंबईमां थयेला कामकाजनी तथा आमंत्रण विगेरे संबंधी हकीकत श्री संघनी अनुमो-सांभळी श्रीसंघे घणी अनुमोदना करी हती, जेना परि-णाम रिसेप्शन कमीटी निम्या वगर स्वागत फंडनुं काम आगळ चलाववानुं सुगम थई पडयुं हतुं.

 ५ कॉन्फरन्स संबंधी विविध प्रकारनुं काम केवी रीते पार पाडवुं ते माटे श्रीसंघनी प्राथमिक मे सने १९०४ ना रोज जानीरोरीनी धर्मशाळामां बोला-सभा.
 ववामां आवी हती. ते सभानुं प्रमुख स्थान रा. रा. फतेमाइ
 भींचंद झवेरीने आपवामां आव्युं हतुं अने तेमां लायक मेंबरो वधारवा विगेरे नी सत्ता साथे रिसेप्शन कमीटी (स्वागत मंडली) नीमवामां आबी हती, तथा श्रीमंत महाराजा साहेबने मदद विगेरे माटे अरजी करवा अने कॉन्फरन्स कया महिनामां भरवी ते संबंधी ठरावो पसार करवामां आव्या इता.

१ रिसेप्शन कमीटीना प्रमुख, उपप्रमुख, चीफ सेक्रेटरी, जनरल सुपरिंटेन्डेन्ट अने ट्रेझरर तरीके कया पुरुषोने पसंद करवामां आव्या सिरेप्शन कमीटी संबं-हता, तथा स्वागतने लगतुं पत्रव्यवहार विगेरे सर्व साधा-हता, तथा स्वागतने लगतुं पत्रव्यवहार विगेरे सर्व साधा-रण काम, फंड भराववानुं काम, उतारा संबंधी काम, भोजन संबंधी काम, हेल्य (तंदुरस्ती) जाळववानुं काम, मंडप उभा करवानुं काम अने (1)

बॉलंटियर संबंधी काम करवा माटे सभासदोने कयी कयी सबकमीटीओमां वहेंची नाख्या हता अने ते सबकमीटीओना प्रमुख तथा सेक्रेटरीनी पदवीओ कोने आपवामां आवी हती ते, आ साथे नि० क नी यादी जोडी छे, तेमां बताव्युं छे.

सबकमीटीओए जरुर प्रमाणे भेगी थइ करेला ठरावो सांमळी योग्य सखाह अथवा मंजुरी के अनुमादन आपवा माटे रिसेप्शन कमीटीनी १९ मीटींगो थइ हती, जेमांनी छठ्ठी मीटींग जण बेठको सुधी लंबाइ हती. खास महत्वना प्रसंगे श्रीसंघने आमंत्रवामां आव्या हतो. कमीटीए करेलां कामोनी नोंध योग्य स्थळे लेवानुं राखी अहीं एटलुं जणावी देवुं जोइए के, केटलाक माइओए एक करतां बधारे सब कमीटीओना काममां भाग लइ, पोतानो उत्साह प्रदर्शित कर्यो इतो.

श्रीमंत सरकार गायकवाट सयाजरिाव महाराजा साहेवने कॉन्फर-सरकारी सामान वि-गेरे बॉन लागते मेळववा आपत्रा ता. २९ माहे मे सने १९०४ ना रोज महावळे-भाटे तजवीज.
श्वर स्वारीमां अरजी (नि. ख.) सादर करवामां आवी हती. तेमांनी मांगणीओ मंजूर करवा श्रीमंत महाराजा साहेवे छपावंत थई करेला फरमान अन्वये ना. दिवान साहेव केरशास्पत्री रुस्तमजी दादाचानजी एमणे नं. १४८७ ता. १७ माहे जून सन १९०४ नी यादी (नि. ग.) मोकली हती, अने लाक्षाणिक प्रदर्शनमां मूकवा माटे म्युझियमनो तथा सरकारी शाळाओनो सा-मान आषवानो हुकम कर्यो हतो ते माटे ते नामदारनो खास उपकार मानवो उचित छे.

८ सदर हुजूरहुकमनी खुश खवर निवेदन करवा माटे ता. १९ माहे जून श्रीमंत सरकार प्रत्ये सने १९०४ ना रोज श्रीसंघनी सभा बोछाववामां आवी उपकार प्रदर्शक संघनी हती. ते सभामां श्रीसंघे करेछी अरजी तथा तेनो सरकार-सभा. मांथी मळेछो जवाब वंचाया पछी, सभामां विराजमान परमपूज्य आचार्य श्री १०८ श्रीकमछ विजयसूरि महाराजे ( मरहुम जैनाचार्य श्रीआत्मारामजी महाराजना पट्टधरे ) एवा उद्गारो काढ्या हता के, श्रीमंत गायकवाड सरकारे कॉन्फरन्सना संबंधमां वडोदराना संघनी मागणी र्स्वाकारीने जे मान आप्युं छे ते योग्य कर्युं छे. आ मान अहींना संघनेन नाहि पण आखा हिंदु-स्तानना जैन संघने मळयुं छे. राजाओनो ते धर्मज छे. एथी बहु पुण्य थाय छे. पोतानी प्रजाने धर्मादि साधवामां सहाय करवाथी अने तेमना मनेारथ पूर्ण कर-वाथी राजा प्रजाप्रिय अने राज्य चिरस्थायी थाय छे, तथा राजा सर्व प्रकारे सुखी रहे छे, संघने पण उचित छे के, श्रीमंत महराजा सिरहेबनो आ माटे उपकार मानवो. ए विचारने बीजाओनुं अनुमोदन थतां श्रीसंघे सर्वानुमते निचलो ठराव पसार कर्यो हतोः--

" श्रीमंत सरकार महाराजा साहेब एमणे रुपावंत थई जैन कॅान्करन्सना प्रसंगे बनी राके तो पधारवानुं आश्वासन आप्युं छे, तथा पब्लीकवर्क्स, खानगी, पोलीस, फोज विगेरे खातां तरफथी महेरबानी तरीके सर्व प्रकारनी मदद आपवानी हुकम कर्यो छे. ते बद्दल अभे श्रीमंत सरकारनो खरा अंतःकरणथी उपकार मानीए छीए अने आशा राखीए छीए के, श्रीमंत कॉन्फरन्स प्रत्ये एवीज महेरबानी हमेश कायम राखशे. प्रमु रुपाथी श्रीमंत राज्य कुटुंब साथे दीर्घायु भोगवी चिरकाळ धर्मथी प्रजानुं पालन करी मुखसमृद्धि पामो."

अत्रे जणाववुं जोईए के, ए ठरावनी मुद्रित प्रति श्रीमंतनी हुजूरमां मोकल्लवा माटे नामदार दिवान साहेबने अर्पण करवा एक डेप्युटेशन गयुं हतुं, अने ठरावना साररूपे एक तार पण श्रीमंतने पुना स्वारीमां करवामां आव्यो हतो.

९ कॉन्फरन्सना तथा प्रदर्शनना काममाटे जे सरसामान बहार गामथी आवे ते उपरनी जकातनी माफी पाळवा अने कॉन्फरन्समां कॉन्फरन्सना सामान-नी जकात माफी. पधारनार साहेबोने पण ते संबंधी हरकत न थाय तेवो हुकम करवा नामदार रोमेशचंद्र दत्त अमात्य साहेबने यादी आपवामां आवी हती. तेना जवाबमां साहेब मोसुफ तरफथी महेरबानी दाखल माफी पाळवानो हुकम कर्यानी खबर मळी हती, जे माटे तेमनो आभार मानवो योग्य छे.

१० त्रीजी कॉन्फरन्सना प्रमुखनुं स्थान कया महाशयने आपवुं ते बाबतमां कॉन्फरन्सना प्रमुखनी पसंदगी. अभिप्राय मागवामां आव्या हता. तेमां हिंदुस्ताननी चोर दिशामां दूरना प्रदेशो सुधी विहार करवाथी घणा नामांकित पुरुषोना समागममां आवेला पूज्य मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराज तथा रा. रा. गुलावचंदजी ढद्दा एमणे पूरी पांडेली हकीकत घणी उपयोगी थई पडी हती. ए माटे केटलाक पुण्यशाळी-ओनां नामो जूदी जूदी तरफथी सूचववामां आव्यां हतां. ते बधाए प्रायः फॉन्फर नप्तना सभापति थवानुं मान मेळववाने लायक छे. पण श्रीअझीमगंज (मुर्शीदाबाद) निवासी राय बहादूर बुधसिंघजी दुधोडियानी पुरुत उमर, धर्मकार्यमां उदारता अने समयानुकुळ प्रवृत्ति विगेरेने लीघे घणानो अभिप्राय आ वखते तेमनेज नीमवा एवो थवाथी तेमनी साथे ए बाबतमां पत्रव्यवहार चलाववामां आव्यो हतो, अने तार पण मूकवामां आव्या हता. तेमना तरफथी स्वीकारनी तार आबतांज ता. २ ? ऑगस्ट सन १९०४ ना रोज सभा बोलावी तेमने प्रमुख तर्राके पसंद करेला जा-हेर करवामां आव्या हता.

११ श्रीफलेधितीर्थे तथा मुंबईमां कॉन्फरन्सनी बेठको भरवा माटे सप्टेंबर कॉन्फरन्स भरवाना ( भादरवा ) महिनेा पसंद करवामां आव्या हतो. पण दिवसनु निर्माण. ते वखत वरसाद विगेरेने लीघे अनुकुळ नहि होवाथी अने विकन संवत १९६१ ना कार्तिंक वदि ५ ता. २७ नवेंबर सने १९०४ ने दिवसे रविवार ने पुष्य नक्षत्र विगेरे शुभ योगो होवाथी ते तिथि त्रीजी कॉन्फरन्सना पहेला दिवसनी बेठक माटे ता. १७ सप्टेंबर सन १९०४ नी सभामां नक्की करवामां आवी हती.

१२ श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा साहेबने कॉन्करन्समां पधार-

श्रीमंत महाराजा सा-हेवने आमंत्रण. वडोदरे आव्या पछी कॉन्फरन्स कमीटी साथे विचार करी निर्णय करवानुं हुजूर फरमान होवाथी रिसेप्शन कमीटीना

प्रमुख अने बीजा नव सद्गृहस्थोनुं डेप्युटेशन ता. २१ सप्टेंबर सन १९०४ ना रेाज छक्ष्मीविलास पेछेसमां गयुं हतुं. श्रीमंत महाराजा साहेबे डेप्युटेशनना गृह-स्थोनी ओळख लेतां घणी खुशी बतावी हती अने कॉन्फरन्समां पधारवा माटे आश्वासन आपी कॉन्फरन्स भरवानी तारीख अने तेमां चर्चवाना विषयो संबंधी माहिती हुजूर कामदार साहेबने आपवा आज्ञा करी हती. पछी श्रीमंते कॉन्फर-न्सना काममां आपेली मदद माटे आखा हिंदनो जैन संव श्रीमंत सरकार प्रत्ये आ-भारनी लागणी दर्शावे छे विगेरे हकीकत निवेदन करी डेप्युटेशने श्रीमंतनी रजा र्शवी हती. ( ( )

 १२. कॉन्करन्समां प्रतिनिधियो पसंद करी मोकल्लवा माटे सर्व श्रीसंबो, सभाओ, पाठशाळाओ, अने पुस्तकालयो उपर विजया द-कुंकुम पत्री विगेरे बा-वत.
 श्वमीथी कुंकुमपत्रीओ (नि. घ) मोकल्लवानी शरुवात करी कर्न कंटनपानी प्रत्यानी उपर विंची अप्रायं प्रवर्षाकरे

हती. कुंकुमपत्री गूजराती तथा हिंदी भाषामां सुवर्णाक्षरे सारा ग्लेझ कागळ उपर छपावेली हती. गायकवाडी राज्यना खानेसुमारीना रिपोर्ट उपरथी जैन वस्तीवाळां गामा तारवी तेनो मुंर्बईनी रिसेप्शन कमीटीनी नोंध साथे मुकावले करतां बीनी कॉन्फरन्स वखते जे गामो कंकोत्री वगर रही गयेलां मालम पड्यां हतां त्यां, अहींथी कंकोत्रीओ लखवामां आवी हती. वधारामां चारे जनरल सेकेटरी साहेबो तरफ अहींथी कंकोत्री मोकलेलां गामोनी यादी साथे केटलीक कंकोत्रीओ गामनां नाम भर्या वगर बीडी हती, अने तेमना विभागमांना ने गामोमां कंकोत्री नहि गयानुं मालम पडे त्यां पहें चाडवा विनंती करी हती.

ए रीते कंकोत्रीओ, पसंद करेला डेलगिटेानां नाम भरी आठ दिव-समां पाछी मोकलवानी प्रतिनिधि पत्रिकाओ अने प्रतिनिधि पोते कइ तारीखे कइ ट्रेनमां पधारवाना छे ते विगेरे हकीकत, जेमां दीवाळी पहेलां जणाववा विनती करी हती ते यादीओ साथे, रवाना करी हती. कॉन्फरन्सनो वखत शियाळानी रुतुमां होवाथी डेलिगेटोने साथे पथारी लाववा पण सूचना करी हती.

कोइ गामवाळाने पेष्टिनी कसूरथी किंवा अहींनी भूलना कारणथी कंकोत्री विगेरे न मळे तो क्षमा करी कंकोत्री मंगावी लेवा अगर वर्तमान पत्रोमां प्रसिद्ध थयेली कंकोत्री वांचीने मळेली मानी लइ पाताना गाम के सभाना प्रतिनिधि नीमी खबर आपवा जाहेर विनंती करी हती.

ए शिवाय सर्व जैन ग्रेज्युओटे। तथा वडेादरा राजधानीना अने बहारना जाणीता विद्वान, राजमान्य व प्रतिष्ठित पुरुषोने पण कॉन्फरन्समां पधारवा माटे खास आमंत्रण पत्रो मोकल्रवामां आव्यां हतां अने केटलाक साहेबोने तार पण करवामां आव्या हता.

१४ कॉन्फरन्समां कया कया विषयो न्चेचवा जेवा छे तथा कया कया विद्वानो कया विषयपर बोळवानी उत्कंठा घरावेछे ते विगेरे बिषयो बाबत. हकीकत ता. २० सप्टेंबर सने १९०४ सुधीमां जणाववा माटे ता. २५ ऑगस्ट सने १९०४ थी सर्वत्र जाहेर विज्ञाप्तियो मोकछवा मांडी हती अने वर्तमानपत्रोमां पण प्रसिद्ध करवामां आधी हती. पछी एक अ भयेली हकीकत उपरथी चर्चवाना विषयोनी यादी तैयार करीने ता. २९ अक्टोबर सने १९०४ ना रोज प्रसिद्ध करवामां आवी हती. ते यादीमाना विषयो सर्व मुनिमहारानोए अने कॉन्फरन्से निमेली सबजेक्ट कमीटीए पसंद कर्या हता. मात्र कमीटीए यादीमांना १२ विषयो पैकी धार्मिक तथा व्यवहारिक केळ-वणी, जैन साहित्यनो प्रसार अने जैन शाळोपयोगी पुस्तकमाळा ए त्रण विषयो संबंधी एक समुच्चय ठराव घड्यो हती अने जैन केळवणी बोर्ड नो विषय तुरतने माटे पड्यो मूक्यो हतो.

१५ कॉन्फरन्सना प्रमुख साहेब रायबहाद्दर तुधसिंघ जी दुधो डिया पोताना प्रमुख साहेबनु समैयुं विगेरे. परिवार साथे टाप्टी व्हेली रेस्वे मारफते पधार्था हता. रस्तामां अंफलेरश्व स्टेशने मुकाम कर्यो हतो. त्यां श्रीसंघ तरफथी डेप्युटेशन तेमना मुखसमाचार लेवाने गयुं हतुं. तेमने लेई आवनारी ट्रेन ता. २४ नवेंबर सने १९०४ नी प्रमातमांज अहींना स्टेशन उपर आवी गई हती. परंतु शहेरमां विजय मुहूर्ते प्रवेश करवानुं ठरेलुं होवाथी प्रमुख साहेबे साईडींगमां पोताना सलुननी अंदर रही स्नान पूजा विगेरे नित्य कर्म तथा प्रातरशन करी लीधुं हतुं, जे माटे वॉलंटियर तथा भोजन कमीटी तरफथी घटती तजवीज करवामां आवी हती.

पछी समय थतां श्रीसंघ समैया माटे सरकारी डंको, निशान, हाथी, घोडा, बगीओ; वार्जिन्नो विगेरे साज साथे स्टेशन उपर दोखल थयो एटले सलुनो प्लेट-फार्म पासे मंगाववामां आवी हती अने प्रमुख साहेबने देखतां बरोबर हर्षना पोर्कारो सहित पुष्पांजलिथी वधावी लेवामां आव्या हता. हार, कल्गी विगेरेनो वेटींग रुममां सत्कार अने परस्पर ओळखाण थया पछी स्वारीना ठाठथी शहेरमां प्रवेश कराववामां आव्यो हतो. प्रमुख साहेब तेमना भात्रेजा बाबु विजयसिंघजी साथे, दबदबा भरेला पोशाकमां हाथी उपर चांदीनी अंवाडीमां विराज्या हता. तेमनी पाछळ तेमना बे कुमारो अने मित्रो हाथीना होदाओमां शोभता हता. वधूवर्ग मर्यादायुक्त बगीओमां बेठो हतो. रस्तामां मामानी पोळे, जोगी-दासविष्ठलनी पोळे, अने कोठी पोळे श्रीशान्तिनाथजीना देरे दर्शन कर्या पछी, त्यांनी मंडळीओ तरफयी ते सर्वेंनो हार कल्गी विगेरेथी सत्कार करवामां आव्या इतो. पछी स्वारी ल्होरेापुर दरवाजा नजीकथी न्यायमंदिर थईने तेमना माटे मुकरर करेला मदनवागना बंगले पधारी, जे स्थानने वावटा, तोरणो विगेरेथी सारी रीते शणगारवामां आव्युं हतुं.

( < )

बीजे दिवसे श्री. महाराजा साहेवनी मुलाकात लेवाने प्रमुखसाहेव राजमहेळ गया हता. त्यां दरवार फिझीशियन डॉक्टर बालाभाईए तेमनी श्रीमंत साथे ओळख करात्री हती नजराणो थया बाद श्रीमंत तेमने पोतानी साथे बागमां फरवा ल्ई गया हता अने वातचीतमां उभय प्रसन्न थया देखाता हता.

प्रमुख साहेबनी तहेनातमां सरकारी बगीओ अने स्वारो राखवामां आव्या हता अने राजमहेल तथा झवेरखानुं विंगेरे देखाडवानो खास हुकम करवामां आव्यो हते. १९. प्रतिनिधि साहेबोने पोताना रात रीवाज मुजब रहेवानु अनुकुळ पडे तेटला माटे जूदा जूदा उतारा मुजरर करवामां आव्या इतारा. हता. ते माटे उतारा कमीटीए केटलांक मकानो वगर भाडे अने केटलांक भाडेथी मेळव्यां हतां. दरेक उतारे बिछायत, थोडींक पथारीओ. दिशापाणीनी जग्यो, पीवानुं पाणी अने दीवाबती विंगेरेनी तजवीज करी हती, पहेरा माटे सिपाई अने बीजुं कामकाज करवा माटे चाकरो राख्या हता. कागल पत्रो लखवानां साधनो पुरां पाडी टपाल विंगेरे लाव लइ जवानुं काम वॉल्टीयरो बजावता हता. एकंदर व्यवस्था बराबर रहे छे के नहि तेनी तपास माटे प्रमुख सेक्रेटरी अने सभासदो वखतो वखत जता हता, जेथी करीने मानवंत परोणाओने कोई पण जातनी तकलीफ पडवानो अवकाश नहोतो.

जनरल सेकेटरी मि. ढढ्ढाए चीफ सेकेटरी माणकलालर्माइने त्यां मुकाम कर्ये हता. राेठ लालभाई तथा राय कुमारासिंघजी ए बे अमदावादना नगररोठ विगेरे साथे, मोताबाग सामेना सरकारी बंगलामां, झवेरी कल्याणभाईना मेमान थया हता. राेठ वीरचंद दोपचंद वाडीमां रा. रा. रामराव मैराळने त्यां उतर्या हता. प्रमुख साहेब माटे राेठ करमाली जुसबनो मदनजाग, बाबु विजयसिंहजी माटे वरिष्ठ कोर्टना वकील मि. खंडेराव घोटीकरनुं राजमहेलरोड उपरनुं मकान, रायबहादूर सौभाग्यमल्जी ढढाना चि. कल्याणमल्जी विगेरे राजपुताना तरफना माईओ माटे महंत मथुरदासनुं पल्लीकपार्क सामेनुं दिवानखानुं, बंगाळाविगेरे तरफना-भाईओ माटे रा. माधवराव पवारनुं मकान, वॉल्टंटीयरो माटे स्टेशनपरनी कमासाहेब शिरकेनी धर्मशाळा अने परी. मूळजी शांतीवाळानी वाडी, भावनगरी भाइओ माटे परी. परभुकाशीनी वाडी, अमदावादी भाइओ माटे दीसावालनी वाडी, सुरतथी मुंबई सुधीना भाइओ माटे डमोइयावाडी अने ल्वारवाडी, काठी-आवाड तरफना भाइओ माटे कंसारावाडी, कच्छीभाइओ माटे दरियाबाइनो वाडी, मोटा रसोडा माटे दसालाडनी वाडी, अने जरुरीयात प्रमंग माटे विसालाडनी वाडी. रा. भाऊतिंधेवाळानी धर्भशाळा, परी ॰ ल्लुवाधरनी हवेली अने वीनी वाडीयोए रीते मकानो तेमना मालीक अगर वहीवट करनार साहेबो तरफर्थी वगर भाडे मल्यां हतां. ए शिवाय पंजाबी भाइओनो उतारो गोलावाडीमां, मारवाडी भाइओनो कुंभार वाडीमां, उत्तर गुजरात भणीना भाइओनो काळीयावाडी अने केडवावाडीमां, अमदावादथी सुरत सुधीना भाइओनो उतारो गोलावाडीमां, लानदेश अने दक्षिण तरफना भाइओनो गुजराती सोनीनी वाडीमां, छाणी, पादरा, दरापुरा ने डभोइना भाइओनो दक्षिणी सोनीनी वाडीमां, ए रीते उतारा मुकर कर्या हता. ए मकानो अने जरूरना प्रसंग माटे राजमहेल रोड उपरनुं करसन भगवानवाळुं मकानो अने जरूरा प्रखामां आव्युं हतुं.

सदर मकानो, पलंग, गोदडां अने बिछायती सामान विगेरे मैळवी आप-वामां रा. सा. वडोदरा महाल्ला वहिवटदार खंडेराव गणेश वैद्य, रा. सा. सिटी बाहिबटदार माधवराव नारायण गडबोले, परीख जीवणलाल भगवानदास, परीख हीरालाल छोटालाल, खंभातना शेठ पोपटभाई अमरचंद अने उमरेठना शेठ सर-पचंद छगाभाई विगेरे जे भाईओए कमीटीने सारी मदद आपी हती तथा रा. बा. गोविंदराव दळवी, मुंबाईनी उतारा कमीटीना सेक्रेटरी मि. अमृतलाल केवळदास अने भरुचना रूना दलाल मि. अमरचंद जगजीवनदास विगेरे जेमणे उपयोगी सला-ह आपी हती ते सर्वेनो अहीं आभार मानवो जोईए.

१७ आ शुभ प्रसंगे बहार गामथो पधारेला जैनभाइओ अने बेनोने न्हावा तथा पूजा करवामाटे इहिरमां श्रीदादापार्श्वनाथना अने महोत्सव विगेरे. श्रीआदीश्वर भगवानना देरे, कोठोपीळे श्रीझांतिनाथना देरे, मामानीपोळे श्रीकल्याणपार्श्वनाथना देरे अने बाबाजीपुरामां श्रीगोडीपार्श्व-नाथना देरे सर्व प्रकारनी व्यवस्था करवामां आवी हती. वळी सर्वने आंगीनां दर्शन तथा भावना विगेरेना निमित्तथी परस्पर भेगा थवानुं बनी आवे तेटलामाटे श्रीदादापार्श्वनाथना अने श्रीआदीश्वर भगवानना देरामां महोत्सवनो प्रारंभ कर्यो इतो. ता. २८ नवेंबर १९०४ नी सवारे जळयात्रानो मोटो वरघोडो काढ्यो हतो, जैमां ईिंदना जूदाजूदा भागमांथी पधारेला जैन महाशयो सामेल थवाथी तेनो देखाव अपूर्व लागतो हतो. ता० २९ मीए शांतिस्नात्र भणाव्युं हतुं.

१८ प्रमुखसाहेब विगेरे नामांकित परोणाओमाटे तेमने उतारे रसोई भोजन. थती हती अने बीजा डेलींगेट साहेबोसारु ता. २६ थी ३० नवेंबर सने १९०४ सुधी त्रण मोटां रसीडां उघाड्यां हतां. सौथी मोटुं रसोडुं दसालाडनी वाही, कॉन्फरन्स मंडपनी ने वणा खरा उतारानी नजींकमां पडवाथी, त्यां कर्युं हतुं. बीजुं रसोडुं मकरपुरारोडभणी उतारेला परोणाओमाटे डाळीयावाडीमां अने त्रीजुं पंजाबी धर्मबंधुओ तथा भगिनीओ माटे कुंभारवाडीमां कर्युं हतुं. ए शिवाय एक रसोडुं स्टेशन उपर कमा-साहेबनी धर्मशाळामां वोलंटीयरोमाटे ता. २४ नवेंबर सने १९०४ थी उघाडयुं हतुं. ता. २९ नवेंबर सने १९०४ ना रोज परगामना जैन मात्रने जमाडवामां आब्या हता. ता. २ डिसेंबर १९०४ ना रोज जॉन्फरन्सनुं स्वागत करवामां सामेळ थएला पांच गामना संघमां नोतरां फेरव्यांहतां.

दरेक उतारे सवारमां चाह दूधनी जूदी तजवीज थती हती अने पाकुं-पाणी वापरनार माटे ते मोटा रसोडेथी ठारी पहोचाडवामां आवतुं हतुं. भोजन माटेनुं पकाच मुखडीया पासे खास तैयार कराव्युं हतुं अने वीजी रसोई करवा तथा पीरसवा माटे बाह्यणोने रोक्या हता, जेथी जमनारने अनुकुळता थई छांड बिल्कुल पडी नहोती-ए ल्क्षमां लेवा जेवी बीना छे.

१९ प्रतिनिधि साहेबोनी तंदुरस्तीनी तपास करवा माटे हेल्थ कमीटीमां तिरुरस्ती. रानी मुलाकत लेता हता अने कोइनी तबीयत सहेज बगडता तुरत वॉल्टंटीयर जई दरदीनी इच्छा प्रमाणे डॉक्टर के वैद्यने बोलावी लावी सारवार करावता. एकंदरे वीस प्रतिनिधि साहेबोनी प्रकृति साधारण ताव, खांशी, ने पेटना दुखावा अथवा मरडाथी हेरान थई हती. तेमां कोईने पण नुकसान न थतां बधाने आराम थयो हतो.

ए काममां कोइपण प्रकारना मोबदला वगर तस्दी लेनार सर्वे वैद्यराजो तथा डॉक्टर साहेबोने, विरोषत: जैन श्वेतांबर धर्मी नहि छतां काळजीथी भाग लेनार डॉ. साहेब सुमंत बटुकराम मेहेता अने मयाचंद मगनलाल रोठ तथा वैद्य मीकाजी गणेश राहुरकर एमने, धन्यवाद घटे छे. २० कॉन्फरन्सना मंडप माटे छक्ष्मीविलास पेलेस सामेनी विशाळ जगा पसंद करी हती. तेनी चारे तरफ कंपाउन्ड करवामां आ-च्यो हतो. कंपाउन्डमां पेसवाना रस्ताना मोखरे दिल्ली दरबार वखते श्रीमंत महाराजा साहेबना केम्प माटे तैयार करावेल ट्रायम्फन्ट आर्च (त्रिपोलियो दरवाजो) दक्षिणाभिमुख उभो करवामां आव्यो हतो. ते दरवाजाने कपडायी मढी रंगरोगान तथा चित्रामणथी सुशोभित करवामां आव्यो हतो. तेना उपर ध्वजाओ, जाणे प्रेक्षकोने कॉन्फरन्समां सामेल थवानुं कहेती होय नहि, तेम फरफर उडती हती अने तेज अर्थनो मंगळसूचक न्छोक पण ते उपर सुवर्णा-क्षरे लखवामां आव्यो हतो.

दरवाजामां पेसतां जमणी बाजुए आजैन लाक्षणिक प्रदर्शननों मंडप आ-कर्षण करतो हतो.प्रदर्शन मंडप छोडी आगळ जतां प्रदर्शन ऑफिस, चौफ सेक्रेटरी-नी ओफिस, उपहार अने पीवाना पाणीना तथा जनानाना तंबुओ ठोक्या हता. प्रद-र्शननी एक फरके श्रीमांग्ररोळ जैन सभानो बुकस्टोल, जैन पत्र अने मुंबई समाचार-नी ऑफिसो, चक्षतिलक विगेरेनी दुकानो लागी हती. प्रदर्शननी पछवाडे मीठाई, भजीओं, पुरी तथा चाह दूध विगेरे खावा पीवानी चोजोनी दुकानो हती.

दाबी बाजुए टिकीट ऑफिस, बेन्डस्टेन्ड, श्रीसयाजी विजय प्रेस, मंडप कमीटी, सेंट्रल कमीटी, प्रेस रिपोर्टरो अने डेलीगेटो माटे तंबु उभा कर्या हता. दरवाजामां पेसतां सामे चारे तरफ फरतो पहोळो रस्तो राखी एक नानो सरखो वर्तुंळाकोरे बगीचो कर्यो हतो, अने तेनी पेलीमेर कॉन्फरन्स भरवानो सुंदर मंडप आसपास खुछी जगो राखीने रच्यो हतो. मंडपनी पछवाडे श्री. महाराजा साहेब अने सो. महाराणी साहेबनी तथा प्रमुख साहेबनी चेंबरोना तंबु लगाडेला हता. आक-स्मिक कुद्रती हाजतो माटे पछाडीना भागमां जरा छेटे सवड करी हती.

मुख्य मंडप १९२ फीट लांगे अने १४४ फीट पहोळो हतो. तेने पांच झवेश द्वार हतां. मध्य द्वारथी स्टेन ( उच्चासन ) उपर विराजनार मंडळींने अने बीजां द्वारोथी अन्य मंडळींने दाखल करवानी गोठवण राखी हती. स्त्री वर्ग माटे प्रवेश द्वार उत्तरे राख्युं हतुं, अने पूर्व पश्चिम दिशा भणी पण नीकळ-वानां द्वारो हतां.

स्टेज ३६ फीट पहोळाइ अने ४ फीट उंचाइनुं कर्युं हतुं. स्टेजनी मध्यमां श्रीमंत महाराजा साहेब, राजपुत्रो अने प्रमुख साहेब मोटे रजतमय मखमरूथी मडेलां कोचो तथा सुप्रसिद्ध डेलीगेटो अने व्हीझीटरोनी १०० खुरशीओ गोठवेली इती. ते बेठकोनी उपर विस्तीर्ण झडपपंखो बाध्यो हतो. जमणी बाजुए रिसेप्शन कमीटीनी अने स्वागत फंडमां नाणां भरनार सद्गृहस्थानी ३०० बेठको हती अने डाबी बाजुए ९ फीटना अंतरे जूदा पाडेला स्टेज उपर स्त्री वर्ग माटे चकना पडदासाथेनी ४०० बेठको राखी हती.

स्टेज अडतो ५ फीटनो अने वचमां १० फीटनो रस्तो मूकी जमणी बाजुए प्रेस रिपोर्टरोनुं टेवल ने खुरर्शीओ, तेनी नजीकमां जैन प्रज्युएटानी अने ते पद्ध अर्धवर्तुलाकारे हारबंध डेलीगेटो, रिझर्व्ड, व्हिझिटरोनी अने अनारझर्व्ड व्हिझि-टरोनी अनुकोन बेठको हती. डाबीबाजुए पण तेल मुजब डेलीगेटो, रिझर्व्ड व्हिझिटरेा अने अनरिझर्व्ड व्हिझिटरो तथा कॉप्लीमेंटरी टिकीटोवाळा एमनी अनुक्रमे गोटवण राखी हती. नीचेना मागमां बंने बाजुनी मळीने ए रीते ४००० बेठको हती. बेठकोनी दरेक हारनी वचमां एक माणस फरी शके तेटलो मार्ग राख्यो हतो.

डेलीगेटोनी बेठको जिल्लावार मुकरर करवानुं धार्युं इतुं. परंतु प्रतिनिधि-पत्रिकाओ वेळासर भरी माकल्लवा विनव्या छता कॉन्फारन्सनी बेठकना पहेला दिवस सुधी आव्या करती हती. ते विगेरे कारणार्था तेम बनी शक्युं नहोतुं, जो के ते माटेनां बोर्डो तो तैयार करावेलां हतां.

वक्ताओने भाषण करवा माटे उभारहेवानुं पीठ (pulpit) पगयोंआं साथे डाबी बाजुए डेलींगेटोनी नजीकमां रच्युं हतुं. ते लांबु फीट १३, पहाेळुं फीट ७ अने उंचु फीट ९ इतुं. तेनी नजीकना वे स्तंभो उपर सामसामे वक्ता-ओने सूचनाओनां बोर्ड चोड्यां हतां

मंडपनी रचना घणे भागे दरबारी टेन्टो अने शमियानाथी करी हती. खुटतो भागज खास बंधाववामां आव्यो हतो. मंडपने झालरो, गालीचा, तकता, कीटसन लेम्प विगेरेथी शणगारवाने बनतुं करवामां आव्युं हतुं. दरेक स्तंभे मुद्रित अक्षरने पण हठावे तेवा वॉटर कलरना अक्षरोथी लखेलां हितवचनानां बॉर्डो (नि. इ.) प्रेक्षकोने कर्तव्यनुं मान करावतां हतां.

मंडपमां एकंदरे ५००० बेठकोनी सवड राखेली हती. तेमाटे ५०० खुरशीओ सरकारी फरासखानामांथी मळी हती. २००० अमटावादथी भाडे आणी इती अने १००० खुरशीओ तथा ३०० वेंचा नवीत कराव्या हता. मंडपनो समग्र देखाव तेना उपरना सुवर्णमय कळशोथी अने चारेतरफ फर-कती ध्वजा, पताका, तोरणो विगेरेथी घणाज अल्लैकिक अने आनंददायी लागता इतो.

मंडपनुं काम पेलेस मिस्त्री मि. कालीदासनी खास देखरेख नीचे थयुं हतुं तेमां रा. बा. नायव खानगी कारभारी शिरगांवकर साहेब, रा. बा. म्युनिसीपाल कॅमीशनर माणेकलालभाइ, रा. सा. फरासखाना कामदार डॉ.लक्ष्मणराव माने, रा. सा. बंगला सुपरींटेन्डेन्ट ल्लुभाइ खरादी, खा. सा. आसी. गार्डन सुपरींटन्डेन्ट तेमुलजी कोठावाला, रा. रा. पेलेस ओव्हरस**ायर** हीराभाइ अमीन, रा. रा. म्युनिसीपाल ओवरसीयर ठाकोरदास दयाराम, सबओवरसांयर मि. मल्हारराव घोठीकर, अने लाइट इन्स्पेक्टर मी. करपे एमणे किमती सलाह अने सहाय आपी घणीज सरलता करो आपी हती. ते माटे तेमना प्रति अहीं उपकार प्रदर्शित करवामां आवे छे.

२१ कॉन्फरन्समां पधारनारा डेलीगेट साहेबोनी भक्ति विगेरे करवा माटे वॉलंटीयर थवाने कमीटी तरफ सुमारे ३०० जैन युवानोए इच्छा दर्शावी हती. ते पैकी २२९ भाइओने कमीटीए पसंद कर्या हता. तेमां८० वडोदराना,३६ छाणीना,३ पादराना, ६दरापुराना,१८ डभो-इना अने बींजा बहार गामना हता. वॉलंटीयरोने फेंटा, उतरासण अने फुल कमीटी तरफथी आपवामां आव्यां हतां अने सफेद कोट तथा बनी शके तो सफेद पाट-लून अगर पायनामो पहेरवानी भलामण करी हती.

ए बथा वॉलंटीयरोने तेमनुं ने जे कर्त्तव्य हतुं तेनी समज अने वखतो वखत चतवणी आपवा माटे प्रमुख अने सेकेटरीनी मददमां एक कॅप्टननी योजना करी जूदा जूदा काममां वहेंची दीधा हता. ४ १ वॉलंटीयरोनेता. २३ नवेंबर सने १९०४ थी रल्व स्टेशन उपर एक सुपरीन्टेडेंट अने पांच सुपरवाईझरोनी देखरेख नीचे, ज डलीगेट साहेवो ट्रेनमां पधारे तेमने स्वागत करी ज्यां तेमनो उतारो मुकरर थयो होय त्यां घोडा गाडीमां बेसाडी विदाय करवा अने तेमने। उतारो मुकरर थयो होय पणे पहोंचाडवानी व्यवस्था करवामाटे, राख्या हता. मंडपना कंपाउंन्डमां ट्रायम्फन्ट आर्चपाने, मंडपमां पेसवा निकळवानां द्वारो आगळ अने मंडपनी तथा प्रदर्शननी अंदरनी बाजुए मदद तथा बंदोवस्त माटे ९१ वॉलंटीयरो एक सुपरीटेंन्डेन्ट अन भार सुपरवाईझरना तात्रामां रोक्या हता. तारीख २७ मीनी रातथी स्टेशन उपरनी तुकडीओ ९ण तेमनी मददमां लागी हती. जूदा जूदा उताराओ उपर अने रिसेप्शन कमीटीना चेरमेन, चीफ सेकेटरी, जनरल सुपराटेन्डेंट अने सब-कमीटीओ पासे मळी ११४ वॉलंटीयरो वळग्या हता. तेमना उपर पण एक सुपरीन्टेन्डेट अने चार सुपरवाईझरो नीम्या हता.

वॉलंटीयरोमांना घणा खराए तेमने जमना हाथ नीचे सोंपवामां आव्या इता तेमनी मरजी प्रमाण खरा अंतःकरणथी काम करी संतोष आप्या हतो. तेनी निशानी ए छ के, प्रमुख साहब पोतानी तयनातनाने अने तेमना भात्रेजा बाबु विजयासिंहजीए सारुं काम करनार बधाने पोताना तरफथी चांद (Medal) आपवा माटे सारी रकम आपी हती, जे मुजब व्यवस्था पण थई गई छे. आवी रीते श्री संघनी भाक्तिमां तनथी ने मनथी श्रम लेई मोक्ष सुखना बीज रूप विनयने प्रकट इरनार तथा तेमने उत्तेज्जन आपनार साहेबोने शावासी आपवी जोईए.

२२ आ प्रसंगमां डेलीगेटो तथा प्रेक्षकोने उपयोगी थइ पडे तेवा हेतुर्थी मंडप कमीटीना जॉइन्ट सेकेटरी मि. मोतीलाल नेमचंद मोदीए प्रासंगिक सीटीमेप.

पायोगक सोटामपे. वडोदरा सीटीनो मॅप (नकशो) खास तैयार करी छ-पाच्यो हतो आ कॉन्फरन्सने श्री. महाराजा साहेब जाणे हैयानो हारज मानता होय नहि तेवुं बताववा माटे ते नकशाने मथाळे श्रींमतना सुंदर बस्टने त्रीजी कॉन्फरन्सना आभिधानयुक्त पुष्पमाळा पहेरावी मूक्युं छे तेनी एक बाजुए मांदिरो, उपाश्रयो अने ज्ञान मंदिरना स्थळनिर्देशनी यादी अने बीजी बाजुए त्रण कॉ-फरन्सना प्रमुखो, जनरल सेक्रेटराओ अने रिसेप्शन कमीटीना पदवीधरोनां नाम लख्यां छे. वे छेडा पर बे स्तंमानी अंदर खुबीथो चर्चवाना बार विषयो दर्शाव्या छे. नचिना भागमां कॉन्फरन्स तथा प्रदर्शन मंडपोनी, अंदरनी रचना साथे आगळना देखावो आपेला छे ए मॅप कॉन्फरन्सनी कायमनी यादगीरी अने गृहशृंगार तरीके राखवा लायक छे.

२२ आ कॉन्फरन्सना प्रसंगे जैन युवक मंडळ (नि च) तरफथो रु. श्वी जैन लाक्षणिक प्र योजना करवामां आवी हती. (१) ज्ञाननो प्राप्ति माटे (२) दर्शननी राद्धि अर्थे देवगुरूनी पूजा वगेरेमां अने (२) चारित्रनी निर्मळता माटे आवश्यक नित्य नैमित्तिक क्रियामां, जे जे साहित्या षपराय छे ते तमाम उपयोग अने हेतु साथे बताववानी तेमां गोठवण करी हती. ( ४ ) पूर्वाचार्योए करेलो पारमार्थिक बोध सहेलाइथी समजी शकाय तेवा उप-देशक देखावो, जेने लेइनेज प्रदर्शनने लाक्षणिक प्रदर्शननुं नाम आप्युं हतुं ते,तथा जोतां बरोबर आनंद साथे ज्ञान थाय तेवी नवाइनी वस्तुओ पण वर्णन साथे त्यां राखी हती. ते शिवाय ( ४ ) त्रस जीवोनी विराधनाथी बनती चीजोने बदले वापरवा लायक तेटलाज गुणवाळी पावित्र वस्तुओ अने ( १ ) परदेशी माल साथे हरीफाइ करी शके तेवो देशी माल पण त्यां मूकवानी समवढ करी हती. ए रीते प्रदर्शनना छ विभाग कर्या हता.

प्रदर्शनमां मूकेली वस्तुओ शहेरमांथी तेमज बहारथी वणी खरी आवा इती. पांच उपदेशक देखावो खास तैयार कराववामां आव्या हता. सरकारी आतसवाजी कामदार रा. छालोपंते तैयार करेलो मधुबिंदुनो देखाव प्रेक्षकोने आजायबी पमांड तेवो थयो हतो. कलाभवनना ड्रॉइंग मास्तर मि. बुध-वारकरे धोबीडानी सज्झायनो भावार्थ समजाववा माटे करेलुं चित्र तेमनो उत्तम कारीगरीना आदर्श रूप हतुं. शंकरदीपना योजक मि. घोडगे मास्तर पासे करावेलुं वणझाराना स्वाध्यायनुं चित्र पण आकर्षक बन्युं हतुं. छ लेश्यानुं ने अनेकांत मतनी सिद्धि दर्शावनारुं पांच आंधळा अने हाथीनुं ए बे चित्र मि. फुलचंद मोदीए तैयार कर्यो हतां. चार संनीवनी न्यायनुं चित्र मि. मग-नलाल नेमचंद मोदीए मोकली आप्युं हतुं.

प्रदर्शन वास्ते कॉन्फरन्सना दरवाजामां पेसतां जमणी बाजुए एक जूदोज मंडप उमेा करवामां आव्यो हतो. तेना मध्य द्वार उपर WEL COME अने बे बाजुए इंद्रना तथा लक्ष्मीना सुंदर चित्रो उपर सोनेरी अक्षरे लखायलां ज्ञानाकियाभ्यां मोक्षाः अने सिद्धिःस्याद्वादान् ए बे सूत्रो प्रेक्षकोनु चित्त आकर्षी रह्यां हतां.

प्रदर्शन खुल्लुं मुकवाने समारंभ ता. २४ नवेंबर सने १९०४ नी प्रभाते श्रीमंत युवराज फत्ते सिंहराव महाराजना मुवारक हस्ते करवामां आव्यो हतो. सर्व कंपाउन्ड ध्वजाओ अने तोरणोधी शणगारवामां आव्यो हतो. सरकारी बेन्ड मधुर ध्वनि करी रह्युं हतुं. श्री. युवराज महाराज, मे. आ. रेसीडेन्ट साहेब, ना. दिवानसाहेब, मे. रोमेशचंद्र दत्त अमात्य साहेब, अने राज्यना बीजा सरदारो दिरकदारो, अमलदारो, अने श्रीसंचना तथा महाजनना आगेवान पुरुषो विगेरे सारा संख्यामां हाजर हता. शरुवातमां प्रदर्शन कमीटीना सेक्रेटरो मि. लालभाई कल्याणभाई झवेरीए प्रदर्शन संबंधो संक्षेपमां हकीकता निवेदन करनारुं भाषण ( ति. छ ) वांची संभळावी श्री. युवराज महाराजे आमंत्रणने मान आपी कडी प्रान्तमांथी खास पधारवानी तस्दी लिधी ते माटे अभिनंदन आप्यु अने प्रदर्शन खुल्लुं मूकवानी विनंतो करी. पछी श्री. युवराज महाराजे घणुं विद्वत्ता भरेलुं भाषण ( ति. ज ) करी सभाजनो सहित प्रदर्शन मंडप आगळ पधार्या. त्यां दरवाजानी कुंची फेरवतां यांत्रिक गोठवणने लीधे श्रीमंत उपर पुष्पनी वृष्टि थवाना साथे दरवाजो उघडी गयो; एटले सर्वे अंदर दाखल थई फरवा लाग्या अने उपदेशक देखावो तथा बीजी दरेक वस्तुनी हकीकत उपयोगी समजी आनंद पाम्या पछी मधु बिंदुनुं Model जोई वखाण करता बहार नीकळीने हार कल्गी विगेरे सत्कारनो स्वीकार करी विदाय थया हता.

श्रीमंत महाराजा साहेब, सौ. श्री. महाराणी साहेब अने अन्य राजपुत्रो पण प्रदर्शननी मुलाकते पधार्या हता. श्रोमंते दरेक बाबतनी बारीक माहिता लीधी हती, विदाय थती वखते धर्म करवानो हेतु संक्षेपमां जाणवानी इच्छा प्रदर्शित करी हती, जेनो मि. मगनछाल वैद्य मननी र्शुद्धि माटे, के जे विना स्वपरनुं हित वास्तविक थइ शकतुं नथी एवो खुलासो आप्यो हतो. श्री. महा-राजा साहेब तेथी घणा खुशी थया हता.

कॉन्फ रन्सना प्रमुख साहेब,चार जनरल सेकेटरी साहेब अने बहारथी पधा रेला अन्य विद्वानो तथा राठशाहुकारोए पण ते जोइने पोतानो संतोष जाहेर कर्यो हतो.

आ प्रदर्शननी योजना करवा माटे ते युवक मंडलने अने सूचनाओ अथवा वस्तुओ विगेरे आपी सहाय करनार परम पूज्य मुनिमहाराजा, अने-सद्गृहस्थो, खा. बा. विद्याधिकारी जमरोदजी दलाल, रा. बा. हरगोविंददास कांटावाली, रा. बा. छगनलाल मोदी, खा बा. म्युझियम सपरीन्टेन्डंट, प्रोफेसर मसाणी, रा. बा. कलाभवन प्रिन्सीपाल रावजीभाइ पटेल विगेरे एमने धन्यवाद घंटेले.

२४ आ कॉन्करन्सना जूदा जूदा प्रसंगोना फोटो लेवानी तक वडोदराना नामांकित फोटोयाफरोए जवा दीधी नहोती. श्री युव फोटोप्राफ. राज फत्तेसिंहराव महाराजे प्रदर्शन खुल्लुं मूक्युं ते वखतनो फोटो रा. रा. चिपळुणकर डॉक्टर एमणे छीधो हतो. प्रमुख साहेबनी स्वारीनो, कॉन्फरन्सना पेहेला दिवसनी बेठकनो, अने श्री. महाराजा साहेब लाक्षाणिक प्रद-र्शन जोवा पधार्या त्यारे श्रीमंत साथे जैन प्रेज्युएटोनो फोटो विविधकलामंदिर वाळाए उतार्थो हतो. वॉलंटीयरोनो फोटो मि. मणिलाल छगनलाल मोदीए पाड्यो हतो. मि. माणेकलाल अंबाराम डॉक्टरे आ प्रसंग माटे खास छपावेली सुंदर आल्बममां पण मि. मणिलाले लीधेला केटलाक फोटा बीज रूप हता.

२९ संसारथी विरक्त थयेला मुनिमहाराजा हमेश स्वपरना उपकार माटे मुनिमहाराजानी स-हानुभूति. विहारादि परिषह सहन करी भव्य जीवोने तारवाने उपदेश करे छे. ते मुजब परमपूज्य श्रीकमल्लिय सूरि महाराज शिष्य परिवार साथे विचरता विचरता अहीं पधार्या हता. तेमना प्रौढ प्रताप अने ठरेल विचारथी कॉन्फरन्सना कामने घणीज पुष्टि मळी हती. तेमनी साथे उपाध्याय श्रीवीरविजयजी महाराज हता. तेमना आनंदी स्वभाव अने मधुर वचनोथी पण काम करनाराने घणुं प्रोत्साहन मळतुं हतुं. कॉन्फरन्सनी त्रणे दिवसनी बेठकोमां गावानां बोधयुक्त गायनो तेम-नीज प्रसादीरूप हतां.

मुनिराज श्रीहंसविजयजी, पं. श्रीनेमविजयजी अने सन्मित्र मुनि कर्पूर विजयजी एमणे विषयो तथा प्रदर्शननी बाबतमां घणीज अगत्यनी सूचनाओ करी हती. जो के तेमांनी केटलीक अमल्मां मूकी शकाई नहोती. प्रवर्तक श्रीकांति-विजयजी महाराजे जाते पधारी भाग लेवानी उत्सुकता देखाडी हती. पण वखतनी प्रतिकुल्ता तेमनी इच्छा पूर्ण करवामां अंतरायभूत धई हती. ए शिवाय पंन्यास श्रीकमलविजयजी महाराज, पं. श्रीचतुराविजयजी महाराज, पं. श्रीसिद्धिवि-जयजी महाराज, मुनिराज श्रीअमराविजयजी, मुनिराज श्रीवछभविजयजी, मुनि-राज श्रीआनंदसागरजी, मुनिराज श्रीबुद्धिसागरजी, आदि मुनिवर्योए पण जूदा जूदा प्रकारे दिल्सोजी बतावी हती. ए रीते जे जे मुनिमहाराजीए आ काममां पोतानी सहानुभूति दर्शावी हती ते सर्वेनो अमे खरा अंतःकरणथी उपकार मानी अप्रीति अविनयादि थयो होय ते माटे क्षमा याचीए छीए. २६ कॉन्फरन्स संबंधी अरजीओ, जाहेरातो, कंकोत्रीओ, प्रतिनिधि-मुद्रण कामनी अनु-मुद्रण कामनी अनु-सर्व मुद्रण काम अहींना जाणीता श्रीसयाजीविजय प्रेसमा कराव्युं हतुं. ते प्रेसना मालीक मि. माणेकलाल अंवाराम ढॉक्टर, कॉन्फरन्स जाणे पोताने त्यांज भरावानी होय अने पोते तेना एक अंग रूपज होयनी तेम, कमीटीनी दरेक हीलचालमां उल्लटथी सामेल थई जरूर पडतां पोतानुं चालु काम पण बंध राखीने अने कार्यक्रम विगेरे हेवाल राजनारोज प्रसिद्ध करी सकाय तेटला माटे खास खरादेलुं ट्रेडलप्रेस मंडपना कंपाउंडमांना तंबुमांज राखीने जे ते काम सारीारीते अनुकुळताथी करी आपता हता.ते बदल खरा अंतःकरणर्थी तेमनो आभार मानी उत्तेजन आपवुं घटे छे.

२७ गमे ते एकाद कोमनो सुधारो पण देशना उत्कर्षनो वखत नजीक छाववामां साधनभूत छे एम मानी तेवा प्रकारनी हाँछ पत्रकारोनुं स्तुत्य वळण. चालोमां सर्व देशहितेच्छुए बनतो आश्रय आपवो जेईए, एतुं कहेवा करतां ते प्रमाणे वर्तीने दाखले बसाडनारा विरला होष छ. मुंबई समाचार, सांज वर्तमान, जामे विगेरे दैनिक वर्तमानोना, गुजराती, केसरी, सयाजो विजय, जैन आदि साप्ताहिक पत्रोना, अने जैनधर्मप्रकाश, आत्मानंदप्रकाश, आ-त्मानंदपत्रिका प्रमुख मासिकोना अधिपति साहेबोए कॉन्फरन्स संबधे कमीटींनी हील्चालो, जाहेरातो तथा खबरो प्रसिद्धिमां मूकी मनन करवा योग्य सूचनाओ करी अने कॉन्फरन्सनो हेवाल लेवा माटे पोताना रिपोर्टरो मोकलीने जैन कॉन्फरन्स प्रति ने उदार वल्लण देखाडचुं छे ते खरेखर स्तुत्य छे.

२८ आ काम पार पाडवा माटे मोइतां नाणां मेळववाने स्वांगत फंड उघाडवामां आव्युं हतुं. ते भराववामां फंड कमीटीए तेमज उपज्ञ. सदर कमीटी नीमातां अगाउ अने पछीथी पण बींजा घणा सद्गृहस्थोए स्तुत्य प्रयास छीधो हतो. फंडमां एकंदर रु. १०५३५-१२-० भराया हता, ते पैकी रु. १२५ शिवाय बधा वसूल थया छे. फंडमां नाणां भरी संघभक्तिमां पोतानी लक्ष्मीनो सदुपयोग करनार सद्गृहस्थो अने धर्म द्वील बानुओनां नामोनी यादी (नि॰ झ) आ साथे जोडी छे.

For Personal & Private Use Only

कॉन्फरन्स मंडपमां पोतानी खुशीथा जोवा माटे पधारनार व्हिझिटर माटे टिकोटो काढी हती. पुरुषो माटे रिझर्व्डना रु. ३ अने अनरिझर्व्डना रु. २ राख्या हता. स्त्रीओने नीमे फीथी दाखल करी हती. ए टीकीटोना वेचाण खाते रु २३६१ उपज्या छे अने कमीटीओ हस्तक वधेल्रो सामान वेचायो तेना रु. २१९९-३-० आव्या छे.

२९ हवे कॅान्फरन्स निमित्ते कइ कइ बाबतमां केटलो खर्च थयो ते सम-जवा सारु जूदा जूदी कमीटीओ तरफथी आवेला हिसाब खर्च जपरथी एक तारवणी पत्र (नि॰ जा) लैयार कयों छे, ते अवलोकनमां लईए. तेमां कुल खर्च रु. १४१४३-०-२ नो बताव्यो छे, पण जो तेमांथी प्रेक्षकोनी टिकीटोना तथा वधेला मालना वेचाणना मळी रु. ४५६०-२-० बाद करीए तो नीवल खर्च रु. ९५८२-१२-३ नो एटले फंडनी उपज करतां कमी थयेलो मालम पडगे.

३० उपर जणाव्या प्रमाणे वडोदराना श्रीसंघे नीमेळी सिंसेप्शन कमीटीए स्वधर्म अने स्वजातिना अम्युदय माटे जे परिश्रम सुभ परिणाम. उठाव्यो हतो तेनुं परिणाम केवुं शुम आव्युं हतुं, ते कॉ-उठाव्यो हतो तेनुं परिणाम केवुं शुम आव्युं हतुं, ते कॉ-नफरन्सनी बेठकोमां अने पछीथी थयेछा कामकाजना हेवाछ तथा ते संबंधे नामांकित पत्रकारोए उचारेछा अभिप्राय उपरथी निश्चित थइ शकवा जेवुं छे. माटे ते अवछोकनमां छेवानी विनंती करी अने ते महान् मेळावडो परिपूर्ण उतारवामां उमंगर्थी भाग छेनार सर्वे साहेबोनो उपकार मानी आरिपोर्ट समाप्त करीए छीए.

> सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां । जैनं जयति द्यासनम् ॥ १ ॥



( २० ) नि∘ क.

## रिसेप्शन कमीटीनी यादी.

#### प्रमुख.

झवेरी फत्तहभाइ अमीचंद.

उपप्रमुख.

वैद्य हीराभाइ दल्लपतभाइ. राजवैद्य. झवेरी लीलाभाई रायचंद.

#### चीफ सेकेटरीओ.

डॉक्टर बालाभाइ मगनलाल. L. M. & s. दरबार फिाईरियन.

झवेरी माणेकलाल घेलाभाई.

#### जनरल सुपरिंटेंडंटो.

झवेरी फर्कारमाइ घेळामाई. माजी दरवार झवेरी.

झवेरी कल्याणभाइ अमीचंद. दरबार झवेरी.

#### ट्रेझरर.

झवेरी जेसंगभाई मगनलालनी पेढी.

#### फंड कमीटी.

प्रमुख. अवेरी चुनीलाल ईश्वरदास.

सेकेटर्रा.

गांधी गुलाबचंद काळीदास. मेम्बरो

झवेरी जेसंगमाइ कंकुचंद. शा. दामोदर नरोतम. कोठारी जमनादास रामदास. पटवा नाथाभाइ नानशा. शा. जेठाभाइ सुरचंद. शा. जेगाभाइ मनसुख. शा. जगनलाल मनसुख. शा. बेचरदास घेलाभाइ. शा. अंबालाल केशवलाल. सवेरी सरूपचंद घोळीदास.

(मारवाडी)

शा. गुलावचंद खेमराज. शा. हीराखाल पत्नालाल. शा. ताराचंद रीखवदास.

( छाणीना )

शा. कीलाभाइ पानाचंद. शा. केशवलाल गरबडभाइ. शा. नगीनदास बापुलाल. शा. जमनादास हीराचंद.

#### ( डभोइना )

( ?? )

शा. मोहनलाल रूपचंद. शा. चुनीलाल कस्तुरचंद. शा. नेमचंद तलकचंद. शा. दलसुख करमचंद. शा. वजेचंद चुनीलाल.

( पाद्राना )

शा. कीलाभाई मुळचंद. वकील दलपतभाई ललुभाई. शा. अमरतलाल वनमाळी.

(दरापुराना)

शाः झवेरभाई हीराचंद. गांधी नहालचदं काळोदास. शाः ख़शालभाई मोहनलाल.

सेंटूल कमीटी.

**प्रमुख**. झवेरी गोकळभाई दु**छवदास**.

#### सेकेटरी.

वैद्य मगनलाल चुनीलाल.

#### मेम्बरो.

वकील नंदलाल ललुभाई. वकील माहनलाल हीमचंद. झवेरी शिखरचंद सवइचंद. शा. नगीनदास गरबड. शा. मगनलाल माणेकचंद. शा. नेमचंद बेचरदास.

#### उतारा कमीटी. प्रमुख. वैद्य बापुभाइ हीराभाइ. सेक्रेटरी. गांधी जमनादास जगजविन. मेम्बरो. शवेरी ईश्वरभाई गुलाबचंद, सवेरी नगीनभाइ ईश्वरदास. झवेरी प्रेमचंद घेलाभाई. कोठारी गोरधन रामदास. पा. मगनलाल मनसुख. सरैया केशवलाल पानाचंद. मारवाडी फताजी आयदान. शा. नाथाभाई मनसुख. शा. लीमचंद दीपचंद. शा. गोरधन दलपत. शा. पानाचंद धर्मचंद. शा. पानाचंद अमथा. शा. नानाभाई वेलचंद.

भोजन कमीटी. प्रमुख. मोदी मोतीलाल लाल्दास. सेक्रेटरी. सवेरी लोटेलाक लालमाई.

#### मेम्बरो.

शा. दलपत नगजीवन. शा. सुरचंद गुलावचंद. शा. वाडीलाल खुशालभाई. शा. मोतीलाल वीरचंद. शा. नेमचंद मलुकचंद. झवेरी छोटेलल कीलामाई. झवेरी करमचंद धर्मचंद. शा. जमनादास कीलामाई. शा. बापुलाल दामोदर. गांधी नरोतम जमनादास पटवा केवळभाई गुलाबचंद. शा. माणेकलाल हीमचंद.

मंडप, कमीटी. प्रमुख. झवेरी नालामाई ुछोटेलाड. सेक्रेटरी. गांधी फतेभाई लालमाई-जॉ. सेक्रेटरी. मोदी मोतीलाल नेमचंद.

मेम्बरो.

सवेरी पुरुषोत्तम केशवलाल सवेरी रुदेचंद सवईचंद शा. मगनलाल हरजीवन मोदी मगनलाल रणछोड.

हेल्थ कमीटी. प्रमुख. वैद्य चुनीलाल हरीभाई. सेक्रेटरी. वैद्य भाइलाल माणेकलाल.

#### मेम्बरो.

डॉ. गोंविंदराव दोपाजी. डॉ. मणिलाल गीरधर. डॉ. भगवानदास झवरभाई. वैद्य. माणेकलाल दलपत. वैद्य. गुलाबचंद त्रीमांवन. वैद्य. जमनादास चुनीलाल. वैद्य. डाह्याभाई हिंमतभाई.

#### वॉलंटोयर कमीटी.

प्रमुख-नाणावटी मणिलाल बाळाभाई B. A. L. L. B.

#### सेकेटरी

गांधी वाडीलाल लालभाई.

#### मेम्बरो.

( 23 )

मैंवेरी भीखुभाइ वीरचंद. सवेरी जेसंगभाई फकीरमाई. सवेरी केसरीचंद देवचंद. मवेरी चंदुलाल पुरुषोत्तम. वैद्य बालुमाई मूळजीभाइ. वैद्य मणिडाड बापुभाई. गांधी अमथालाल नानाभाई. गांधी सकरचंद नगजीवन. गांधी सवइचंद जगजीवन. गांधी खुबचंद फत्तेभाई. मोदी मणिछाल मगनलाल. घीया सरुपचंद गरबड. शा. त्रीकमलाल मगनलाल. शा. रणछोडमाई मनसूल. शा. केशवलाल वीरचंद, शा. जीवणलाल कीशांर. शा. हिंमतलाज दामोदर.

#### नि ख

## श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराज गायकवाड सेनाखासखेल समझेरबहादूर, वडोदरा राज्य, एमनी हुजूरमां.

अमो वडोद्राना श्रीजैन संघनी नम्रतापूर्वक विनंति एवी के,

सांसारिक, धार्मिक, सामाजिक अने केळवणीनी बाबतमां पोतानी कोममां सुधारो करी तेने आगळ आणवाना हेतुथी आखा हिंदमां जैन कॉन्फरन्सनी ह- वसता जैनेाए पोतानी एक आ्रीजैन कॉन्फरन्स आजथी बे कीकत. वरस उपर स्थापी हती, अने धणुं करीने श्री. महाराजा

साहेबना स्मरणमां पण हरो के गयेज वरसे ते कॉन्फरन्स मुंबईमां मळी हती, जे वेळा ते कॉन्फरन्से सदर बाबतोमां घणा प्रशंसनीय ठरावे। कर्या हता, एटछुंज नहीं पण लगभग रु. १५०००० नुं फंड पण तेवी जूदी जूदी बाबतो माटे कर्युं इतुं.

आप नामदार जेवा बाहोश, विद्वान् अने पोतानी प्रजाने बल्के आखा श्रीमंते ते प्रत्ये बता-बेळी दिल्ल्सोजी. हमेशां ते माटे भाषणो, मूचनाओ, सखावतो अने एवी बीजी मददर्थी उत्तेजन आपनारा महाराजाने आवी हीछचाल्लथी घणीज खुशी ब संतोष थाय ए स्वाभाविक छे; अने अमोने जाणीने घणो हर्ष थयो हतो के आंमंते अमो जैनोनी ए हील्टचाल्लनी सर्व हकीकत पूर्वे घणाज ध्यानथी अने संताषथी

वांची हती, एटखुंन नहीं पण ते माटे पडपूछ पण करी हती.

हवे आप नामदार जाणो छो तेम ए कॅान्फरन्सनी त्रीजी वार्षिक सभा अत्रे (वडोदरामां) आवता कार्तिक वद ( नर्वेबर ) मां कॉन्फरन्स अत्रे भर-बा माटे करेली गोठवण. भरावानी छे. तेना खरच माटे अगाउथी पैसा संबंधी करवी जोइती व्यवस्थानी अमोए शरुवात करी छे अने आप नामदार जाणीने खुशी थशो के, घणे अंशे अमो आप नामदारनी वफादार प्रजा तेने पहोंची वळवा बनतो यत्न करीड़ां.

आ स्थळे अमारुं एवं कहेवं कदाच आप नामदारनी स्तुति कर्या जेवं गणाय तो पण ए तो नक्कीज छे के, श्री वडोदराना श्रीमंतने कॉन्फरन्समां जैन संघे ए कॉन्फरन्स वडोदरामां आ वर्षे भरवानुं जे आमंत्रण मुंबईमां कर्युं ते आप नामदार जेवा उमंगी

राज्यपितानी सहायता उपर आधार राखीनेज कयुँ छे. खमुस करीने ने राज्य-कर्ता पोतानी दरेक मदद अने जात महेतन एवां कार्य माटे करे ते महाराजाने पोतानीज प्रजाने एवी रीते काम करती जोईने बमणी उर्भि थाय अने तेथी पोतानी पुरती सहाय आपी तेना बळने बमणुं करे ए निसःशंयज छे. माटे हवे आप नामदारने अंगत विनंती ए छे के, आप नामदार कुपा करी कॉन्फरन्समां पधारशो अने अमी प्रजाजनाने योग्य उत्तेजन अने उत्साह आपवा माटे उप-देशना बे शब्दो कहेवा साथे कॉन्फरन्सना कामनी शुभ शरुवात करशो तथा कॉन्फरन्सनुं काम चाले त्यां सुधी अवकाश प्रमाणे पधारी अमारा कार्यने सहाय अने बळ आपशो.

ए शिवाय बीनी ज जे मदद अने साधनो आप नामदार तरफथीज वगर भाडे अने बिन खर्चें मळवा आशा राखीए छीए, ते नीचे राज्य तरफनी वगर भाडे अने बीन खर्चे जो- प्रमाणे:----ईती मदद.

- १ आ कॉन्फरन्सना ९००० थी ६००० माणस बेसी राके तेवा मंडप तथा तेने छगतां बीजां कामकाजो माटे राजमहेछनी सामेनी बगीखानावाळी ाविशाळ जगा, ज्यां श्री० युवराज छोटा महाराजा साहेबनां छप्न वेळा जाहेर तमासा थया हता ते जगा कॉन्फरन्सनुं काम चाछे त्यां सुधी. २ त्यां तेटछा दिवस कीटसन छाइट या वीजळीक छाइट.
- ३ त्यां अने कॉन्फरन्सना डेलींगेटोना उतारापर वावटा, कमानो, फानसो, साफसुफ, छंटकाव, बंबा अने एवीज सुधराइखातानी योग्य लागे ते मदद.
- ४ मंडपमां गंदोबस्त माटे तेमन ज्यां ज्यां जरूर होय त्यां तेटला दिवस पोलीसनी पुरती मदद.
- ५ खानगी खातामांथी शमीयाना, तंबुओ, रावटीओ, तेने लगता सामान, खुरशाओ, दीवा, टेवलो, सोफा वगेरे मळी शके तेटलां.

- इ बहारथी आवेल्ला आशरे १५००--२००० मानवंत परोणाओने उत-रवा माटे अपाइ शके तेवां सरकारी मकानो, तेमने माटे जवा आववाने बनी शके तेटली घोडा गाडीओ तथा सामान लाववा माटे गाडी, गाडां तेमज एवी खानगीखातानी बीजी मदद.
- ७ आप नामदार कॉन्फरन्स मंडपमां पधारो ते वेळा तथा कॉन्फरन्सने छगता मेळावडा विगेरे माटे मालीटरी बेंड.
- < कॉन्फरन्स मंडपनी जगामां पाणीना नळो तथा १-७ दिवस सुधी रात दहाडो पाणीना नळ उघाडा रहेवानी गोठवण.
- ९ प्रसंग वशात् कांइ विशेश जरूरियातो जणाइ आवतां आप नामदारने फरी श्रम आपवो न पडे नेते मळे तेवी व्यवस्था.

उपर छखेछां साधनो अही मुंबई विगेरेनी पेठे बीजी रीते दुर्मिछ छे माटे ते मळवा श्रीमंतनान चरण कमळमां विनंती गुजारी छे तो अमो प्रजाजनोनी शोभा ते राज्यनीज शोमा छे एम राज्यधर्म प्रमाणे मानी ते आपवा माटे हुक्रम कर-वानी कृपा थशे.

अत्रे अमो मानपूर्वक जणावीर्शुं के आप नामद्रार हमेशां राजा महारा जाओ अने एवा मानवंत परोणाओने दरेक रीतनुं मान श्रीमंतनी एवां सुधा-रानां कामो माटे इमेशनी सन्मान आपो छो अने आवां प्रजाहितनां कामो करनारने लागणी. पण द्रव्यनी तेमज बीजा साधनोनी मदद आपो छो

एटलुंज नही पण ठेठ अमदावाद सुधी जाते पधारी हिंदी कॉंग्रेस प्रदर्शननुं प्रमुख-पद स्वीकारी ते देशहितना कार्यने मदद आपी हती. ता आ जैन कॉन्फरन्स ज्यारे आप नामदारनी राजधानीमां श्रीमंत सरकारनी एक वफादार प्रजा तरफथी मराय छे, त्यारे तो आप नामदार अमारी मागणीओ जरूर स्वीकारशो एवी अमोने पूर्ण खात्री छे.

छेवटे अमो प्रार्थीए छीए के, आप नामदारना उदार आश्रययी अमारो ए हीलचाल सफळ थाओ अने आप नामदार दीर्घायु अने प्रार्थना. अम्यदय साथे अखंड कीर्ति मेळवो.

वडोदरा, आज्ञांकित सेवको, ता. २९-५-१९०४. } झवेरी फतेभाई अमीचंद. वेद द्वीराभाई दल्लपतभाई विगेरे.

Ę

यादी रा. रा. झवेरी फतेहभाई अमीचंद तथा हीराभाई दलपतभाई विगेरे जैन संघना आगेवानो तरफ दिवान कचेरीथी लखवानी एवी के,

- १ सरकारी सामान आपवानो ते सरकारी कामने कई पण अडचण नहीं आवतां जेटलो सहेलाइथी आपी राकाय ते आपवामां आवशे.
- पोल्लीसना पहेरा माटे पण एज प्रमाणे करवामां आवशे.
- १ पाणीना नळ तथा लाइट माटे जे नीवळ खरच नळ जोडाणनो, तेमज ं छाइट करवानो थाय ते तथा मंडपनी जगा व सरकारी मकान माटे जे विशेष खरच थाय ते कॉन्फरन्स कमीटीए करवानो छे.
- 8 मंडप माटे मागेली जगा तथा बनी शके ते प्रमाणे सरकारी मकान तथा सामान आपवामां आवशे अने तेनी लागतनी स्पेशीयल केस तरीके माफी गणवामां आवशे.
- ५ श्रीमंत सरकार महाराजा साहेवने कॉन्फरन्समां पधारवा वावत विनती करवामां आवी छे. ते बाबत स्वारी वडोदरे आव्या पछी कॉन्फरन्स कभीटी साथे विचार करी नीकाल करवामां आवशे. आ बाबत विचार थइ विनंती मान्य थया पछी पण श्रीमंत सरकार महाराजा साहेब काई अडचणने लीधे जाते पधारी नहीं राके तो तेमनी गेर हाजरीने

थयेलं

लीघे कॉन्फरन्सना कामने अडचण नहीं आववाना हेतुथी बीजी तजवीज जरूर लागे तो करी राखवी.

६ सरकारी सामान तथा जगा तथा बीजी जोइती सगवड विगेरे आपवा छेवानी बाबतमां सरकाी कारखानदार अथवा अमलदार अने कमीटी वच्चे कंइ कारणसर वांधो पडे तो तेनो निकाल नामदार दिवान साहेब तरफथी अथवा नामदार साहेब जेने अधिकार आपे तेमना तरफथी थरो अने ते निकाल छेवटनो गणवामां आवरो.

आ प्रमाणे फरमान थयुं छे ते जाणवामां आवशे.

१ आपना विनंतीपत्रमां मागणी करेली बाबतो संबंधे पब्लीकवर्क्स, खानगी, पोलीस अने फोजखाता तरफ अहींथी लखवामां आब्युं छे विनंतीपत्रमां नमुदक-रेली बाबतो संबंधी लाग अने ते साथे सदर विनंतीपत्रनी नकल पण मोकल्वामां तावळगता खाता तरफ आवी छे. ता. १७ माहे जुन सन १९०४. इस्रवामां आब्युं छ.

> हुकमथी नगीनभाइ संतेाकभाइ मुप्रीन्टेन्डेंट.

> > www.jainelibrary.org

#### नि. घ.

कल्याणमन्दिर मुदार मवद्यभेदि देवार्यवीर मवनम्य निवेदयामः ॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेतं श्रीजैनज्ञासनसरोजदिनेज्ञसङ्घ्रम् ॥ १॥

स्वस्ति श्रीपार्श्वजिनं प्रणम्य श्री महाशुभस्थाने पूज्याराध्य, डढधर्मवान्, देवगुरुभक्तिकारक, धर्मप्रभावक, परमप्रीतिपात्र इत्यादि अनेक शुभ गुणाउंकत श्री कीखिदमतमें श्रीबडोदेसे छि. श्रीसंघ समस्तके प्रणाम अवधारियेगाजी. यहां श्रीदेव-गुरूके प्रसादसे क्षेमकुशल हे. आपकी कशल्ता हमेश चाहते हें. विशेष विज्ञा-पना कि एकांतहितकारी सर्वोत्कृष्ट श्रीजैनधर्म ओर जैनधर्मी समुदायकी त कीके लिये सब जायके असिंघके प्रतिनिधियोंका महामंडळ श्रीफलोधि पार्श्वनाथके तीर्थमें और मुंबईमें श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स के नामसे जमे हुवाथा. व्हो कॅान्फरन्सकी तिसरी सभा यहां भरनेका आमंत्रण, मुंबईमें मिळेळी दुसरी कॅान्फरन्सके बख्त, हमारे संघके.तर्फसे किया गया हे. ओर उस लिये विक्रम संवत १९६१ मार्गशोर्ष (गुजराती कार्तिक) वदि ९---६---७ ता. २७-२८-२९ माहे नवम्बर इस्वी सन १९०४ वार रवि, सोम, मंगळके रोज हमने मुन्नर किये हैं. तो उस मुबारक वक्तपे आपके तर्फसे प्रतिनिधि (डेडीगेट) के तोरसे यहां तशरीफ फरमानेके वास्ते -----के आगवानेमिसे लायक प्रतिनिधियोंकु पसंद करके भेजनेकी महेरबानी करे. ओर उन महाशयोंके नाम इस सोबत भेजी हुइ मुद्रित प्रतिनिधि–पत्रिकामें कुंकुमपात्रेका पहोंचेसे সাত दिनकी मुदतमें छिख मेजनेका करे.

बडोदा ( वीरक्षेत्र ) प्राचीन शहर हे. श्रीमंत महाराजा सयाजीराव गायकवाड सरकारकी राजधानी हे, ओर श्रीजिन मंदिरकी यात्राका ओर परम-पूज्य आचार्य महाराज श्री १०८ श्री कमछाविजयादि मुनि महाराजके दर्शनका योग हे. शिवाय श्रीजैन धर्मके लाक्षणिक प्रदर्शन देखनेकामी मोका हे.सो विदित होवे.

बडोदें-गुनरात. ) लि. श्रीसंघके तरफसे आश्विन सुदि १० रोज मंगल. ∫ नम्र सेवकों. बाळाभाई मगनलाल डॉक्टर. फत्तेहभाई अमीचंद झवेरी. माणेकलाल घेलाभाई झवेरी प्रमुख, कॉन्फरन्स स्वागत मंडळ. चॉफ सेकेटरीओ विगेरे. विगेरे.

## नि. ङ

कॉन्फरन्स मंडपमां लगावेलां हितवचनोनां बोर्डो.

So de

सिद्धिः स्याद्वादात् । ज्ञानकियाभ्यां मोक्षः ॥ अहिंसा परमो धर्मः । सत्येमेव जयति नानृतम् ॥ पढमं नाणं तओ दया ॥

सर्वे हि सुखिनःसन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दःखमान्रुयात् ॥ बाद्यप्राणा चृणामर्थोः हरता तं हता हि ते॥ धर्मस्य त्वरिता गतिः ।

चतुर्वगेंऽग्रणी मोंक्षो, योगस्तस्य च कारणम् । ज्ञानश्रद्धानचारित्र-रुपं रत्नत्रयी च सः ॥ परोपकाराय सतां विभूतयः॥

चित्ते वाचि कियायां च महतामेकरूपता ॥ कार्यःसंपदि नानंदः, पूर्वपुण्याभेदेहि सा । नैवापार्द विषादस्तु सा हि प्राक्पापपिष्टये ॥ न्याय्यात्पथः प्रविचर्लन्ति, पदं न धीराः ॥ विद्यागमार्थं पुत्रस्य, वृद्धर्थं यतते च यः । पुत्रं सदा साधु शास्ति, प्रीतिक्टत्स पिताऽनृणी ॥ यद्यदेव विद्यया क्रियते तत्त्तदेव वीयवत्तरं त्रवति ॥ जितं जगत् तेन मनो हियेन ॥ गतानुगतिको लोकः न च लोकःपारमार्थिकः ॥ सहसा विदधीत न क्रिया मविवेकः खल्वापदां पदम ॥ पंडितोऽपि वरं ज्ञत्रु ने मूर्खो हितकारक; ॥ बालादापि हितं प्राह्यम् ॥

## ( ₹ १ )

એક ખળકથી પણ હિતવચન ગ્રહણ કરવું-જે કરવું તે પેહેલું કીજે, કાલની શી વાતા ? તીરથની આશાતના નવિ કરીએ. અતિ લાેભ તે પાપનું મુલ. કડવાં કળ છે કેાધનાં. માને ગુણ જાયે ગળી, પ્રાણી, જોજે વિચારી, રે! પ્રાણી! મ કરીશ માયા લગાર. निंदा भ डरले हे। धनी पारडी रे ! સંતાેષી નર સદા સખી. મન જિત્યું તેણે જગત જિત્યું. શીયળ સંસું સુખ દા નહિ. ધોરજ માેટી વાત છે. ગાહરિયા પ્રવાહ જેમ ચાલ્યા તેમ ચાલ્યા: પરમાર્થ ઢાઇ જોતાં નથી. ટાેલટપાની વાતમાં, વખત અમ્લખ જાય; કનક દાેટી ધન આપતાં, સમજો પળ નહિ થાય. આ વાત સુણેા ને અમારી, તમે તજો સદા પરનારી. ખાટામાં ખાટા છે રંગ, મદિરાના નવ કરશા સંગ. જાગાર સદા કરવા નહીં. ેવેશ્યા પરસ્ત્રી ગમન કરવું નહીં. કેફી ચીએ વાપરવી નહીં. ત્રણ મનારથ ચિંતવવા. હાયે તે સાથે, દેશા તેવું પામશા, વાવશા તેવું લણશા. શીળ રહિત નર કુટડા, જેવાં આવળ પૂલ; શીળ સુગંધે જે ભર્યા, તે માણસ ખહુ મૂલ. ક્ષમા સાર ચંદન રસે, સિચાે ચિત્ત પવિત્ર; દયા વેલ મંડપ તળે, રહેા લહેા સુખ મિત્ર. સજ્જન મુખ અમૃત લવે, દુર્જન વિષની ખાણ. સાેબત તેવી અસર. જયણા જનની ધર્મની.

કરમને શરમ નથી. ક્ષણ લાખેણા જાય, જો સાધી શકે તેા સાધ. સ વેગ રંગ તરંગ ઝીલે, માર્ગ શુદ્ધ કહે સુધા; તેહની સેવા કીજીએ, જેમ પીજીએ સમતા સુધા. સમતાનાં કળ મીઠાં છે. ખાડા ખાદ તે પડે. पंडित ते के निरक्षिभान. ઇચ્છા રાધન તપ મનાહાર. છતી શક્તિ ગાપવે તે ચાર. કર્મ કટક જિતે તે જિન, તેથી ત્રાસે તે છે દીન. ખૂરખ સાથે ગાઠડી, પગ પગ હાય કલેશ. અવગુણ પર જે ગુણ કરે, તે વિરલા જગ જોય. હીંણાતણા જે સંગ ન તજે, તેહના ગ્રુણ નવિ રહે; જ્યું જલધિ જળમાં ભળ્યું ગાંગા નીર લૂણપછું લહે. સંપ ત્યાં જંપ. કાઇને તુંકાર તેાછડે થેાલાવવું નહિ. 🗠 કન્યાનું દ્રવ્ય લેવું નહિ. ખાેટી સહી સાક્ષી કરવી નહિ. વગર તપાસે પ્રરિયાદી કરવી નહિ. રાજ્ય વિરુદ્ધ, દેશ, વિરુદ્ધ સંધ વિરુદ્ધ અને ધર્મ વિરુદ્ધ આચરવું નહિ. હમેશ વહેલા ઉઠી ઉપાધિમુક્ત થવું ને નવકાર મહામંત્ર-નું સ્મરણ કરવું. માતા, પિતા, દેવ, ગુરૂ ને સંધની ભક્તિ કરવી. સદ્યુર્તુ વ્યાખ્યાન સાંભળવું. જ્ઞાનવૃદ્ધ, ક્રિયાવૃદ્ધ અને વયેાવૃદ્ધના વિનય કરવા. નીચનાે પરિચય કરવાે નહિ. પરકી આશા. સદા નિરાશા. કરરાજ નવું નવું વાંચવું કે સાંભળવું, ભણેલું

( ३३ )

યાદ કરવું, ને શંકાઓનું સમાધાન કરી લેવું. પારકી બૂલ કાઢતાં પહેલાં પાતાની બૂલ તપાસવી. પાતાના ઇનસાક્ પાતેજ કરવા. પૂર્વ કે દક્ષિણ તરપ્ર માથું રાખી સુવું. જે સ્વર ચાલતા હાય તે બાજીના પગ પહેલાં મૂકવા. ગૃહ કામ કરતાં છતાં, જે રહે અનુભવ દક્ષ; ધ્યાયે સદા જિનેશપદ, થાય મુક્ત પ્રસક્ષ. પરપદ માને આપના, તાે ભવ ભ્રમણ ન જાય; જો જાણે નિજ રૂપને, તવ પાતે શિવ થાય.

( સ્ત્રીએા માટે ખાસ. ) પરશું પ્રેમેરે ! હસીય ન બાેલીએ. દાંત દેખાડી રે ! ગુદ્ય ન ખાેલીએ. નટવિટ નર શું રે ! નયણ ન જોડીએ. મારગ જાતાં રે ! આધું આેઢીએ. વ્યસની સાથે રે ! વાત ન ક્રીજીએ. દ્રાથા દ્રાથા રે ! તાલી ન લીજીએ, શીયળ પ્રભાવે રે ! જીઓ સાળે સતી. ત્રિભ્રુવન માંહે રે ! તેહ થઇ છતી.

जन मन रंजन धर्मको, मूल्लन एक बदाम ॥ लघुतासे प्रभुता, अरु प्रभुतासे प्रभ् दूर ॥ नारी चित्त देखना, विकार वेदना। जिनंदचंद देखना, शांतिपावना ॥ ममता रांड भांडकी जाई ॥ रवि दुजो, तिजो नयन, अंतर भावी प्रकाश । करो धंध सब परिहरी, एक विवेक अम्यास ॥ जाग, अवलोक निज शुद्धता स्वरूपकी। शोभा नहि कही जात, चिदानंद भूपकी ॥ घट घट अंतर जिन वसे घटघट अंतर जैन ।

मत मंदिराके पानमें मतवाले समजे न ॥ शुद्ध उपयोग ने समताधारी, ज्ञानध्यान मनोहारी। कर्म कलंकुकु दूर निवारी, जीव वरे झिवनारी ॥ जब लग तेरा पुण्यका, पहूचे नहि करार । तबलुग तुमको माफ है, अवगुण करो हजार ॥ पुण्य पुरा जब होत है, उदय होत है पाप। दाझे वनकी लाकडी, प्रगटे आपोआप ॥ जिन समरो, जिन चिंतवो, जिन ध्यावो मन गुद्ध । क्षणमां पामो परम पद, थइ पोते प्रतिबुद्ध ॥ देह गेह धन धान्य ते, पर, जड, पुदुछ जाणे । ज्ञाता दृष्टा आप तुं, चेतन सुख गुण खाण ॥ तुल्लसी हाय गरीवकी कबून खाली जाय। मुवा ढोरके चामसे, छोह भस्म हो जाय ॥ मन मावत, तन चंचल हस्ति, मस्ती है बलकी । सद्गुरु अंकुश धरो शिरपर, चल मारग सतकी ॥ ज्ञानविना व्यवहारको, कहां बनावत वाच । रत्न कहो को काचको, अंत काच सो काच ॥ अंतर लक्ष रहित ते अंध, जानत नाई मोक्ष अरु बंध ॥ दुःखमे सब को प्रभु भजे, सुखमे भजे न कोय । जो सुखमे प्रभुकु भजे, तो दुःख कहांसे होय ॥ कथनी कथे सब कोय, रहणी अति दुर्ऌभ होय । कथनी साकर सम मोठी, रहिणी अति लागे अनिठी ॥ जननी जणजे भक्त कां, कां दाता, कां शूर। नहि तो रहेजे वांझणी, मत गुमावे नूर ॥ चालना जरूर जाकु, ताकु कैसा सोवना ॥ बूरा बूरा सब कहे, बूरा न दिसे कोय । जो घट शोधुं आपणो, तो मुजसे बूरा न कोय ॥

Let us be then up and doing, With a heart for any fate; Still achieving, still pursuing, Learn to labour and to wait. Example is better than precept.

## (३९)

#### नि.च.

## श्री जैन लाक्षणिक प्रदर्शन कमीटी.

प्रमुख. झवेरी छौछाभाई रायचंद.

## सेक्रेटरी.

झवेरी लालमाई कल्याणभाई. मोदी मगनलाल रणछोड.

#### मेंबरो.

वैद्य मगनळाल चुनोलाल. वकील नंदलाल लल्लुभाई. झवेरी जेशींगभाई फकीरभाई गांधी वाडीलाल लालभाई. झवेरी अंवालाल नानाभाई. झवेरी भोखुभाई वीरचंद. वेद्य मणीलाल बापुभाई नाणावटी मणीलाल बालाभाई. झवेरी उत्तमचंद नगीनचंद. झवेरी केशरीचंद बालुभाई.

झवेरी नानामाई जेठामाई. कोठारी द्वारकादास जमनादास. झवेरी मोतीचंद पानाचंद. झवेरी मगनळाळ ताराचंद. झवेरी डाह्याभाई ल्लुभाई. गांधी शकरचंद जगजीवन झवेरी वाडीलाल सरूपचंद झवेरी छलुभाई परसोत्तम. सवेरी उदेचंद सवईचंद. वैद्य डाह्याभाई हीमतलाल. झवेरी फुलचंद ललुभाई. मोदी मोतीलाल नेमचंद. झवेरी हिंमतलाल चुनीलाल. झत्रेरी जेसंगभाई कंकुचंद. शा. नेमचंद बेहेचरदास. वकील मोहनलाल हीमचंद. गांधी सवईचंद जगनीवन.

( ३६ )

## नि. छ.

## श्री जैन लाक्षणिक प्रदर्शनना सेकेटरी झवेरी लालभाई कल्याणभाईनुं भाषण.

श्रीमंत युवराज फोर्चहसिंहराव महाराज अने सद्ग्रहस्थो !

अमारा आमंत्र गने मान आपी आप साहेबोए अत्रे पथारवानी जे तस्दी छोधी ते माटे आपने अमारी कमीटी तरफथी अभिनं न आपुं छुं श्रीजैन श्वेतांबर कोन्फरन्सनी त्रीनी वार्षिक सभा अत्रे आवता रविवारे भरावानी छे. तेने छगतुं एक प्रदर्शन खोछवानी योजना अमारा तरफथी करवामां आवी छे.

जे प्रदर्शनो आज सुधीमां भरवामां आव्यां छे, तेथी आ प्रदर्शन केईक जूदीन ढबथी करवानी योजना छे. जैन धर्ममां बीज, पांचम, आठम, अगीआरस, चौदस, पुनम, अमास ए पर्व तिथियो मानी छे. तेना तथा मोक्षमुख आपनार अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप ए नव पदना अगर ते नव अने बीजां प्रवचन ( संव ), तीर्थ आदि अगीआर मळी वीस स्थानकना आराधन माटे तपस्या करवामां आवे छे; अने ते पूर्ण थाय स्यारे तेने उजववा उजमणुं ( उद्यापन ) करवानो प्रचार धर्मना सात क्षेत्रोने पुष्ट करवा माटे पडेलो छे. तेमां पण कांइक प्रदर्शन जेवो हेतु होय एम लागे छे.

अमे प्रदर्शनमां ज्ञान, दर्शन, ने चारित्रनां उपकरणो, पवित्र वस्तुओ अने परदेशी मालनी साथे हरिफाई करी शके तेवो देशी हुन्नरकळाने माल मुकवानी योजना करी छे; अने विशेषमां जैन धर्मना पूर्वाचार्योए करेला उपदेशने आधारे केटलाक देखावो खास तैयार कराव्या छे, जेमां धर्मना सिद्धांतोने कुद्रती देखावोनां रूप आपी प्रेक्षकोनुं धर्म तरफ ध्यान खचवा प्रयत्न कर्यो छे.

प्रदर्शननी वस्तुना छ जथा कर्या छे. तेमां पहेलो भाग ( जथो ) उपदेशक देखावोनो राख्यो छे, अने तने लईनेज प्रदर्शनने लाक्षणिक प्रदर्शननुं नाम आप्य छे. चार देखावो आवी गया छे, अने बीजा वधु मनहर देखावो कलकत्तेथी तथा जयपुरयी आववाना छे. सौथी ध्यान खेचनारा देखाव जगत् प्रासिद्ध आहेमाचार्य महाराजे गूर्जरेश्वर सिद्धराज जयसिंहने धर्मसन्मुख करवा माट दीधेला उपदश उपरथी निपजावेल्रो चार संजीवनी न्यायनो छे. बीजा देखावो अन्य धर्मनी निंदानो परिहार, एकांतवादथी थती भूले, जनस्वभावनी विवित्रता, गृहस्थीनी मोह दशा, मनःशुद्धि अने खरो मोक्ष मार्ग समजाववा माटे योजेला छे.

बोजा ज्ञान विभागमां, जैन धर्मना प्राचीन प्रंथोना नमुना, जेमां ताडपत्र उपर अने सोनाना अक्षरे छवेछी प्रतो छे. ते पूर्व काळना महा पुरुषोनी ढढ धर्म श्रद्धा बतावी आपे छे. एक प्रततो गृहस्थाश्रममां चित्रकूटना राजाना पुरोहित अने पछीथी जैन धर्मनी दिक्षा अंगीकार कारनार श्रीहरिभद्र सूरिनी रचेछी छछितविस्तरा चैत्यस्तववृत्तिनी छे. ए सिवाय बीजा उपगरणोमां हाथीदांतनुं उत्तम कारीगरीनुं चौद स्वप्ननुं एक पाठुं अने साचा मोतीना भरत कामनुं पाठुं पाटछी, चाबखी विगेरे अति आल्हादकारी छे; अने बुद्धिवर्धक वस्तुओनो संग्रह विद्याविछासीओने ध्यानमां छेवा योग्य छे.

त्रीजा दर्शन विभागमां, तीर्थकर भगवान् जेना उपर विराजी भव्य जॉवोने संसारसमुद्रमांथी तारनार देशना देना हता, तेना रूपाल आपवा माटे अहींना श्रीसंघे करावेलुं एक चांदीनुं समवसरण, ते सिवाय सम्मेत शिखर विगरे तीर्थना चित्रपटो चित्ताकर्षक छे.

चोथा चारित्र विभागमां साधनां उपकरणो विगेरे छ.

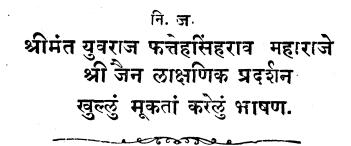
पांचमां विभागमां, अहिंसा परमा धर्मः ए सिद्धांत प्रमाणे चरबी विगेरेने। स्पर्श न आवे तेवा साबु मणिवत्तीओ विगेरेनो संग्रह छे, जेनो उपयोग मंदिरादि पवित्र स्थानोमां पण करवा हरकत आवे तेम नथी.

छेळा जथामां, परदेशी मालनी साथे हरीफाई करी शके ते वा देशी मालनो संग्रह करवानी योजना छे.

उपर प्रमाणे अमे प्रथम प्रयास कर्यों छे, अने तेने माटे पुरता वखत मळा शक्यो नथी, तेथी प्रदर्शन जोईए तेवा विस्तारवाळुं थई शक्युं नथी. हवे श्रीमंत युवराज फत्तेसिंहराव महाराजे छपा करी अमारुं आमंत्रण स्वीकार्युं अने कडी प्रांतमांथी आ प्रदर्शन उवाडवा माटे खास पथारवानी तस्दी लीधी तेने माटे हुं फरीथी अभिनंदन आपुं छुं अने तेओश्रीने आ प्रदर्शन खुल्लुं मूकवा माटे विनंती करुं छुं.

९ श्रीआनंदघनजीमहाराज छत षड्दर्शन जिन अगभणीजे ई० स्तवन उपरथी समय पुरुषनो २ पांच आंधळा अने हाथीनो ३ छऌश्या कठीआरने आंबानो ४ मधुबिंदुनो ५ धोबीडानी सजुझायनो ६ वणजारानी सजुझायनो.

#### ( 36 )



I regret to say that the previously arranged and pressing engagements have prevented my father the Maharaja Saheb from presiding at the opening ceremony of your Exhibition; but wishing to show his great sympathy with the movement Maharaja Saheb has asked me to come forward and welcome you to Baroda in his name and in the name of his people. I can assure you that much as I feel my inability to fill adequately the place of my father, I have great pleasure in presiding here to day; that pleasure is enhanced by the sight of this large assembly which is a sign of the growing unity of India, of the effort made to carry on free enquiry in matters ethical and religious, and of the desire to progress on the part of India's people.

It is a source of genuine pleasure to me to learn that you the followers of one of the ancient religions of the world are advancing in a way peculiar to morden times, in making researches into the antiquity and truth of your faith. Europe has once more given us the stimulus in the matter, for historical works of great critical value, have mostly been published there; and scholars like Professors Jacobi, Weber and Leumann have sifted history from beyond the secred books of the Jain religion accessible to the world at large. While 1 was at Oxford a series of books was published at the Clarendon Press of our University, which made it possible for those, who took a general interest in Eastern faiths or a particular interest in some particular faith to study the sacred books of the East.

I am glad to find that Indian scholars have followed the lead of European Savants and the learned Doctor Bhandarker

and Mr. Bhagvanlal Indrajee, who have contributed materially to the store of Literature now available on the subject of the Jain faith; but what has been accomplished is as yet nothing to what still is to be done, for I fear only a hundredth part of the sacred books of the Jains has yet been brought to light. Let us hope that such Conferences and Exibitions as these would induce young Jain scholars to dig deeper into the mines of learning, and bring out valuable ore now burried and hidden, But scholarship and specialization come after a general liberal education and not before it. The problem before you is the same old problem of the future destiny of India, namely education; and I hope that now when every one is looking into the condition of his own house, the Jains will not fail to look minutely into the state of theirs and set right those things which require setting right. Other people may plead poverty in defence of their own ignorance but the enterprizing Jains at least who have acquired a good deal of wealth by the trade cannot be excused on their plea, and specially on the present moment. It is intimately connected with your faith and this is a pleasing aspect of the Exihibition and the Confrence in these days when people with crude notions of the progress think all religion unnecessary or at least redicute those religions which have had their origin in the East. But I wish to say that all religions are at least seeking after truth, the highest and the best of religion of mankind; therefore while having due reverence for your faith, which is really a necessary condition of all time and a deep study, you should not shirk free enquiry and the genuine search after truth. And if in your researches reason forces on you conclusions other than those handed down to you by your predecessors, I trust that you will have the honesty and the courage not to turn away from the truth in order to keep up an old empty formula.

\* Among the doctrines of your faith, I find the belief that every-thing in Nature is alive and has a soul or Jiva, which is very fascinating. In another form the same idea presents itself in the Pantheism of the Brahmanic faith, in the poetry of worship pers of Nature like Wordsworth and Shelly and in the Suffism of the Mussalmans. It is pleasing to turn from reading descriptions of the appalling destructions now going on in Manchuria to the peacefulness of a faith that allows life and soul even to those things which we generally call inanimate. The belief that we are not entitled to abuse anything in nature, no matter howsoever small or insignificant, should be preached withgreat persistence. But I hope I will not offend you if I say that a benevolent Providence has created things for our benefit, which if properly used can help man, the highest creation of God in working for the perfection of human life. It is not only practically necessary but quite essential that we should derive due benefit from the good things of this world, for true economy never forbids use, but abuse.

In conclusion I should like to say that though religion is necessary, bigotry is not. All religions are treading the paths which their votaries believe to lead to Truth. Let us therefore not forget in the heat of the journey the true sympathy of fellowtravellers, and the hospitality of the road-side. The search for truth is not a scramble for some exhaustible source of wealth. Truth is vast and inexhaustible; there is enough of it for all races and religions. We should therefore sympathise and respect all men, no matter of what religious persuasion. Mv father and his Government are aiming at the unity of all our subjects, and I trust, that as loyal subjects and good neighbours, all of yon will join hands with us and bring about unity first in the Baroda Raj and then in all India. If we can accomplish that we can look forward to a general parliament of man and federation of the world.

\* See foot-note on page 42.

## ( अनुवाद )

हुं कहेवाने दिल्लगीर छुं, के आगमचथो बीजी रोकाण मारा पिताए माथे लीधेजी होवाथी तेओ आ प्रदर्शन उघाडवानो कियामां हाजर थई शक्या नथी. पण आ हिल्चाल साथनी पोतानी दिल्लेरोजी बताववा माटे महाराजा साहेबे, तमने ते नामदारना तथा ते नामदारनी प्रजाना तरफ वडोदरामां आवकार आपनामाटे, मने अत्रे हाजर थनाने जणाव्युं छे. जोके मारा पितानो जग्या लायक राते पूरवाने मने पोताने हुं अशक्त समजुं छुं तो पण आटलुं तेा खात्रांथी कहुं छुं के आ प्रदर्शनमां प्रमुख स्थान लेवाने मने मोटी खुशाली उपजी छे के, जे खुशालीमां आ मोटी संख्याने हाजर थयेली जोई मोटो वधारो थयो छे. कारण के तमारी हाजरी बतावे छे के, हिंदुस्तानमां हुन्नर उद्योगनी, संसारी, तेमज धार्मिक बाबतेाना संबंधमां स्वतंत्रपणे संशोधन करवाने बधा एकत्र थई शके छे तथा हिंदी प्रजा मुधारानी बाबतमां आगळ वधवानी उत्कंठा राखे छे.

आ नोवाथी मने खरेखरी खुशाली उपने छे के तमो के ने दुनियाना प्राचीन धर्भो पैकी एकने माननारा छा ते तमारा धर्मनी प्राचीनता तथा सत्यता-ना संबंधमां शोध खोळ चलावी हालना जमानाने अनुसरती रीते आगळ वधवा लाग्या छो. युरोपे ए बावतमां आपणो उत्साह सतेज कर्यो छे. कारण के, ऐतिहा-सिक अति अमूल्य सूक्ष्यावलांकनर्यी भरपूर पुस्तको घणे अंशे त्यांज प्रगट थयां छे; तथा प्रॉफेसरो जेकॉबी, वेवर, अने ल्युमॅन जेवा विद्वानोए, जे जैन धर्मनां पवित्र पुस्तको घणे खरे ठेकाणे मळी आवे छे ते सिवाय बीजां ए धर्मनां पवित्र पुस्तकोमांथी खरी हकीकत शोधी काढी छे. हुं ज्यारे ऑक्सफर्डमां हतो त्यारे त्यांनी युनिवर्सिटोना हॅरन्डन प्रेसमांथी एवी केटलीक चोपडीओ प्रकट थई हती के जेथी जेओ, पूर्व देशनां उत्पत्ति पामेला धर्मी अथवा तो कोई अमुक धर्मनो विशेष अभ्यास करवानी खलश राखता होय, तेओ पोताना खाएश पार पार्डी शके.

हुं नेईने खुशी छुं के हिंदी साक्षरा, युरोपीयन विद्वानो तथा विद्वान डॉक्टर भंडारकर अने रा. भगवानलाल इंद्रजीना पगले, चाल्या छे के जेमणे जैन धर्मने लगता हालमां हाथ लागला साहित्योना संग्रहमां मोटा वधारो कर्यो छे. पण अत्यारसुधी जे करवामां आव्युं छे ते भविष्यमां जे करवानुं वाकी छे ते आगळ नहीं जेवुं छे. कारण के, मारे मन एम शंका रहे छे के जैन धर्मनां पवित्र पुस्तकोना मात्र सोमो भाग हजी बहार पाडवा पाम्यो छे. तोपण आपणे एवी आशा राखीए के आवां कॉन्फरन्सो तथा प्रदर्शनो थवाथी युवान जैन विद्वानो विद्यानी खाणामा वघु वघु उंडा उतरशे, तथा हालना समयमां गुप्तपण भंडारायेल मूल्यवान दृव्य प्रसिद्धिमां लावशे. पण विद्वत्ता तथा अमुक विषयमां प्रवीणता, सर्वदर्शी उत्तम पंक्तिनी केलवणी संपादन कर्या थकीज प्राप्त थाय छे. तेना अभावे प्राप्त थती नथी आपनी आगळ हाल न सवाल छे, ते हिंदुस्तानना भविष्य माटेनो ने लांबी मुद्दतथी

Ę

सवाल उमो थएल छे तेन छे. अर्थात् ते कळवणीनो सवाल छे. हवे ज्यारे प्रत्येक माणस पोतपोतानी स्थिति प्रत्ये लक्ष आपवा लागेल छे त्यारे जैनो पोतानी स्थितिनुं वारीक अवलोकन करवा चूकरो नहीं तथा ज्यां मुधारानी जरूर जणाय त्यां ते कररो एवी हुं आशा राखुंछुं. बीनाओ पातानी अज्ञानताना कारणमां गरीबाईनुं बहानुं बतावी राके; परंतु निदान उत्साही जैनो, के जेमणे ब्यापारवडे पुष्कळ धन पेदा कर्युं छ, तेमना तरफथा आवुं कारण, ने खसुस करीने आ वेळाए, मान्य करी राकाय नहीं. केळवणी ( ज्ञान ) तमारा धर्ममां एक रत्न गणाय छे अने हालना समयमां, के ज्यारे सुधारा विषे अधुरुं ज्ञान धरावनारा लोको धर्म मात्रने अनुपयोगी गणे छे किंवा जे धर्मोंनी उत्पत्ति पूर्वमां थवा पामी छे तेने तो हसी कोढे छे त्यारे, प्रस्तुतनी कॉन्फरन्स तथा प्रदर्शनमां धर्म अने ज्ञानना निकट संबंध आनंददायी लोगे छे. पण मारे अत्रे जणाववुं जोईए के, सघळा धर्मी सत्यने शाधे छे के जे मनुष्यना धर्ममां सर्वोपरि अने श्रेष्ठ छे. तेथी तमारे तमारा धर्म प्रत्ये यथायोग्य पूज्य बुद्धि, के जे सर्व काळमां होवी आवश्यक छे तथा जे विना उंडो अभ्यास थवो दुर्लभ छे, ते राखवी. तो पण तमारे अत्राधित शोध करवामां तथा सत्यनी खरा मनथी गवेषणा करवामां पाछा पडवुं नहीं; अने जो ते शोधने अंते तमारा पूर्वजोधी चालता आवेला सिद्धांतो करतां अन्य सिद्धांतो यथार्थ छे एम तमारी तर्क दाक्तिथी तमने लागे तो मारी एवी मान्यता छे के एक निर्जीव जुना सिद्धांतने बाध न आवे एवा विचारथी सत्य तरफ दुर्छेक्ष नहीं करवानी हिम्मत तथा प्रमाणिकपणुं धारण करशो.

\* तमारा धर्मनां सिद्धांतो पैकी एक सिद्धांत ऐवा छे के सृष्टिमां दरेक चीज सचेतन छे, अने तेमां आत्मा अथवा जीव छे. ए सिद्धांत घणो मोहक छे. एज ब्राह्मण धर्ममां सर्व ब्रह्म ए रूपमां अने वर्ड्स्वर्थ तथा रोली जेवा कुदरतने पूजनारा कवियोनी कवितामां तथा मुसलमानोना सुफी पंथमां नजरे आवे छे. ( रुशिया तथा जपाननी ल्ढाईना संबंधे ) मंचुरीयामां थती हजारा जानानी खुवारीनुं

\* जैन धर्ममां संसारी जीव वे प्रकारना मानेला छे. त्रस अने स्थावर परेतानी मेळे भयादिना प्रसंग खशी शके ते त्रस, जेमां वे इंद्रियधी मांडीने पंचेंद्रिय सुधीना जीवोनो समावेश थाय छे. जे पोतानी मेळे खसी शके नहि ते स्थावर, जेमां पृथ्वी, पाणी, तेज, वायु अने वनस्पति ए पांच एकेंद्रिय (मात्र स्पर्श विषययुक्त) जेमनामां अन्य मत वाळा प्रायः जीव मानता नथी तेवानो ससावेश थाय छे. एने लेईनेज थी. युवराज महाराजे आ इसारो कर्यो लागे छे. जैनो ईश्वरकृत जगत् मानता नथी ते पण ध्यानमा राखवुं जोईए. तेमना मते जगत् अनादि छे.

वर्णन वांचवाने बदले आवा एक शांतिमय धर्म, के जे आपणे जे वस्तुने सामान्यतः निर्जीव गणीए छीए तेमां पण जीव तथा आत्मा होवानुं माने छे, ते धर्मनो विचार करतां आनंद उपने छे. सृष्टिमां कोई पण वस्तु गमे एवी सूक्ष्म अथवा नकामी जणाती होय तो पण तेनो अनादार करवा आपणने अधिकार नथी, एवो सिद्धांत आग्रहपूर्वक प्रतिपादन करवो जोइए. तो पण जो हुं एवुं कहुं के, परमदयालु ईश्वरे आपणा हित माटे वस्तुओ सरजी छे के जे जो घटित उपयोग करवामां आवे तो मनुष्य, जे परमेश्वरे सरजेला प्राणीआमां सर्वोपरि छे, तेने मनुष्य भव सार्थक करवाना प्रयत्नमा साधनभूत थइ पडे एवी छे, तो तमे माठुं लगाडशो नहीं. छेवटे हुं जणावीदा के, जो के धर्मनी अगत्य छे तो पण आपणे धर्मीध बनी जवुं जोइतुं नथी. दरेक धर्मना पंथवाळा एम माने छे के पोताना धर्मे जे मार्ग लीधो छे ते सत्यनो छे. माटे आपणे आपणा पंथना प्रवासनी धुनमां बीजा पंथना आपणा जेवा प्रवासी तरफ दिलसाजी तथा आतिथ्य बताववानुं भूली न जवुं जोईए. सत्य ए विशाळ अने अखूट छे अने सर्व होक तथा संप्रदायने पहोंची शके एम छे. ए खोजतां कंइ द्रव्यनी पेठे खूटे एम नयी के जेथी करीने एनी शोधमां धकाधकी कर-वानी जरूर होय. आथी एक माणस गमे ते धर्म पाळतो होय तोपण आपणे तेना तरफ सहानुभूति तथा आदरभाव राखवो जोईए. मारा पिताश्रीनो तथा एमना राज्धयोरणनो उद्देश पोतानी प्रजामां ऐक्य करवानो छे. हुं आशा राखुंछुं के, आप बधा राज्यनिष्ठ प्रजा के सारा पडेाशीओ तरकि अमारी साथे सहायभूत थई प्रथम वडोद्रा राज्यमां अने पछी हिंदमां ऐक्यता प्रसरावशो. नो आपणाथी आटलुं थाय तो पछो पृथ्वीपरना मनुष्य मात्रनी एक पार्छामेन्ट ( महासभा ) अस्तित्वम आवेली जोई तेमां सर्व देशनी प्रजानुं सम्मिलन जोवाने भाग्यवान् थईए.

(88)

नि. झ.

## स्वागत फंड.

अथवा.

संघ भक्तिमां नाणां भरनारानी यादी.

वडोदराना.

| २०१ | झवेरी. वीरचंद रुपचंद.     | 808  | शा. जगनीवन सुंदरजा.              |
|-----|---------------------------|------|----------------------------------|
| २०१ | झवेरी अमीचंद माणेकचंद.    | 208  | कोठागी रामदास हरजीवन.            |
| २०१ | झवेरी. हीराचंद इश्वरदास.  | १०१  | शा. सु <sup>्</sup> चंद बापुलाल. |
| २०१ | गांधी वजलाल गोपालजी.      | १०१  | शा. मनसुखभाई लखमीचंद.            |
|     | वैद्य. दलपतभाई मोतीचंद.   | १०१  | परी. बेचरदास सुरचंद.             |
|     | झवेरी. घेलाभाई हीमचंद.    | 808  | मोदी. मगनलाल माकमचंद.            |
| • • | झवेरी. जेसींगभाई कंकुचंद. | २०१  | झवेरी. मोतीचंद गुलाबचंद.         |
| 292 | मोदी. मोतीलाल लालदास.     | १७५  | झवेरी. ताराचंद चतुरांदास.        |
| 290 | झवेरी. बालाभाई छोटालाल.   | १७५  | झवेरी. लालचंद चतुरांदास.         |
| •   | झबेरी. जेचंद हरखचंद.      | १५१  | झवेरी. मोतीलाल हरखचदं.           |
| -   | झवेरी. केशवंडाल धरमचंद    | १९१  | झवेरी. छोटालाल लालभाई.           |
| -   | वैद्य हरीभाई मोतीचदं.     | 208  | शा. छगनलाल मनसुख.                |
|     | डॉक्टर बालाभाई मगनलाल.    | 80%  | शा. जेठाभाई सुरचंद.              |
|     | परी. सामळभाई नथुभाई.      | 1808 | सरैया. केशवलाल पानाचंद.          |
| *१२ | ९ झवेरी घेलाभाई काळीदास.  | 908  | पटवा. नाथाभाइ नानशा.             |
|     | शा. छलुभाई त्रीक्रमभाई.   |      | शा. बापुलाल दामोदर.              |

\* आ गृहस्थ तरफथी हजुं नाणां वसूल आव्यां नथी.

#### ( 89 )

| אים הו איז איז היוא איז אין | ४१ शा. मोतीलाल वीरचंद.                |
|-----------------------------------------------------------------|---------------------------------------|
| *१०१ डॉक्टर गोविंदराव दीपाजी.                                   |                                       |
| १०० द्या. जमनादास दामोदुर.                                      |                                       |
| १०० शा. हीराचंद राजाराम.                                        | <b>११ द्या. मोतीलाल देवचंद</b> .      |
| <u> </u>                                                        | ४१ भावसार नरोतन घेलाभाई.              |
| ७५ शा. केशवराल हीराचंद.                                         | ३५ शा. मगनलाल माणकलाल.                |
| ७९ घीआ, गरबड वीरचंद,                                            | ३९ झवेरी सरुपचंद घोळीदास.             |
| ७९ वैद्य त्रीभोवन भीखाभाइ,                                      | ३५ झवेरी नगीनभाई मनसुख.               |
| ७९ शा. वीरचंद भुखणदास.                                          | ३५ मारवाडी वरधीचंद आयदान.             |
| <b>૭</b> ૧ જ્ઞા. મુરામાફ <b>હા</b> હમારૂ.                       | ३५ मारवाडी ताराचंद रीखवदास.           |
| ७९ झवेरी करमचंद धरमचंद.                                         | ३१ झवेरी गोकळभाई दुलवदास.             |
| ६१ शा, दामोदर टालचंद                                            | २१ वैद्य डाह्याभाई हीमतल्राल.         |
| ५१ पटेळ हरीवलव नरसीदास.                                         | २९ द्या. माणेकलाल मथुरादास.           |
| ५१ शा. खीमचंद दीपचंद.                                           | २९ झतेरी बाळुमाई मनमुखमाई.            |
| ५१ शा. परसोतम करमचंद.                                           | २७ शा. हरीलाल नानामाई.                |
| ५१ मोदण परधानबाई.                                               | २९॥ शा. अमथाभाई पानाचंद.              |
| ५१ शा. पानाचंद धरमचंद.                                          | २९॥ शा. हरीभाई पानाचंद.               |
| ५१ मारवाडी गुलाबचंद खेमराज.                                     | २९ गांधी. नानाभाई हरजीवन.             |
| ५१ गांधी जमनादास हरीवलव                                         | २५ शा. ताराचंद खीमचंद.                |
| ५१ शा. मनसुखभाई नरोतम.                                          | २९ शा. नानाभाई वेलचंद,                |
| ५१ ज्ञा. गोरधनभाई दलपतभाई.                                      | २५ शा. मगनलाल हरजीवन.                 |
| ५१ गांधी. खुजालमाई गुलाबचंद.                                    | २९ मुकाती <sub>.</sub> मणीलाल हरगोवन. |
| ५१ मारवाडी फत्तानी आयदान.                                       | २९ राा. केशवलाल लालचंद.               |
| ५ • मारवाडी हीराखाळ पत्नाखाळ.                                   | २९ शा. दीपचंद पानाचंद.                |
|                                                                 | २९ शा. नर्सादास अमरचंद.               |
| <b>५० द्या. खुशालमाई देवचंद.</b>                                | २५ मारवाडी मुनीलाल तुलसीदास           |
| २९ छोटालाल.                                                     | २५ मारवाडी चुनीछाछ बकता-              |
| २५ मोतीलाल                                                      | वरमळ.                                 |
| * आ गटम्श्र जाने श्रानिय गरेरा ले ा                             |                                       |

\* आ गृहस्थ जाते क्षत्रिय मरेठा छे एमणे जैनताकिंक तराके प्रसिद्ध अने अंत सुधा श्रीशेत्रुंजय महातीर्थनी आशातना दूर करवा माटे मथन करनार मुनिराज श्रीदानविजयंजी महा-राजना सत्संगथी जैन तत्वादर्श, अज्ञानतिमिरभास्कर अने जैन धर्म विषयिक प्रश्नोत्तर विगेरे प्रयो वांची मांस मदिराना त्याग पूर्वक श्रीजैन धर्म स्वीकार्यों छे अने गई सेन्ससमां पण पोताना कुटुंबने जैन तरीके नोंधाव्युं छे. हमेश श्रासिद्धचक्रजी नवपदजी महाराजनी सुगंधित वासक्षेप विगेरे उत्तम द्रव्योथी पूजाभक्ति करे छे. नवकार प्रभुख स्तात्रोनो पाठ करे छे प्रसंगोपांत देरे, उपाश्रये अने यात्रादिके जाय छे अने रात्रिए भाज करतना नथी. ( 8笔 )

| २५ म                     | गरवाडी पुनमचंद रखेंचद.    | ४०         | शा. नरोतभ अमरचंद        |
|--------------------------|---------------------------|------------|-------------------------|
|                          | ।रिवाडी वरधीचंद सुगालचंद. | २५         | शा. खुसालभाइ व्रजलाल    |
| २५ म                     | ारवाडी जोरजी वनेचंद.      | ५१         | शा. वजेचंद चुनीलाल.     |
| २५ इ                     | ता. त्रिभोवन मोतीचंद.     | ५०         | शा. हरोलाल अंबईदास.     |
| २५ ट                     | ाटेल दलपतभाई नररेभाई.     |            | २५ माणेकलाल.            |
| २९ इ                     | ता. वाडीलाल खुशालभाइं.    |            | २५ कस्तु रभाई.          |
| २५ इ                     | ता पानाचंद अमथाभाई.       | 39         | शा. प्रेमचंद कस्तुरभाई. |
| २५ इ                     | ता. उत्तमचंद मुलुकचद्.    | 8 Ý        | शा. मनसुख कपुरचंद.      |
| २९ इ                     | ता. लहरुभाई लवजीभाई.      | ३१         | शा. केसुर मावजी,        |
| २५ इ                     | ता. हीमचंद पानाचंद.       | २७१        | शा. मनसुख डाह्याभाई.    |
| २५ इ                     | ता. हरीलाल नरोत्तम.       |            | ( फडीया ).              |
| २५ इ                     | ता. पुजालाल तळनाभाई.      | २६         | <b>शा</b> फुलचंद दोलत.  |
| २५ इ                     | ता. काळीदास दल्छाराम.     | २६         | शा. परभुदास हर जीवन.    |
| २५ इ                     | ता. मणीलाल गुलावचंद       | २५         | शा. चुनीलाल फुलचंद.     |
| 5                        | ।गर <b>ाकहे</b> .         |            | शा. द्रलपत भगवान.       |
| १५ व                     | ाटवा केवल्लभाई गुलाबचंद.  | २९         | शा. त्रीभोवन फुल्रचंद.  |
| १५ व                     | नारवाडी. जेताजी सरदारमल   |            | शा. दलपत नाराण.         |
| १९ म                     | नारवाडी पुखरान गुलाबचंद.  |            | शा. रणछोड हरजीवंन.      |
| १२॥म                     | ।।रवाडो छखमीचंद गुळाबचंद  | २९         | शा. नाथाभाई दोलत.       |
| १० मारवाडी तेजमछ खुबचंद. |                           | <u> ९</u>  |                         |
|                          | · · · ·                   |            |                         |
| ७४२०                     | S II                      |            | छाणीना.                 |
|                          | डमोईना.                   | २००        | ञ्चा. कीलाभाइ पानाचंद.  |
|                          | •                         | १५०        | शा. गरबड लालचंद.        |
|                          | शा. सवइचंद रूपचंद.        | 890        | शा. नगीनभाई बापुलाल.    |
| •                        | शा. जेचंद भाइचंद.         |            | शा. हरगोविंद ईश्वरभाइ.  |
| १२५ :                    | शा. नेमचंद तलकचंद.        |            | शा. जमनादास हीराचंद.    |
| १०५ ह                    | शा. करमचंद मोतीचंद.       | ६०         | शा. शीवळाळ भगवान.       |
| ५१ :                     | शा. वीरचंद जेंचद.         | ९०         | शा. जगजीवन भोगोलाल.     |
| ५५ ह                     | शा. जीवचंद कपुरचंद        | <b>G</b> 0 | शा. शीवलाल ईश्वरभाइ     |
|                          |                           |            |                         |

, ۰

( ४७ )

२९ शा. ईश्वरभाई ख़ुशालमाई २९ शा.सांकल्रचंद दलपतमाई

८९९

#### दरापुरना.

१२९ शा हीराचंद नथुभाई. १९१ गांधी नहाउनंद काळीदास. १०१ शा. खुशालभाई मोहलाल ७९ शा. खोडाभाई माणेकलाल ९१ शा. बिमतलाल त्रजलाल ९१ शा. हिमतलाल त्रजलाल ९१ शा. बीलामाई जेठाभाई १९ शा. काल्याणदास खुशालदास २९ शा. नाथाभाई अमीचंद २९ शा. नाथाभाई अमीचंद २९ शा. मोतीचंद दुला पादरानाः

४१ शा. कीलाभाई मुळवंट. ६९ वकील दुल्पतभाई ललुमाई. ६५ वकील मोहनलाल हीमचंद. 88 वकील नंदलाल लल्लुभाई. ३९ शा. तागचंद रतनचंद. ३५ शा. वनमाळी सांकळचंद. **२५ शा. लल्लुभाई साकल्रचंद.** २१ शा. वनलाल सांकळचंद. ३१ शा. लल्लुभाई वीरचंद. ३१ शा. छोटालाल नाहालचंद. २१ शा. भोगीडाल प्रेमचंद. २९ शा. हरगोविंद वेलाभाई २९ शा. दीपचंद पीतांबर. २९ शा. शीवलाल सौभाग्यचंद. २९ शा. काळीदास रणछोड. पींडापाना.

१०५३५। कुल्ले

989

( 85)

## नि॰ ञ खर्चनो तारवणी पत्र.

.

| रुपीया. आना पाइ        | •                                                                                               |  |  |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------|--|--|
| 90-0-0                 | फंड कमीटीखाते.                                                                                  |  |  |
| 234- 99-0              | सेंट्ल कमीटीखाते.                                                                               |  |  |
|                        | >३७१२० पगार तथा इनामना.                                                                         |  |  |
|                        | २६९—१०—-• छपामणना (रिपोर्ट शिवायना)                                                             |  |  |
|                        | १०४१४३ डेड स्टोक कटीजंटना.                                                                      |  |  |
|                        | १६९ ९ टपाल तथा तारना.                                                                           |  |  |
|                        | ५४६० परचुरण खरचना                                                                               |  |  |
|                        |                                                                                                 |  |  |
|                        | L34-99-0                                                                                        |  |  |
| ९७२ ८ ६                | उतारा कमीटीस्नाते                                                                               |  |  |
|                        | २८९-९४-९ प्रगार तथा कटीजेटना                                                                    |  |  |
|                        | १९५७-६ सकानभ डं तथा दरस्तीना                                                                    |  |  |
|                        | १९५—७-६ सकानभ ढुं तथा दुरस्तीना<br>१९५—७-६ सरसामनना<br>२९७-११-६ सरसामनना<br>३३—२-९ दीवा बत्तीना |  |  |
|                        | ३३२-९ दीवा बत्तीना                                                                              |  |  |
|                        | ७६४-० परचुरण खरचना                                                                              |  |  |
| ÷                      |                                                                                                 |  |  |
|                        | ९७२                                                                                             |  |  |
| 5-59-3-3               | भोजन कमीटीखाते                                                                                  |  |  |
| 4005-92-X<br>8-93-0    | हेल्थ कमीटीखाते                                                                                 |  |  |
| 8-97-0<br>h 35 ( ) 9-0 | मंडप कमीटीखाते                                                                                  |  |  |
| ५२६८                   | १७१३-८-० मंडप तथा दरवाजाना                                                                      |  |  |
|                        | २९४३-७-३ खुरशीयो, तथा बेंचो, प्रैस टेवलना                                                       |  |  |
|                        | ३५४-२-६ पगार तथा इनामना                                                                         |  |  |
|                        | १०२-७-६ कंगउन्ड डेकोरेशनना                                                                      |  |  |
|                        | ८९-४-६ दीवाबत्तीना                                                                              |  |  |
|                        | ६५-९-३ परचुरण खर्च                                                                              |  |  |
|                        | 4, , 4 , 3,                                                                                     |  |  |
|                        | 4265-10-0                                                                                       |  |  |
| 0 - 20 1-              | बॉलंटीयर कमीटीखाते                                                                              |  |  |
| <b>९०४-२-५</b>         | ६१९                                                                                             |  |  |
|                        | २१२- १-९ फेटा तथा उत्तरासनना                                                                    |  |  |
|                        | ' ७२-१३-६ परचुरण                                                                                |  |  |
|                        |                                                                                                 |  |  |
|                        | ९०४-२-६                                                                                         |  |  |
| 6 D.Y. I               | डेर्छागेट विगेरेना फलखाते                                                                       |  |  |
| 928-4-0                | हत वचनोना बॉर्डखाते                                                                             |  |  |
| <b>Lo-</b> c-a         | हित वर्षनाना बाँख्खात<br>टेझररना खर्च खाते                                                      |  |  |
| ve-e-a<br>23-0-0       | ्रज्ञरणा खप खात<br>गायन शाळाखात                                                                 |  |  |
| 22-0-0                 | गायन शाळाखात<br>प्रमुख साहेबना समैयाना                                                          |  |  |
| 86-0-0                 | अनुस ताह्लमा तनयामा                                                                             |  |  |
| 98983-0-3              |                                                                                                 |  |  |

# भाग बीजो.

## जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स.

श्री.

## त्रीजी वार्षिक परिषद्, वडोदरा.

-<del>\* \* \* \*</del> \*

प्रथम दिवस ता. २७-११-०४.

## मंगल गीत.

राग सारंग-ताल चतुश्र जाति त्रिताल मध्य काल मात्रा १६.

नमो नमो मंगलमें महावीर, शासनपाते वडवीर जैन समाज मिलि मनरंगे, चमकत निरमल चीर. एक एक के अंतरंग की, कैसी बनी ततबीर. देखो ठाठ ए जैन वरगको, सायर ज्युं गंभीर मंगल आनद आज भयो है, आइ दीलमें धीर. करी सुधारो धर्म वधारो, पाइ आज्ञा वीर. नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो,

## मंगलाचरण.

## शिखरिणी वृत्तम्.

शिवौको विश्वेशः समसुरनरेन्द्रैश्च महितो जितद्विट्संदोहः कुगतिपततां वारणपरः ॥ भवाग्नेः शान्तौ यो घनरससरूपो जिनवृषो विधत्ता दादीश स्त्रिभुषननराणां स भाविकम् ॥ १ ॥

#### स्रग्धरा वृत्तम्.

दद्या च्छ्रीशान्तिदेवो वरकनकतनुः सारसौख्यानि शश्व द्वक्तानां भक्तिभाजां त्रिभुवननगरे स्फारकोटीरद्वीरः ॥ (२)

चार्याकारेः प्रणेता प्रणतहितकरः कामदो मारिवारः सर्वद्राख्यातनामा प्रकटितमहिमा प्राप्तकर्मारिपारः ॥ २॥

## शिखरिणी वृत्तम्

प्रशास्ता लोकानां त्रिभुवननरादुःस्नदविभु विंजेता भावार्यो इतकुनयदर्पोऽग्तिमजिनः ॥ महासंसाराब्धौ पतितमनुजानां प्रवहणं स मोहभ्वाग्तारि भवतु भविना मिष्टवरदः ॥ ३ ॥

## शार्दूलविकीडीतम्.

नीरन्ध्रे भवकानने परिगलत्पञ्चाश्रवाम्भोधरे नानाकर्मलतावितानगहने मोहान्धकारोध्दुरे ॥ भ्रान्तानामिह देहिनां स्थिरकृते कारुण्यपुण्यात्मभि स्तीर्थेरौः प्रथितः सुधारसाकिरो रम्या गिरः पान्तु बः ॥ ४ ॥ औदार्यादिगुणावलि विलसति स्वान्तेषु येषां नृणां गोप्तारो भविनां दयोद्यमभृत स्तीर्थादिकार्यस्य च ॥ कायस्वान्तधनैर्विधौ सितकटा दीब्यन्ति यस्मिञ्जनाः संघस्तीर्थकरोऽपि यन्नमनकुज्जीयात्स तेषां चिरम् ॥ ५ ॥

वीरविक्रम संवत् १९६० ना कार्तिक वदि ५ ता. २७ नवेंबर सने १९०४ रविवारने। दिवस वडोदरामां एक महा मांगलिक दिवस श्री बडोदरामां कार्तिक तर्राके पसार थयो हतो. ते दिवसे भारतवर्षना जूदा जूदा बदि ५ रविवार सं. १९६० नो मांगलिक दिवस. भागमां वसता अने जूदा जूदा रंग तथा घाटनां शिरोभूषण धारण करता जैन संघोना, सभाओना, पाठशाळाओना, अने पुस्तकालयोना प्रतिनि-धियो स्वधर्म अने स्वजातिना उत्कर्ष माटे विविध प्रबंधो योजवाने एकत्र थया हता. सहवासीनी उन्नति ते स्वदेशनीज उन्नति छे एवं मानी जैन भाइओना कामने अनुमोदन आपनारा अन्य धर्मीभाइओ पण तेटलाज उत्साहथी सामेल थया हता. जाहेर वर्तमानपत्रोना चालकोए पण पोताना रिपोर्टरो सभाना कामकाजनी नोंध . लेवा माटे मोकली आप्या हता. सभा मंडप श्रीमंत महाराज साहेब गायकवाड सरकारने रहेवाना लक्ष्मीविलास पेलेस नजीक कलाभवन सामेना विशाळ मेदानमां ५००० बेठकोनी गोठवण साथे उभो करवामां आव्यो हतो. तेनी रचना अंदुरथी तथा बहारथी एवी तो मव्य बनी हती के प्रेक्षको ते जोइनेज सानंदाश्चर्य पामता हता.

२ सभानो वखत सवारना ११ वाग्याथी राख्यो हतो पण ते अगाउज प्रति-

निधियो, रिसेप्झान कमीटीना सभासदो, राज्यना अमछदारो, भामंत महाराजा साहेब प्रमुख साहेब अने प्रतिनि- सरदारो, दरकदारो, रोठ साहुकारो अने प्रतिष्ठित पुरुषो थियो विगरनुं आगमन. तथा प्रेक्षकोथी सभास्थान चीकार भराइ गयुं हतुं. प्रमुख

अझीमगंज ( मुर्शीदाबाद ) निवासी रायबहादुर बुधसिंहजी दुधोडिया दरबारी बे घोडानी बगीमां पोताना भत्रिजा बाबु विजयसिंहजी अने बे पुत्रो साथे तेमना दरज्जाने शोभता पोषाक अने ठाठमां बराबर वखते पधार्या. तेमनो अने जनररू सेकेटरीओनो खुशालीना पोकारो साथ मंडपमां प्रवेश थया बाद श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा साहेवनी स्वारी राजकुटुंव साथे पधारी. तेमने सन्मान आपवाने रिसेप्शन कमीटीना चेरमन अने चीफ सेकेटरीयो विगेरे साथे सदर मंडळ दरवाजा नजीक हाजर थयुं. दरबारी बेन्ड विगेरेनी सलामीं थतां श्रीमंत हसते वदने सर्व सभाना हर्षनाद वच्चे मंडपमां दाखल थया अने उच्चासन उपर प्रमुख सा-हेवनी साथे पोतानी बेठक लीवी. श्रीमती सीथ मारयवती माताश्री महाराणी साहेब तेमनी डावी वाजुए यवनिका साथे करेला जूदा उच्चासन उपर प्रमुख साहेबना कुटुंबना वधुवर्ग साथे बिराज्यां हतां.

२ पारंभमां श्रीजैन गायन शाळाना विद्यार्थी ओए विविध वाजिंत्रोना नाद मगरू गान अने जैन कॉ. साथे मंगलगीत गाया बाद सेंटूल कमीटीना सेकेटरी रा. ऑल्बमनुं अर्थण. रा. मगनलारू चुनीलाल वैद्ये संस्कृतमां मंगलाच-रण कर्युं हतुं. पछी श्रीसयाजी विजय पत्रना चालक रा. रा. माणेकलाल अंबाराम डॉक्टरे पोते खास तैयार करावेलुं प्रसिद्ध जैन तीर्थो, नामांकित जैन मुनिराजो, श्री. महाराजा साहेब, श्री. युवराज महाराज, कॉन्फरन्सना पुरस्कर्त्ता अने स्वागत मंडलना अग्रेसरो विगेरेनी सुंदर छवीओनुं आल्बम श्री. महाराणा साहेबना अने प्रमुख साहेबना हस्तमां अर्पण कर्यु. मंडप कमीटीना जो. सेकेटरी मि. मोतीलाल नेमचंद् मोदीए आ प्रसंगमां भाग लेवा पधारेलाने उपयोगी यह पडे तेवा सीटी मेपनो आयना नजर कर्यो.

४ रा. रा. फतेहभाइ अमीचंद झवेरी स्वागत मंडल्ला प्रमुखे त्यार स्वागत मंडळना प्रमुख तरफनुं खन्मान. ( नि. १ ) रारू कर्युं हतुं. तेमां तेमणे प्रतिनि-धियोनो आभार मानी सन्मान आपवानी साथे श्रीसंबनी उपयुक्तता, संघभक्तिथी थता लाभ, संघभक्ति करनारा संप्रति महाराजा, कुमार-पाल महाराज अने वस्तुपाल तेजपाल मंत्री विगेरेनां धर्मकृत्योनी नोंध साथे कुमार-पाल विगेरनुं वडोदरामां थयेलुं आगमन, आधुनिक महाराजाना समयमां वडोद-रानी वधेली महत्ता, कॉन्फरन्सनो उद्देश, दरसाल ते भरावानी आवश्यकता, श्रोताओनी ठरावोने अमल्मां मूकवानी पहेली फरज, कॉन्फरन्सना हेतुने पुष्टि करनारा मुनि महाराजानो उपकार, स्थानिक कॅान्फरन्स कमीटीओ नीमवानी जरूर, कॉन्फरन्सनी सूचनाओ प्रमाणे बंदोबस्त करनार श्रीसंघोने धन्यवाद, लाक्ष-णिक प्रदर्शननी योजना अने ते श्री. युवराज फत्तेहासंहराव महाराजना हस्ते खुल्लुं मुकायानी खबर, चर्चवाना विषयोनी यादी संबंधे खुलासो, श्रीमंत महाराजा साहेबे लीधेला श्रम अने आपेली अनहद मदद माटे अभिनंदन, लाणी, डभोइ, पाद्रा ने दरापुराना संघोनी स्वागतमां सामेल्गीरी विगेरे मुद्दा उपर सारी रीते विवेचन करी छेवटे श्रीमंत महाराजा साहेचने पोताना अमूल्य बोधक वचनोवडे समाने कृतार्थ करवा विनंती करी हती.

५ अग्रीमहाराजासाहेब ते पछी ऊमा थई बोल्या के, " तमारी मर्जी प्रमाणे आजे आ काम शरु थयेलुं जोई खुशी थाऊ छुं. आषण. आषण. ते संपूर्ण रीते पार पडे एम ईच्छुं छुं.

तमो आ समारंभमां दरेक विषयपर शांतता अने सारी समजथी ठराव क-रशो अने ते ठरावो संसार व्यवहारमां अमल्लमां पण लावशो. मारा विचार प्रदर्शित करवा नहीं पण प्रमुख अने बीजा वक्तानां भाषण सांभळवा आव्यो लुं. तेथी हुं थोडुं बोल्लीश तो तमो दिल्लगीर नहीं थशो. पण खात्रीथी मानशो के मारी तमारा काम तरफ संपूर्ण अनुमति अने तमारी उन्नति माटे पूर्ण आतुरता छे. ( ताळीयो )

जैन धर्म जुनो छे. बौद्ध धर्म करतां पण जुनो छे. बुद्ध पहेलां २०० वर्ष उपर \*महावीर (पार्श्वनाथ ?) नामना पुरुषे आ धर्म स्थापन कर्यो. तेमणे आ धर्म शा माटे शरु कर्यो ते तमे जाणो छो. तो पण मारा जाणवा प्रमाणे मुख्यत्वे

\* श्री महावीर स्वामी तो बुद्धना समकालीन हता. तेमना पहेलां श्री पार्श्वनाथ तीर्थ-कर थइ गया ते महावीरे अवर्तीव्यो ते पहेलां २२० वर्ष उपर उक्त धर्मनो उपदेश करता निर्वाण पाम्या हता. तेथी श्रीमेंत महाराजा साहेबनो आशय पार्श्वनाथ कहेवानो होवो जोइए. झाह्यण धर्मना यज्ञ याग विगेरेमां घणो पञ्चवध थतो हतो. तेनो अटकाव करवा पोते जूदो मत स्थापन कर्यो छे. वीजुं जात न मानवी ए आ धर्मनो सिंद्धांत छे. तेथी तमोने चमत्कार लागशो, पण ते माटे ए मतना जूना ग्रंथ जोई विचार करशो अने ते धोरणो जोइ व्यवहारमां चालशो. आ एवो सादो धर्म छे के जेने हयाती मोगवतां हजारो वर्ष थई गयां अने हजारो मत-पंथ थई गया तो पण ते हयाती भोगवे छे. त्यारे तेमां अवश्य कंई उच्चता होवी जोईए. जो तेम न होत तो आजे ते अदृश्य थात. मांस न खावुं तथा आहिंसा परमो धर्म: ए जेनो मुख्य सिद्धांत छे, तेवा धर्भनो तमे तमारा वच्चे मजबृताईथी प्रसार करो एटछुंज नहीं पण परदेशमां तेनो प्रसार करवानो यत्न करो. तमारा जैन वर्ग पैकीनो घणो भाग वेपारी छे, अने परमेश्वरे तमने जे कंई संपत्ति आपी होय तेनो सदुपयोग करी संसारमां पोतानी अने सर्वनी सारीरीते उन्नति थाय तेम करवुं जोइए. एटलुं कही हुं प्रमुखनुं भाषण सांभळवा माटे बेसुं छुं. (ताळीओ.) ''

६ प्रमुख साहेब राय बहादुर बुर्धांसघजीए श्रीमंत महा-

प्रमुख साहेबना भाषण मांनी बाबतो. पण (नि.२) राहर कर्युं, तेमां ते बाबु साहेबे आत्म

छघुता करवानी साथे काळना परिवर्तनथी थती असर, सज्जन पुरुषोना मेलापनी सा-श्विता माटे स्वात्मार्पणनी जरूर, प्रारंभेला कार्यमां विजय मळता सुधी ते जारी राखवानी फरज, संपनी आवश्यकता विगेरे वाबतो पुरुत विचारथी विवेचन करी हती. प्रति-निधियोने धन्यवाद आपवानी साथे कॉन्फरन्सना ठरावो अमलमां मूकवानो आ-प्रह कर्यो हतो. विद्वान् मुनिमहाराजाना अने सुशील आगेवान गृहस्थोना जमानाने अनकुळ उपदेशथी धारेलुं कार्य जल्दी अने सारीरीते पार पडी शके छे ते खास ध्यानमां राखवानुं सूचवी गत वर्षमां परलोक पामेला जैन अग्रेसरोना संबंधमां दिल्ट-गीरी दर्शावी हती अने छेवटे कॉन्फरन्समां चर्चवा योग्य विषयो संबंध पोताना अभिप्राय टांकी सबजेक्ट कमीटी नीमवानी मलामण करी हती.

७ रा. रा. गुलाबचंदजी ढढ़ुा M. A. कॉन्फरन्सना जनरल सेके टरी ऐमणे पोतानी मधुर अने जुस्सेदार हिंदी वाणीथी रा. रा. गुलाबचंदजी ढढुा-ए मानेलो श्री. महाराजनो श्री. महाराजा साहेब विगेरेने संबोधी जणाव्युं के, "श्री. डपकार. महाराजनो साहेबे अन्ने पधारीने आखा हिंदुस्ताननी नैन

कोम उपर मोटी उपकार कर्यों छे. जैन धर्म अनादि काळथी चालतो आवेलों छे. तेमां अत्यार सुधीमां ( आ अवसर्भिणी काळमां ) २४ तीर्थंकरो थइ गया छे. जैन-धर्म स्थापनार प्रथम तीर्थकर श्रीऋषभदेव हता. अने छेछा तीर्थकर श्रीमहावीर स्वामी थइ गया छे, जेने २४३० वर्ष थयां छे. जुना इतिहास उपरथी जणाय छे के, जैन धर्मने मोटा मोटा राजाओ होठशाहकारो तथा मंत्रीओए तन मनने धनथी मदद करी हती. तेज प्रमाणे आ शहेरमां आप नामदार महाराज।ए कॉन्फरन्समां पधारी जैन कोमना प्रतिनिधियोने तथा तेना समुदायने एशानमंद कर्या छे. आप नामदार हिंदुस्तानना देशी राजाओमां वीर समान, नररत्न, धर्मज्ञ, अने दुरेक धर्म प्रत्ये निष्पक्षपातथी वर्तनार छो. आपने धन्य छे के आप जैनधर्मी नहि छतां ते धर्म प्रत्ये आटली बधी दिलसोजी धरावो छो. ( ताळीओ) आप सा-हेबनी पेठे आपना कुंवर साहेब श्रीमंत फत्तेहसिंहराव पण वीर पुरुष छे अने तेमने माटे वर्तमान पत्रोमां में घणीज तारीफ सांभळी छे. जैन लाक्षणिक प्रदर्शन खुल्लुं मूर्कीने तेमणे अमारा उपर मोटो उपकार कर्यों छे. अमारी एवी प्रार्थना छे के, आप महाराजा साहेब जेवी रीते मदद आपता रह्या छो, ते मुजब कुंवर साहेब (ताळीओ) आपना राज्यमां जैन धर्मनां मंदिरो पण करता रहेरो. उपाश्रयो विगेरे छे तेनो बचाव अने संरक्षण अच्छी तरेहथी थरो एम आप नामदा-रना भाषणथी स्पष्ट थयुं छे अने आप नामदार जैन धर्म प्रत्ये जे कृपा बतावो छो ते माटे हुं कुछ नैन समुदायना प्रतिनिधि तरफथी उपकार मानुं छुं. ( ताळीओ ) "

रा. ढढ्ढाना वाक्चातुर्थथा प्रसन्न थइ श्रीमंत महाराजा साहेबे तेमना संबंधमां प्रमुख साहेबने केटलाक प्रश्नो पूछया हता. रा. ढढ्ढानो धन्यवाद. प्रमुख साहेबे तेमने कॅान्फरन्सना उत्पादक विगेरे तरीके ओळखाब्या हता. जेथी श्रीमंते पोतानो संतोष प्रदर्शित करी धन्यवाद आप्यो हतो अने पोताना महेल्लमां धर्मचर्चा माटे खास आमंत्रण करी बोल्राव्या हता.

८ मी॰ अमरचंद पी॰ परमारे त्यारवाद नीचे छखेलुं कवित गाइ <sub>मी॰ परमारनं कवित.</sub> सभानुं मन रंजन कर्युं हतुं.

> धन्य धन्य महाराज, सर सयाजी शोभे. बडोदा नरेशने पधारी शोभा दीयो हे. बाह आप विद्या शोस, लगनको कानुन कीयो.

बहु जीवो अमर तपो, गादीको दीपायो है. युवराज फतेसिंह, राजमंडल शोभादी. बाबुराय बुधसिंह, प्रमुख पद पायो है. चाहत जैन प्रजा, तीसरी कॉन्फरन्स, इरे हुरे बोले लोक, आनंद पक भयो है.

ते पछी जनरल सेकेटरी रा. हहुाए कॉन्फरन्सना प्रमुख उपर नहि आवी दल्सोजीना तारो अने पत्रो. वांची बताव्या; जेमां पूज्य मुनिमहाराजा उपरांत कल्लक-

त्ताना रायबहादुर बद्रिदासजी, अजीमगंजना रायबहादुर सीताबचंदजी नहार, अमदावादना रोठ मनसुखभाइ भगुभाइ, ग्वालीयरना रोठ नथमल्जी गुलेच्छा, बिकानेरना रोठ पुनमचंदजी सावणसुखा, उदेपुरना राय पन्नालालजी महेता, मुंबईना संघपति रोठ रतनचंद खीमचंद, रा. सा. वसनजी त्रीकमजी, पन्नाथी रा. बा. बालाबाइ मंछाराम, अजमेरथी प्रोफेसर भुरालाल हरिा M. A. L. L. B. बजाणाना कारभारी मोहनलाल जीवणलाल Barrister-at law. टोंकना गंभीरमलजी, आम-लेरना भागचंद छगनदास, येवलाना दामोदर बापुशा, सुरतना चुनीलाल छगन-लाल, मधुबन-समेतशिखरजीथी सुंदरलाल दोगुड, अजमेरना वकील सीरायमल्जी, सटनाना जालीमसिंवजी, जयपुरनुं जैन बघरहुड, नागपुरनुं गोराक्षिणी कार्यालय, लाहोरना जसवंतराय जैनी, रावल्पींडीना जयचंद जैनी, बनारस, राघनपुर, इडर ने खेडानी पाठशाळाओ, मांडले, रंगुन, मुद्रा, अमरेली, सक्कर, आकोट, कल्लीकट, धुलिया, अम्रतसर, दाहोद, मेडता, इचलकरंजी, लालपुर, गोघा, निंगाला, देहगाम अने जेसल्मीर, विगेरेना संघोना नामो संमळायां हतां.

रा. रा. माणेकलाल घेलाभाई झवेरी रिसेप्शन कमीटीना चीफ सबजेक्ट कमीटीनी नी-मनोक. सोहेव अने जनरल सेकेटरी साहेवो एक विचारथी नकी साहेव अने जनरल सेकेटरी साहेवो एक विचारथी नकी करशे तेमने खबर आपवामां आवशे माटे तेओ साहेवे रात्रे आठ वागे मंडपमां वि-षयो तथा वक्ताओ नक्की करवा माटे पधारवुं एवी विनंती करी.

For Personal & Private Use Only

श्रीमंत महाराजा साहेब छेवटे बोझ्या के, "मारा संबंधमां तथा मारा पुत्रना संबंधमां जे कांइ कहेवामां आव्युं छे ते माटे श्री॰ महाराजा साहेबनुं हुं आपनो उपकार मानुं छुं. आ राज्यमां धर्मना संबंधमां कदी पण पक्षपात थयो नथी अने हवे पछी थवानो पण नथी. मारे बधा धर्म समान छे. राजाए दरेक धर्मनुं सदा रक्षण करवुं जरूरनुं छे. हुं जैन धर्मने अमारा धर्म करतां जूदो गणतो नथी. तेथी में जे कंइ कर्युं छे तेमां वधु कंइ कर्युं नथी. तमोए मारे माटे उद्गारो कहाड्या ते माटे हुं फरीथी त-मारो उपकार मानुं छुं. "

पछी प्रमुखसाहेबना हस्ते श्री० महाराजा साहेब आदि राजमंडळने हार क-छगी विगेरे अपायां ते स्वीकारी स्वारी विदाय थया बाद समा बीजे दिवसे ११ बागे मेगा थवानुं ठरावी विसर्जन थइ.

रात्रिना आठ कल्लोके मंडपनी अंदर स्टेज उपर सबजेक्ट कमीटीना सुमारे सबजेक्ट कमिटीनी मी-टॉग. वाद काम शरु थयुं हतुं. प्रथमथी मुकरर करेला बार विषयो पैकी प्रथमना चार विषयो केळवणीना विषय तरिके एकठा करी लेवामां आव्या हता, अने ते विषय तथा कोन्फरन्सना बंधारण संबंधी विषय माटे बीजो दिवस ठराववामां आव्यो हतो. बाकीना ७ विषयो त्रीजा दिवसपर राखवामां आव्या हता, केटलीक चर्चा चाल्याबाद प्रथमनी बे दरखास्तो अक्षरशः मुकरर करवामां आवी हती, अने बाकीनी ७ दरखास्तो तैयार करवानुं वडो-दरानी सेंट्ल कमीटीना सेक्रेटरीने सोंप्युं हतुं. दरेक दरखास्तपर बोलनार वक्ताओनां नामो मुकरर करवामां आव्या हता. तेमज दरेक वक्तामाटे चोकस टाइम ठराववामां आव्यो हतो, अने वक्ताना संबंधना नियमो जाहेर करवामां आव्या हता.

आटलुं काम बहु थोडा वखतमां पसार करीने ११ वाग्या अगाउ सबजेक्ट कमीटी बरखास्त थइ हती.

£,

## (९)

## बीजो दिवस ता. २८-११-०४.

## मांगलिक पद.

राग पीऌ-ताल चतुश्र जाति त्रिताल मध्य काल मात्रा १२.

जीया जैन धरम चित्त धररे, कर घरम करम दुःखहरनपरन

बिन करत फिरत सब घरत रहत, जीया जैन घरम चित्त घररे. धृपद. देखो जैन समाज, बहु मिळत आज, सब करत काज मन लाइरे.

जिन चैत्य ठाम बडे बडे हे थाम होय जीर्ण काम करनन झटपट. जीया. सबजगआधार सिद्धांतसार, करवा उद्धार चित्त ठाईरे

देखो जैन जोर भयो रंग चोल कीयो अतिहीशोर खलकत चमकत. जीया. जैन शाला नाम सब पठन काम करे झान धाम सुखदाइरे,

दीये झानदान जडतिंमिरभान जपे वीरनाम क्षणक्षण पलपल जीया.

पहेला दिवस प्रमाणे कॉन्फरन्सना आगेवानो, प्रतिनिधियो, प्रेक्षको विगेरे त्रमुख साहेबे रजु करेला नियमित वखते मंडपमां स्वस्थानपर विराजित थया पछी पांच ठरावो. गायुं. त्यारवाद प्रमुख साहेब तरफथी पांच ठरावो समा समक्ष रजु करवामां आच्या, ते नीचे प्रमाणेः---

## पहेलो ठराव.

## ना. शहेनशाह माटे प्रार्थना.

जे महान बिटिश साम्राज्यनी शीतळ छायातळे आपणे आपणो धर्म स्वतंत्रपणे पाळी शकीप छीप अने जेनी सर्व धर्म तरफ समान दृष्टिथी जूदा जुदा देशना धर्मीभाईओ धर्म साधी शकीप छीप ते सुखरुप राज्यना शहेनशाह नामदार सातमा एडवर्ड अने शहेनशाहचानु एलेक्झांड्रा दीर्घायुष्य ने आबादी साथे विजय पामे, पत्नुं आ कॉन्फरन्स अंतःकरणपूर्वक प्रार्थे छे.

### 

# बीजो ठराव.

## श्री. महाराजा साहेबनो आमार.

गुजरात अने काठीआवाडना विस्तारवाळा भाग उपर राज्यकर्ता श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड महाराजा साहेब, जेमना उदार आश्रय नीचे आ-पणे अहीं एकठा थया छीए, ते नामदारनो आ कॉन्फरन्स अंतःकरणपूर्वक आभार माने छे. ते नामदार जेवा समद्याष्ट्रवाळा, उदार चित्त अने लोकप्रिय घणा राज्यकर्तीओ थाओ.

# त्रीजो ठराव.

## ज. सेकेटरीओने धन्यवाद.

आपणी कॉन्फरन्सना चार जनरल सेकेटरी साहेबोए पोताना अमूल्य चखतना भोगे स्वधर्म अने स्वधर्मीवर्गना हित माटे जे प्रयास लीघो छे ते माटे आ कॉन्फरन्स तेमने घन्यवाद आपे छे अने तेओ साहेवे वहार पाडेलो रिपोर्ट बहाल राखी तेमने ते मानवंत हुद्दा उपर घणी खुर्शार्थी कायम राखे छे

# चोयो ठराव.

## मरहुम मि. फकीरचंद प्रत्ये दिलसोजी.

मुंबईमां मळेली बीजी जैन श्वेतांवर कॉन्फरन्सनी रिसेप्झन कमीटीना चीफ सेक्रेटरी अने जैन कॉन्फरन्सना जॉइंट जनरल सेक्रेटरो झेठ फकीरचंद प्रेमचंद जे पी ना मृत्युनी आ कॉन्फरन्स दिलगीरी साथे नोंध ले छे

# पांचमो ठराव.

## पूच्य मुनि महाराजा विगेरेने विनंती.

आपणी आगली कॉम्फरन्से करेला ठरावो जे जे गामी अने शहरोना बंधुओए अमलमां मुक्या छे तैमने आ कॉन्फरन्स धन्यवाद आपे छे अने वीजी बधां गामो अने शहेरोना बंधुओने एनुं सत्वर अनुकरण करवा आप्रह करे छे. तेमज आ संबंधमां जे जे पूज्य मुनि महाराजाओए प्रशंसापात्र प्रयास कर्यों छे तेमनो पण आ कॉन्फरन्स आभार माने छे अने भविष्यमां पण तेवो प्रयास चालु राखवा विनंती करे छे.

सभाए आ पांचे ठरावो जे ते समयने योग्य मुद्रा धारण करी सर्वानुमते प्रसार कर्या हता.

रा. गुलाबचंद्जी ढढ्ढाए पछी केळवणीना विपयने घणी चालाकीथी हाथ घरी नीचे प्रमाणे ठराव करवा माटे समाने केळवणी विषे दरखास्त. विनंती करीः----

# छडो ठराव.

### धार्मिक तथा व्यवहारिक केळवणी.

आपणा जैन वर्गमां धार्मिक तेमज ब्यवहारिक केळवणी वृद्धि पामे अने जैन साहित्यना सर्वत्र प्रचार थाय तेटला माटे,

- १ व्यवहारिक केळवणी लेनारने योग्य मदद आपी आगळ वधारवा,
- २ धार्मिक अभ्यास संगीत थइ शके तेवी शाळाओ स्थापवी,
- ३ कन्या शाळाओ अने श्राविका शाळाओ स्थापवी,
- ४ धर्म संबंधी पुस्तकालयो स्थापवां,
- ५ एवी शाळाओ तथा पुस्तकालयो ज्यां होय त्यां तेने योग्य उत्तेजन आपवुं,
- ६ जैन साहित्यनो प्रचार थवा माटे घटता उपायो लेवा,
- जैनी वांचनमाळा तैयार धाय तेने माटे योग्य प्रयत्न करवो, अने
- < जैन समुदायमां व्यापार अने उद्योगनी वृद्धि थवा माटे हुझरकळानो प्रवेश कराववो-

तेनी आ कॉन्फरन्स खास आवदयकता धारे छे.

आ ठरावनी पुष्टिमां रा. ढढ़ुाए घणुं सरस भाषण कर्युं हतुं, जे अक्षरशः आपवानुं साधन नहीं होवाथी तेना सारथीन समाधान मानवुं योग्य छे. तेमणे जणाव्युं के,

" जैन समुदायनी उन्नति करवा माटे धर्मनुं अने दुनियादारीनुं शिक्षण आपवुं ए आपणी फरज छे. विद्या विना माणस पशुसमान छे. विद्यार्थीज माणस मोक्ष पामे छे. विद्या कहो के ज्ञान कहो बधुं एकज छे. श्रीऋषभदेव भगवानथी श्रीमहावीर स्वामी सुधीना दरेक तीर्थंकरे ज्ञानने श्रेष्ट बतावी तेनुं पठन पाठन करवा उपदेश कर्यो छे. जो तेमना वचन उपर खरी आस्था होय तो विद्यानो प्रसार कराववो ए आपणी पहेली फरज छे.

विद्या बे प्रकारनी छे. सांसारिक अने धार्भिक. आ ठरावमां धार्भिक पहेली राखी छे. रूयाल करशो तो मालुम पडशे के ते व्याजवी छे. अनादिकाळथी मिथ्या-त्वमां फसायला जीवने धर्मनी केळवणी मळवी कठिण छे. दरेक गतिमां तेनी जोग-वाइ होती नथी. मात्र मनुष्य गतिमांज जीव धर्म सन्मुख थइने मोक्ष सुख पामी शके छे. दुनियामां एवो कोण हशे के मोक्षनी आशा नहीं करतो होय ? हवे आ धर्म शिक्षण केवी रीते हांसल करवुं तेनो रूयाल करीए. हरेक धर्मवाळा पोतानो धर्म श्रेष्ठ बतावे छे. आपणा धर्ममां ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अगर महाशिर जो ते १८ दूषण रहित अने १२ गुण सहित होय तो एकज छे. नामथी मतलब नथी पण गुणथी मतल्ब छे.

आपणने सूर्यनी गरमीनी जरूर छे. त्यां दीपकनी गरमीथी केवी रीते सरे ? हाल जे केळवणी शाळाओमां अपाय छे ते दीपक समान छे. ते एकली संसार व्यवहार माटे जेम पुरती रीते उपायोगी नथी, तेम परलोक साधन माटे पण नथी. एटला माटे बधे धर्मन शिक्षण आपनारी पाठशाळाओ थवानी जरूर छे. तेमां कन्या-शाळाओनी वधारे जरूर छे. आपणी स्त्रीओ, छोकरीओ—भविष्यनी जैन प्रजानी माताओ सारी केळवाय तोज आपणी कोमनुं कल्याण थवानी आशा छे. जेवुं बीज हशे तेवुंज फळ मळशे. स्त्री वर्भ अभण हशे तो तेमनी संतति पण प्रायः अशिक्षित-अयोग्य नीवडशे. माटे स्त्रीशिक्षणमां जेटलो विलंब थशे तेटलो आपणो उद्धार पण मोडो थशे. केटलीक निराधार स्त्रीओने खावानी सवड होती नथी माटे तेमना सारु उद्योगशिक्षण साथेनी श्राविकाशाळाओ पण स्थपाववी जोइए. तेम करवाथी आपणी स्त्रीनुं द्युं थरो तेनी फिकर मटी जरो. स्त्री शिक्षको तैयार करवानी पण तेटलीज आवइयकता छे. धर्म संबंधी पुस्तको पण धोरणवार रचावां जोइए. तेमज लायबे-रीओ अने पुस्तकशाळाओ पण वधारवी जोइए. तेथी आपणां पुस्तको पठन पाठ-नमां आवरो अने घणा आवोने लाभ थरो.

खंभात, पाटण, जेसलमीर विगेरे ठेकाणे प्राचीन ज्ञानमंडारो मोजुद छे. तेमना उद्धारनी जरूर छे. पण ते विषय जुदो होवाथी हाल हुं वधारे बोलतो नथी. कॅान्फरन्सना प्रतापे आपणे एक संपथी ने उमंगथी काम करवा मांडयुं छे के जे आगळ देखातुं नहोतुं. जैन धर्ममां ज्ञानरूपी हीरा अने मोती छुपाइ रह्यां छे. तेनो प्रसार करवाथी जैन प्रजाने तेमज आखा जगतने घणो फायदो थरो. माटे ते दिशामां पण सारो यत्न थवानी जरूर छे.

धर्म ज्ञाननी साथे दुनियादारीनी केळवणी नहीं होय तो काम चाली शके नहीं. पण ते माटे वधारे बोलवानुं नथी. कारण के सरकार तरफथी कॉलेजो विगेरे थवाथी ऑपणने ते शिक्षण मेळववानी हे. सवड थड तेम छतां हिंदुस्तानमां १५ लाख जैनोनी वस्तीमां प्रेज्युएटो तथा उंची डिग्रीवाळा आंगळीना टेरवा उपर गणाय तेटला छे. आ कॉन्फरन्सना सुकानीओने धन्यवाद घटे छे के प्रेज्युएटोनी लाइन गोठवी तेमना दर्शननो लाभ आप्यो छे. ( ताळीओ ) तेमना जोवाथी बीजा लोको पोताना विद्यार्थीओने शिक्षण आपवाने लल्लाहो. पण जणावतां खेद थाय छे के, पांच सात गेज्युएटो आपणाज पगमां कवाडो मारवा तैयार थया छे. ( शरमना पोकार ) सिर्वालियन आपणामां कोइ नथी. पण डॉक्टर, वकील के बीजी नोकरी करनारा छे. हुं खुद प्रेज्यएट छूं. पण नोकरीने लीधे गुलाम थइ जवुं पडयुं छे. उद्योगनी केळवणी मळी होत तो आवी गुलामी हालत होत नहीं. जयपुरमां हाल १०० ग्रेज्युएटो छे. पहेलां ग्रेज्युएटोने ५०० नो पगार मळतो अने हाल दस वर्ष थयां रु. ४०-५० नो पगार मळे छे. हाल गाउरियो प्रवाह चाले छ. नहि तो हुनर उद्योगमां पडेला येज्युएट दर महा रु. १००० नो पगार पाडी शके. माटे आपणी स्थिति सुधारवा अर्थे आपणामां उंचा हुनर उद्योगनी केळवणी वधारवी जोइए. बडे बडे लंबे पुंछडे होय तो आवरू छे अने व्यापार के हुन्नरमां गुंथायाथी इजत नहीं मळे एम समजवुं नहि जोइए. उंची केळवणी साथे हुन्नर उद्योगनी वे ळवणीनी खरेखरी जरूर छे. कॅान्फरन्सनी फरज छे के धर्म शिक्षण साथे व्यवहारिक अने उद्योगनी केळवणी आपवा माटे योग्य प्रबंध करनो. तेथी घणो फायदो अशे. तेनो टुंको दाखल्ले जापानीलोकोनो छे. तेओए रुशियनोने थर-भराबी नांख्या छे. एन प्रमाणे चालवाथी आपणी कोमनी हालतमा पण वणो सुधारो थशे.

असिंत सहाराजानी राजधानीमां आपणे मळ्या छीए, ए नामदारे आपणने घणा एज्ञानमंद कर्या छे. श्री. महाराजा साहेबे ज्ञाळाना वखतमां थोडोक वखत कहाडी धार्मिक केळवणी आपवानी तजवीज करवा केळवणी खाताना वडाने आज्ञा करी छे. ज्यारे महाराजाए आवी शहवात करी छे त्यारे मने आशा छे के कॉन्फरन्स आ विषय उपर पुरेपुरुं रुक्ष आपशे.

एज विषयनी जूदी जुदी बाबतोने अनुमोदन आपवाने आठ वक्ताओ आगळ आव्या हता. भि. मोतीचंद गीरघर काप-केळवणीना ठरावने अ- दीया B. A. L. L. B. भावनगरनाए इंग्रेजी भाषा नुमोदन. ज्ञाननी आवश्यकता अने ते माटे बॉर्डिगोनी अनुकुळता वधारवानी जरुरसंबंधे असरकारक चर्चा करी हती. जैन फिलोसॉफी तरफ ग्रे-ज्युएटो अने बीजा विद्वानोनुं ध्यान खेंचवा माटे लेक्चरशीपो अगर इनामो का-द्वानी अने बीजी केटलीक महत्वनी सूचनाओं करी हती. जे तेमनुं साद्यंत भाषण (नि. २) अवलोकनमां लीघाथी ध्यानमां आवशे.

लाला माटु मलजी दिछीनाए स्वीशिक्षण विषे बोल्तां जणाव्युं के, स्वीओ चार प्रकारनी छे. जेने धर्मनुं ज्ञान होय अने जेनी आज्ञा बधा माने ते देवी, जेनामां तेज होय ते राणी, लडालडी पसंद करे ते राक्षसी, अने ताबेदारी शिवाय बीजुं न आवडे ते गुलाम. शिक्षणधी स्त्रीओ देवी के राणी जेवी थइ शके छे. हुं तेमने दफतरनुं काम करवानुं के बी. ए. नुंशिखववा कहेतो नथी. परंतु आपणा शा-स्वमां स्त्रीओ पण मोक्षनी अधिकारी ठरावेली छे, माटे मोक्ष साधवामां अने गृहिणी तरीकेनो धर्म बजाववामां उपयोगी थाय तेवी शिक्षा स्त्रीओने आपवी जोइए. श्री तराकेनो धर्म बजाववामां उपयोगी थाय तेवी शिक्षा स्त्रीओने आपवी जोइए. श्री तराकोनो हेल्खन गणित विगेरे शिखवी सारो दाखली बेसाड्यो छे. मयणा सुंदरी प्रमुख राजस्वभामां धर्म चर्चा करी शत्कवा जेटली शक्ति धराधतां हतां. ते पण स-वना जाणता बहार नथी. माटे स्त्रीशिक्षण संबंधे सारा प्रकारनो प्रबंध करवो जोइए. मि० बालचंद हीराचंद मालेगामनाए पोताना भाषण ( नि. ४ ) मां जैन शाळोपयोगी वांचनमाळानी जरूरियात बताबी ते माटेनी योजना सूचवी हती.

मि० छोटालाल काळी दास चकील अमदावादनाए लोकोने केळवणी लेवाना संबंधमां वधारे उमंगी करवा माटे व्यवहारु मार्ग मूचव्या हता. दरेक श्रीमंत खावा पीवानुं अने पुस्तक विगेरे आपी मान्न एकेक श्रेज्युएट के आर्टि-स्ट बनाववानुं धारे तो वगर फंडे वणुं सारुं परिणाम आवी शके. खोटा फरजियात खत्री अटकावी अमदावादना शेठ चीमनलाल नगीनदासे दशाश्रीमालीनी न्यात खाते लग्न दीठ कंइ रकम लेवानुं राखी तेमांथी न्यातना तमाम छोकरांने की पुस्तको विगेरे आपवानी योजना काढी छे. ए रीवाज अनुकरण करवा योग्य छे. केमके तेवा प्रकारनी मदद लेवामां कोईने ओछं आवतुं नथी.

दिः सनस्तुरव अनो पर्द अमदावादवाळाए सौओने केलवणी हेवानी होंश थाय ते माटे भणवाथी शो लाम छे ते तेमना मनपर ठसाववानी जरूरि-यात दाखला साथे बतावी हती. हाल जैनोमां दर हजारे १७ स्त्रीओ केळवायली छे. अने फिमेल ट्रेनींग कोलेजमांथी २० वर्ष दरम्यान २६२ स्त्रीओ केळवाइने बहार पडी छे तेमां मात्र त्रणज जैन होवानुं जणाय छे. ते स्थिति सुधारवानुं ध्यान पर लेवा पोताना भाषण (नि. ९) मां विनंती करी हती.

मि॰ मुळचंद नथुआइ वकील भावनगरना एमणे पोताना भाषण ( नि. ६ ) मां जणाव्युं हतुं के, ज्यां सुधी कोमळ मगजमां धर्मनां वी ववायलां न होय त्यां सुधी सारुं ज्ञान संपादन थतुं नथी अने आपणामां अत्यारे धार्मिक वीर्य घणुं थोडुं छे ते शाळाओ स्थापन करी ज्ञान न ल्इए, त्यां सुधी खील्वी शकीए नहीं.

इता. कुंचरजी आंणद्जी भावनगरनाए पण धार्भिक केळवणी बगरनी अंग्रेजी केळवणीनां परिणामे सक्ष्यासक्ष्य अने पेयापेयनो विचार तद्दन नाज्ञ पाम्यो छे. माटे बाल्यावस्थाथी धार्भिक बोध आपवानी अने माताओं के ळवायळी होय तो तेमना पुत्रो पण मी. ढड्ढा जेवा धर्मात्मा नीकळे छे तेथी तमाम स्त्रीओने धार्मिक केळवणी आपी शकाय तेवी योजना करवानी पोताना भाषण (नि. ७) मां सूचना करी हती. मि० अमोपचंद मेलापचंद झाह B. A. भरुचना छेवटे बोल्या के, धार्भिक अने व्यवहारिक केळवणी आपतां तननी केळवणी भूली जवी न जोइए. केमके ते विना मनने केळवणी आपी शकाती नथी. आपणां बाळको केळ-वर्णा मेळववाने भाग्यवान थशे त्यारे तेओ पोतानी मेळे हानिकारक रिवाजो दूर करवाने अने जैन पुस्तकोद्धार तथा जीर्णमंदिरोद्धार करवा बहार पडशे. आपणे तो म्होडेथीज वातो करीए छीए, पण तेओ तो करी बतावशे विगेरे दाखला दली-लेथी सिद्ध कर्युं हतुं. एमनुं भाषण (नि. ८) सर्वने पसंद पडवार्थी प्रमुखसाहेबे नीमेला वखत करतां वधारे वखत आप्यो हतो, जे मुवारकवादी देवा योग्य गणी शकाय. ते पर्छा सदर दरखास्त सर्वानुमते पसार थयेली जाहेर करवामां आवी.

### ( १५ मिनीट विश्रांति. )

श्रोठ लालभाई दलपतभाईए, सभाजनो विगेरे अढी वागे घंट थतां स्वस्थाने बेसी गया पछी कॉन्फरन्सनो कारोबार कॉन्फरन्सना बंधारणनी चलाववा अने तेनु बंधारण मजबूत करवा माटे निचे प्र-बोजना. माणे योजना रजू करी हती.

# सातमो ठराव.

कॉन्फरन्सनुं बंधारण.

श्रीजैन श्वेतांघर कॉन्फरन्सनुं बंधारण मजवूत थया माटे,

- भवारे जनरल सेक्रेटरीओप पोतपोताना विभागमां दरेक खाताने माटे योग्य खर्च करवो,
- २ चारे जनरस सेक्रेटरीओए जुदी जुदी ऑफिसो स्थापी योग्य खर्चथी कार्थ ब्यवस्था करवी,
- ३ पोताना हाथ नीचे जरुर पडता प्रांतिक अने स्थानिक सैकेंटरीओ निमी तेमनाथी कॉन्फरन्समां थयेला ठरावोनो अमल कराववा प्रयत्न करवो,
- ४ प्रांतिक अने स्थानिक सेकेटरीओए बनी राके तो प्रांतिक अने स्था-निक कॉन्फरन्स कमिटी स्थापी योग्य प्रयत्न करवो,

- ( १७ )
- ५ एक मासिक चोपानीयुं काढी दर वखतना कॉन्फरन्स संबंधी कार्यनी दरेक स्थानके खबर आपवी अने कॉन्फरन्सना ठरावोने पुष्टि आपवी,
- ६ कॉन्फरन्सनी कायमनी स्थिति रढ करवा माटे चालु उपज थाय तेवी योजना करवी,
- ७ कॉन्फरन्सना हेतु अने ठरावो दरेक गामे अने इाहेरोमां समजाववा प्रयास करवो,
- ८ दर वर्षे जेम बने तेम ओछा खर्चे कॉन्फरन्स भराइ शके तेम स-गवड करवी,
- ९ डेलीगेटो माटे हवे पछी रु २) अंके वे फी राखवी, अने
- १० आपणा जैन समुदायमां जेम बने तेम संप वधारवा प्रयास करवो -

आ प्रमाणे ठराव पसार करावानी अने अमलमां मुकवानी आवश्यकता आ कॉन्फरन्स माने छे.

आ योजनानुं समर्थन करवाने तेमणे आपेछा भाषण (नि. ९) मां स्थळे स्थळे तेमनो कॉन्फरन्सना जनरछ सेक्रेटरी तरीकेनो अनुभव अने दीर्घ दृष्टि नजरे पडतां हतां. परदेश गमनना विकट सवाछने पण एवी तो चालाकीथी तेमणे प्रसं-गमां लावीने पोतानो अगत अभिप्राय दर्शाब्यो हतो के श्रोताओ खुश खुश थइ गया हता अने बीजी कोमोनी हारमां रहेवा माटे परदेश गमननी आवश्यकतानी सजजड छाप तेमना मन उपर बेसी गई लगगती हती.

मि. लख नसी हीर जी महै सरी B. A. L. L. B. मुंबईना वकील आठ-रावने टेको आपतां स्वराज्य वहीवटनी म्युनीसीपालीटीनो दाखलो आपी कॅान्फरन्सना ठरावो अमल्मां मूकवा माटे पगारदार नोकरो राखवानी जरूरियात बतावी बोल्य के, गये वरसे राय बहादुर बद्रिदासजीए पोतानी मुसाफरी दरम्यान चार आनानी मुकृत मंडारनी योजना अमल्मां मूकावी हती. आपणे पोताने माटे ३६५ दिवस मच्या रहीए छीए कोई एवो हशे के ३६४ दिवस मारा ने एक कॅान्फरन्सनो एम गणी पोतानी पेदाशनी मदद करे ? एवी दरेक जण प्रतिज्ञा ले तो तेथी मोटो फायदो थाय. ( ताळीओ ). आप भाईओए ताळी पाडी तेथी मारी सूचना अमल्मां मेलशो एम जाणी मने घणो आनंद थयो ले. आ योजना तमो तमारा संबंधमां आवनाराओने पण सम-

२

जावशो. आ एक दिवसनी पेदाशमांथी तमे। शुं शुं उपार्जित करशो ते धारो तेमां संघने जमाडी शकाशो अने एकज माणसे कॅान्फरन्सने मेगुं करेलुं गणाशे. बीजुं, ठरावो दरेक गाममां प्रसराववा महेनत करवी. मिशनरीओ अन्ने अन्य देशमांथी आपणने वटलाववा माटे मोकलवामां आवे छे तेम आपणे कोईने वटलाववानुं नथी पण तेवा आपणा पेड मिशनरीओ देशो देशमां फरी ठरावो अमल्मां लावे एवी इच्छा छे. उपदेशको टोक-रसी नेणसी अने अमरचंद पी. परमारे अत्यारसुधी सारूं काम बजावेलुं छे. आजथी २६५ दिवस गणवा अने तेमांथी गमे ते एक दिवस पेदाशनो आपवो. आप अन्ने एकठा थया छो ते ठराव करी घेर जइ उंचवा नहीं पण अमल करवा. हुं पण जे न्यातीनो गृहस्थ छुं, ते कच्छी दसा ओसवाल न्यातीए घणा ठरावो अमलमां मूक्या छे. पार्शताणामां रु. १२५००० ना खर्चे बोर्डिंग स्कूल विगेरे स्थाप्युं छे. संसार सुधारा पण अमल्मां मूक्या छे. दरेक ठराव अमल्मां मूकवा सघळाए कोशिष करवी जोइए.

डॉक्टर जमनादास प्रेमचंद L M. & S. अमदावादनाए अनुमो-दन आपतां आ ठरावना संप, अक्कल, धन अने व्यवस्था एवां चार विभाग करी दरेक बाबतपर पोताना भाषण ( नि. १० ) मां घणु सरस विवेचन कर्युं हतुं अने चूला दीठ दरसाल रु. १ ) आपवा सूचना करी हती.

मि. जुमजीवन मूळजी बनीया B. A. B. Sc. जामनगरनाए पोतानी ते योजना प्रत्ये संमति दर्शाववा करेला भाषण (नि. ११) मां कॉन्फरन्सनुं काम संगीन करवाने मोटुं फंड, सारी व्यवस्था, डेलीगेटोए लेवो जोइतो श्रम, सारा वक्ता-ओनी देशोदेशनी मुसाफरी अने त्यां तेमणे आपवानां भाषणो, कॉन्फरन्स तरफनुं वर्तमानपत्र, हरीफाइना निवंधो विगेरे विपे सारा शब्दोमां इसारो कर्यो हतो अने मासिक रु. २०) उपरांतनी पेदाशवाळाए दरवर्षे रुपीये एक पै प्रमाणे कॉन्फर-न्सना फंडमां आपवाथी धारेलां बधां कामो एकला धनाढ्यो उपर बोजो पड्या वगर थइ शकवानुं जणाशी ऐक्यतानी जरूर उपर बहुज भार मूक्यो हतो.

छाला माणेकचंद गुजरानवाला-पंजाबना अने वकील हरी-लालभाई सोजतना एमणे पोतानी अनुमति आप्याबाद प्रमुख साहेबे सर्वनो मत ल्ई ए योजनाने बहाल करी हती अने सभा फरीने बीजे दिवसे बपोरे एकत्र थवानो ठराव करी विसर्जन थई हती.

१८ झि. फलेह चंद कपूर चंद लालन तुं "आपणो अम्युदय केम थाय? " ए विषे मंडपमां रात्रे भाषण थयुं हतुं. प्रमुखस्थाने रा. रा. मि. लालननं भाषग. दृद्रा विराज्या हता. बक्ताए जणाव्युं के, जेम सूर्योदय पहेलां अरूणोद्य थाय छे तेम कॉन्फरन्सनी त्रण बेठको उपरथी थोडा वखतमां आगणो अभ्युदय थवानी आज्ञा रहे छे. आपणे जैन--निवना पुत्रो छीए. किननो अर्थ जितनार थाय छे. देश्वी आपमे जितनारना पुत्र गणाइए. बहारना विजय करनां अंतरनो विजय करवे। ए कठिन काम छे. राग द्वेषनो विजय करी जगतना जीवो मात्र उपर समभाव राखवाथी खरेखरो आंतरिक विजय थाय छे. गमे ते दर्श-ननों माणस मोक्ष पामी दाके छे एवे जैन धर्मनों उदार सिद्धांत छे. तेम छतां हालनी दुनियानी पोणा ने अठन माणसनी वस्तीमां मात्र पेंदर लाख जेटली जैनोनी नानी संख्या केम छे ? जवाब ए छे के, जैन धर्मनां तत्वो खोकोना जाणवामां नथी, ते थवा माटे देशावरोमां जैन मिशन मोकल्वानी खास जरूर छे. हं चार वरस अमेरिकामां रह्यो ते दरम्यान माराथी आपणां धर्मनां तत्वो जाणी तेओ बहु अनायच थया हता अने आपणे माटे घणो उंचो सत दर्शावता हता. माटे खरेखरा उद्य समभावनी जरूर छे, अने ते माटे आस्मिक बळनी खास आवश्यका छे. धनचळ, बाहुवळ, अने बुद्धिवळथी पण आत्मिकवळ उत्क्रष्ट छे. धार्मिक केळव-णीथी आत्मिकवळमां वधारो थाय छे. त्रिवर्गमां धर्मनी मुख्यता छतां आजकाल ते क्रम बद्लाइने काम अने अर्थनी मुख्यता देखाय छे. तेने द्र करवा धार्मिक केळ. चणीनी खास जरूर छे. कर्म अथवा प्रारब्वथी पाछा नहि हठतां तेना उपर पण वित्रय मेळववी जोइए. लोको कहे छे के, कर्म महाबळवान् छे पण जीव तेना करतांए चळवान छे. बीजी गतियो करतां मनुष्य अवतार श्रेष्ठ छे, तेनुं कारण पण एन छे के अहींथी जीव धर्म साधी मुक्ति सुधी पहोंची शके छे. जो आपणे वीर भगवानना पगळे चाली धार्मिक केळवणीनो प्रसार करीए तो आपणो अभ्युदय थाय एमां नवाइ नथी. आ वातनी लोकोना मनपर छाप बेसाडवा माटे तेमणे केटलांक हल्टांतो पण आप्यां हतां, छेवटे प्रदर्शनमां मुफेला हाथी अने आंधळाना चित्रमांने। उपदेश समजावी जैन फिङ्कांसॉर्फामां नधानो समावेश थाय छे, माटे तेनो पूरतो उदय करवा अर्थे तेनों फेलावो करवानों आग्रह करी पोतानुं भाषण समाप्त कर्युं इतुं. पछी प्रमुख साहेबे पुष्टिमां केटलुंक विवेचन कर्यावाद सभा विसर्जन थइहती.

### (२०)

## श्रीजो दिवस ता. २९-११-*०*४.

### मांगलिक गीत.

### राग काफी-ताल दीपचंदी. विलंब काल मात्रा १४.

सिद्ध भये सब काज रे ! आज स कल घडी भया. सिद्ध. चडते रंगे, आते उछरंगे, जोव दयादि काज. जैन मंडल करे, पुण्य मंडार भरे, तरे संसार अगा वरे. आज? दीन दुःखी जे जगमे प्राणी, जाणी सबको त्रास, खास विचार करे, घटमांही, पुरे मनकी आशरे. आज? पक्ष कदाग्रह दूर तजीने, जाणे सब एक सार, निराशी निराधार जीवोमे, मेद न जाणे लगाररे. आज? तप जप दाना दिक जे किरिया, तब लग सफल न जाण, जब लग जीव दया नहीं घटमे वार वचन प्रमाणरे. आज?

१९ प्रमुख साहेब, मानवंत प्रतिनिधियो अने प्रेक्षको निमेले वखते स्वस्थाने चि-प्रमुख साहेब तरफना ब साथे मांगलिक गीत गाइ रह्या पर्छा प्रमुख साहेब तर-फयी नीचला बे ठरावो रजु करवामां आव्या:---

# आठमो ठराव.

## रात्रुंजय तीर्थनी आशातना माटे दिलगीरी.

आपणा पवित्र दावुंजय तीर्थ उपर पालीताणाना ठाकेार साहेवे जे महान् आशातना करेली छे ते माटे आ कॉन्करन्स अत्यंत दिलगीर छे; अने ते संबंधमां होठ आणंदजी कल्याणजी तरफथी जे पगलां भरवामां आवे छे तेने आखा हिंदुस्थानना जैन वर्गना आगेवानोनी मळेली आ कॉन्फरन्स अतंःकरणथी संमति आपे छे ठाकोर साहेय एक पछी एक अडचण उभी करे जाय छे, अने होठ आणंदजी कल्याणजी तरफथी सुलेहशांति जाळववा माटे अनेक उपायो लेवामां आवे छे, छतां तेर्चु परिणाम ठाकोरसाहेव तरफथी असंतोषमां लाववामां आ-देखे. ते माटे आ कॉन्फरन्स पोतानो खेद प्रदर्शित करे छे, अने उमेद राखे छे के, आपणी न्यायी बिष्टिश सरकार तरफथी आपणने व्याजवी इनसाफ मळशे के जेथी आपगी तमाम अडचणी ठूर थशे

# नवमो ठराव.

# ज. सेकेटरीनी जग्या पूरवानी सत्ता.

हालना चारे जनरल सेकेटरीओने हवे पछी कॉन्फरन्स मळे त्यां सुधीने माटे कायम राखेला छे, तेमांथी कोई पण कारणसर कोईनो गेरहाजरी थाय तो वाकीना सेकेटरीओने ते जग्या पूरवानी सत्ता आपवामां आवे छे.

पहेलो ठराव समाए उमा थंइने गंभीरताथी पसार करी तेनो अंग्रेजी अनुवाद नामदार मुंबइ सरकारने मोकली आपवा माटे प्रमुख साहेबने अधिकार आप्यो अने बीजो ठराव पण सर्वानुमते मंजुर कर्यों.

२० त्यार पछी कॉन्फरन्सना जीर्ण मंदिरोद्धार खाताना जनरल सेकेटेरी बाबु चैत्योद्धार विषे दरखास्त. रजु कयोः —

# दसमो ठराव.

## जीर्ण चैत्योद्धार.

संसारदावानळथी तप्त थयेला जीवोने शांति आपनार बिश्वोपकारी तीर्थंकर महाराजानी चरण रजथी पवित्र थयेल अने तेमना अवदातोने याद लावनार तीर्थोनो तथा भव्य मंदिरोनो उद्धार करवा माटे तथा त्यां थती अशा-तनाओ दूर करवा माटे विशेष प्रकारे प्रयत्न करवानी जरूर आ कॉन्फरन्स स्वीकारे छे

आ ठरावनी पुष्टिमां **राय कुमारसिंघजीए** जणाव्युं के, आ विषय घणो मोटो छे. जीर्णोद्धार करवानी आपणी पहेली फरज छे. मोक्ष माटे जिने-श्वर भगवाननां बचन अने तेमनी प्रतिमा ए बे आधार छे. एवी प्रतिमावाळां मंदिर जीणे होय तो तेने समारवां जोइए. हिंदुस्थानमां ३० थी ३९ हजार जैन देरासरो हरो, छतां ते कायम राखवा माटे आपणे कंई पण खर्च नहीं करीए ते केवुं कहेवाय ?

प्राचीन चैत्य जोइने आपणा उपर तथा बीना लोको उपर घणी असर थाय छे. तेथी भीर्ण मंदिरोना समार कामनी जरूर छे. आपणे रहेवाना मकानने षणो खर्च करी शणगारीए अने ज्या साक्षात् भगवान् बिराजे ते मकानने समारीए पण नहि ते शरम भरेलुं गणाय.

नवां मंदिर कराववा करतां प्राचीन मंदिर समराववामां बहु पुण्य छे. ज्यां जीर्ण मंदिरो होय त्यां दृष्टि पुगाडी तेनो उद्धार करवो ए आपणी पहेली फरज छे. बधां जैन मंदिरो समराववा पाछळ घणो मोटो खर्च करवानी जरूर छे. केटलांक जैन मंदिरोमां घणो खजानो छे, ज्यारे केटलाक मंदिरोमां पूजा पण थती नथी. तो जे मंदिरोमां घणो खजानो होय तेमांथी ते पाछळ खर्च करवा जोइए. (तार्ळीओ) जे के केताणे घणी प्रतिमाओ होय त्यांथी वीजे टेकाणे जरूर होय त्यां प्रतिमाओ पण मोकल्ठवी जोइए. केटलेक ठेकाणे वधारे प्रतिमाओ होवाना कारणे पूजा विगेरेनी व्यवस्था बरोबर रही दाकती नथी; छतां बीजा मागे छे तेमने आपता नथी एवं मारा समजवामां आव्युं छे. ते बरोबर नथी.

हालमां कॉन्फरन्स तरफथी राजगृही, सोरीपुर अने वडगाममां जीर्णोद्धारनी शरुवात थई छे. पण राजगृहीमां धर्मशाळा खाते श्रीमंत गृहस्थाए सारी मदद करवी जोईए छे. तीर्थोद्धारनी पण घणी जरूर छे. मिथिला नगरीमां सीतामढीनुं तीर्थ विच्छेद थइ गयुं छे. तेना उद्धार माटे प्रथम तजवीज करवामां आवी हती; पण ते केटलांक कारगोसर सम्रु थइ शक्ती नहोती. हालमां कॉन्फरन्स तरफथी महेनत थतां केटलीक जमो ए माटे मळी शक्ती छे, ते सांभळी आप खुशी थशो. (ताळीओ) एटलुं कह्या पछी जीर्णोद्धारना काममां मदद माटे पोताना उपर आवेला पत्रो अने पोते आपेलो जवाव वांची बतावी दर-खास्त पसार करवा माटे विनंती करी.

बाबु विजयसिंघजी अजीमगंज निवासी आ दरखास्तने टेको आपतां बोल्या के आपणे सवारमां उठतां जेम रोटली खावानी जरूर विचारएि छीए ते प्रमाणे देरासरोनो जीणोंद्धार करवा तरफ लक्ष आपवानी जरूर छे. आपणा लोकोनी संभाळनी गेरहाजरीमां घणां तीर्थो खराब हालतमां आवी गया छे. तेने सारी स्थि-तिमां छाववां ए आपणं कर्तव्य छे.

मि. मोहनलाल पुंजाभाई मुंबईनी मांगरोल जैन सभाना सेकेटरीए ते पछी जैन मंदिरनो अर्थ करी ते बंधाववामां रहेले। पारमार्थिक हेतु अने जीण थवानां कारणो विषे विवेचन करी कॅान्फरन्से आ काम सत्वर केम हाथ धराय तेने माटे बनतुं करवानी जरूर छे, एम कही पोतानुं भाषण ( नि. १२ ) समाप्त कर्युं.

मि. फतेहचंद कर्षूरचंद लाल्डन आ दरखास्तने अनुमोदन आपतां एवा मतलबनुं बोल्या के, शास्त्रमां नवुं देरूं बंधाववा करतां जीणोंद्धार कराववानुं पुण्य आठ गणुं बताव्युं छे. आ संसारनी ज्वाळामांथी बळतो जीव देरामां दर्शन करवा जाय छे त्यारे तेने शान्ति थवानी साथे तेनी वृत्ति पुण्य तथा मोक्ष तरफ विशेष जागृत थाय छे अने त्यांनुं वातावरण शुभ भावना युक्त बने छे. हवे एक देरूं एक वरस उपर बंधायलुं छे त्यां आज सुधीमां २००० लोक दर्शने गया हरो एम धारो, अने एक देख़ं जेवुं के राणकपुरनुं घणा वर्ष उपर बधायलुं छे त्यां केटला गया हरो तेनो विचार करो. राणकपुर जेवा देरामां आजसुधीमां लाखो माणसो दर्शने गयेलां हरो. तेथी त्यांनुं वातावरण वधारे शान्तिमय अने शुभ भावना युक्त होवं जोइए, अने तेथीज नवीन देरु वंधावीए तेना करतां त्यांना जुना मंदिरनो-तीर्थनो उद्धार करावीए तो आठ गणुं नहि पण तेथीए वधारे पुण्य बंधाय. एम आप मानशो. तेवो लाभ लेवा कडी चूकशो नहि तीर्थ ए पी. ओ. कंपनीनी स्टीमर करतां पण वधु तारण करनारुं वहाण छे तेना उद्धार माटे चार के पांच लाख रुपिया खर्चवा ते वधु नथी.

उपर प्रमाणे ए दुरखास्तने अनुमोदन मळवाथी सर्वनो मत छेई प्रमुख साहेबे ते संबंधी ठराव पसार कर्यो.

२१ आ प्रसंगे द्या. कुंबरजी आणंदजीए जाहेर कर्युं के, आपणे अहीं रह्या रह्या कॉन्फरन्स तरफ लागणी बतावीए तेमां कंड आफ्रिकाना डेलागोआबे-नवाई नथी; पण बहु दूरना देशमां गयेला आपणा जैन बंधुओ अने तेमनी साथे रहेता चीजी कोमना गृहस्थो

थी कॉन्फरन्सने मदद.

पण आपणी आ कॉन्फरन्स तरफ अंतःकरणथी दिलसोजी देखाडे छे ते जाणी आप खुशी थशो. (ताळीओ) आफ्रिकाना डेलागोआबे खाते गयेला आपणा भाईओ कॉन्फरन्सना कार्य प्रत्ये पोतानी पसंदगी मात्र शब्दमां दर्शावीने बेसी रह्या नथी. कॉन्फरन्से उघाडेला फंडमां ४५ पौंड ने २ शिलिंग जेवी सारी रकम मोक ली आपी आपणने आभारी कर्यो छे. एम कही त्यांथी आवेलो पत्र नाणां भरनारनां बाधसिंह बांची बताच्या, जेमां एक नाम पारसीनुं अने एक मुसलमाननुं हतुं जे सांमळी सभाजनोए घणी ख़ुशी देखाडी हती.

२२ रोठ अनुपचंद मलुकचंद मरुचनाए पछी धार्मिक दलीलेथिं। भरपुर भाषण ( नि. १३) साथे प्राचीन पुस्तकोनो उद्धार क. पुस्तकांद्वार विषे दरखास्त. रवा बाबत नचि प्रमाणे दरखास्त रजु करीः----

# अगीआरमो ठराव.

## प्राचीन पुस्तकोद्धार.

सर्वोत्कृप्ट श्रीजैन शासननो आधार पूर्वाचार्योप अथाग श्रम लेइ रचेला प्रंधो उपर छे. हाल ते केटली संख्यामां विद्यमान छे तेनी पण खबर नथी, अने घणाखरा ज्ञानभंडारोनी स्थिति तो खेद उपजावे तेवी थई गई छे. माटे हस्तलिखित प्रथो ज्यां ज्यां विद्यमान होय त्यांनी विगतवार टीप अने जीणे थई गयेला तथा दुर्मिल प्रंथोनी नकलो करावी उद्धार करवानो प्रयत्न चालु राखवो जोइए; तथा ते जलदी शी रीते थई शके ने भाविष्यमां तेमनुं संरक्षण केवी रीते थाय ते माटेनी योजनाओ खोळी काढी अमलमां मुकवा आ कॉन्फरन्स आग्रह करे छे.

उपछा ठरावनी पुष्टिना भाषणमां सूत्रादि ग्रंथो केवी रीते कोना म.टे रचाया, ५स्तकारूढ कोणे क्यारे कर्या, पुस्तकोथी ड्यं समजाय छे, पुस्तकोना रक्षण माटे कुमारपाळ राजा प्रमुखे केवी हटताथी उद्यम कर्यो, आत्मान मुख्य मुण जे ज्ञान तेनुं आवरण क्षय थवानां साधनो शां छे विगेरे बाबतो सारी रीते दर्शावी हती; अने सूत्री विगेरे पंचांगी जेनी ते भाषामां ने चरित्रादि प्रंथोनाज भाषांतर छपाववानी सूचनापूर्वक पुस्तकोद्धारना काममां श्रीमंतोने धनथी अने बीजाओने दारीरथी मदद करवा आग्रह कर्यो हतो. छेवटे डेलंगेटोने पोताना तथा आसपासना गामना पुस्तक-

भंडारोनी टीपो करावी जनरल संकेटरी उपर मोकली आपवा विनंती करी हती.

द्याः अमरचंद घेलाभाई भावनगरनाए आ ठरावने अनुमोदन आ-पतां मूचव्युं के, ज्ञानपंचमी विगेरेना उजमणामां बीजी रीते हजारो रुपीया खर्ची नाखीए छीए तेना करतां ज्ञान उद्धारमां खर्चीए तो ठीक.

• द्या. रवजीभाई देवराज कोडाय ( कच्छ ) ना टेकामां बोस्या के, आपणां पुस्तकोने बहार छाववा माटे पुस्तक प्रकाशक मंडळ जेवुं खातु उभुं करवुं जोईए. जो सो सो रुपीया भरनारा १००० गृहस्थो उभा थाय तो जैन धर्मनां तमाम पुस्तकोनां भाषांतर छपावीने पुरां पाडी शकाय.

मि. फतेहचंद कर्पूरचंद लालने जणाव्युं के तीथी तथा देवालयो बधानो आधार भगवाननी वाणी उपर छे तेथी जैन मंदिरो करतां जैन ज्ञान मंदिरनी बधारे जहर छे.

छेचटे रा. ढढ्ढाए जेसल्मेरनो ज्ञान भंडार उघाडवा अने तेनी टीप तैयार कराववा माटे कॉन्फरन्स तरफथी करवामां आवेली तजवीज अने ते काममां तेमना माई श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी ढढ्ढाए लीधेला श्रमविषे इसारो करी कह्या के, जेसलमेर, पाटण, खंभात विगेरे स्थळोनां पुस्तको खवाई गयेलां छे तोपण तेओ जेटलां बच्यां छे तेटलां आपणे जाळवी राखवां जोईए. आ संबंधमां मुख्य मुश्केली ए छे के भंडार अमने खोली बतावता नथी. मुसलमानोना जुल्लमथी बीजां घणां स्थळोनां पुस्तको जेसल्मेर मोकली देवामां आवेलां हतां, तेमने सातसें के आठसें वरसभी हवा के अजवाळुं मळ्युं नथी. तेमनी शी दशा थयेली हशे ? त्यांना बहारना तथा अंदरना बे भंडारोपैकी बहारना भंडारमां ३५०० पुस्तको छे, जेमांथी १५०० पुस्तकोनी एक पंडित पासे अमे फेररित करावी छे. पालनपुरना भंडारनुं लीस्ट पण अमने मळ्युं छे. ते प्रमाणे बीजा पुस्तक भंडारोवाळा करशे एवी आशा छे.

आ दरखास्त सर्वनो मत छेतां पसार थई.

२३ पछी प्रमुख साहेबे बे वधु ठरावो, के जेना संबंधमां कार्यक्रममां मुकरर करेट्टा वक्ताओने वखत आपवानी अनुकुळता नहोती अने प्रमुख साहेव तरफर्था बे बोजी कॉन्फरन्स वखते जुदा जूदा वक्ताओ तरफर्थी घणुं कहेवामां आव्युं हतुं, ते ठरावो सभा आगळ मंजुर थवा माटे रजु करवामां आव्या.

Jain Education International

### ( २१ )

# बारमो ठराव.

### संधर्मीने आश्रय.

मरणांते पण याचना नहि करनार श्रावक श्राविकाओ बाळबचां साथे कोइ स्थळे सीजाय नहि अने दीनहीन हालतमां धर्मांतर थतां अटके ते माटे मोटा पाया उपर फंड थवानी अने तेमने केवा प्रकारे आश्रय आपवाधी वधारे सारुं परिणाम आवे तेनो विचार करवानी आ कॉन्फरन्स आवद्ययकता स्वी-कारे छे.

# तेरमो ठराव.

### जीव दया.

" आहेंसा परमो धर्मः " ए सिद्धांतनु सर्व लोको पालन करे, निरप-राधी जीवोने अभयदान मळे, हिंसा ओछी थाय, अने. घातकीपणुं अटकी ज-नावरो सुखी थाय तेवी विविध योजनाओ शोधी काढी अमलमां मूकवानो आ कॉन्फरन्स सर्वने आग्रह करे छे.

ए बे ठरावो तरफ सर्व सभा जनोए पोतानो हाथ उंचो करी संमति दर्शावी पसार कर्यो.

२४ मि. दोलतचंद पुरुषोत्तम बरोडिया B. A. जुनागढ हाइस्कुलना संस्कृत प्रोफेसरे बधुं सर्वभक्षी अनद्यतन काळने आधीन प्राचीन शोधखोळ विषे छे. माटे आपणी कोमनो अने गूजरात विगेरे देशनो दरखास्त. इतिहास जाळवी राखवा अने तेनापर विशेष अजवाळुं पाडवा माटे प्राचीन शिला लेखो, पुस्तको, सिक्काओ, मकानो, ताम्रपत्रो विगेरेनी

शोध करी तेमनुं संरक्षण करवुं अने तेनी असल जेवीज नकलो अने भाषांतरो तैयार करावी प्रसिद्धिमां मूकवां जोइए. ते काममां द्रव्यनी खास जरूर छे. श्री शत्रुंजय, गिरिनार अने राणकपुर विगरेना लेखो मारी पासे भाषांतर साथे तैयार छे; अने श्री आत्रुजीना शिला लेखो मेळववानी तजवीज जारी छे. तेमां लागता वळग-

Jain Education International

ताए मदद करवानी महेरबानी करवी. ए विगेरे मतल्लबनुं भाषण ( नि. १४ ) करी नीचे लखेलो ठराव पसार करवा माटे सभामां रजु कर्योः----

# चौदमो ठराव.

## प्राचीन शोधखोळ.

जैन धर्मनी कीर्त्तिना आधार अने प्राचीनताना पुरावारूप तीर्थों, मं-दिरो अने प्रतिमाजी उपरना लेखो विगेरे शोध खोळ धई प्रसिद्ध थवानी घणी जहर छे. पथी अनेक अप्रसिद्ध उपयोगी हकीकतो उपर घणुं अजवाळुं पड-वानो संभव छे, एम आ कॉन्फरन्स माने छे.

मि. मनसुख की रत्चंद महेता. B A मोरबीनाए आ ठरावने अनुमोदन आपतां घणी जाणवा योग्य माहितीथी भरपूर भाषण (नि. १९) कर्युं हतुं. तेमां प्राचीन शोध खोळनी शरुवात करवानुं, तेम तेने हिंदमां थोडे घणे अंशे दाखल करवानुं मान यूरोपीयन पंडितोने, एश्याटिक सोसाइटीने तथा केटलाक हिंदु शोध-कोने घटे छे, एम कही तेमनां नामो निर्दिष्ट कर्यां हतां. श्रींजैन लाक्षणिक प्रद-र्शनमां मूकेला चार संजीविनी न्यायना दृष्टांतनी छवी तरफ ध्यान खेंची नव वर्ष उपर मरहुम डॉक्टर पीटरसने पुना डेकन कॉलेजमां पोताना विद्यार्थीओने भाषण रूपे कहेली ते संबंधी कथा संभळावी हती. अत्यार सुर्धामां श्रयेली शोधो विषे इसारो करी जो पादशाह अकवर तथा जहांगीरना वखतमां मळेलां ताम्रपत्रो आगळ आव्यां न होत तो आपणा पवित्र तीर्थ श्रीसमेतशिखरजी पासे उद्य-डेलुं चरबीनुं कारखानुं कदाच् बंध न थात अने आपणो हक—दयामय हक्क डूबत, ए खास ध्यानपर आणी एवा ताम्रपत्रो, प्राचीन लेखो, शिलालेखो विगेरेनी शोध खोळ विशेष उपयोगी होवानुं प्रतिपादन कर्युं हतुं. तेमज ते कार्य शी रीते सिद्धि पामे ते माटे चार उपायो मूचव्या हता, जेमां ए खाते पगारी नोकरो राखवा तथा छेक्चरशीपो स्थापवी एनो पण समावेश कर्यो हती.

बाद सर्वानुमते ए दरखास्त प्रसार करवामां आवी हती.

२९ मि. भगुभाइ फतेहचंद कारभारी, अमदावादमां प्रसिद्ध थता जैन डीरेक्टरी विषे द-रखास्त. जैन दाखल करवी ते विषे पोताना विचारो जणावी नीचे प्रमाणे ठराव प्रसार करवा सभाने विनंती करी हती:----

### ( २८)

# पंदरमो ठराव.

### डीरेक्टरी.

आपणी हरेक प्रकारनी स्थितिनो ख्याल आववा सारु आपणां तीर्थो, मंदिरो, प्रतिमाओ, ज्ञान मंडारो, प्रंथो, पाठशाळाओ, पुस्तकालयो, सभाओ ( मंडळो ), साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविकानी संख्या विगेरे बाबतनी एक डीरेक्टरीरूपे वखतो वखत नोंध थवानी आ कॉन्फरन्स घणीज जरूरियात भारे छे

मि. जीवराज ओधवजी दोशी B. A. भावनगरना आ दरखास्तनी पुष्टिमां भाषण ( नि. १७ ) करतां बोल्या के, संसार अने धर्म संबंधी चोकस वर्तमान स्थिति जाण्या शिवाय उन्नतिनां साधन योजवा तत्पर थवुं ते वाळुका-रेतीना पाया उपर इमारत चणवा जेवुं छे. माटे आपणी आर्थिक, सांसारिक अने धार्मिक स्थितिना यथावस्थित बोधने अर्थे जैन डीरेक्टरीनी खास आवश्यकता छे. ए विगेरे कही ते मोटेनां आसनो हेतु साथे मूचव्यां हतां.

पछी सर्वनो मत लेइ ते ठराव मान्य राखवामां आव्यो हतो.

२६ श्रीमंत महाराजा साहेब सुमारे त्रण वागे पोताना युवराज औ. महाराज साहेब अने साथे कॅान्फरन्समां थतां भाषणो सांभळवा पधार्था तेमने युवराजनुं आगमन. सभाजनोए हर्षनादथी वधावी लीधा हता.

२७ रा. रा. दढुाए ते पछी पोतानी मनोरंजक वाणीमां जणाब्युं के, आपणे जैनो होवाथी आपणो संसार जैन शासननां फरमान हानिकारक रीवाजोना प्रमाणेज चलाववो जोइए. अन्य दर्शनीओना सहवासथी प्रमाणेज चलाववो जोइए. अन्य दर्शनीओना सहवासथी जैन धर्म विरुद्धना घणा कुचाले। आपणामां पेसी गया छे, ते टूर करवानी जरूर छे. शास्त्रमां जोवन वय थाय त्यारे परणाववानुं लस्वेलुं छे ते विरुद्ध केटलेक ठेकाणे बाळलझ थाय छे. तेथी घणुं खराब परिणाम आवे छे. ब्रह्मचर्यने हानि पहोंचे छे. प्रजा नवळी थाय छे. श्रीमंत महाराजा साहेबे ए संबं-धमां कायदो करी पोतानी प्रजा उपर महड् उपकार कर्यो छे. वृद्ध विवाह निंध छे. ते घणे भागे संतान माटे थयेल्ठो जोवामां आवे छे. तेवी वये कन्या मेळववा पेसानी लालच अपाय छे, जेथी कन्याक्तियने पण घणुं उत्तेजन मळे छे. मरण पाछळ रडवा कूटवाथी आर्तध्यान थाय छे, अने तेना परिणामे नरकादि दुर्गति प्राप्त थाथ छे. मरण पाछळ जमवानुं तो तद्दन धर्म विरुद्ध छे. लग्नविधि आपणामां मोजुद छतां हजु घणा भाईओ अन्य धर्मनी विधि प्रमाणे लग्न करे छे. तेम थवाथी पर-णेलां वरवधु जैन धर्मनो महिमा अने जैन शास्त्र प्रमाणे एक बीजा प्रत्येनी फरज समजी शकतां नथी. तेथी करीने पतिपत्नीमां अणवनाव थवाना केटलाक प्रसंग नजरे पडे छे. जो स्वधर्मने मान आपी दरेक जैन बंधु टढ निश्चय करे तो बीजानी देखादेखी आपणामां जे जे बदीओ घुसी गई छे ते जलदी नाबुद धई जवानी आशा राखी शकाय. ए विगेरे आशयनुं घणुं असरकारक भाषण करी नीचे प्रमाणे ठराव पसार करवा सभाने भलामण करी हती.

# सोळमो ठराव.

## हानिकारक रीवाजोनो त्याग.

सम्यक्त्वने दूषित करनारा अने कोमने अवनतिए छेइ जनारा बाळ छग्न,वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय, मरण प्रसंगे जमणवार, मरण पाछळ रडवुं कूटवुं, फरजीयात खोटा खर्च, अने जैन धर्म विरुद्ध विवाह ( ऌग्न ) विधि विगेरेनुं सेवन, इत्यादि रीवाजो पैकी ज्यां ज्यां जे जे हानिकारक रीवाजो चालु होय त्यां ते बंध अथवा कमी करवानी आ कॉन्फरन्स मजवूत भलामण करे छे.

प्रो. नथुभाई मंछाचंद, जाणीता जैन जादुगर, आ विषयनी पृष्टिमां पाषाण हृदयने पण पीगळावे तेवां वाग्वाणो फेंकतां बोस्या के, आपणे जीवदया प्रतिपाळ जैनोए बाळल्झमां सपडातां कुमळां बच्चां तरफ अने कन्याविकयने भोग पडती गाय जेवी निदोंष बाळकीओ तरफ दयानी नजरथी निहाळवुं जोईए. बुद्धो काल्ठे तो मरवानो होय तेने मात्र पैसानी खातर थोडो काळ चाल्लोचुडो भोगववाने नानी बाळकी आपवी ते बीजुं कंइ नहि पण घातर्कापणुं छे. काठीयावाडमां अने बीजा भागोमां आपणा केटलाक जैनो कन्याविकयनो माठो धंघो धमधोकारे चलावे छे ते तेमनी गरीबाईनुं मूचन करे छे. माटे तेवा गरीव जैनोने विद्या हुलरमां कामे लगाडवानी जरूर छे. सगां वहालांना मरणथी स्वाभाविक लागणीने लइने अश्रुपात थाय; पण रागडा काढी भररस्ते निर्ह्लजपणे छाती उघाडी मूकी राजीया गावा ने दछळी उछळी धबाधन कुटवुं ए फारस नहि तो द्युं ? एक माणस गुजरी जतां तेनी पाछळ तेना आखा कुटुंबनो मरो थाय छे. मरनारनी स्त्री एकनी एक अने तेनी साथे कुटनारां अनेक, तेथी एना घंघानो, सुखनो अने शरीरनो नाश थाय छे. एक तरफ रडवुं अने बीजी तरफ लाडवा उलाळवा ए शरम भरेलुं. छे माटे बीजा सुधारा करतां पहेलां आवी बाबतमां-आपणा संसारमां आग्रहपूर्वक सुधारो करवो जोईए.

मि. फतेहचंद कर्पूरचंद लालने, त्यारबाद एक सद्वक्ताने छाने तेवी रमुजी रीते, आपणने रीवाजनी जरूर छे तेनी ना पाडी राकाय नहीं. मात्र खोटा रीवाजो दूर करवा जोईए. एक रीवाज-नियमथी बागमां वहेतुं पाणी वृक्षोने प्रफुछित करे छे त्यारे वगर नियमे वहेतुं पाणी घणा प्रकारे नुकसान करे छे. बाळ-छप्न ते ल्याज नथी केमके ल्या कियामां वरवहुनी संमति लेवाय छे. ते नातां बाळ-कोमां संभवेज केम ? विगेरे विवेचन कर्युं हतुं.

आ त्रणे वक्ताओनी वाणीमां ते वखते एवो तो रस प्रवाह छूट्यो हतो के जेनो आस्वाद छेतां श्रीमंत महाराजा साहेब जेवा विद्वान् नृपति अने बीजा श्रोताओ साथे रिपोर्टरोनां चित्त पण तेमना तरफ आकर्षोइ तेमनी कल्म पण अटकी गइ हती, जेने लीधे उपर जणावेला तेमना सुभाषितना सार मात्रथी संतोष मानवा पडे छे.

श्रीमंत युवराज फतेहसिंहराव महाराज आ प्रसंगनो लाम लड़ हिंदना एक महान सवाल-संसार सुधारा विधे अने तेनी साथे संबंध करता केळ-वणीना सवाल विषे पोताना विचारो स्वतंत्रपणे जणाववा माटे सभाजनोना हर्षनाद बच्चे उभा थया हता. तेमणे दीलगीरी साथे जणाव्युं के, हिंदी युनिवर्सिटीओमां ( विद्यामंदिरोमां ) मात्र Theoratical-दरेक बाबतना नियमोनी मुख पाठथी केळवणी अपाय छे, पण Practical-व्यवहार ( अनुभव ) मां उपयोगी थड़ पडे तेवी केळवणी घणी ओछी आपवामां आवे छे. केळवणी प्राप्त कर्या पछी संसार सु-धारानुं पहेलुं पगथीयुं आपणी स्त्रीओने छूट आपवानुं छे. स्त्रीओने जोइती छूट आपो, जने तेओनेज तेमने पोताने माटे विचार करवा द्यो. हिंदमां सामान्य रीते अनीतिवधी गइ छे, एटलुंज नहि पण सांसारिक स्थिति पण बगडी गइ छे. बाळल्याना सवाले अमारा राज्यनी प्रजामां घणी जोस भेर चर्ची चलावी मूकी छे. ल्या योग्य वये थ-वाने बदले कन्या पारणामां होय अने छोकरो दशगणो मोटे होय तेमनां लग्न धाय, तथा तेथी उल्टीज रीते ल्या थाय ते सामे मारो घणोज सख्त वांधो छे. जूदा घूदा धर्मी अने जाते। वच्चे चाल्ती अदेखाई दूर करवी जोइए. मारो मोटामां मोटे हेतु सर्वने धर्मनुं झूटापणुं आपवा संबंधे छे, अने दरेक न्यातना अथवा पंचना छो-कोए एक बीजा साथे जोडाइ जवुं जोइए. हुं आशा राखुं छुं के बीजी कोमो, जैन अने आगळ वधेली बीजी ज्ञातोनो दाखलो लई, तेमनी पूठे चालशे अने प्रथम व-डोदरा राज्यमां अने पछी आखा हिंदमां ऐक्यता फेलाशे. (ताळीओ) ते पछी आपणे हिंदना खरा मित्रो तरीके भविष्यमां वधु सुधारा वधारा करवानी धारणा राखीशुं. एवा मतलबनुं अंग्रेजीमां छटादार भाषण करी छेवटे बोल्या के,

I am glad to say that you at least the Gujaratis have been following the right path. For Gujarath, we may fairly claim, I think, leads India in intelligence, enlightenments and education. In short, I hope, we shall have the pleasure of seeing many Conferences like this at Baroda, and that each Conference, will be able to place on record that it has cleared up some difficulty and cleared the way a little for future progress.

In conclusion, I may add one word more. I may seem partial only to the Gujaratis, but I cannot help sympathizing with their religious and social movements as I am proud to say, I am also a Gujarati and also my family who are ruling over them, will not be ashamed to call themselves Gujaratis too.

" आ एक मने आनंदनी वात छे के तमे गुजरातीओ सीधे रस्ते चडी गया छो. मारा विचार प्रमाणे सफाइमेर हक करी आपणे कही शकीए के बुद्धि, प्रवेाध अने केलवणीनी बाबतमां गुजरात आखा हिंदुस्तानने दोरे छे. टुंकामां मने आशा छे के वडोदरामां आजना जेवी घणी कोन्फरन्सो जोइ शकीशुं, तेम दरेक कोन्फर-न्से कंइ कंइ मुश्केली दूर कर्यानी अने भविष्यना सुधारा वधाराना रस्ता कर्यानी पोताने दफतरे नोंध लीधानुं पण जोइ शकीशुं.

छेबटे एक वधु शब्द बोलीश. गुजरातीओ तरफ हुं पक्षपात करतो देखाइश, पण तेमनी धार्मिक, अने सांसारिक हीलचालो प्रत्ये हुं दिलसोजी धरावुं नहीं, एम तो बनेज नहीं. कारण के, मगरुवी साथे हुं कहुं छुं के हुं पण एक गुजराती छुं अने मारुं कुटुंब के जे तेमना उपर अमल चलोव छे ते पण कहेतां शरमाशे नहीं के तेओ पोते पण गुजराती छे. " (ताळीओ) श्रीमंत युवराज महाराजनुं भाषण पुरुं थतां तेमनो उपकार मान-वामां आव्यो हतो अने सोळमा ठरावना संबंधमां मत लेईने ते पसार थयेलो जाहेर करवामां आव्यो हतो.

२८ त्यारबाद प्रमुख साहेबनी परवानगीथी श्रीमंत महाराजा साहेब आदिनो आभार मानवा बाबत जूदी जूदी दरखास्तो रजु कारकोळ दरखास्ता. करवामां आवी हती, अने ते सर्वानुमते पसार करवामां

आवी हती.

### शा. कुंबरजी आणंदजीए जहेर कर्युं के,

श्रीमंत सरकार सयाजीराव बहादुर तथा बीजा जे जे राजा महा-राजाओ अने सद्ग्रहस्थो जीव हिंसा अटकाववाना काममां मदद करे छे अने पो-ताना राज्यमां चालती हिंसा जेओए अटकावी छे तेमनेा आ कॉन्फरन्स आभार माने छे अने बीजाओ तेमनुं अनुकरण करे एम ईच्छे छे.

लाला माणेकचंदजीए सदर दरखास्तने समर्थन करतां सभाने अ-पूर्व विनोद पमाडी कह्युं के, श्रीमंत महाराजाहेवनी कीर्ति हुं पंजाब सुधी गाईश. आपणा काममां तेमना जेवा महाराजाओ हमेश मळता रही एम इच्छुं छुं.

### रा. रा. माणेकलाल घेलाभाईए जणाव्युं के,

श्रीमंत महाराजा साहेबे तथा श्रीमंत युवराजे कॉन्फरन्समां पधारीने तथा बीजी रीते घणी मदद करी छे तेथी तेमनो तथा जे अधिकारी साहेबोए कॉन्फरन्सना काममां मदद करी छे तेमनो तथा कॉन्फरन्सनो हेवाल प्रकट करी मदद आपवा माटे सयाजीविजय, जैन, मुंबइ समाचार अने बीजा पत्रोनो आ कॉन्फरन्स खास उपकार माने छे.

रा. रा. कल्याणभाई अमीचंद झवेरी, रीसेप्शन कमीटीना ज-नरह सुपरीन्टेन्डेन्ट एमणे आ दरखास्तने टेको आप्यो हतो.

रा. रा. माणेकलाल अंबाराम डॉक्टर, श्रीसयाजी विजय प-त्रना अधिपती तेनो जवाब वळतां बोल्या के, मारा पत्रना तेमज मारा भाइबंध पत्रोना मनायला उपकार माटे अमो खास आभारी छीए. वर्तमानपत्रोनी आ खास फरज छे अने ते अमे तेमज बीजा पत्रकारी जूदी जूदी कोमनी अने जूदी जूदी बाबतोनी प्रसंगोपात हीलचालोने उपाडी लइ बजावीए छीए, तेथी आ मान गुजरात काठीया-वाडना सर्व वर्तमानपत्रोने सरखुं छे. आ तरफना वर्तमानपत्रोनी स्थीति हजी पछात छे तेम तेनी हजु लोकोने खरी किंमत अने रहस्य जणायुं नथी. एमां दोष कदाच अमे अमारी अगत्य समजावी शकता नहीं होय ए होय, तेम तमो हजु अमो तरफ दृष्टि अने कदर पुरती नथी करता तेथी पण होय; पण वखतना वधवा साथे तमो व-धशो तेम अमो पण आगळ वधीशुं तो मविष्यमां युरोपनी पेठे अहींना वर्तमानपत्रो राजा प्रजानी वच्चे लामकारी अने एक सत्ता ( Power ) जेवां थशे.

मारा पत्रनो मनायेलो उपकार खरूं जोतां श्री. महाराजा साहेबनेज घटे छे, कारण के, आ तरफनां कोइ पण देशी राज्यो पोतानी हदमां वर्तमानपत्र काढवा देता नथी. तो अहीं मारुं प्रेस-षेपर तमारी सेवा बजावी शक्युं, तेनुं मान श्रीमंतनेज छे. [ ताळीओ ] अमारा राज्य पिताना हुं वखाण करुं, ते कदाच अयोग्य गणाय, पण मारे कहेवुं जोईए के, अमारा महाराजा अमोने, अमारा राज्यने अने दरेक कोमने दरेक बाबतमां आगळ वधारवा घणीज लागणी अने काळजी राखे छे, ते जोतां हुं कही शकुं छुं के,

शिवाजी न होत तो सुनत होत सबकी.

सयाजी न होत तो उन्नत न होत हिंदकी. (ताळीओ)

अमारा महाराजा साहेब जे काम उपाडे, तेमां मदद करवानी अमारी फरज छे. स्वार्थ दरेकने छे तेम मारुं योग्य हिताहित संमाळीने मारा जीवन अने वख-तनो बने तेटलो लाभ आ राज्यनी प्रजाना हित माटे या तेवी धारणाथी श्रीमंते उपाडेला काममां हुं खुशीथी आपीश. [ताळीओ ] केमके मारा वतन सुरतथी वि-द्यार्थी तरीके आव्या बाद वडोदरावडेज मारी जींदगी हालना रूपमां छे. मोहमेदन कॉन्फरन्स पण वहेली मोडी अहीं आववा संभव छे तो ते वेळा तेमज बीजा धर्मनी कोमोने पण आपणे समान गणी मदद करवी ए फरज छे अने हुं खुशीथी ते रस्तो शरु करीश. (ताळीओ)

चोठ. लालभाई दलपतभाईए, कॉन्फरन्त माहेनी बिटिश रैयत तरीके, रोशन कर्युं के,

4

श्रीमंत महाराज साहेबे कॉन्फरन्सने मदद आपी ते माटे तेमनो अने अहीं करवामां आवेला पुष्कळ खर्च तथा प्रयास माटे श्री वडोदराना संघनो, रिसेप्दान कमीटीनों अने निरंतर खडा ने खडा रहेला विनयी वॉलंटीयरोनो आ कॉन्फरन्स आभार मागे छे

२९ श्री वडोदराना संघ तरफथी त्यारबाद प्रतिनिधियोनो आभार मानी सेवा भक्तिमां रहेली खामी माटे क्षमा मागवामां आवी क्षेत्रराना संघ मागेली क्षमा अने प्रमुख साहेब तर-हती अने प्रमुख साहेब राघ बहादू रब्बुधर्सिघजी फयी भेट. नरफथी कॉन्फरन्स हस्तकना फंडमां रु. ५००० नी भेट नाहेर करवामां आवी, जे खुशालीना अवाजो साथ वधावी लेवामां आवी हती.

३० अमदाचादना नगरহोठ चीमनभाइ लालभाइए ते पछी प्रमुख साहेबनो उपकार मानवा नीचली दरखास्त ममुख साहेबनो उपकार. रजु करीः----

रायबहादुर दुर्धांसंघजिए कॉन्फरन्सनुं प्रमुख स्थान स्वीकारी पोतानी वृद्ध उमरे दूरने पह्लेथी पधारवानों परिश्रम उठाव्यों अने कॉन्फरन्सनुं कार्य पार उतारवामां पोताना बहोळा अनुभवनों तथा द्रब्य्रनो लाभ आप्यो, ते माटे आ कॉन्फरन्स तेमनो खरा अंतःकरणथी आभार माने छे अने इच्छे छे के, एमना हाथे आवां अनेक शुध कार्यों थाओ !

शोठ जेसंगभाई हठीसंघे, प्रमुख साहेबनां धर्म कृत्योनुं टुंकामां विवे-वेचन करी सदर दरखास्तने टेको आप्या बाद सभाजनोए ते जयनाद साथे पसार करी हती.

**२१ प्रमुख साहेबे** त्यारबाद सभानुं कार्य समाप्त थयेछुं जणाववा सूचना समाप्ति. करी ते उपरथी रा. रा. ढढूा बोल्या के,

मने आशा छे के अत्रे तमे जे वातो ग्रहण करी छे, ते कॉन्फरन्समां मैली चाल्या जशो नहीं. पण तमारां पोताना गामोमां के शहेरोमां सभाओ करी, कॉन्फरन्सना ठरावो बधाने संभळावी ते ठरावोनो अमल थाय, एवी को-शिष करशो। हवे पछी कॉन्फरन्स भराय त्यां आवी रीते तमे पघारशो तथा कॉन्फरन्स तरफथी बहार पडवाना पत्रमां लखाणो मोकलता रहेशो, एवी पण हुं आशा राखु छुं. तमे आटली महेनत लेई जुदे जूदे स्थळेथी अत्रे पधार्या, ते माटे तमारो बधानो आभार मानुं छुं.

श्रीमंत महाराजा साहेब आदि राज्यमंडलने प्रमुख साहेबना हाथे अने प्रमुख साहेबने स्वागत मंडळना प्रमुख रा. रा. फतेहसाई अमीचंद झवेरीना हाथे हारकलगीओनो सत्कार थया बाद वाजिंत्रना नाद साथे सल्लामी गवातां कॉन्फरन्स बरखास्त थई हती.

### सलामी.

राग रांकरा भरण--- ताल तिश्रजाति जाति एकताल मध्यकाल मात्रा ३.

सकल गुणनो निधान श्रीवीर जिनजी है. निद्दादिन सब संघ उनकी रूपासे अगनंद मंगल पावतेज है.

### ( ३६ )

# आनुषंगिक हेवाल.

**२२ वडोदराना नगरदोठ हरिभक्ति** तरफथी ता. २९-११-२४ मंगळवारनी रात्रे कॉन्फरन्सना मंडपमां प्रमुख साहेव, मगरहोठ तरफथी पानसो-मारीनो मेळावडो. सोपारीनो मेळावडो करवामां आव्यो हतो. तेमां रिसे-

म्शन कमीटीना सभासदोने पण आमंत्रवामां आव्या हता.

रा. बा. हरगोविंददास कांटावाळाए नगरशेठ साहेब तरफथी शरुआतमां जणाव्युं के, आ कॉन्फरन्सथी जैनो एकलानेज नहीं, पण बीजी कोमो तेमनुं अनुकरण करशे तेटले दरजो तेमने पण लाभ थयो छे. कॉन्फरन्समां मारे खर्च कर्युं छे तेनो बदलो ठरावो अमलमां मूकी वाळवो जोइए. नीति अने धर्मनी केळवणी आपवानो विचार सारो छे. वाणिया वेपार करवा प्रदेश जता नथी तेथी तेमनो वेपार कमी थई गयो छे ए खोटुं नथी. माटे वेपार वधारी हुन्नरशाळाओ काढी आपणी स्थिति सुधारवी जोइए. अने देशी मालने नभावी लई उत्तेजन आ-मवुं जोइए. हुं इच्छुं छुं के, जैन कॉन्फरन्स आम दर वर्ध भराती रहे.

रा. रा. माणेकलाल अंबाराम डॉक्टर बोल्या के, जैन कॉन्फ-रन्सनो आ शहेरने लाम आपी अत्रेना जैन संवे प्रजा उपर मोटो उपकार कर्यो छे. कॉन्फरन्से अमारामां घणो उत्साइ प्रेयों छे. अमदावादमां वैश्य सभा स्थपाई छे ते आ कॉन्फरन्सना उत्साहथी प्रेराइने आवी कॉन्फरन्सो भरवाने उत्तेनाय अने आखरे धर्मनो सवाल वाद करी सांसारिक बाबतोमां एकत्र थई सुधारा करे एवं हुं इच्छुं छुं. श्रीमंत महाराजा साहेब अमने आगळ वधारवा प्रयास करे छे तेमां आ कॉन्फरन्सथी मळेला उत्साह साथे संपनी सुगंधी फेलाई सुखरूप कार्यो हाथ धर-वामां आवे एवी हुं आशा राखुं छुं.

परीख जीवणलाल भगवानदास, (जोगीदास मोरारजी वाळा) बोल्या के, परमात्मानी परम कृपाथी आ जैन कॉन्फरन्सनो त्रीजा वर्षनो महोत्सव आप सर्वनी तथा श्रीमंत महाराजा साहेबनी संपूर्ण मददवडे फतेहमंद तीवड्यो छे, के जेने माटे अत्रेना कारोबारीओ विगेरे तेमना उत्साह अने जात महेनत माटे खरेखर वन्त्रादने पात्र छे. आ ज्ञाम प्रसंगे विविध प्रकारनी धर्म अने स्यवहार संबंधी आपनी सन्मुख रजु थयेली हकीकत आपे संपूर्ण धैर्य अने लक्ष-पूर्वक सांभळवा तस्दी लीधी ए ख़ुशी थवा योग्य छे. हुं आशा राखुं हुं के, तेवीज रीते वडोदरामां स्थपायेली हिंद निराश्रित बाळरक्षकाश्रमनी हकीकत जे आपना आगळ रजु करवामां आवी छे ते तरफ लक्ष आपशो.

रा. रा. माणेकलाल घेलाभाईए जणाव्युं के, आ कॅान्फरन्सने महाजनना गृहस्थोए घणी मदद आपी छे. कॅान्फरन्सने सामान वेचवामां नफो लेवानी लालच राखी नथी. आजे नगरशेठ साहेबे तथा रा. बा कांटावाळाए आपणने जे मान आप्युं छे ते माटे तेमने धन्यवाद घटे छे.

रा. रा. ढढ़ुा वडोदराना महाजननो उपकार मानी बोल्या के, नगरशेठ हरिभक्तिए आपणने आ मेळावडो करी जे मान आप्युं छे ते जैन अने वैष्णवो वच्चे ऐक्यता थवानी निशानी रूप छे.

पछी हार कलगी अत्तर गुलाब पानसोपारी अपाया बाद मेळावडो विसर्जन थयो हतो.

**३३ मि गुलाबचंद्जी ढढ्ढाना** प्रमुखपणा नीचे त्यारबाद जैन प्रेज्यु-जैन श्वेतांबर प्रज्युएट एटोनुं मंडळ एकत्र मळ्युं हतुं. तेमां नीचे लखेला ठरावो इसोशीएशननी स्थापना. पसार करवामां आव्या हताः--

- 9 हिंदना सघळा श्वेतांबर जैन ग्रेज्युपटोनुं एक मंडळ कॉन्फरन्सना संबंधमां उभुं करी तेनुं नाम '' जैन श्वेतांबर ग्रेज्युपट्स एसोशा-एशन '' राखवामां आवे छे तेना प्रमुख तरीके मि गुलाबचंदजी ढहूा M.A., उपप्रमुख डॉ. बाळाभाई मगनलाल L.M.& S. अने सेकटरी मि. मोतीचंद गीरधरलाल कापडीया B.A.L.L.B ने निमवामां आव्या छे.
- २ कॉन्फरन्सना हेतुओ पार पाडवा माटे दरेके प्रयत्न करवो.
- ३ कॉन्फरन्स तरफथी मि ढढ्ढाना तंत्रीपणा नीचे नीकळनार मेगेझीन (मासिक) मां दरेके धार्मिक तेमज सामाजिक विषयो लखवा.
- ४ पांच वर्ष तथा ते उपरनी मुदतना प्रेज्युपटोप कॉन्करन्सना निभाव माटे वार्षिक लवाजम रु ४ आपत्रु

- ५ पांच वर्षनी सुदतनी अंदरना ग्रेज्युएटोए वार्षिक लवाजम रु.२) आपवुंग
- ६ एसोशीएशनना दरेक सभासदने कॉन्फरन्स तरफनुं मासिक वगर छवाजमे मोकळवा कॉन्फरन्सनाज सेकेटरीने विनंती करवी.
- ७ आ ग्रेज्युपट मंडळमां बारीस्टरो, हाइकोर्ट छीडरो अने डीस्ट्रीक्ट ष्ठीडरोने पण दाखल करवा

उपर प्रमाणे ठरावो पसार कर्या बाद प्रमुखनो उपकार मानी मिटिंग बर-खास्त थई हती.

३४ परम पूज्य आचार्य श्री. १०८ श्री कमलविजय सूरि आवार्य श्रीकमल्विजय सूरिनुं व्याख्यान. महाराज ता. ३०-११-०४ नी सवारे कॉन्फरन्सना मंडपमां व्याख्यान वांचवाना छे, एवी आगला दिवसनी कॅान्फरन्सनी बेठकमां जाहेरात आपवामां आवी हती ते उपरथी शहेरनुं अने प्रमुख साहेब विगेरे बहारथी पधारेलुं सर्व जैनमंडल त्यां सवारमां एकत्र थयुं हतुं. आचार्य महाराजे प्रसंगने अनुसरतो उपदेशं घणीज असरकारक रीते आपी जीव दयाना विषयने वधारे पुष्टि आपी हती.

ते पछी प्रमुख साहेवे, बीजा केटलाक भाईओ साथे, चतुर्थ वत-ब्रह्मचर्य अंगीकार कर्युं हतुं; अने कॉन्फरन्स हस्तकना फंडमां केटलाक भाईओ तरफ्यी सारी रकमो भरवामां आवी हती.

मुनि श्री विनय विजयजीए पछी संसारनी मोहमाया उपर भाषण कर्युं हतुं, जे सांभळी सभाजनेा प्रमुख साहेब तरफनी प्रभावना लेई विदाय थया हता.

३५ मि. बाळ गंगाधर टिळक पुनाना जाणीता हिंदु विद्वान्, एमनुं ते रान्ने कॉन्फरन्स मंडपमां भाषण अपाववानी योजना करी <sup>मि. डिळकनुं भाषण.</sup> हती, ने लोकोने ते विषे अगाउथी खबर आपी हती तेथी ज्ञैन माईओनी साथे अन्यदर्शनी गूजराती दक्षिणी लोको पण मोटी संख्यामां एकत्र थया हता. बेसवानी जग्यो नहि मळवाथी घणा लोको एकेक खुरशी उपर बवे ए रीते बेसीं गया हता. सभानुं प्रमुखस्थान **बाबु साहेव विजयसिंघजी ने** आपवमाां आव्युं हतुं, जे तेमणे लीधा बाद मि. टिळक मधुर अने सर्वश्राव्य वाणीमां बोल्या के,

सभ्यगृहस्थो ! आप सर्वने विदित हरो के, आपनी आगळ माषण आपनार हुं जैन धर्मी नथी. हुं ब्राह्मण छुं अने तेथी ब्राह्मणधर्म पाठुं छुं. छतां जैन धर्म उपर विवेचन करवानुं जे मने कहेवामां आव्युं छे ते माटे हुं आपसाहेबनो आभारी छुं. गुजराती अगर हिंदुस्थानी भाषामां मने बोछवानो परिचय नहि होवाथी में मराठीमां अगर अंग्रेजीमां बोछवा दुरस्त धार्युं हतुं; पण घणा छोको अंग्रेजी नहि समजवाथी हुं मारुं भाषण मराठी भाषामां आपवा धारुं छुं. तेम छतां पण मराठी नहि समजवाथी हुं मारुं भाषण मराठी भाषामां आपवा धारुं छुं. तेम छतां पण मराठी नहि समजवाथी मं कैन धर्मना इतिहास तथा बीजां पुस्तको उपरथी अने मुंबइमाना मारा जैन मिन् त्रोना सहवासथी मेळवी छे. तेमां कंइ नवीन जेवुं नथी. तेम वळी आजे हुं कंइ पण जैन धर्म विरुद्ध बोख्वा मागतों नथी. जे कहेवानुं छे ते जैन धर्मने अनुकुळज छे. '' जैन धर्मना अन्य धर्म साथेना संबंघ '' विषे हुं तमने कहेवा माग छं.

#### जैनो हिंदुथी जूदा नथी.

हुं समजुं छुं के जैनो हिंदुथी ज़ूदा नथी. केटलाक एवो भेद पाडवा मागे छे. पण ते भेद कंई खिस्ती अने हिंदु धर्म वच्चेना भेद जेवो नथी. जैनो अने हिंदु एकज देशना, एकज भाषा बोलनारा अने एकज लोहीना छे. तेओ एकज साधन साधे छे.

### जैन धर्मनी प्राचीनता.

जैन धर्म अनादि काळथी चालतो आव्यो छे, ए तत्व खरुं छे के नहि ए प्रश्न अत्यारे उभो करी तेनो खुलासो करवा हुं इच्छतो नथी. पण आ वात इतिहास सिद्ध छे, के जैन धर्म प्रवर्तावनार चोवीस तीर्थकरोमांना छेछा तीर्थंकर महावीर इ. स. पूर्वे ५२६ वर्ष उपर थया हता. काळ गणनानी रीत एटले के संवत् अथवा शक गणवानी रीतथी मालम पडे छे के, जेम खिस्तीओनो इसुखिस्तथी, मुसलमानोनो महमदथी, तेम जैनोनो शक महावीरथी चालतो आव्यो छे. इतिहास उपरथी धर्माचार्यना नामथी शक चलाववानी पहेल जैनोए करेली मणाय छे. जैन शक पहेलां युधिष्ठिरनो शक चालतो हतो एम कहेवाय छे पण ते मानवाने संतोष कारक पुरावो नथी. जैन शक पछी बुद्धनो शक, विक्रमादित्यनो शक अने शालिवाहननो शक एम हिंदुस्थानमां चार शक कर्त्ता थया छे काळ गणनानी रीतमां ए रीते जैनो पहेला छे. ते चोवीसे वरसनी जुनी वात याद लावी ए छोए त्यारे मालम पडे छे के जैन धर्मनी प्रवर्तना, वधारो अने प्रकाश करवामां जे प्रमुख थया छे ते बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए चार वर्णमांथीज थया छे. ते काळे दरेक वर्णमांथी प्रवर्तको थता हता अने तेमने लोको मान आपता हता.

### जैन धर्मनी बौद्ध धर्मथी भिन्नता.

जैन धर्म अने बौद्ध धर्म एकज छे एम यूरोपनाज नहीं पण अहींना पंडितोने पण आंति हती, अने जैन धर्म बौद्ध धर्मनी शाखा छे एम मानता. परंतु वधारे अ-म्यासथी अने जूनी बातोना प्रकाशमां आववाथी तेनुं निराकरण थइ गयुं छे. प्रा-चीन पुस्तको उपरथी माल्लम पडे छे के, गौतमबुद्ध ए महावीरना शिष्य हता. तेथी महावीर बुद्ध पहेलां थया हरो. वळी केटलाकनो मत छे के, बुद्ध शक अने जैन शकमां २० वर्षनो अंतर छे, तेथी महावीर अने बुद्ध ए बन्ने एकज हरो; कारण के शक गणवानी रीतमां कांतो जन्मथी अगर मरणथी शक गणे छे, तेथी कदाच एक शक जन्मथी अने बीजो शक समाधिकाळथी शरु थयो होय. बीजो मत एवो छे के, जेम जैनोमां चोवीस तीर्थंकर छे तेम बौद्धोमां पण चोवीस बुद्ध छे, तेथी बन्ने धर्म एकज छे. परंतु आ वात बरोवर नथी.

### जैनो अने ब्राह्मणोना टंटागुं कारण.

इ. स. पूर्वे पांचसें छसें वरस पहेलां ज्यारे महावीरे जैन धर्मनुं प्रवर्तन कर्युं त्यारे आपणा देशनी शी स्थिति हती, तेनो विचार करीए. आजे जैन धर्मनुं महत्व बाह्मण धर्मवाळा बरावर समजता नथी. तेवुं वे हजार वरस पहेला नहोतुं; ते वखते बाह्मणो अने जैनो लूटथी एक धर्ममांथी बीजा धर्ममां जता हता. जो के ते वखते बाह्मण अने जैन धर्मनो मोटो झगडो हतो. ते वखते मीमांसक एटले यज्ञयाग करवाथी मुक्ति मळे, एवो बाह्मण मत चाल्तो हतो. मेघ दूतमां पशुवधनुं वर्णन करतां कवि काल्दिासे कह्युं छे के, नदीनुं पाणी पण वध थयेलां प्राणीओना लोहीथी लाल धइ जतुं. एटलो बधो पशुवध थतो हतो, ते वखते जैनोए आहिंसा परमेाधर्मनुं तत्व बताव्युं हतुं. बाह्यण जैनो वच्चेना टंटानुं कारण आ रीते हिंसाज हतुं. पशुवध करवाथी मोक्ष नथी, एम ठसावी जो कोइए पण दयानी ध्वजा उडावी होय, तो तेनुं मान जैनधर्मने छे.

#### अहिंसा कोण पाळे छे ?

हिंसा करवानो बंध एकज जैनधर्ममां नहीं, पण बाह्यण, खिस्ती, मुसल्लमानी, अने दरेक धर्ममां हाल छे. खिस्ती मतमां Don't kill (वध करता नहीं), एवुं फरमान छे. पण खिस्ती मतानुयायीओए तेनो अर्थ फेरवी मनुष्यनो वध नहीं करवो, मतलब के बीजां प्राणीओनो वध करवामां हरकत नथी एवुं ठराव्युं छे. धर्मनो मत बाजुए रह्यो! हवे लडाइमां लाखो मनुष्योनी हिंसा करे छे, ते माटे पूछतां खिस्ती मीशनरीओ राजानी आज्ञार्थी मनुष्य हिंसा करवी, एमां बाध नथी एवुं कहे छे. ए रीते धर्मनो अर्थ फेरवीने स्वार्थने माटे खिस्तीओ जे हिंसाओ करे छे, तेनुं पाप खिस्ती पादरीओए पोताने माथे वहोरी लीघुं छे. बीजा देशोमां पण अहिंसा धर्म पुस्तकोमांज पडी रह्यो छे. बौद्धधर्ममां अहिंसा तत्व मुख्य छतां, बौद्धधर्भ पाळनार चीन देशमां तो खोराक तरीके कोइ प्राणीने बातलज राखवामां आवतुं नथी. जो कोइ धर्मना अनुयायीओए अहिंसा तत्व परिपूर्ण रीते पाळ्युं होय तो ते जैनो ज छे.

### जैनो वेद केम मानता नथी ?

अहिंसानुं तत्व काढतां मोटो विवाद जन्म पाम्यो हतो. बाह्मणो कहेता के वेदमां पशु यज्ञ करवानी आज्ञा छे ते अमे शी रीते छोडीए ? जैन उपदेशकोए जवाबमां कह्युं के, वेदमां हिंसा होय, तो ते वेद अने हिंसाथी तृप्त थनारा देवताओ पण अमने मान्य नथी. मतल्लब के, वेदमां पशु यज्ञ फरमावतुं जे श्रौत प्रकरण छे तेथीज जैनोने वेद प्रमाणभूत नहीं मानवानुं कारण मळ्युं छे.

### जैन धर्मनी अहिंसानी अन्य धर्मी उपर छाप

छेवटे ब्राह्मणोए जैनोनो अहिंसा धर्म स्वीकार्यो अने जैन तथा बौद्धधर्म पछी कुमारील भट्ट शंकराचार्ये वेदांत धर्म स्थाप्यो तेमणे पण जैनोनुं अहिंसा तत्व पोताना सिद्धांतोमां दाखल कर्युं. ते जो तेमणे तेम न कर्युं होत तो ब्राह्मण धर्म फरीधी स्थपायो होत के नहीं ते कही शकाय नहीं. जैनधर्मनुं तत्वज्ञान जो के

www.jainelibrary.org

( 85 )

आज प्रचारमां नथी, तोपण जैनोना अहिंसादि आचारनी छाप आजे झाझण धर्म उपर पूर्णपणे बेठेली छे.

पंच द्रविड विगेरे ब्राह्मणोमां मांस भक्षण दूर थयुं छे ते जैनोनोज प्रताप छे, अने आजे हुं ने तमो मांस मदिरा वापरता नथी ते माटे एज जैन मतना मोटा आभारी छीए. वैष्णव धर्ममां यज्ञ करती वखते पिष्ट पशु होमवानो प्रकार छे, ते पण जैन धर्मनी ब्राह्मण उपर थयेली असरथी निपजेलुं जीवता पशुने बदले पिष्ट पशुनुं रूपांतर छे. जगतमां अहिंसानुं तत्व दाखल करतां महावीर स्वामीए जे दृढता बतावी ते अवतारी पुरुष वगर बीजायी बतावी शकाय नहीं. जैन पछी बौद्धधर्म निकल्यो तेमां पण अहिंसा तत्व जैन धर्ममांथी लीधुं छे. हुं जैन धर्मने खोटी रीते चडाववा मागतो नथी; पण एटलुं तो हुं कहेवा मागुं छुं के अहिंसा विगेरे बाबतमां जैन धर्मे हिंदु धर्म उपर घणीज असर करी छे.

ए रीते बीजा धर्मो उपर अहिंसानी छाप बेसाडवामां जय मेळवी जैनोए " जैन " नाम अन्वर्थक कर्युं छे.

### मोक्ष मेळववानो सर्वने हक छे.

बाह्मण धर्ममां चारे वर्णना सरखा अधिकार न हता. यज्ञ करवाथी मोक्ष मळे छे एम बाह्मणो मानता, पण यज्ञनो रस्तो शुद्रोने माटे खुछो न हतो. ते वखत राजकीय समानतानो सवाल उभो थयो न हतो. पण परमेश्वरना दरवारमां बधाने समान हक्क छे के नहि ए सवाल उभो थयो हतो. जैन मते धर्मनी बाबतमां माणस माणस वच्चेनो भेद न राखतां ठराव्युं के, बधाने मोक्षनो रस्तो एकज छे. जैन मतनी आ विगेरे बाबतोनी लाप हिंदु धर्म उपर पडी, हिंदु धर्ममां जे अपूर्णता हती, ते पूरी थई छे.

अहिंसा परमें। धर्मः अने भक्ति योगथी जूद्रो अने स्त्रीओ पण मुक्ति मेळवी शके छे एवां वचनों वेदांतना मुख्य प्रंथ भगवद्गीतामां दाखल थयां छे. जैन धर्ममां ज्ञान, दर्शन ने चारित्र ए त्रण अमूल्य रत्न मानेलां छे तेने ज्योतिःशास्त्री भास्कराचार्ये पोताना प्रंथमां धर्मनां तत्वो तरीके जणाव्यां छे. आ बीना पाछळथी जैन धर्मनो अने ब्राह्मण धर्मनो केटले निकट संबंध थयो छे ते बतावी आपे छे. एटलुंज नहि पण जैन बौद्ध बंने धर्म हिंदुस्तानमां उत्पन्न थयेला छतां बौद्ध नानुद थइ गयो अने जैन धर्म केम टकी रह्यो ते विषे पण खुलासो करे छे.

### परदेशमां जैन धर्मनो प्रसार.

जैन धर्मनां आवां उत्तम तत्वोनो परदेशमां प्रसार करवाने जैन धर्ममां प्रतिबंध नथी. परदेशमां जइ धर्मनो प्रसार करवो, ए शिक्षण जैन अने बोद्ध धर्मेज आप्य छे. जैनो हिंदुस्तानना Protestants-धर्म सुधारक छे. ते सुधारो हिंदमांज शामाटे घाली मूकवो जोइए ? हिंदुस्थानमांज हिंसा थती अटकावीने तेमणे शामाटे . बेसी रहेवुं जोइए १ युरोपादि देशोमां हिंसा एमनी एम शामाटे थवा देवी जोइए १ आ बाबत केटलाक जैनोए उपाडी लीधी छे, जेमां मरहुम सि. वीरचंद गांधी मुख्य हता. तेमणे अमेरिका जइ जैन मतनो प्रसार कर्ये। छे. श्रीमंत महाराजा साहेवे शरुवातना दिवसे जणाव्या प्रमाणे सर्व देशोमां तमारो मत प्रचलित करवानो प्रयास करवे। जोइए. लंडनमां मुसलमानोनी मसीद छे ते प्रमाणे एक जैन मंदिर पण त्यां केम न होतुं जोइए ? जो जैनो अने बाह्यणे बन्ने एक माबापना बे पुत्रोनी पेठे अथवा एकज माणसना डाबा जमणा हाथनी पेठे पोते पसंद करेला अहिंसादि तत्वोनो जगतमां प्रसार करवानुं काम एक विचारथी हाथमां छे ते। अहिंसा धर्मनी ध्वजा पश्वी-परना सर्व देशोमां फरकाववामां कंइपण हरकत आवे तेम नथी. नामदार अंग्रेज सरकारे आपणा हाथमां हथियार रहेवानी कशी जरुर जोइ नथी. पण आपणने तेनो आ काममां खप नथीं. आपणा धर्मरूपी हथियारोवडे आपणे सर्व देशोमां आ-पणो विजय करी आपणी उन्नति करी शकीझां. छेवटे, मारी परमकृपाळु परमेश्वर प्रत्ये प्रार्थना छे के जैनोमां अने अन्य हिंदुमां ऐक्य वधे अने तेमना संयुक्त प्रयासथी देशेदेश अने गाभेगाम अहिंसा धर्मनो प्रसार थाय ! ( ताळीओ ).

ए रीते अहिंसा तत्वनुं प्रतिपादन करी तेनो प्रसार करवानुं मान जैन धर्मने आप्युं ते माटे **मि. ऌाऌने** भाषणकारनो केटलुंक विवेचन करी उपकार मान्यो इतो.

३६ मि. लाभद्यां कर लक्ष्मीद्यां कर जुनागढना दया धर्मना प्रसिद्ध उपदेशक, ते पछी ताळीओना अवाजो वच्चे वक्तृपीठ उपर मि. लामशंकरनुं माषण. आवी बोल्या के,

For Personal & Private Use Only

जीव दया उपर मारा अगाउ मि. बाळ गंगाधर टिळके भाषण आप्युं छे, त्यार पछी हुं जे कंइ बोलुं ते बपोरना अजवाळा आगळ दीवो धरवा जेवुं छे. मने आमंत्रण करती वखते मारा अगाउ एज विषय उपर मि. टिळकनुं भाषण थनार छे, एम मने जणाव्युं होत तो हुं अहीं नहींज आववानुं ऌखी वाळत.

#### हिंसानां पांच कारण.

हिंदुस्तानमां पांच कारणथी हिंसा थाय छे. (१) धर्मने नामे, (२) खो-राक माटे, (२) शिकारने खातर, (४) फेशन सारुं-शॉख निमिते. अने (५) सायन्स निमित्ते.

#### दरारानो पशुवधः

आमांनी पहेली जातनी हिंसा संबंधी गइ साल मुंबइमां में रुंबाणथी भाषण आ-पेलुं हतुं एटले आजे ते विषे वधारे हुं बोलीश नहीं. तो पण दशराना दिवसे केटलांक देशी राज्योमां पाडा मारवानो जे घातकी वहेम चाले छे ते बंध पाडवा माटे देशी राजाओने दर वरस नम्रतापूर्वक विनंती करवी ए जैन कॉन्फरन्सनी फरज छे. एटलुं भार मुकीने हुं आ वखते कहुं छुं. सदरहु पाडा वध करतां केवुं चासदायक घातकीपणुं बापरवामां आवे छे तेनो ख्याल आववा माटे जामनगरमां थयेला वधनुं वर्णन ता. देन् १०-०३ ना "मुंबइ समाचार " मांथी वांचवानी भलामण करुं छुं.

#### मरकी माटे बळिदान

कैटलैक ठेकाणे मरकी, कॉलेरा विगेरे अटकाववाना हेतुथी, पाडा बकरानुं बळिदान आपवामां आवे छे. पण गृहस्था माठानुं परिणाम माठुंज आवे, तेम मरकी, कॉलेरा अने भुखमरो उल्टो वधतो जाय छे.

#### खोराक माटे थतुं घातकीपणुं.

हवे फक्त खोराक माटे आ देशमां केटलुं तथा केवुं घातकीपणुं थाय छे ते हुं आपने बतावीश तथा ते अटकाववाने हाल सुधी आपणे शुं कर्युं छे तथा हवे आपणे शुं करवुं जोइए ते संबंधी मारा विचारो पण आपनी आगळ रजु करीश.

माणसना खौराक माटे बिचारां जनावरोनां गळां कपाय छे ते पहेलां तेमना उपर ने अनेक जातनो त्रासदायक जुलम थाय छे तेना सत्तावार दाखला टाइम्स आँफ ईंडिया विगेरे अंग्रेजी वर्तमान पत्रोमांथी उतारीने मारा Good News from the Afficted नामना चोपानियामां प्रसिद्ध कर्या छे. ते उपरथी आपनी खात्री थरो के, कसाइ खानामां जनावरोने कतल करता पहेलां त्रण दिवस मुख्यां राखे छे अने गळामां दोरीथी ताणी बांधी अर्धी गुंगळाती स्थितिमां राखवामां आवे छे ने कलाकोना कलाक सुधी तेवुं दुःख दीधा पछी ते बिचारांनां गळां कापवामां आवे छे. आ अने बीजी निर्दयता संबंधी अरज करतां, कहेवाने खुशी उपजे छे के, आवा धातकीपणानो सख्त अटकाव करवानी ना. मुंबइ सरकारे खात्री आपी छे.

रेल्वेमां पण जेम मनुष्यो उपर तेम जनावरो अने बीजां प्राणीओ उपर जुल्लम थाय छे. एक डवामां आठ घोडा अगर दश टटुओ पुरवानो कायदो छतां सतावीश ढोरो एक डवामां पुरी काढे छे. आ रीते रंगुनमां एक डवामांथी सो बकरांनां मडदां नीकळ्यां हतां. कल्लकत्तानी अंधारी कोटडीनी पेठे विचारां गुंगळाइ मर्यां हतां. आ बाबतमां रेल्वे कंपनी सामे एक वखत केस उमेा कर्यो हतो, पण आफसोस ! हाइ-कोर्टमांथी ते उडी गयो हतो.

आवा बनाव रेल्वेमांज एकला थाय छे एम नथी, पण ज्यां जनावर वेचाय छि त्यां पण थाय छे. मारकीटोमां अणातां नानां पक्षीओनी आंखो फोडी नाखेली तथा पांखो तोडी नांखेली घणे ठेकाणे जोवामां आवे छे. वखते हरणोना पग भागी नाखेला होय छे.

## यूरोपादिमां घटतो जतो मांसाहार

मांसाहार साथे आवुं त्रासदायक घातकीपणुं जोडायलुं छे तेनी मांसाहारीओने खबर पण होती नथी. तेथी तेमनो बहु वांक काढवा जेवुं नथी. का-ठियाबाडना एक देशी विद्वान् राजा पहेलां मांसाहारी हता. में तेमने डॉ. जेसिया ओल्डफील्डे उतारी लीघेला जनावरो उपर गुजरता जुल्मना फोटोयाफोनी चोपडी बतावी. ते जोइ तेमणे मांसाहार छोडी दीधो. केटलाक वखत पछी तेमनी प्रकृति नरम थइ आवतां तेमना डॉक्टरे पाछो वहेम घाली दीधो के मांसाहार तजी देवाथी तमारी तबीयत बगडी छे. एटले तेमणे मांसाहार फरी शरू कर्यो. में तेमने Perfect Human Diet-"मनुष्यनो संपूर्ण खोराक" ए नामनुं पुस्तक बताब्युं. आ पुस्तकमां सायन्स-डॉक्टरी विद्याने आधारे मांसाहारनो निषेध कर्यो छे. ते वांची तरतज तेमणे मांसाहार बंध कीधो. इंग्लांडना डेवनज्ञायर प्रगणामां एक मेजीस्नेटे पण कसाइखानामां तपास करी आव्या बाद, मांस जोइ कंपारी ळूटवाथी, मांसाहार छोडी दीधो छे. ए रीते हवे यूरोप अमेरिकामां पण हिंसानों प्रसार घटवा लाग्यो छे. लंडननाज बजारोमां १९०१ नी सालमां तेनी आगली साल करतां छ लाख मण मांस ओछुं वेचायुं हतुं. अमेरिकामां छत्रीस टका मांसाहार घटी गयो छे अने ए रीते त्रीश लाख जीवो कपाता बच्या छे, अने पंदर हजार माणसोए मांसाहारनो त्याग कर्यो छे. कपातां जनावरोनी उपर कर लइ, सरकार तेनी नोंध राखे छे, ए उपरथी आ आंकडा जणाइ आवे छे.

#### दयानी रीत.

पण तेथी उल्लंटु आ देशमां दर वरस वधारेने वधारे जनावरोनो वध थाय छे. आपणे लोको कसाइखानेथी जीव बचाववाने लाखो रुपिया खरचीए छीए. छतां ज्यारे ए रीते वधनुं प्रमाण वधतुं ज जाय छे त्यारे आपणी दयानी रीत बराबर नथी एम आप सारी पेठे समजी शकशो. माटे आपने हुं अरज करूं छुं के, दयाळु अंग्रेजोने पगले चालीने आ देशना मांसाहारी लोकोने तेमना खोराकथी थतुं घातकी-पणुं तथा माणसना शरीरने थता भयंकर रोगोनो रूयाल आपवानी योजना करवा महेरबानी करशो.

नामदार गायकवाड महाराजे आ कॉन्फरन्स उपर जे असाधारण महेरबानी करी छे ते माटे ते नामदारनो कांइक संगीन रीते उपकार मानवानी आपणी फरज छेः आपने दरखास्त करूं ठुं के, दर वरस मांसाहार विरुद्ध विद्वान् अंग्रेज तथा अमेरिकन डॉक्टरोए लखेली चोपडीओनो आपणी मेडीकल कोलेजेनेना विद्या-र्थीओ पासे अभ्यास करावी तेनी परीक्षा लइ फतेहमंद उमेदवारोने रु. ५०० नां इनाम आपवानी गोठवण करशो तथा ते इनामोनुं नाम The Sayaji Rao Prizes एवं राखशो.

छेवटे, आप जाणीने खुशी थशो के आ देशमां जे अनेक जातनुं घातकीपणुं चाले छे ते सामे नामदार हिंदुस्ताननी सरकारने अरजीओ करवा तथा अंग्रेजी वर्तमानपत्रोमां पोकार उठाववा लंडनमां एक इंडियन डीपार्टमेंट त्यांनी ह्युमेनी-द्येरेयन लीग तरफथी उवडाववामां हुं फतेह पाम्यो छुं तथा तेनी काउन्सीलमां सर विलियम वेडरबर्न, सर हेनरी कॉटन, मि. दादाभाइ नवरोजी विगेरे केटलाक नामां-कित गृहस्थोए जोडावानी महेरबानी करी छे; अने तेनी एक शाखा मुंबईमां स्थपाइ छे तेथी हवे ए काममां आपणे जरूर फतेह पामीशुं एवी आशा रहे छे. (ताळीओ)

ते पछी **रा. रा. ढढ़ुाए** बंने वक्ताओनो तथा प्रमुख साहेबनो उपकार मानतां सभा बरखास्त थइ.

२७ श्रीमंत महाराजा साहेबे जैन कॉन्फरन्स प्रत्येनी पोतानी वधु दिलसोजी प्रदर्शित करवा माटे कॉन्फरन्सना फंडमां श्रीमंत महाराजा साहेबे कॉन्फरन्स फंडमां भरेली रु. १००० नी रकम खानगी खाता तरफथी मोकली रकम. आपी हती जे कॉन्फरन्सना जनरल सेक्रेटरीओए आभार

साथे स्वीकारी हती.

१८ श्रीमंत महाराजा साहेबे पोताना दरबार फिर्जिश्यन ने कॉन्फरन्स तिसेप्शन कमीटीना चीफ सेकेटरी डॉक्टर बाळामाई परि अने श्रीमत महाराजा मगनलाल एमनी पासे आचार्य श्री कमळविजय मगनलाल एमनी पासे आचार्य श्री कमळविजय साहेब एमनो समागम. स्ट्रिरि महाराजना मुखथी धर्मोपदेश सांभळवानी ईच्छा प्रदर्शित करी हती. ते पूर्ण करवा माटे ता. ८ डिसेम्बर सने १९०४ गुरुवारे त्रींजा पहोरे लक्ष्मीविलास पेल्लेसमां आचार्य महाराज पधार्या हता. श्रीमंत पण मकरपुरा पेल्लेसथी मोटारकारमां आरूढ थई त्यां दाखल थया हता अने राजाने योग्य अभि-गम साचवी आचार्य महाराजने वंदनपूर्वक धर्म संबंधी केटलाक प्रक्षो पूछया हता, जेनो शास्त्रना आधार अने दलीलो साथे उत्तर मळतां श्रीमंते संतोष प्रदर्शित करी महाराजजीए लीघेला श्रम माटे क्षमा मागी हती.



### ( 8< )

# निशाणी १.

स्वागत मंडळना प्रमुख वडोदराना झवेरी फत्तेभाई अमीचंद्नुं भाषण.

श्रीमंत महाराजा साहेब, जैन बंधुओ, सद्गृहस्थो अने बहेनो 🖕 !

आजे आप सर्वेने आवकार आपवानुं काम अहींना श्रीसंव तरफशी स्वागत मंडलना प्रमुख तरीके मने सोंपवामां आव्युं छे, ते माटे हुं श्रीसंघनो उपकार मानुं छुं.

महाशयों ! अमारा आमंत्रणने मान आपी आप साहेबोए अमूल्य वखत अने द्रव्यनो व्यय करी अत्रे पधारवानी जे तस्दी लीधी छे, तेने माटे अमे आपना अत्यंत आमारी छीए. पुत्र जन्मनां अथवा विवाहादिनां मंगल तो घेर घेर थाय छे, पण श्रीसंघ, जे सर्वगुणोनुं स्थान छे, जे शासननी वृद्धिनो हेतु छे अने जेमांर्थाज पंचपरमेष्ठिरूप अमूल्य रत्नो उत्पन्न थाय छे तेवा संघनी पूजा भक्ति करवा रूप मंगल तो भाग्यवंतनेज घेर थाय छे. आवुं शास्त्रनुं वचन जेमना हृदयमां रमी रह्युं छे तेओ पोतानुं आंगणुं संघना चरण कमळोनी रजथी क्यारे पवित्र थाय तेनी हमेशां तक जोया करे छे. घरआंगणे स्वामिभाइ पधार्या छतां कोने स्नेह न थाय ? जेमनी भक्तिथी तीर्थकरादिनी पदवी मळी शके तेवा सधार्भना पधारवाथी समकित-वंतना आनंदनी सीमाज रहेती नथी.

षिविध स्थळे जिनभुवनो करावनार, करोड गमे जिन प्रतिमाओ भरावनार अने अनार्थ देशोमां मुनियोनो विहार सुगम करनारा संप्रति महाराजाए ( अशोक महाराजना पौत्रे ) गामे गाम स्वामिवात्सल्य कर्यु हतुं. श्रीहेमाचार्य महाराजनो उपदेश सांभळी परमार्हत कुमारपाळ राजाए दरसाल स्वामि वत्सल करवानी प्रतिज्ञा हीधी हती. श्रीआबुजी उपर बार करोड ने त्रेपन लाख द्रव्य खर्ची श्रीनेमिनाथ भगवान् नुं प्रेक्षणीय देवालय बांधनार वस्तुपाल तेजपाल जेओ महाराज वीरधवलना मंत्री हता तेमणे घोळका आगळ श्रीशत्रुंजयनी यात्राए जता संघनी सामे जई मानपूर्वेक पूजाभक्ति करी हती. एवा घणा दाखला शास्त्रमां विद्यमान छे. सुज्ञो ! हुं अत्रे आप साहेबना ध्यानपर छाववानी रजा मागुं छुं के, उपर जणावेळा कुमारपाळ राजानुं देशाटनमां एक वखत श्री वडोदरा शहेरमां पधारवुं थयुं हतुं, तेमज तेजपाल मंत्रीए गोधराना घुघुल राजाने हरावी पाछा वळतां आ वटपत्तन ( वडोदरा ) मां मुकाम कर्यो हतो अने संप्रति महाराजे बंधावेला श्री पार्श्वनाथना मंदिरनो उद्धार कराब्यो हतो. एवा एवा अनेक ऐतिहासिक बनावोथी जाणीतुं आ वीरक्षेत्र हाल्ना श्रीमंत महाराजा साहेब, जेमना उपर सरस्वती अने लक्ष्मी बंने प्रसन्न छे, तेमनाथी आखी ढुनियामां प्रसिद्ध थयुं छे. त्यां पधारेला श्री संचनी भक्ति करवानो वखत आज मळ्यो ते माटे अमे पोताने घणाज भाग्यशाळी भानीए छीए.

आप साहेबो सत्य धर्मनी उन्नते थाय, पूर्वकाळना राजा, महाराजा अने श्रीमंतोए अगणित द्रव्य खर्ची बंधावेलां भव्य जीवोने तत्वनी रुचि थवाना साधनभूत तीर्थमंदिरो चिरस्थायी रहे, अथाग बुद्धिबळ अने परिश्रमथी पूर्वाचार्योंए रचेला मं-थोनुं रक्षण थइ जनकल्याण माटे तेनो उपयोग थाय, सर्व सुधाराना मूलरूप केळब-णीनो फेलावो थाय, विद्या कळा अने वेपार हुन्नरनी वृद्धि थाय तेमज कुसंप तथा हानिकारक रिवाजो दूर थई सौ कोई पोतानी मेळे पुरुषार्थीनुं साधन करी शके ते माटे शी शी योजनाओ करवी जोईए तेनो विचार करवानाज पवित्र आशयथी परि-श्रम उठावी अन्ने पधार्या छो, ते बद्दल आपने धन्यवाद आपी हुं हर्षभर्यो आवकार आपुं छुं.

वहाला बंधुओ ! ज्यां सुधी धर्म अने संसारमां आपणे उन्नत स्थाने पहोंचीए नहि अने आपणुं धर्मराज्य तथा गृहराज्य सुदृढ अने सुघड करीए नहि त्यां सुधी आपणे उत्तमताना भोक्ता थईए, ए आशा व्यर्थ छे. तेटला माटे आजे आपणे जेवी रीते अहीं मेगा थया छीए तेवी रीते दरसाल निर्णीत स्थळे मेगा थवानी आवश्यकता छे. वळी ज्यां सुधी आपणे उमंगथी जे ठरावो पसार करीए तेनो अमल करवा माटे फरीने कॉन्फरन्स भरवानो वखत आवे त्यां सुधी पण, आपणे मेगा थयेलाज यत्न न करीए तो आपणो बधो परिश्रम निर्श्वक जाय एमां शक नर्था. ते माटे हुं आपने मलामण करवानी रजा लउं छु के, ज्यारे आप आ महासभामां चर्चवाना विषयो नक्की करो त्यारे बीजा विषयो करतां कॅान्फरन्सनुं बंधारण संगीन करवानी योजनाना विषयने वधारे महत्व आपशो. पूज्य मुनिमहाराजाने ते माटे देशना सर्व

৩

भागोमां विहार करतां बीजा धर्मापदेशनी साथे आ कॅान्फरन्से तेओश्रीना अनुमौदन-धी हाथ घरेला विषयोना ठरावोनो अमल कराववा माटे आग्रहपूर्वक विनंती करवानी अने जे महात्माओए ते दिशामां स्तुत्य प्रयास कर्यो छे तेमनो सविनय उपकार मा-नवानी खास जरूर छे. तेजप्रमाणे दरेक ठेकाणेना श्रीसंघने कॅान्फरन्सना संबंधमां हमेशोमे माटे विचार चलावनारी स्थानिक कमीटी नीमवा सूचना करवानी आपणी फरज छे. जो तेम थशे तो अत्यारे जे काभ आपणे पुष्कळ द्रव्य अने काळनो व्यय कर्या छतां करी शकता नथी ते सहेलाईथी अने थोडा खर्चे पार पाडी शर्काशुं. वळी आ प्रसंगे जे गामना श्रीसंत्रोए गइ कॉन्फरन्सना ठरावोनो अमल कर्यो होय तेमना उमंगनी वृद्धि करवा अने बीजाओ तेमनुं अनुकरण करे तेटला माटे तेमने घन्यवाद आपवानी पण आवश्यकता छे.

वळी आ कॉन्फरन्सना संबंधमां एक उपयोगी प्रदर्शन भरवानी अमोए योजना करी ते श्रीमंत युवराज फत्ते।सिंहरावने मुवारक हस्ते खुल्छुं मूकवामां आव्युं छे, ते जोनाराओने ज्ञाननी साथे आनंद आपशे एवी आशा छे. केमके तेमां ज्ञान, दर्शन ने चारित्रनां उपकरणो, उपदेशक देखावो, पवित्र पदार्थी अने परदेशी साथे हरीफाई करी शके एवो देशी माल भेगो करवामां आव्यो छे.

प्रिय बांधवो ! आ कॉन्फरन्सनी बेठकोमां चर्चवाना विषयो विगेरेनो निर्णय करवा माटे आप हवे पछी नीमो ते कमीटीनी आगळ रजु करवा सारु अहींना स्वागत मंडळे जे यादी तैयार करी छे, ते संबंधे कंइक खुलासो करवानी जरुर छे. गई कॉन्फरन्समां जे नव विषये। हाथ धर्या हता तेनातेज वणे भागे आ कॉ-न्फरन्समां चर्चवा माटे रजु करवानी धारणा राखी छे. कारण के गइ कॉन्फरन्समां चर्चायला विषयो एवा गंभीर अने व्यापक छे के आपणे हाथ घरवाना लगभग सघळा विषयोनो तेमां समावेश थाय तेम छे. वळी घणी बाबतो एकी वखते उपा-डवा जतां एकेनुं सार्थक थई शकतुं नथी अने उलटो घोटाळो थाय छे. तेम छतां केळवणी सर्व प्रकारना सुधारानुं मूळ होवाथी ते उपर वधारे उहापोह थई शके तेटला कारणसर तेनी केटलीक पेटा बाबतोने जूदी पाडी स्ववंत्र विषय तरीके वि-चार करवा माटे मूचना करी छे. तेवीज रीते प्राचीन शोधखोळने लगता शिला हेखोनी नोंधनुं काम पण अगत्यनुं होवाथी जीर्ण मंदिरोद्धारना विषयमांथी जूदुं पा-डवानी भलामण करी छे. मित्रो ! हिंदुस्तानना बीजा शहेरोनी जैन वस्तीना प्रमाणमां अहींनी जैन बस्ती धणीज थोडी छे, जे जोतां अमे आखा हिंदना श्रीसंघने आमंत्रण करवानी हिम्मतज करी शकीए नही. परंतु अमारा विद्वान् अने बाहोशा श्रीमंत महाराजा साहेब अमो प्रजाजनोनीज नहि पण आखा हिंदनी प्रजानी हरेक रीते औद्योगिक सामाजिक अने धार्भिक उच्चति थाय तेवी उत्कंठा घरावे छे, एटलुंज नहि पण ते माटे भाषणो, सूचनाओ अने सखावतो आपी उत्तेजन आपे छे, ते नामदारनी सहा-यता मळवाना पाका भरोंसाधीज अमे आमंत्रण कर्युं हतुं, अने मने जणावतां खुशी उपजे छे के, श्रीमंत सरकारे कृपावंत थइ अमोने अमारा धार्या करतां घणी वधारे मदत आपी छे, जे माटे आपण सेर्वे ए नामदार साहेबनो जेटलो आभार मानीए तेटलो ओछो छे.

मानवंता प्रातिनिधि साहेबो ! मारे अत्रे जणाववुं जोइए के, महत्वनी धार्मिक बाबतोमां हमेरा अमारी जोडे रहीने काम छेनार छाणी, पादा, दरापुरा अने ड-मोईना जैन भाईओ पण आपणुं स्वागत करवामां सामेछ थया छे. हवे आप साहे-बना सत्कार माटे अमे यत्।किंचित् योजना करी छे, तेमां न्यूनता छागे तो ते दर-गुजर करशो एटछी विज्ञाप्ति करी फरी आपने हर्ष भर्यो आवकार आपुं छुं.

सुहृद्रजनो ! हवे श्रीमंत महाराजा साहेब, जेओ हवाफेर माटे घणा दूरना देशमां विराजता हता, तेमणे खास तस्दी टेई आजना समारंभमां पधारवानी कृपा करी छे तथा आपणुं शुभ कार्य सारी रीते पार पाडवा माटे अनेक प्रकारनी सहा-यता आपी छे, एटलुंज नहीं पण आपणी कॉन्फरन्सना जन्म पहेलां पाटणना प्र-सिद्ध जैन मंडारो जोवामां आवतां भारे खर्च करी तेमांना ग्रंथ रत्नोनी टीप करावी तथा केटलाकनां भाषांतरो करावी आपणने उपकित कर्या छे, ते मानवंता साहेबने फरीथी अभिनंदन आपी विनंति करुं छुं के, तेओश्री कॉन्फरन्सना कामनी पोताना मुवारक हस्ते शुभ शारुवात करशे अने पोताना अमूल्य बोधक वचनोवडे आपणने कृतार्थ करशे.

#### ( 97 )

# निशाणी २.

श्री तीसरी जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्सके प्रमुख रायबहादुर बाबुसाहेब बुधसिंघजी दुधोडिया अझीमगंज-मुर्शीदाबाद निवासीका

साषण,

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

श्रीमन्त महाराजा साहेब, स्वधर्भि भाइयो, बहेनो, तथा महेरबान साहेबो 🥼

में सावनय आपको प्रणाम करता हूं और साथही साथ आपकी उस कृ-तज्ञता, दयालुता और धर्मस्नेहको अभिनंदन करता हूं कि जिसको भल्ली प्रकारसे मुझको इस श्रीजैनश्वेतास्वर कॉन्फरन्सके तृतीय वार्षिक अधिवेशनका अधिपति चुनकर जाहिर की है. में अच्छी तरह जानता हूं कि इस भारतवर्षके पूजनीय श्वीसंघमें मुझसें ज्यादा समझदार, अनुभवी, विद्वान, बुद्धिमान्, श्रीमन्त, इज्जतवाले धर्मात्मा कई भव्य प्राणी मोजुद हैं और उनमेंसे कोइ योग्य पुरुषपर इस दुर्ऌभ्य इज्जतका मुकुट रखा जाता तो समयानुसार डाचित होता. परन्तु श्रेष्ट जन दुसरे-के दूषणो तरफ नजर न डालकर उसके गुणम्राही होते हें. पारसका स्वभावही यह है कि लोहको अपने साथ लेकर आप जेसा स्वच्छ बना लेता है. इस लिये मेरे हृदयकुंभी संतोष हो गया है कि, यद्यपि में इस भारी बोझ उठानेकुं समर्थ नहीं हूं परंतु आप साहेबोकी मददसें इस कार्यमें उद्यमवन्त बनता हूं और पर-मात्मासे प्रार्थना करता हूं कि उनकी कृपासे मेरी आशा सफल हो.

२ मेरे प्यारेभाइयो, जमाना हमेशां एक हालत पर नहीं रहेता है, और अपने धर्मोंपदेष्टाओनें एक कालचक्रके दो विभाग, उत्सार्पणी और अवसर्पिणी, और किर उन दो विभागो में भी छै छै आरे घटते बढते सुख दुःखके कायम

करके उस स्वाभाविकी बातकों, जो हरचीज में देखी जाती है, अच्छी तरह पुष्ट कर दिया है. हर वस्तुके तीन समय अवश्य होते है. जिस चीनका आदि है उसकी स्थिति हो कर अन्त भी है और पौट्गलिक पदार्थ एक रूपसे नष्ट होकर दुसरा रूप जरूर भारण करता है. प्राचीन इतिहास पर नजर डालनेसें मालुम होता है कि, समय पाकर अपने अपने बल्वीर्य और पराक्रमकी कमीबेशीके मुवाफिक और पूर्व संचित शुभाशुभ कर्मानुसार धार्मिक और सांसारिक कृत्योकी व्यवस्था होती रही है. और हर मुल्कमें हर जातमें और हर धर्ममें उन्नति और अवनति जरूर देखनेमें आइ है. अपने देशकी प्राचीन रीतिरिवाज, राज्य, धर्म, दौलत, वैभव पर नजर डालो और इस प्राचीन दशाकी इस समयके साथ मुकाब-ला करो तो अच्छी तरहसें निर्णय हो जायगा कि थोडेसें कालमें हिंदोलेके पालने-की जैसे उपरका पालना नीचे और नचिका पालना उपर होगया है. हमारे हिंदुस्थानके सुशील राजा महाराजाओकों तथा धर्मज्ञ शेठ साहुकारोंकों स्वप्नतकमें ख्याल नहीं हो सकताथा कि जिस धर्म और वैभवका वे प्रतिपालन कर रहे थे उसकी यहां तक अवनति होगी. हाथ कंकणकों आरसीकी जरूरत क्या ? प्रत्यक्षमें अनुमानकी जरूरत क्या ? इतिहास इस जमानेकी फेरफारको अच्छी तरह साबित कर रहा है. और इस बात अपनेकुं मंजूर करनाही पडता है. अपना श्रीमान् श्रद्धालु श्रावक वर्गकी धर्म पर आस्था उन देवमयी महान् अद्भुत अर्बुदा-चल, राणकपुर, तारंगा, गिरिनार, सिद्धक्षेत्र, सम्मेत शिखरके मंदिरों और भव्य जिन प्रतिमाओंसे सिद्ध होती है. यह कुल बातें इन बातकी सूचना दे रही है कि प्राची-नकालमें हमारे समुदायकी व्यवस्था उत्तम प्रकारकी थी और इस वख्तकी व्यवस्था वैसी नहीं है. इस लिये स्वात्मार्पण करके अपने अपने कर्त्तव्यमें बन शके उतना प्रयत्न करते रहना चाहिये. ऐसा सज्जन पुरुषोका एकत्र मिलाप जनसमूहके सचे हित खातिरही होता है. इस अनुसार अपने महत् पुण्य योगसें प्राप्त हुआ, यह मांगलिक प्रसंग जैन शासनके स्थायी अभ्युद्यके लिये होय तोही अपने मिलापका परिणाम और प्रयत्नकी सार्थकता कहलावे.

३ अपने जिस कामकों जुरु किया है अगर एक दफे वह काम पूर्ण नहीं हो राके तो निराश होकर मत बैठो, बल्कि फिर प्रयत्न करो और उस कामकों धार पटकनेपर कमर बांधो, फिरबी वह काम पार न पडे तो तीसरी मरतवे प्रयः . . .

हन करो. इसी तरह पर उस वख्त तक प्रयत्न किये जाओ कि जब तक तुम उस कामको पूर्ण न करलो. इस नसियतके मुवाफिक जो पुरुष या समाज या संघ काम करनेमें छगे ही रहते है वह जरूर अपने विचारे हुए काममें विजयवन्त होते है. कइ सबवोसें संप्रति काल्में अपनी गिरी हुई दशाकुं देखकर उसके सुधारेके लिये इन दिनोमें जो कोशीस अपने स्वामिभाई तन मन धनसे कर रहे हे वे स्तुतिपात्र है. और जो धार्भिक और सांसारिक सुधारों पर छक्ष दीया जाता है वह सब परोपका-रार्थही है. और इस जुम कामकी नीव डालने और पुष्टि करनेके लिये श्रीफलोधि तीर्थोज्ञति सभा और श्रीमुंबईके श्रीसंघने जो प्रयास लिया है और उसकु फलीभूत करनेकी गरजसे बडोदेके श्रीसंघने जो कोशीस कीहे और हिंदुस्थानके कुल प्रांतोके जैन समाजनें हर वरूत अपनी तरफसे प्रतिनिधि भेजकर जो उत्कंठा और उ-त्साह दिखलाया है इससे मुझे दढ निश्चय होता है कि गुरुकी कुपासे इस महास-भाकी योजनानें जैन भाइयोकों अपने कर्तव्य संबंधमें बिचार करनेको प्रवर्तित किया है और मनुष्योंके मुवाफिक अपने धर्मस्थान, धर्मग्रन्थ, धर्मगुरुओ, और स्व-धर्मि भाइयोप्रति अपनी कर्त्तव्यताके तरफ ध्यान खेंचाया है. इस उत्सवके लिये में अपने अंतःकरणसे दिलकी उमंगके साथ कुल जैन समुदायकों धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि आप सब साहेब मेरे साथही साथ इस मुबारकबादीमें शामिछ होगे.

8 दांई काल्लसे स्वार्थसाधकताकी लगी हुई बुरी चाल धीमे धीमे दूर क-रना, संघका हित किस तरहसे होवे इसका चिंतन करना, और जो काम करनेकी आवश्यकता है उस काम करनेको प्रवृत्त हो कर इसके फल्लके वास्ते अधीरा न होना उचित है. हमेशां इस वचनाम्टतकों याद रखना चाहिये कि, "हर रस्ता साफ नही है. हर फुल बिना कांटां नही है. " अगरचे इस वरूत जिस रस्तेमें अपन चल रहे है और जिस फुल्को अपननें हाथमें धारण किया है वो साफ और बिना कांटाकां मालूम दे रहा है; परन्तु गाफिल रह जानेसे या हो जानेसे वही रस्ता और फुल कांटेदार हो सकता है. और उसको साफ करनेकी फिर कोशीस करनमें बडी अडचन होती है. यद्यपि यह रस्ता इस वरूत साफ दिखलाइ देता है परन्तु आयंदा इसको साफ नही रखोगे तो अपने इच्छित स्थानको हरगिज नहीं पहुंचोगे. इस रस्तमें कोध, मान, माया, लोभ, इर्षा, द्वेष, कल्लह, मिथ्याभिमान, कुसंप व गैरह प्रकृतिवाले छेटेरे बहुत मिल्लेगे कि जिनसे बच कर चलना और इनको प्रतिबोध दे कर सुमार्गमें

छाना हर सचे जैन धर्मानुयायी भाइकी उत्कुष्ट फरज है. सब काम संप और ऐक्य-तासे हो सकता है. जहां संप है वहांही ताकत है. जहां संप नहीं वहां हानि है संप और कुसंपके ऊपर हजारो दृष्टांत है कि जिनसे संपके फायदे और कुसंपके नुकसान सिद्ध होते है. अपने श्रीमंत और धनाट्य जैनीभाइ गरीब जैनीभाइयोके स्तंभ है और गरीब जैनमाइ धनाट्य जैनियोके हर वरूत मददगार है. यह दू-निया ही परस्परकी मदद और सहायतासे चलती है. तो फिर इस स्वाभाविक नि-यमको अपन अपने हाथसे क्यों छोडे ? इस जैन समाजरूपी पुरुषको जो जैनी इस वख्त भरतखंडमें मोजुद है वह सब अंगोपांग है और सब अपना अपना काम करके इस सामाजिक पुरुषको पुष्टकर रहे है. अगर किसी म. नुष्यको अंग या उपांगमें दर्द होता है तो उस मनुष्यके सारे बदनमें असर होता है. इसी तरह पर इस जैन समाजके एक अंग या उपांगकोभी तकलीफ हुई तो सारी समाज पर उसका असर पडेगा, और इन तकलीकों और दिकतोंका मिटानेके छिये ही तो यह जैन श्वेताम्बर महासभा कायमकी गई है. अगर्चे मेर्ने इस दृष्टांत से आपका बहुत समय रोका है परंतु इस बातकों इस जलसेमें पुरूत तौरपर सबके दिलोंमें जमानेकी बहुत ही जरूरत है. इस कॉन्फरन्सके कुल काररवाइका परिणा**म** आपसके संप पर है और यह संप " जैसा दो वैसा छो " यह नीतीको प्रहण करनेसे बढ सकता है. मेरे एक सच्चे दोस्तने इस कॉन्फरन्सकी कायभीके छिये मुझे एक सची नसीयत इन शाहोंनें कही है कि जिनको हर जैनी भाईको अपने हृदयमें रखनी चाहिये. यह नसीयत यह है, " बडेको बडी धीरज और गंभीरता रखनी चाहिये. बडेको विकार नही होना चाहिये. '' यह वृद्ध वचन खरा करना. कॉ-न्फरन्समें आपको मान जियादा मिले या कमती मिले, आपकी मरजीका सवाल यदि उड गया, यदि बिन मरजीके सवाल पर ठराव हुआ तो उस वख्त लेशमात्र कुंद नहीं होना. अपने न्यायके सवाल पर दृढ रहना. परंतु कॉन्फरन्सकों नुकसान पहुंचे वैसी जिद बिचारना मुनासिब नही है. इस लिये सबसे पाईले आप साहे-बोंसे मेरी यह प्रार्थना है कि, इस सर्व साधारण सामाजिक कार्यकुं आप सब मिल-कर फल्लीभूत करे. इसमें छोटे बडेका या धनाढ्य गरीबका या उत्तर दक्षिणका कुछ भेद भाव नहीं आना चाहिये. बल्कि श्रीमंत अपनी दोलतके बलसें, बुद्धिमान् अपनी बुद्धिके बल्सें और शक्तिबान् अपने तनके बल्सें इस सर्व साधारण श्रेय काममें तनमनधनसें मदद देकर संपकी वृद्धि करके जैन धर्मकी ध्वजा फरकाते रहे. बंस एक दुसरेके साथ संपको बढाना इस कॉन्फरन्सका मुख्य काम और हेतु है. इस संपके बढनेके साथही साथ धार्मिक और सांसारिक व्यवस्था स्वयमेव उन्नाति पाती जावेगी. क्योंकि इस महामंडल्लेमें कुल हिंदुस्थामके श्रीमान्, विद्वान्, बुद्धिमान्, गुणवान्, उत्साही धर्मात्मा संघनायक इकठ्ठे हुये है उनके दृढ और उ-मदा बिचारोसें जो जो ठराव इस महामंडळमें जैन समुदायकी उन्नत्तिके लिये मंजूर होंगे उन सबका समयानुसार अमल होनेसें ज्ञुभफल अवइय होगा.

९ अपनेको इस महान् प्रयासमें श्रीजिनेश्वर भगवानुकी आज्ञानुसार चल्छ-नेमें मुख्यतः विद्वान् मुनि महाराजाका जमानेके अनुकुळ उपदेश जियादे असर• कारक हो सकता है. और गृहस्थ जो अपने वत नियम पचक्खाण और दुसरे आवश्यक कर्ममें सावधान है, ज्ञान ध्यानमें यथाशक्ति उद्यम कर रहा है, और एक वचनी, प्रामाणिक, सुशील है उनका उपदेशभी उत्तम असर कर सकता है. और अपनेकुं ध्यानमें रखना चाहिये कि हरेक कोमकी उन्नति उसके आगेवानोके निर्मळ हृदय व तदनुसार प्रशंसनीय वर्तनपे आधार रखती है. एसे उमदा विचार-से कटिबद्ध होके शासन प्रभावनाके कामके घुमनेवाले प्ररूपात शेठजी फकीरचंद प्रेमचंद जे. पी. हमारे इस महा मंडलको कोमल बचपनकी हालतमेंही छोडकर स्वर्ग सिधारे. उनके मृत्युसें उनके वृद्ध पिताहीको शोक नहीं हुवा है, बल्कि तमाम हिंदुस्थानके जैन वर्गको उनके परलोक सिधारनेसें बडा रंज हुआ है. उनके साथही साथ मध्य प्रांतके एक गृहस्थ, कि जिनकों इस कॉन्फरन्सका बडा भारी शाख था और जिनोनें मध्य प्रांतमें इस कॅन्फिरन्सकी तरफ बडा उत्साह दिखलाया था अगर जिंदगी बाकी रहती तो इस कॉन्करन्सके एक स्तंभ तरीके काम देते, वह गृहस्थ रोठजी वृद्धिचंद्रजी सिवणी छपराके रहनेवाले, और पंजाबके दो प्रतिष्ठित धर्मात्मा, कॅान्फरन्सके कार्योंमें मदद देनेवाले लाला गुजरमलजी और लाला भगत नथुमल्लजी हुशीयारपुरवाले और श्रीगिरिनारजीके व्यवस्थापक डॉ. त्रिभुवनदास मोतीचंद शाह उनोंनेभी इसही वर्षमें परलोक सिधारकर इस कॉन्फरन्सके खेररव्हां-होकी संख्यामें कमी की है. उन सब सज्जनोकी आत्माको आराम मिछे यह हमारी ख्वाहिस है.

**६ धार्मिक और व्यवहारिक दिाक्षण**-आजकल धार्मिक और व्यव-हारिक शिक्षणपर बहुत चर्चा चल रही है. और इस विपय पर सबका मत एक रहा है.

इस वास्ते हर माबापको विवेकके साथ अपनी संतानोको विद्याध्ययन कराना चाहिये. जिस वरूत जैन पाठशाळा वें थी और जैन शिक्षकोके पास जैन छात्रोको विद्याभ्यास कराया जाताथा उस वरूत व्यवहारिक और धार्मिक पृथक् पृथक् विशेषणके साथ र्शिक्षणकी सूचना करनेकी जरूर नहीं थी. क्योंकि उस वरुतके उपदेशक इन दोनों प्रकारकी शिक्षाको साथ साथ देते थे. परंतु अब वह समय नहीं रहा है. अब हमारे संतानोकी शिक्षा हमारे हाथमें नहीं रही है. जहां पर उनको शिक्षा मिलती है वहां अपना कुछ अवाज नहीं है. आजकल्रके जमानेके मुवाफिक केवल ब्यवहारिक शिक्षण मिल्नेसे अपने धर्मकी कुछ रक्षा नहीं हो सकती है. क्योंकि जब तक ध-भैकी रुचि बच्चोंके कोमछ हृदयमें नहीं जमाइजावेगी उस वख्त तक उसको धर्मका कुछ ख्याल नहीं होवेगा. इसलिये व्यवहारिक शिक्षाके साथ अथवा हो सकेतो उससे पहिले धर्मकी शिक्षा जरूर दी जावे. जैन धर्म गूढ और गंभीर है. इसका तत्व बहुत गौर और खोजके साथ महनत करनेसेंही मालुम हो सकता है. केवल व्यवहारिक शिक्षा पानेषाळे प्रहिलेसेंही इसके तरफ ध्यान नहीं देते है. और उपरउपरकी कुछ कुछ बातें देखकर या सुनकर सिंधे रस्तेसे विरुद्धमार्गी हो जाते है. इसलिये अपने बालकोकों व्यवहारिक शिक्षणके साथ धार्मिक शिक्षण-का देना बहुत जरूरी है.

७ स्त्री शिक्षण—प्रसंग पाकर में इस मामलेकोंभी आप सब सा-हेबोके पास जाहिर करना चाहता हूं और उमेद करता हुं कि, आप लोग इस पर ध्यान देंगे कि स्त्री शिक्षणके प्रचारसें अपने संतानका धार्मिक शिक्षण आपसें आप शुरु होजावेगा. क्योंकि पुत्र हो या पुत्री हो उसको पांच वर्षकी उमरतक तो रातदिन अपनी माता वगैरहकी सोबत रहती है. और पांच वर्षकी उमरतक वाद दश वर्षकी उमर तक ज्यादा हिस्सा अपने बख्तका इनहीं ओरतोंकी सोबतमें निकलता है. और देखकरके उसकी नकल करना प्राणी मात्रका कुदरती स्वभाव है. इनसें सब गुणोंकी जड बुनियाद स्त्री शिक्षा है, ऐसा सिद्ध होता है. इस्को पुष्ट करनेसें अपने विचारे हुवे आधेसेंभी ज्यादे काम स्वयमेव सिद्ध हो सकेंगे.

८ व्यवहारिक केळवणीमें समयानुसार राजभाषा, व्यापार कर्म और हुन्नरकळा यह विषयमी शिखाना चाहिये. ९ जैन साहित्यका प्रसार — जैन धर्मके अनुयायी पर नजर डालनेसे मालुम होता है कि अपनी संख्या बहुत कम है, और धर्मका प्रसारभी मंद है. तीर्थंकर भगवान तरण तारण हुवे है. खुदनें तपश्चर्या करके केवल ज्ञान प्राप्त करके सर्व कर्मोंका क्षय कीया है. और दुसरोंको सच्चा मार्ग दिखलाकर इस संसार समुद्रसें तीराया है. जब यह धर्म ऐसा सर्वोत्कुष्ठ है तो फिर उसका प्रसार जितना जिया-दा हो उतनाही भव्य प्राणीयोके वास्ते अच्छा है. उसका जियादा प्रसार होनेसें अपनकों कोई प्रकारकी हानि नहीं पहुंचेगी. बल्कि लाभही पहुंचेगा. जैसे विद्यादान देनेसे दान देनेवालेका विद्याका खजाना खाली नहीं होता है, बल्कि वृद्धि पाताहै ऐसेही इस परमोपकारी धर्मका ज्यादा प्रसार होनेसे इसकी उन्नति और मजब्ती होती रहेगी. जैन साहित्यका प्रचार होनेसे यह बातें अवश्यमेव हो सकती है, इस-ालिये इसका प्रसार करना यह एक मुख्य कर्त्तव्य इस सभाका है.

१० अपने संतानोंको पडाने खातर क्रमवार पुस्तक होनेकी आवश्यकता कीतनी है सो आप साहेबोंको विदित है. इस बारेमें विद्वान् और धनवान् सद्गृह. स्थोंको अवश्य प्रयास करना उचित है.

११ जैन शिक्षण सभा—धार्मिक शिक्षणं, व्यवहारिक शिक्षण, स्त्री शिक्षण और धार्मिक साहित्यका प्रसार वगैरह ऐसे विषय है कि जिनके वास्ते मजबूत पायेकी जरूरत है. वह यह है कि, एक जैन शिक्षण सभाकी स्थापना की जावे कि जिसके अंदर विद्वान साधु मुनिराज तथा अच्छे अच्छे पढे हुवे समझदार धर्मधुरंधर श्रावक शामिल हो. और उनके मतके मुवाफिक शिक्षणादिमें सुधारा वधारा किया जावे. इस तरहपर काररवाइ करनेसे बहुत सुगमताके साथ अच्छे तोर पर सब काम हो सकता है. इस शिक्षण सभासें यहभी फायदा होगा कि कुल पाठशाळा वगैरह उस सभाकी देखरेखमें आजावेगी और उन सबकी एकसरखी रीति हो जावेगी और हर जगह बहुत जल्दि तरकी होनेका और संभाळ होते रहनेका मोका मिलेगा. इसही विषयसें तालुक रखता हुआ हमारे विचारणीय शाळोपयोगी बुक कमीटीका मुद्दा है. आजकल कॉन्फरन्सके जरियेसे तथा उसके पहिलेसें जगह जगह पाठशाळा वगैरेह तो देखनेमें आती है. परंतु दो बातकी न्यू-नता देखनेमें आती है. एकतो पाठशाळाके लिये उपयोगी पुस्तके देखनेमें नहीं आती हे और पढानेके लिये ठीक ठीक माष्टर नहीं मिछते है. इस लिये इसके प्रबंध करनेकी बहुतही जरूरत है.-

१२ प्राचीन पुस्तकोद्धारका मुद्दा ऐसा है कि, जिसको सबसें पहिले जगह देनी चाहिये. क्योंकि यह पुस्तकें अपना अपूर्व ज्ञानका अमूल्य सजाना है. अपने धर्ममें कहा है कि ज्ञान आत्माका चक्षु है. जब यह चक्षु पूरे तोरपर खुल्ल जाता है, उसवख्त आत्माको केवल्ल ज्ञान प्राप्त होता है, जिसकी अभिलाषा भव्य जीवोंको हर वख्त बनी रहती है. अब जो प्रंथ मोजुद है, वह प्राचीन समयके प्रंथोके प्रमाणमें शतांशभी नहीं है. उन प्रंथोके कर्त्ता पूर्वाचार्योका अथाग पारिश्रम पर नजर डालना चाहिये. उन महात्माओंका परिश्रम ऐसा है कि अगर अपन लोग एक एक अक्षरकी एक एक मोहर खर्च करे तोभी उनका ऋण नहीं अदा कर सकते है. दुष्कालादिक अनेक प्रकारके उपद्रवोमेंसे जो ग्रंथ बचे उनको अ-पने पूर्वंनोनें दूर दूरके देशोमें और निर्भय स्थळोमें भंडारारूढ कीये. जब तक स-मय प्रतिकुळ था तब तक उन पुस्तकोंको मंडारमें बंध रखकर बचाना बहुत जरूरी था. परंतु अब समय अनुकुळ है तो उन पुस्तकोंका पुन्हाया करहा कररी है.

१२ जीण मंदिरोद्धार-इस पंचम कालमें जिनेश्वर भगवानके साक्षात् मोजुद न होनेकी हालतमें उनके अभावमें अपन लोगोका आधार उनकी प्रतिमा-स्वरूप और उनकी वाणी पर है. उनकी वाणीको तो पूर्वाचार्योंने पुस्तकारूढ करके अपने वास्ते एक अमूल्य वारसा छोडा है, कि जिंसके उद्धारके बाबतमें इस ही वरूत कह चू-काहूं. अब उन भगवानकी प्रतिमा और प्रतिमाके रहनेके स्थानका पूरा इंतेजाम करना उसही मुवाफिक जरूरी और उचित है कि जैसे पुस्तकोद्धार. अपने बडे बडे राजा महाराजाओंने तथा धर्मात्मा शेठसाहुकारोंने लाखों करोडों बल्कि अब्जों रुपये खर्च करके जो जो भव्य मंदिर बनाये है और उनमें सुंदर प्रतिमायें बिराज-मान कराइ है और उनका बदस्तूर कायम रखना, फूट तूटकी मरम्मत करना और सेवा पूजा कराना अपनी फरज है. जिन प्रतिमा जिन सारखी होती है और जो विनय और भक्ति प्रभूकी मोजूदगीमें अपनी करनेका फर्ज है वही विनय और भक्ति उनकी प्रतिमाकी अवश्य है. आज कल जो आशातनायें पूजा बगैरहकी देखी जाती है वह दिल्को बहुत दुखानेवाली है. परन्तु इसके दो कारण है. एक तो अज्ञानता और दूसरा गरीबीकी हालत. परन्तु गरीबी होने परभी बहुतसी आशा-तना ज्ञान और विवेकके साथ पूजा करनेसे मिट सकती है. इस लिये जीर्ण मंदिरो-द्धार करना करानाभी अपना मुख्य कर्तव्य है.

**१४ प्राचीन लेखोंका लछास** — इतिहासके देखनेसे मालुम होता है कि अपने जैन धर्म और जैन समाजका पूरा इतिहास जहां तक देखा गया नहीं मिलता है. अपने परम पूज्य महाचीर भगवानके पहिले या पांछे किस किस महान् आचार्य वगैरहनें अपने घर्म और अपने कोमकी तरक्रीके लिये क्या क्या महेनत उठाई है, कहां कहां अपने हकमें अच्छी बातें हुई हैं, कहां कहांसे अपने हक मिले है, इत्यादि जब तक पुरानी शोध खोज नहो कुछ-मालुम नहीं हो सकता. इस अपनी तरक्री-मजबुतीके वास्ते प्राचीन लेखोंका तछास कराना निहायत जरूरी है.

१९ **हानिकारक रिवाजोका त्याग-**मिथ्यात्व सब पापोंका मूछ है. जो प्राणी इसको सेवन करता है वह निश्चय करके इस संसारमें परिभ्रमण करता रहेगा, और अज्ञुभ कर्मोंके उदयसे हमेशा दुःख पाता रहेगा. मिथ्यात्वको छोडकर सम्य-क्त्वको अंगीकार करना ही चतुर आदमियोंका काम है. यह मिथ्यात्व अक्सर अज्ञानतासे पछे बंध जाता है. और एक दफे पछे बंधनेके बाद फिर मुराकिल्से छूटता है. क्योंकि जीव इसको अनादिकालसे सेवता हुवा चला आता है, इसलिये यह मिथ्यात्व जीवको प्रिय है. इस मिथ्यात्वके प्रवेशके कइ रास्ते है. परन्तु मुख्य रास्ता उन हानिकारक सीति रिवानोंके जारी रखनेसे है, कि जिनकी वजहसे चीकणे अञ्चभ कर्म बंधते है, लोगमें हांसी होती है, और व्यर्थ पैसा खर्च होता है. जो रीतिरिवाज अपने धर्म शास्त्रके हुक्मके विरुद्ध प्रचलित हो गयेहे वेही हानिकारक है. उन रीतिरिवानोंको सुधारकर शास्त्रानुसार उनसें प्रवर्तना यहही समझदार मनुष्योंका धर्म है. गत वर्षमें इसवारेमें जो ठराव हुआ है उस बातोंका जो जो स्थल-में अमल न हुवाहो वहां अमल करना खास जरूरी है. पहिले अलबता कोई पुस्तक जैन रीतिसे विवाह करनेकी नहीं थी. अब वह पुस्तकमी प्रकट हो गई है. अपने लोगोंको जरूर है कि उस विधि मुवाफिक अपने सन्तानका लग्न करावे. इसके सिवा जो सोलह संस्कार अपने लोगोमें शास्त्रके मुवाफिक होना चाहियें उनको आग लोग छोड और मूल नैठें है. उन सोलह संस्कारोंको बालबोधमें लिखकर तत्व

निणेय प्रासाद ग्रंथमें छपवाकर बहुतही सुगम कर दिया है. उस मुवाफिक अपने सोलह संस्कार जरूर प्रचलित होना चाहिये, और धर्म शास्त्रके आज्ञा विरुद्ध जो हानिकारक रिवाज जारी हो गये है उनको बंद करना चाहिये.

१६ सधर्मीको आश्रय--सधर्मी भक्तिके बराबर और कोई माक्ते नहीं है. धर्मी भाईका अपने घरपर आना अच्छा नसीबके उदयसे होता है. क्योंकि अपने लोगोमें यातो राज कारभारी या साहुकार या व्यापारी होते है. इसलिये नब-तक समय ठीक रहा अपने अंदर गरीबाई आनेका कोई कारण नहींथा. परन्तु इन दिनोंके अतूट दुर्भिक्षोंने अपने बहुतसे भाइयोंकी, बहेनोकी और बच्चोंकी दुर्दशा बना दी है. और उनको इस वक्त किसी तरहका आश्रय नहीं है. न वह इस लायक है कि खुद अपनी सार संभाल कर सके. इस लिये ऐसे ऐसे जैनियोंकी सारसंभाख करके उनको आश्रय देना बहुतही जरूरी है.

१७ जीवदया-इसही विषयके साथ मिलता हुआ जीव दयाका मा-मल्ला है. जिस तरह पर निरााश्रितको आश्रय देकर उनको धर्ममे दृढ करना ज-रूरी है वैसेही अपंग वृद्ध जीवोंका बचाना, उनको खाना पीना देना, उनकी सार संभाल करना अपने दयामयी धर्मका काम है. इसलिये जीव दयाकी तर्फ लक्ष देनामी अपनेको बहुत जरूरी है. सांसारिक व्यवस्थाकी तर्फभी नजर डालनेसे जाहिर होगा कि जीवकी रक्षा करनेसे किस कदर फायदे होते है.

१८ कुसंपका त्याग-करनेपर और आपसमें मेल बढाकर अपने इच्छित फलोको प्राप्त करनेके बारेमें में उपर बहुत कुछ कह आया हूं. इस लिये यहां पर इतनाही कहना बस है कि इसको आपलोग सबसे पहिला स्थान अपने दिलोमें देवेंगे और इसकी जड मजबूत कायम करेंगे. इसके बाद आपके और और विचारे हुवे काम पार पड सकेंगे.

१९ जैन डीरेक्टरी-अपने ब्रिटिश गवर्नमेंट और देशी राज्योमें जो हर दस साल लाखो रुपया खर्च करके मनुष्य गणना कीजाती है इसका मतलब यहही है कि इन राज्योके ताबेमें रैयतकी संख्या, उनकी पृथक् पृथक् उमर, उनकी इलमिलियाकत, उनका धंधा रोजगारका हाल, उनकी सांसारिक और धार्मिक स्थिति वगैरह वगैरह मालुन होजावे. ताकि इस बातके मालुम होनेपर सुर्व

वंदोबस्त हर कस्बे व गावका उनके हाथमें आजावे. और जहां जहां जिस बं-दोबस्तकी जरूरत हो उसकी बे महेनत तुरत काररवाई की जावे. इस मुवाफिक अपनी सांसारिक और धार्मिक हालत अपने लोगोंको अच्छी तरह माल्रुम होनेके छिये और फिर उनका यथोचित इंतेजाम करनेके छिये अपनी एक कुछ हिंदु-स्थानके जैनियोंकी पूरी डीरेक्टरीका तयार होना निहायत जरूरी काम है. इस डीरेक्टरीके तयार होनेसे अपनको अपने हर उमरके मर्द औरतका हाल, उनकी स्थितिका हाल, उनके इल्मका हाल, उनके घंघे रोजगारका हाल, उनके धर्म-ज्ञानका हाल अच्छी तरह मालुम हो सकता है. इसके साथ साथ अपने परम उपकारी साधु मुनिराज और साधवियोंका हालभी मालुम हो सकता है. अपने तीर्थोंका, धर्मशालाओंका, पुस्तक मंडारोका, मंदिरोका, जिन प्रतिमाओंका हाल मालुम हो सकता है. मंदिरोंकी पूजा वगैरहकी कमीबेशीका हाल मालुम हो स-कता है. गर्नकी जो बात इस वक्त जैन डीरेक्टरकि अभावमें अंधेरेमें पडी हुई है वह डीरेक्टरीके तयार होनेकी हाछतमें अच्छी तरह जाहिर हो सकती है. भा-वनगरके संघने दूसरी कॉन्करन्सके प्रस्तावके मुवाफिक भावनगरके जैनियोंकी डी-रेक्टरी तयार करनेमें स्तुतिपात्र काम किया है. और उनकी देखरेख हर जगह इस ठराव के मुवाफिक कार्य ग्रुरू होना निहायत जरूरी है.

२० आप साहेबोके ध्यानमें यह वात रहनी चाहिये कि, इस महासभाके एकत्र होनेमें हिंदुस्थानके जैनियोंका कितना रुपया खर्च होता है. अवल तो जहां पर वह महासभा भरती है. वहांके श्रावकोंका, कि जो कइ महिनो पहिलेसे अ-पना सब काम छोडकर इसही कार्यमें लग जाते है, हिसाब मासिकका लगाया जावे तो हजारो पर हिसाब पहुंचता है. इसके सिवा भोजन वगैरह कामोमें हजारो रुपये खर्च हो जाते है इसही तरहपर नजदीक और दूर देशके संख्याबंद जो डेली-गेट आते है उनके रेलका किराया वगैरह हजारों रुपये खर्च होते है. पण एक महासभाके जलसेमें इतना रुपया खर्च होकर हमको क्या प्राप्त होता है. यह बात हर सख्सके विचारनेकी है. सिर्फ तीन चार दिनके मीठे मीठे भाषणोके सुननेसे उस खर्चका बदला नहीं मिल सकता है. क्यों कि इस कानसें सुनकर उस कान निकाल देना अकलमंदोका काम नहीं है. मेरा मत पूरी तौरपर अपने गत वर्षकी महासभाके प्रेसिडन्ट साहेबका मतके साथ मिल्रता है, कि भोजराजा बगैरहके वक्तेमें एक एक शिक्षा लाख लाख रुपया देकर खरीद करते थे तो हमभी इतना रुपया खर्च करके यह शिक्षा सीखें तों क्या बडी बात है. परन्तु पूर्व काल्टमें जो लाख लाख रुपया खर्च करके शिक्षा खरीदते थे वह उसके अनुसार चलकर उस लाखकी शिक्षांसे कइ लाख पेदा करते थे इसही प्रकार जब तक अपन लोग यहां पर शिक्षा सीखकर उस पर अमल नहीं करेंगे उस वख्त तक सिर्फ तोतावाली कहानीसे काम नहीं चल्लेगा. इस कथनसे मेरा यह मतल्ब है कि अपनी योजना या अपने ठराव सिर्फ कागज ही कागजपर नाहीं रहना चाहिये. बल्कि जो जो ठराव अपनी सबकी संमतीसे पास हो उन ठरावे पर अमल करना अपन सबका अव्वल दर्जेका फरज होगा. क्योंकि जिस बातको अपन अच्छी समझकर अंगीकार करनेका और बुरी समझकर छोडनेका ठराव करते है उस ठरावके मुवाफिक अमल करनाभी अपना ही फरज है. जब अपन अपने विचारे हुवे कामपर दढ रहेंगे तो वह काम तुरत पार पडेगा. और अपने अच्छे कामको देखकर अगर शुरुमें कोई विना समझे उस अमल के विरुद्ध होंगे तो अपना अमल अच्छा होनेसे वह तुरत अपने तरफदार हो जावेंगे. इस लिये जो जो ठराव कॉन्फरन्समें हो उनको अपन खुद्दको अमल्में लाना चाहिये. और अपने अन्तुयायियोंकोभी उनपर अमल कराना चाहिये.

२१ इन विषयोके चर्चनेके सिवा औरभी बहुत विषय योग्य चर्चनेके है. परन्तु थोडा थोडा मीठा होता है. इस लिये अब ज्यादा कहनेकी जरुरत नही.

२२ अब आपसाहेबोको मुनासिब है कि पृथक् पृथक् जिल्होंसे जो प्रति-ानिधि यहां पधारे है उनमेंसे मुखिया मुखियाओंको चुनकर एक सबजेक्ट कमीटी नीमे जो अपनी इस कॉन्फरन्समें चर्चने लायक विषयोंका निर्णय करे और उसके मुवाफिक अपना काम द्युरु किया जावे.

२३ आप साहेबो तकछीफ उठाकर इतनी दूर पधारे है और जैन धर्म तथा जैन समुदायकी हाछतकी बहेतरी चाहाकर इस महासभामें सामीछ हुवे है इस छिये में आप छोकोंकु अंतःकरणसे धन्यवाद देता हूं और मेंने कुछ अप्रिय वचन कहा होवे उसके छिये आप साहेबोपास क्षमा चाहाता हूं. और परमात्मासे प्रार्थना करता हूं कि यह महामंडछ दिन दिन उन्नातिके साथ बडता रहे तथा श्रीजिनशासन जयवन्ता हो ! ओरम्.

#### ( \$ 8 )

## निशाणी ३.

## भावनगरना मि. मोतीचंद गीरधर कापडियानुं

#### भाषण.

#### 

आप सर्वने अत्र एकत्र मळेला नोई आनंद थाय छे. जैन कोमनी मानसिक उत्कुष्ट स्थिति सूचवनार आ महान् मेळावडाने परिणामे जे जे विचारो करवाना छे तेमां केळवणी ए मुख्य पदे छे. तेनी गंभीर आवश्यकता समजवामां बहुं मुश्केली लागे तेवुं नथी. केळवणीनी जरुरीआत एटला माटे छे के तेथी दरेक माणस पोतानी जवाबदारी शीखे छे. हुं आपने एक दृष्टांत आपीश एटले आ हकीकत तुरत स्पष्ट थइ जरो. थोडावखत पहेलां मने एक जैन बंधु रस्तामां मळ्यो. स्वभावे सरळ प्रक्व-तिनो अने भाविक हतो. तेणे मने पूछयु के, भाइ कॉन्फरन्से शुं कर्यु ? तमे संवेए आ सवाल घणाना मुखमांथी सांभळ्यो हरो. आ एक एवो गुंचनाळो सवाल छे के तेनो जवाब देवामां जरा विचार करवो जोईए. में तेने जवाब आप्यो के भाइ ! तमे कॉन्फरन्स माटे शुं कर्युं? कॅन्फिरन्स ए कंइ जुदुं पुतछुं जुदी व्यक्ति नथी. आखी कोम-प्रत्येक मनुष्य व्यवहारिक, सांपत्तिक, नैतिक, मानसिक, अने शारीरिक बाबतमां संघारो वधारो करे ते बधाओना कार्यनो सरवाळो तेज कॉन्फरन्से करेलुं काम समजवुं. आ जवाबथी ते माणस तो निरुत्तर थइ गयो पण्रेपोताने कॅान्फर-न्सथी जुदा समजवानुं कारण हां ? आवा प्रकारनी भूल थवानो हेतुं हां ? आपने तुरतज जणाशे के आवा गंभीर सवालपर ते माणसे पुरतो विचार कर्यो नहोतो. विचार क्यारे कराय ? ज्यारे पोतानी फरज अने जवाबदारी शुं छे ते समजाय त्यारे. पोतानी फरज अने जवाबदारी शुं छे ते क्यारे समजाय ? केलवणी लेवामां आवी होय त्यारे. आटला उपरथी आपने रोशन थशे के, केलवणी लीधाथी पोतानी फरज अने जवाबदारी समजी माणस ते प्रमाणे वर्तन करे छे. ज्यारे दरेक माणस पोतानी फरज जां छे ए समजे त्यारे पछी आवा महानू मेळावडा भरवानी पण जरुर न पडे. ज्ञान भंडारनो जीणींद्धार आपोआप थइ जाय, अने आर्यावर्तमां एक पण र्जाणे मंदिर रहे नहीं. बाळल्झनुं नाम निकळी जाय अने रडवाकुटवानुं अन-

गाउनी वार्तामांज रही जाय. अलबत ज्यांसुधी आ स्थिति प्राप्त थाय नहीं त्यां सुधी दुरेक बाबतमां प्रयत्न करवानी जरुरीआत छे अने ते प्रमाणे आपणे करीए पण छीए. खरा अर्थमां केळवणी जो आपवामां आवे, तोज सारी स्थिति प्राप्त थाय छे, जे प्राप्त करवी एज दरेक कोमनी अने मनुष्यनी उच्च भावना होवी जोइए. इ. स. १८७१ मां जापानना मीकाडोए ठराव बहार पाड्यो के '' हवे पछी केळवणीनो एटलो बहोळो फेलावो करवानो इरादो राखवामां आव्यो छे के, आखा राज्यमां एक पण अभण कुटुंब धरावतुं गाम रहेवा पामे नहीं, अथवा तो एक पण अभण इसम धरावतुं कोइपण कुटुंब रहेवा पामे नहीं. '' आ ठरावने परिणामे ३५ वर्षमा जापाने जे वधारो कर्यों तेने हाल आखी दुनियाने आश्चर्यमां गरकाव करी नांखी छे. जापानीओ ३५ वर्षमां गुरुना गुरु बनी गया छे. जे कल्लाकौदाल्य तेओ यूरोप-मांथी शीखी आव्या तेनो अभ्यास करवा दरेक वरसे चार छेफटेनंटोने जापान मोकलवानो इंग्लंडनी सरकार ठराव करी जुकी छे. एक प्रजाना इतिहासमां २५ वर्ष कांइ नथी. आवी इच्छा 'ज्यारे आपणी कोमना प्रत्येक आगेवानना मनमां जागृत थशे त्यारे आपणे घणो वधारो करी शकीशुं, जे कोइ पुरुष या जे कोइ स्त्रीने आगळ वधवुं होय तेणे जापाननो दाखलो भूलवो जोइतो नथी. वळी आ प्रसंगे जणाववं जोइए के समय बहु अनुकुळ छे. शास्त्रकारना कहेवा प्रमाणे वीर परमात्माना स्वर्ग गमन पछी पचीसो वर्ष सुधी भरम ग्रह छे. तेमां वच्चे वच्चे उदय थाय छे. पण हवे तो ते वखत पण पुरो थइ जवा आव्यो छे ते वखतनी कॉन्फरन्स सूचना करे छे. अने आ सूचना दरेक जणे उपाडी लेवानी जरूर छे. आपणी कोमनो वधारो केळवणीना वधारा उपर आधार राखे छे.

केळवणी शद्धमां फक्त स्कुल्मां हाल्मां अपाती केळवणीनो समावेश कर-वामां आवतो नथी. अमुक पाठो गोखी जवा के परीक्षा पसार करवी ते एकज प्रकारनी केळवणी छे. सर्व देशीय केळवणीमां मगजने पोतानी फरज शुं छे ते विचारतां शीखवतुं. दरेके दरेक नाना प्रसंगोमां पण विचार शक्तिने अवकाश आपी तदनुसार वर्तन करवुं ए केळवणी छे. आवी केळवणी स्कूल छोड्या पर्छी वास्तविक रीते शरु थाय छे अने आखी जींदगी सुधी चाले छे. मारा आखा भाषणमां विचार शक्ति जवाबदारी अने फरजनी विचारणा, अने शक्ति नेज के ळवणी कहेवामां आवशे.

\$

केळवणीनी बाबतमां आपणी कोम धणीज पछात छे, ते प्रसिद्ध वात छे. सरकारी उंचा होद्दा मेळवनाराओमां पण देशी राज्योमां सारी लाग वग धरावना-राओ अथवा स्वतंत्र उत्तम साक्षरो आपणी कोममां कोई नथी. होयतो गण्या गांठ्यान छे, अत्यार सुधीमां आपणी कोमे व्यापार तरफन छक्ष आप्युं छे अने ते बहु सारुं छे. पण व्यापारने अने केळवणीने कोइ विरोध नथी. सारी रीते अ-भ्यास करीने माणस व्यापारमां जोडाय तो बेवडो लाभ करवा उपरांत पोतानो लाभ बीजाओने पण आपी शके. वळी थोडा विद्वान माणसो बीजी लाइनमां उतरी जइ कळाकौ-शल्य के देशसेवा बजावे ए इच्छवा जेवुं छे. व्यापारने खास छोडवो नहीं एतो मु-रूय उद्देशन छे. आ बन्ने सुन्न ध्यानमां राखी आपणी पछातताने दुर करवानी ज-रुर छे. आपणी कोम केटली पछात छे ते जाणवानुं साधन आपणी पासे हजी प्राप्त थयुं नथी. छतां हालमां भावनगरवाळाए डीरेक्टरी बहार पाडी छे ते उपरथी नो-वाने बनी आवे छे के, ३५०० जेवी जैननी मोटी वस्ती धरावता एक आगेवान शहेरमां मात्र ५ ग्रेज्युएटो अने मेट्रीक पास थयेलानी संख्या १७ नीन छे. तेथी उंची केळवणी हेनारा ।। टका जेटहाज हगभग थवा जाय छे. हवे भावनगर तो कॉलेजनी सगवड धरावे छे, तथा बीजी पण केटलीक सगवड धरावे छे. तेथी त्यां आटलं पण देखाय छे पण आपणे आर्खा जैन कोमनी नजरथी जोईए तो आपणे वधारेमां वधारे २२ म्रेज्युएटो धरावीए छीए. लगभग १० लाखनी वस्तीमां आ केटली ओछी संख्या गणाय ? ४०००० माणसे एक ग्रेज्युएट बहुज ओछुं प्रमाण बंधाय. पार्सा जेवी सवालाख माणसनी कोममां ओछामां ओछा २००० ग्रेज्युएटो छे. आपणी कोमने माटे आ तदन शरमावनारुं छे.

आटला उपरथी आपे केळवणीनी आवश्यकता अने आपणुं पछातपणुं जोयुं. आपणी राजमाषा अंग्रेजी छे. आपणां दुःखो योग्य अधिकारिओ समक्ष रजु करवा, न्याय मेळववा, राजद्वारी लागवग वधारवा अने कोमनी सामान्य उन्नात्ते करवा आ भाषानुं ज्ञान उपयोगी छे. जैन कोमना उंचा प्रकारनुं साहित्य दुनिया समक्ष मूकवा विद्वान वर्गमां जैन धर्मना मूळ तत्वोनो फेलावो करवा, तेना संबंधमां केटली गेर स-मजुती छे ते द्र करवा अने बीजा विद्वानेाना आभिप्राय जाणवा आ मा-षाना ज्ञाननी जरुर छे. खगोलविद्या, तर्कशास्त्र, गणित, पदार्थविज्ञानशास्त्र इति-हास विगेरे विषयोना विस्तीर्ण ग्रंथो आ भाषामां छे तेनो लाभ मेळववा आ भाषा-ज्ञान कामनुं छे अने कोमनी सामान्य उन्नति करवा माटे आ भाषाज्ञान तजी न श- काय तेवुं छे. व्यापारनी वृद्धि अने ज्ञान माटे पण. आ भाषाज्ञाननी पुरेपुरी करुर छे. टुंकामां आपणी कोमनी अने कोमनी प्रत्येक व्यक्तिना वधारा अने टकाव माटे आ भाषाज्ञाननी पुरेपुरी जरुर छे. आ भाषाज्ञाननी जेटली जरुर छे तेटलीज आपणी को-मनी ते विषयमां पछातता छे ते आपणे उपर जोइ गया छीए. गृहस्थवर्ग केळवणी आपवानी दरकार करतो नथी अने गरीब वर्ग ते ल्ड शकतो नथी कारण के आ के-ळवणी बहुज खर्चीळ छे. मोटो भाग तेथी करीने केळवणी लेनसीब रहे छे. कोमना साधनथी जो केळवणी लेवामां आवे तो बीजो ए लाम थाय छे के, जेओ आ साधनथी केळवणी ले छे तेओ पोते पोताने खर्चे केळवणी बीजाने आपे छे, अने आवी रीते परंपरा चाले छे. बीजी रीते मदद करवाथी ज्यारे गरीब वर्ग वधे छे त्यारे केळवणी आप्याथी परंपराए बहु मोटो वर्ग पोताना पग उपर उमो रहेनारो नीकळी आवे छे. केळवणीने मददनी पुरेपुरी जरुर छे ए आपना जोवामां आव्युं हरो. प्राथ मिक केळवणी जैनोमां मोटे भागे लेवामां आवे छे तेथी ते दरेक माबाप उपर राखी हाइस्कुल अने कॉल्जेननी उंचाप्रकारनी केळवणी आपवामां मदद करवी ए आगेवान गृहस्थोनी खास फरज छे.

मदद करवी ए खास फरज छे एम सिद्ध थया पर्छ। हाल तुरत कया प्र-कारे मदद करवी ए जोवानुं छे. सरकार मोटे खर्चे कॉलेजो चलावे छे, अने तेनी हरीफाइमां मोटो खर्च करी आपणे कॉलेजो नभावी शकीए ए बनी शके एनुं नथी. कॉलेज चलाववामां जे मोटो खर्च थाय छे, ते जोतां ए बहु मुइकेल छे तेथी आपणे जे करी शकीए ते ओछा खर्चे वधारे लाभ मेळववो ए छे. आटला सारं हालना वखतमां शेनी मदद जोइए, ए विचारवानी जरुर छे. मुंबइ जेवा मोटा श-हेरमां भणनाराओने केटली अगवड पडे छे, तेनो अनुभव शिवाय ख्याल आववो मुइकेल छे. जो एक बोर्डिंग स्थापवामां आवे तो तेथी बहु लाभ थाय. एक वि-द्यार्थी पाछल जो २०० रुपीआनो खर्च राखवामां आवे तो तेमांथी तेनो भोजन, कपडां, फी अने पुस्तक सर्व खर्च निकले अने दश हजार रुपियाना खर्च्था ५० विद्यार्थीओ निकली शके. आ विद्यार्थी ओने दरोज एक कलाक फरजीआत धा-मिंक अभ्यास कराववामां आवे तो तेओमां जे कोइवार धर्मपर अनास्थानो आरोप मूरुवामां आवे छे, ते दुर थइ जाय अने ५० बोर्डरो साथे पोताने खर्चे भणनाराओ मण जोडाइ शके. आवी रीते दश वर्षमां आवणे आस्तिक जैनोनुं एक मोटुं टोल्ठं पेदा करी शकीए. ज्यारे कॉलेज पाछळ कदाच पचाश हजारनो खर्च राखीए तोपण आ लाम मेळवी शकीए नहीं.

इंग्लीश माषापर केटलाक आक्षेप थाय छे ते तदन अस्थाने छे. दाखला तरीके धर्मपर अनास्थानो दोष मूकवामां आवे छे ते तदन खोटो छे. केलवर्णायी ए थतुं नथी. नानपणथी असंस्कारी मन गमे तेवा विचार करे ए स्वामाविक छे. आ बाबतमां माबापपर ठपको रहे छे. तेओ जो नानपणथी धर्मपर ध्यान आपे तो नमुनेदार बाळक बनावी शके अने आपणे जोइए छीए के, मि. टष्ट्रा अने मि. गांधी केलवणीना प्रतापथीज जैनधर्मने दीपावनार तरीके शोभी निकल्या छे. केलवणीपर आक्षेप करवो, ए वस्तु स्थितिनुं ओछुं ज्ञान बतावे छे. पात्र भेदे कोइवार बिपर्यास थाय छे, पण तेमां केलवणीनो दोष काढवो ए तद्दन खोटुं छे. आपणी कोम एकपण हाइकोर्टना जज जेवो होद्दो धरावनार मेलती शकी नधी. अने खरेखर उंची केल-वणीनी बाबतमां मुसलमानोथी पण पछात छे. डीस्ट्रीक्ट जज पण एके नथी. आ बाबत आगेवानोना लक्ष उपर टुंकामां लावी केलवणीना बीजा साधनोपर विचार करीए.

लायद्वेरी — जैनना आगेवान गणातां राहेरमां फ्री लायब्रेरी स्थापी जेनाथी साहित्य मफत वेचाय तेवुं ज्ञान फेलाववानी जरुर छे. आ रस्ते ओछा खर्चे मोटेा लाम थइ राके तेम छे, आ बाबतमां आप साहेबोनुं ध्यान खेंचवामां आवे छे. आ कार्य कॉन्फरन्सपर राखवानुं नथी. दरेक गामवाळाओए स्थानिक सुधारो कर-वानी जरुर छे. लायबेरीमां गुजराती, संस्कृत अने धार्मिक पुस्तको राखवामां आवे अने बने तो इंग्लिश पण राखवामां आवे तो बहु लाम थाय.

बोर्डींग-आ संबंधमां अगाउ वहु बोलाइ गयुं छे. विषेश विवेचननी ज़हर नथी

फाइलोलॉजीकल लेक्चर शीप-जैनधर्मना विद्वानोना जीवनचरित्रो अने ते विगेरे जुनी शोध खोळनी बाबतमां विल्सन फाइलोलॉजीकल लेक्चरशीप चाले छे, ते घोरण प्रमाणे विद्वान् जैनो पासे दरेक वर्षे एक विषयपर छ सात भाषणो अपाववां अने तेने माटे माटुं इनाम आपवुं अने भाषणो छपाववां. आथी महात्मा हरिभद्रमूरी, हेमचंद्राचार्य, हीरविजयसुरी विगेरे विद्वानोना समयनो अअसिद्ध इतिहास प्रसिद्धिमां आवशे. जैन कोमना ऐतिहासिक बनावोपर विद्वानोनुं ध्यान सेंचारो अने जैन विद्वान्वर्गमां जुनी बाबतनी रोष खोळ करवानी बुद्धि जागृत थरो. आ संबंधमां एक आखी दरखास्त छे, जेथी विषेरा विवेचन करवानी जरुर नथी; पण फक्त ते रोोधखोळने अंगे एक लेक्चरशीप स्थापवी ए कहवानी अत्रे जरुरीआत छे. आपने एक सामान्य दाखलो आपुं. हालमां हेनचंद्रसूरीना संबंधमां तपास करतां एटली नवीन हकीकत मळी आवी छे के ते संबंधमां आपणे तद्दन अज्ञान हता. हेमचंद्रसूरिना उपकारथी आपणी कोम आ स्थितिए रही राकी छे. अने अस्त पामतां जैन धर्मपर तेओए इतिहासना पाना-पर ना मुंसी शकाय एवा अक्षरोधी जैन धर्मनी जैनीओनी उत्कुष्टता बतावी जे महान कार्य कर्युं छे तेनी यादगीरीमां आपणे तेओने माटेज एक लेक्चरशीप स्थापवी जोइए. आवीज रीते बहु विद्वानो थइ गया छे. वळी लेक्चरशीप स्थापवीए विद्वानोने खेंचाण करनारू तत्व छे अने ते द्वारा घणा अभ्यासीओ वधी शकरो. एक बहु अगत्यनी बाबत तरीके आ बाबत हाथ घरवानी जरुरीआत छे. वर्ष दिवसे पांचसे रुपिआ आ माषणमाळा माटे काढवामां आवे तो हाल चाली राके तेम छे.

जेम बोर्डिंगनी जरुर छे तेमज स्कॉलरशीपनी पण जरुर छे. केटलाक अभ्यासमां बोर्डिंगनी आश्रय लेवो बनी शके एवं होय नहीं तथा सर्व शेहरोवाळा बोर्डिंग निभावी शके नहीं त्यारे योग्य विद्यार्थीने स्कॉलरशीपद्वारा मदद करवाथी बहु लाभ थशे. स्कॉलरशीप ए एवा प्रकारनुं उत्तेजन छे के, ते मेळववा माटे जो हरीफाइ होय तो तेथी ते मेळववानी महेनतमां एक बहु सारो वर्ग उत्पन्न करी शकाय. आवी हकीकत आपना ध्यानपर लावी गरीब अने मध्यम वर्गना विद्यार्थीओने आ रीते मदद करी तेओने योग्य रस्ते चढाववा ए आपणुं कत्तेत्र्य छे. जेओ केळवणीथी बेनशीब रही कांइ पण कार्य करता नथी तेओ पण आखरे कोमने माथेज पडे छे, अने तेओने नभाववा पडे छे. त्यारे जे खर्च करवामां आवे छे ते तद्दन नकामो अने बदला वगरनो थाय छे. पोतानी कोमना निराश्रितोने नभाववा ए प्रत्येक कोमना आगेवानो पोतानी फरज समजे छे, अने अत्रे जे उपाय बताववानी इच्छा छे ते निराश्रितोने नभाववानी नथी पण निराश्रितो थताज केम अटके ए बताव-वानी छे. ज्यारे माणसो पोताना पगपर उमा रहेतां शीखे त्यारे तेओ निराश्रित न धाय अने ते केळवणी वगर थत्रुं मुइकेल छे. गया वस्ती पत्रकना मुंबई ईर्जाकाना

रीपोर्ट परथी जणाय छे के, २४१५३३ जैन पुरुषोमांथी भणनारा फक्त २१६४६ अने लखी वांची जाणे एवा ९४१०० छे; त्यारे १२५७८७ पुरुषो तद्दन अभण छे. जैन कोमनो अर्घ भागर्था वयारे भाग आवी रीते तदन केळवणीथी बेनशिव रहे छे अने आ वर्गमांथी निराश्चित वर्ग उत्पन्न थाय छे तेओने सुधारवानो उपाय केळवणीने चालु मदद आपी स्कॉलरशीप विगेरे आपवी ऐज छे. आ रस्ते जे पैसा खर्चवामां आवशे ते नहीं तो बीनी रीते पण खर्चवाज पडशे. अने तेटला माटे आ वर्षमां मि. लालमाइ रोठे जे स्कॉलरशीपनी योजना काढी छे ते प्रशंसापात्र छे. अगाउ जणाव्युं तेम आवी स्कॉलरशीपमां वळी हरीफाईनुं तत्व उमेरवामां आवे तो मोटो लाभ थाय. आ बाबत आपना ध्यानपर लावुं लुं. बोर्डिंग करवी ए अमुक व्यक्तिने माटे मुइकल छे, जो के गृहस्थ माटे तेम नथी. आवा माणसोने केळवणी खातामा मदद करवानी होंस होय तो तेणे ठां करवुं ? एवो स्वाल थाय छे. आवा शुभ आश्रयवाळा अने कोमनुं हित हैडे धरवावाळा धार्मिक धुरंधरोने हुं मुचवीश के तेओए अभ्यास करनार विद्यार्थीमांथी एक चालाक अने भविष्यमां सारा निव-डवानी आशा आपनारा एक विद्यार्थीने लड़ छेवो अने तेने पोताने खर्चे जमाडी कपडां, फी, पुस्तक अने व्याजनी थीजा खर्च आपी प्रिविअसथी ठेठ सुधी तेने अभ्यास कराववो; जेथी थोडा रुपियाथी एक रत्न मेळवी शकाशे अने ते रत्न परंपराए अनेक रत्न उत्पन्न करशे. आ योजना दरेक श्रीमंत गृहस्थे ध्यानमां राखवानी छे. केळवणीनुं खाां एवं छे के, तेने बनी राके तेटली मदद एक आनाथी एक लाख के दशलाखमधा आपी शकाय. परंपरा केवी रीते चाले छे तेनो दाखलो आपने जोवो होय तो भाटीया गृहस्थ शेठ गोकळदास तेजपालने जुओ. ए उपरांत सस्तु साहित्य अने मासिक अने अठवाडिक पश्रीनी जरुर छे. कॉन्फरन्सनी मददथी एक विद्वान ए-डिटर तरफर्था एक मासिक के पाक्षिक नियमित रीते बहार पाडवानी जरुर छे. आमां हिंदी, गुजराती अने इंग्लिश ए त्रणे भाषापर लेखो आपवामां आवे तो ते उपयोगो नीवडरो तेमां हरी। राक नथी, अने तेमां जैन धर्मना सर्व विषयो लेवामां अडचण नथी. फक्त कॅान्फरन्सने लगता विषयोने वधारे अगत्यता आपवी एटलो नियम थाय तो आ मासिकनी हजारो नकलो जैन बंधुओने वेरेवेर वेचारो.

#### ( १ )

## निशाणी ४.

### मि. बालचंद हिराचंद मालेगामवाळानुं भाषण.

मानवंता प्रमुख साहेब, आखी जैन कोमना प्रतिनिधि साहेबो अने मारी सुशील बेहेनो !

शालोपयोगी ग्रंथमाला ए विषय केळवणीनो मोटो भाग छे माटे ते विषयने टेको आपता मने घणो आनंद थाय छे केळवणी ए विषय एवो महत्वनो ने मोटो छे के, तमाम विषयो एक केळवणी उपरज आधार राखे छे. जो केळवणीनो यथा-स्थित प्रसार थाय तो आ कॉन्फरन्सना घणा खरा विषयोनी चर्चामां फोगट वखत गाळवानो प्रसंग नहीं आवे. तमाम प्रकारना सुधाराओ एक शिक्षण उपरज आधार राखे छे. शिक्षण, विद्या, के ज्ञान वगर आखु अंधारुं छे. आ अपूर्व समाजनो मेळा-वडो ए पण ते उंचा ज्ञाननुं एक शुभ परिणाम छे. बधा पवित्र आचार, आत्मोन्नति विगेरे एक ज्ञाननाज आधारे रहेल छे. बीजा बधा सुधाराओ करतां जो केळवणी तरफज आप वधारे लक्ष आपशो तो मारी खात्री छे के, ते सुधाराओ पोतानी मेळेज आपणी पासे आवी हाजर थरो. एक सुभाषितकार कहे छे के,

#### विद्या गुरूणां गुरुः

विद्या गुरुनी पण गुरु छे. आपणा अंतःकरणनो विकास करवा माटे, आपणुं अंतःकरण मोटुं करवा माटे, विद्यानी खात जरुर छे. विद्या साधननो जे प्रधान मार्ग प्रंथमाल्ला, कुमळा मगज उपर धर्मनी छाप बेसवा माटे साधनभुत जे पुस्तकमाळा, तेनी आपणामां घणी खोट छे. ते पुरवा माटे आपणे केवी जातना प्रयत्न करवा जोइए ते तरफ विरोषे करी आप साहेबोनुं ध्यान हुं खेंचुं छुं.

घणी ठेकाणे हालमां जैन शाळाओनी प्राणप्रतिष्टा थाय छे. केटलीएक शा-ळाओ शिक्षणना साधनना अभावे नामशेष पण थइ जाय छे; तेमां मुख्य खामी ए छे के, पद्धतसर पुस्तकमाळानी आपणामां रचना थइ नथी. शाळामां शुं शिक्षण आपवुं ए एक वणा महत्वनो प्रश्न थइ पढे छे. घणी खरी जगोए प्रतिक्रमण मूलमूत्र

 $\gamma \sim$ 

रुपे भणावे छे, पण प्रतिक्रमण ए किया प्रौढावस्थामां जे नाना प्रकारनां पाप कर्मो थाय छे, तेना पश्चातापरुप होवाने लीघे बालकोने ते कियाना पाठ भारभुत थाय छे. ने तेमना कुमळा मगज उपर पाठांतरनो एक वधु बोजो पडवाने लीघे तेओ मंद बुद्धीना थइ जाय छे. अर्थ समज्या वगरना पाठ भणाववा ते केटलुं मुइकेली भरेलुं होय छे तेनो अनुभव घणा विद्वान लोकोने हरोज. तेज अभ्यास, बुद्धीनो सारो विकास थया बाद कराववामां आवे तो मारी खात्री छे के, अडवाथी पण ओछा वखतमां थाय ! जे वेळा कुमळी मन रुपी भुमी उपर विद्यारुप सुगंघयुक्त पुष्प वा-टिकाओनो विकास थाय, विचार रुपी जलतुं तेना उपर सिंचन थाय, अने रक्ते रफते प्रौढ अवस्थामां कटण उंडा मूळवाळा झाडो तेमां वाववामां आवे तो खरेखर थोडा वखतमां तेना मधुर फळो चाखवाने मळे. माटे नाना बाळको माटे एवा पु-स्तको होवा जोइए के, जेमां धर्मना सामान्य तत्वो पद्धतसर बाळकोना मगजनी शक्ति जोइने रचेला होय.

आपणा केटलाक बांधवोए आ वावतनी चर्चा जैन पत्रमां करेली छे ने तेमां हुं पण एक छुं. केटलाएक बांधवेाए सूचव्युं के, एकथी सात पुस्तकामां सामायक, प्रतिक्रमण, जीवविचार, नवतत्व, नवस्मरण विगेरे विषयो दाखल करी संक्वत व्या-करणोना पण पाठ दाखल करवा कोइ कहे छे, पुस्तकमाळाज रचवी नहीं कारण हालमां चालती पुस्तकमाळा कांइ आपणा धर्मने बाधक नथी. विगेरे जुदा जुदा मतो ए बाबतमां छे. मारी कल्पना प्रमाणे हुं पण एक मार्ग बताववा मागुं छुं.

हालनी सरकारी शाळाओमांनी पुस्तकमाळा जैन धर्मने बाधक नथी ए वात खरी छे. पण ते साथेज विचारवानुं छे के, ते जैन धर्मने पोषक पण नथी. आवुं एक देशीय वगर धर्मकल्पनावाळुं शिक्षण मळवाथी केटलाएक आपणा बांधवो नास्तिक, जडवादी, Materialist एवा बनेला छे; माटे धर्मनी लागणी उत्पन्न थवा माटे जैन पुस्तकमाळानी रचना खास थवीज जोइए ए विषेनुं मारुं मत हुं आप सा-हेबोनी आगळ मुकवा चाहुं छुं.

साहेबो ! आप जाणो छो के, प्रतिक्रमण कांइ आपणुं धर्मतत्व बतावनारुं शास्त्र नथी. ए एक किया छे. ते किया समजवानी शक्ति उत्पन्न थतां सुधी आ-पणा धर्मना मूळ तत्वानोज अभ्यास कराववो जोइए. आपणे सारी पेठे जाणीए छीए के, आपणा धर्मनु सर्व प्रकारनुं तत्व बीजा लोकोनी दृष्टीर्था पण आईंसा परमा धर्मः ए एक वाक्यमां छे. ज्यारे अहिंसा व्रत पाळवुं छे त्यारे जीवनी ओळखाण पेहेलां थवी जोइए. नव तत्वमां पण जीवनेज आद्यस्थान आपेलुं छे. ते जीवनी ज्यारे आपणे ओळखाण थशे त्यारेज धर्मनी दरेक किया सार्थक थशे. धर्मनी दृष्टी सतेज थवा माटे, दरेक स्थळ जीवानी श्रणीथी केटलुं आकुल थएलुं छे तेनी पीछाण थवा माटे प्रथम जीवतत्वनीज ओळखाण होवी जोइए. माटे बाळकोना पुस्तकोमां पेहेलां जीव विचार प्रकरण शीखववामां आवे तो हरकत नथी. मात्र ते मुळ नहीं भणावता तेना सार रुप पाठे। तैयार करेला होय तो सारुं. ते पाठे। उप-र्यी ज्यारे जीवतत्वनो सारो बोध थशे त्यारे जीवविचार प्रकरण मुळसुत्र भणती वेळा बीलकुल वखत जशे नहीं ने अर्थ खवर होय त्यारे न्छोक मुखपाठ करवाने केटले। वखत लागे छे ते मारा विद्वान बांधवो सारी पेठे जाणे छे, माटे पेहेलांथी सरळ भाषामां जीवना तत्वो समजाववा एज योग्य छे.

हवे आपणे प्रतिक्रमण संबंधी विचार करीए. प्रतिक्रमणमां मुख्य किया सामायकनी छे. सामायक ए एक जातनो योग छे. संवरनी ते एक क्रिया छे. त्यारे पेहेल्लं, बीज़ुं, अथवा त्रीज़ुं घोरण भणनारा बाळकोने तेनो उपयोग केम थाय झ सात आठ वर्षना बाळकने ए भाररुप थाय एमां संदेह नथी. पांचमां स्टेंडर्डथी पा-ठांतर शक्ति सारी सतेज थयाबाद जो कदाच सामायकादिक पाठ भणाववामां आवे तो कोइ जातनो वांधेा नथी. चोथा वर्गमां हालमां घणा नाना बालको जणाय छे तेमना कुमळा मगज उपर सामायक जेवा उंडा विचारोनी कियानो बोजो नांखवे। ए कांइ ठीक नथी. आपणे जाणीए छीए के, मोटी उमरना माणसोने पण सामायक करवुं केटलुं मुइकेल थई पडे छे. केटला लोको नियमथी सामायकनी किया करे छे. भाक्ति, भाव विगेरे उत्पन्न थवानो काळ छोको वृद्धावस्थाज समजे छे. अने वृद्धाव-स्थामांज थोडाक लोको सामायक करवानो विचार करे छे. बाळपणामां के तरुण-पणामां सामायक आदि किया करवा, आसरे एक कलाक एकज जगे बेसी रही धर्म ध्यान करवुं घणुं भारे थइ पडे छे. अने भाग्येज घणा छोको सामायक करता हरो. बालकोने विचार करवानी शक्ति उत्पन्न थतां वारज जो तेना मन उपर सा-मायकना उपयोगनी छाप बेसे तो ते धर्म उपर सारी श्रद्धा धरावनारो नीपजे. सा-मायकनो खरो उपयोग समजी, श्रावकनुं कर्तव्य समजी, जो बालको आ किया उपर भाव लावरो तो सवारमां वेहेला उठी आळसने छोडी आ कियामां दाखल

90

श्रेशे; तो धार्मिक अभ्यास करवाने तेने जुदो वखत आपवानुं कारण नहीं रहे अने तेनुं आगळ जतां घणुं सारुं पारेणाम आवशे. हालमां सामायकनी किया कोइ करतुं हशे तो वधारे भागमां अमारी जैन महीलाओज करे छे. ते जगे पुरुषवर्ग उपर जो सारुं परिणाम थशे तो तेथी घणी जातना फायदा आपणने मळशे. मारेा मुख्य केहेवानो मतलब ए छे के, सारासार विचार करवानी शक्ति ज्यारे बालकोने मळे त्यारेज तेमना उपर सामायकादि कियानो बोजो नांखवी एटले ते बोजो सहन थइ शके अने ते बोजो विनाकारण नहीं पण आपणा आत्महितार्थे छे, एवी तेमनी खात्री थाय.

हवे एवो एक सवाल छे के, संस्कृत व्याकरण क्यारे भणाववुं ? आपणे सारी पेठे जाणीए छीए के, स्वभाषानं सारुं ज्ञान होवा वगर परमाषा अने ते पण संस्कृत जेवी अघरी भाषा भणवी मुरकेल छे. पेहेलां ऋषिओ, पंडितो जे अभ्यास करावता ते पेहेलांथीज व्याकरणनो आरंभ करावता अने आखा बार वर्षमां बधां शास्त्र भ-णावी विद्यार्थीने शास्त्र पारंगत करता; पण हालना कालनो ' जीवनार्थ कलह ' घणो कठण थइ पडेलो छे. उदर भरणना पाछळ बधी दुनीया लागेली छे. एवा वखतमां आवा उंडा अभ्यास करी पछी दुनीयाना व्यवहारनुं प्रचलित इतिहास, भगोल, खगोल, रसायन, ज्योतिष, यंत्र, गणीत विगेरे शास्त्रनुं ज्ञान मेळववामां वखत गाळी पछी कोइ पण धंधा रोजगारनुं ज्ञान मेळववा जेटले वखत अमारी बासे नथीः हाउमां तो घणा थोडा वखतमां अमो पंडित थवा मागीए छीए. अने ने माटेन डा. भांडारकरनी संस्कृत पुस्तकमाळा प्रगट थइ छे. तेमां थोडा वखतमां ट्याकरणनुं सामान्य तत्व समजी शकाय छे; एवाज प्रकारना व्याकरणो अमो भणी ज्ञकीए तेम छे. बनारस पाठशाळा जेवी महाशाळाओमां जे जुनी पद्धती मुजब ज्ञान मेळववा तयार थशे तेमने धन्य छे. पण घणा लोकोने डा. भांडारकर वाळीज योजना पसंद आवरो. सिद्धांत कौमुदी, हम प्रकिया आदी घणा शास्त्रो भणवा जे-टले। अमारी पासे वखत नथी, माटे जे वेळा सरकारी शाळाओमां संस्कृत व्याकरण भणाववाने शरु करवामां आवे छे तेज वेळा एटले तेटलो अभ्यास थया बादज शरु करवामां आवे तेा बहु सारुं. हालमां शाळाओमां भणवाना विषयोनी एटली बधी कीड थड पडी छे के, धर्मना एक टेकुस्ट बुकनो पण भार थइ पडरो. माटे विद्यार्थाओ उपर वधारे अभ्यासनो बोजो नहीं राखतां अने तेमना मगजने सेहेलाइथी एकेक वि-षय ऋमवार लेवानी फुरसद आपवाथी घणुं हीत थशे. अने मुख्य विचार करवानी

वात ए छे के, संस्कृत व्याकरण आ कांइ टेक्स्ट बुकनो विषय नथी. ए एक स्व-तंत्र विषय छे; माटे स्वभाषानुं पूर्ण ज्ञान थाय त्यारेज संस्कृत व्याकरण भणाववामां आववुं जोइए. कोइ पण टेक्स्ट बुकमां आज दिवस सुधी संस्कृत व्याकरण अथवा तो कोइ पण भाषानुं व्याकरण छखाएढुं नथी. टेक्स्ट बुकोमां तो मनेारंजन साथे विद्यार्थीना मगजने खीछववानो हेतु राखेलो होय छे. माटेज हाल्ला बीजा टेक्स्ट बुकोमां चीत्रो वधारे प्रमाणमां आपवामां आवे छे.

टेक्स्ट बुकनो बीजो एक विषय कविता छे. ए कविता तदन नवीन दाखल करवी ए पण युक्त नहीं गणाय. पेहेली अने बीजी चोपडी माटे जो विद्वान लोको पासेथी नवी कविताओ सादी अने मधुर भाषामां शुद्ध, एवी रचाय तो तेमांथी पसंद करी दाखल करवी. अने प्राचीन पंडितोनी अने आचार्योंनी रचेली कविता पण ज्यां ज्यां योग्य जणाय त्यां दाखल करवी. तेमां पण छंद, सवैया, ढाळो, उपदेशक च-रित्रोमांना उताराओ तरफ वधारे लक्ष आपवुं. शीयलवेल, दान, शील, तप, भाव, ना ढाळीआ एवंती, सुकुमाल, धना शालिभद्द, विगेरेनी ढाळो, सझायो विगेरे वि-षयो दाखल थाय तो बहु सारुं.

पाठ तैयार करवा तेमां जीवविचार, नवतत्व, वैराग्यना, उपदेशना, नीतीना विगेरे नाना प्रकारना दृष्टांतो विगेरे विषयोनो आधार छेई मनोहर पाठ रचवामां आवे तो बहु सारुं.

पांचमां स्टेंडर्डथीज संस्कृत व्याकरणनो आरंभ थाय अने इंग्लीश मणवानुं विद्यार्थी मांडीवाळे तो आगळना केळवणी माटे टेक्स्ट बुको वापरवा ते एवां होवा जोइए के, कोई पण जैन सिद्धांतनो आधार लेइ रचेल भाषांतर के विवेचन रुप होय. हाल्लमा आपणा पुज्य मुनि महाराज श्रीअमराविजयजी एवा प्रकारनो एक ग्रंथ रची रहेला छे. अने मारी खात्री छे के, ते ग्रंथ जो विद्यार्थी भणशो तो तेना मनमां जैन धर्मनुं उंडुं बीज उत्तम रीते स्थीर थशे ते ग्रंथ तत्वार्थ मूत्र छे. तेना दश अध्याय छे, ने तेमांना त्रण चार अध्याय तैयार छे. ते एकेक अध्याय एकेक बु-कनुं काम करी शके तेम छे. माटे एवा पुज्य मुनि महाराजाओनी सलाह लेइ पुस्त-कमाळा घडवामां आवशे तो खरेखरुं हित थशे. आपणी बनारसनी पाठशाळा ए आपणुं कॉलेज गणी त्यांना विषय ग्रहण करवानी शक्ति पेहेलांथी तयार करी रा-खवी जोइए, एटले त्यां विषय मणतां त्रणुं सुलभ थशे. जैन युनिव्हर्सिटी स्थापन थवानो शुभ प्रसंग जो आज आपणे मळशे तो खरेखर ते दिवस आपणा जैन इतिहासमां सुवर्णाक्षरे छखावा जेवा थशे. तेवा मावी कॉल्टेजना अंदर आपणे उपयोगी थइ पडे तेवाज विषयो भणाववामां आवशे, तो तेथी खरेखर आपणुं कल्याण छे. आपणे हमेश जोइए छीए के, सरकारी कॉल्टेजोमांथी तैयार थएला विद्यार्थीओ सरकारी नोकरीना पाछळ वळगी शिक्षणनो मूळ हेतू कोरे मुके छे, अने घणा खरा लोको धर्म बाबतमां ने व्यापारी रीतभातमां के व्यापारनी खूबीओथी अजाण होय छे. सरकारी कॉल्टेजमां तभाम विषय इंग्लीश भाषाद्वारा शी-खववामां आवे छे, तेम नहीं करतां आपणी कॉल्टेजमां तेमांना उपयुक्त विषयोज देशी भाषामां शीखववानो प्रयत्न थाय तो तेथी घणा लाम थाय. ते साथे व्यापारने हगतुं पण शिक्षण आपणामां प्रसार पामे तो तेथी बहोळो लाम थवानो संभव होय छे.

ए उपरथी जणारो के, व्यापारी शिक्षण ए पण आपणा टेक्स्ट बुकोनो एक विषय थवो नोइए.

मारा केहेवानो मुख्य मतल्ब ए छे के, शाळोपयोगी पुस्तकमाळामां जैन तत्वविचार, बोधदायक दृष्टांत उपदेशपर कविताओ, स्तवनो, सझाओ ने व्यापारने छगती माहेती एवा प्रकारना विषय होवा जोइए.

में दर्शावेल्ली बाबतोथी भिन्न बाबतो विद्वान् लोकोना लक्षमां आवे ने ते प्र-माणे तेओ योग्य सुधाराओ करे तेमां मारो वांधो नथी. मारुं कहेवुं एटलुंज छे के, फक्त मारा केहेवानो अल्प पण विचार थशे तो हुं मारा परिश्रमनुं सार्थक्य गणीश. आपे मारुं कहेवुं शांतताथी सांभळ्युं ते माटे आप साहेबोनो आभार मानी हुं रज्जा छउं छुं. (ताळीओ) ( ७७ )

# निशाणी ५.

## शा. मनसुख अनोपचंद अमदावादवाळा नुं

भाषण.

महेरवान प्रमुख साहेब, स्वधर्मी भाइओ, बहेनो अने प्रेक्षकवर्ग.

आपसाहेबोनी समक्ष बोलवानो वखत मळ्यो ते माटे आप सर्वेनो उपकार मानुं छुं.

स्त्रीकेळवणीनो विषय खास जुदो शा माटे मूकाव्यो छे ते संबंधे जणाववानुं के, घणा माणसोनुं एम समजवुं छे के, स्त्रीओने रळवा क्यां जवुं छे १ के भणवानी जरुर छे १ पण आ मोटी मूर्ल छे. आदि तीर्थंकर श्रीऋषभ देवे पोतानी बे पुत्री-ओने लिपिओ ने कळाओ शीखवी हती. आपणामां तो ए रीते पूर्वकाळथी स्त्रीओने भणाववानो चाल छे ने ते अद्यापि पर्यंत प्रवर्तमान छे.

स्त्रीओ भणेली होवाथी घणा फायदा छे, तेना थोडा दृष्टांत आप समक्ष कहे-वानी रजा मागुं छुं. भोजराजाना दरवारना घनपाळ पंडितनी पुत्री तिलकमंजरीए पितानो करेलो प्रंथ अन्य धर्मी पंडितोए नाश करवाथी ते पोताना कंठे होवाथी फरीथी उप-स्थित कर्यों छे. तेजपाळ मंत्रीनी स्त्री अनुपमादेवीए मंत्रीश्वरोना घनने कोइ ना लूटे तेवी जगाए मूकवानी अर्थात गिरिराज उपर भव्य देरासरो बांधवानी सलाह आपी आखी पृथ्वीना लोकोने आकर्षक आबु वगेरेना देरा बंधाव्यां. श्रीमान् आर्थ राक्षित सूरिनी माताए पुत्रने हिंसक धर्मथी बचावी जैन शास्त्र भणवानो उपदेश कर्यो. आम कन्या, स्त्री, ने माता तरीके सुशिक्षित स्त्रीओ लाभकारी छे.

बीजी तरफ अशिक्षित स्त्रीओथी केवां नुकसान छे ते विचारीए, घणी मा-ताओ पोतानां बाळकोने हाऊ, भुत, सिपाइ, बावा विगेरेनी बीक बतावी बीकण ने बायलां बनावे छे. पोतानी देराणी जेठाणीथी छोकरांने छानुं छानुं खवरावी गुप्त राखवाने छोकरांने जुटुं बोलतां शीखवे छे. सारुं सारुं भाइने खावानुं खावानुं विगेरे वाणीविल्लासथी अदेखां बनावे छे. एवींज रीते कपट, विश्वासघात गेरे अवगुणो ने असभ्य भाषा बोछतां शीखवे छे. भणेली स्त्रीओ सारासारनो वि-चार करी तेवी वातथी छोकरांने अळगां राखे छे ने सद्गुणी थाय तेवो प्रयत्न करे छे. आ त्रण स्त्रीओ छोकरांनी शरीर संपत्ति सुभारवा करतां खोटां खोटां लाड लडाववाने खावापीवाना नियम उपर काबु नहि राखवाथी नबळा बांधानां बनावे छे ने विवाह मालवानो खोटो लाहवो लेवाने बाळपणमां परणावी देवानी हठ करे छे.

विद्या भण्या शिवाय धर्मज्ञान मळतुं नथी, ने धर्मज्ञान पामी ते प्रमाणे व-त्योशिवाय आत्मानो उद्धार नथी. माटे संसारनां सुख सारुं भणवानी जेटली जरुर छे ते करतां आत्माना सुखसारुं भणवानी अधिक जरुर छे. ते लाभ अभण स्त्रीओने नहि मळवाथी तेमनो मनुष्य भव अल्खे जाय छे.

अभण करतां भणेली स्त्रीओथी लाभ छे पण हाल आपणे शुं जोइए छीए. होंदमां कुल स्त्री जातिमांथी सेंकडे २~३ भणेली छे. ने तेमां जैनमां तो सेंकडे १-७ भणेली छे. ज्यारे पारसीओमां सेंकडे ३४ भणेली छे. आपणो उद्धार करवा माटे स्त्रीकेळवणी उपर खास लक्ष आपवानी जरुर छे, केमके तेमना उपर उछरती ओलादनो आधार छे.

ज्यां कन्याशाळाओ नथी त्यां छोकरां भेगी छोडीओने भणावाय तो पण धार्भिक शिक्षण माटे शिक्षकोनी जरुर छे. स्त्रीकेळवणी वधारवाना कॉन्फरन्सना प्र-यासथी गया वर्षमां घणा गामोमां धर्म शिक्षणना वर्गों ने कन्याशाळाओ नवी नी-कळी छे, पण एक मोटुं दुःख ए छे के, जोइता शिक्षकोज छे नहि. ते माटे घणे ठे-काणेथी मागणीओ आवेली पण तेनो उत्तर नकारमांज आपवानी जरुर पडी छे. जो विधवा स्त्रीओने शिक्षकना काम माटे तैयार करवानी योजना थाय तो तेथी बेवडो फायदो थाय. विधवाओने आजिविकानुं साधन मळे ने आपणने सोंघा शिक्षको मळे. बाळल्म्नथी केळवणीने मोटुं नुकशान छे ते वात आपणे ध्यानपर लेवानी काम फरर के अमदावादमां आ माटे एक श्राविका उद्योगशाळा उघाडवामां आवी

खास जरुर छे. अमदावादमां आ माटे एक आविका उद्योगशाळा उघाडवामां आवी छे. तेनो वखत स्त्रीओने अनुकूळ पडे माटे बपोरना १२ थी ३ सुधी राख्यो छे. त्यां तेमने धार्मिक शिक्षण अपाय छे, ने जोडे शीवण, भरत, गुंथण ने रेशमी कप-डांनी बांधणी बांधवानुं काम शिखवाय छे. जेना नमुना जोडेना प्रदर्शनमां मूकेला छे. एथी धर्म ने अर्थ बन्ने सरे छे. कन्याशाळाओमां स्त्रीशिक्षको होय तो मोटी उ-मरनी दीकरीओ त्यां भणवा जइ शके. पण जैन स्त्री शिक्षकोनी केटली तंगी छे ते जुओ. अमदावादनी फीमेळ ट्रेनिंग कॉल्लेजमां गया वर्ष सुधीमां २४९ बाइओ शिक्षकना धंघा माटे तैयार थइ छे. पण तेमां त्रीश वर्षना अरसामां फक्त एकज जैन बाइ हती. आ वर्षमां २ छे. एटले कुल २ जैन बाइओ शिक्षक तरीके तैयार थइ छे.

खिस्ती मीशनवाळा दर वर्षे पुष्कळ स्त्रीशिक्षको तैयार करवा मोकल्रे छे. ते द्वारा तेओ जुदी जुदी जगाओए मीशन कन्याशाळाओ काढी पोताना धर्मनो उप-देश करे छे. आपणे पोतानां छोकरांने धर्म शिक्षण आपवा एवो प्रयास करवानी खास जरुर छे. हरकोइना सारा दाखलानी नकल करवाथी लाभ छे.

छेवट एज कहेवानुं के, स्त्रीओने भणाववार्थाज आपणो उद्धार छे. माटे गामे गाम कन्याशाळाओ करवानी जरुर छे ने ते माटे जोइता शिक्षको पण तैयार कर-वानी तेटलीन जरुर छे. ( ताळीओ.)



#### 

# निशाणी ६.

# वकील मुलचंद नथुभाई भावनगरनानुं भाषण.

मानवंता प्रमुख साहेब, स्वधर्मी बंधुओ अने सुशील बेहेनो.

व्यवहारिक अने धार्मिक केळवणीना विषयनी दरखास्तना संबंधमां मारुं अनुमोदन धार्मिक शाळाओ स्थापवाने अंगे छे.

दुर्गतिमां पडता आत्माने जे धरी राखे ते धर्म, एवो धर्म शहनो अर्थ छे.

केटलाएक निरंतर एवो आक्षेप करे छे के, जैनो नास्तिक छे, परंतु जेओ एवुं बोले छे, तेओए जाणवुं जोइए के, नास्तिक तो तेज केहेवाय के, जे आत्मा के परमात्माने मानता न होय. जैनो कदापि नास्तिक होइ शकेज नहीं, कारण के तेओ आत्मा तथा परमात्माने माने छे एटलुंज नहीं; परंतु पुनर्जन्मने पण माने छे. ना-स्तिको मात्र आ भवनी विभूतिनेज चाहनारा छे अने जेओ आस्तिक होय छे ते-ओतो आ भवनी तेमज परभवनी पण विभूतिने चाहनारा छे; आखरे आत्मानी मुक्ति केवी रीते थाय तेवो प्रयास करनारा छे.

आप साहेबोना ध्यानमां हरो के, वर्त्तमान काळमां धर्म संबंधी केळवणी मेळववा माटे पद्धतिसर साधनो बहुज जुज छे. आपणे जे इंग्रेजी केळवणी हालमां छइए छीए तेमां तो आपणी बाल्यावस्थामांथी, मानवंता मि. ढढ्ढा साहेबनी आ दर-खास्तमां तेमना सूचववा प्रमाणे " God made the world परमेश्वरे आ दुनिया बनावी " एवा बोधवाळा संस्कार मगजमां कोतराइ जाय छे. जेनुं परिणाम ए आवे छे के, आपणे अभ्यास करनाराओ ते संबंधी खरा ज्ञानथी दूर रहीए छीए अने कचित कोइने मोटी उमरे ते संबंधी जैन धर्मनुं सारु ज्ञान थाय छे, तो तेनाज मात्र एवा संस्कारो दूर थाय छे.

" A man has soul, a cow has no soul माणसमां आहमा छे गायमां आत्मा नथी. " हवे तमे विचारी जोशो के, बचपणमां ज्यारे आवा प्रकारनी के-ळवणी छइए त्यारे आपणा ज्ञान तंतुओ उपरना धार्मिक संस्कार तथा दयामणी छागणी केटलां बुठां थई जाय छे, ते संबंधी ख्याल करवानो छे. तेथी आपणी मुख्य फरज तो ए छे के, आपणुं आ भवनुंज मात्र नहीं परंतु परभवनुं पण जेथी श्रेथ थाय तेवी केळवणी लेवानो प्रयास करवो जोइए.

मीति शास्त्रमां कह्युं छे के, पेहेली उमरमां ते करवुं जोइए के जेथी वृद्धा-वस्थामां सुखमां रही शकाय अने ज्यांसुधी जीवीए त्यांसुधी एवुं करवुं जोइए के, जेथी परलोकमां सुख प्राप्त थाय.

एते। सारी पेठे सर्वना जाणवामां छे के आ जींदगीनुं सुख संपादन करवां सारुं आपणे व्यवहारिक केळवणी पाछळ जेवुं ल्क्ष आपीए छीए तेवुं तो शुं बल्के तेनुं शतांश ल्क्ष पण धार्मिक केळवणी लेवा पाछळ आपता नथी. हालना जेवी व्य-बहारिक केळवणी लेवा माटे निशाळो छे तेवी धार्मिक केळवणी लेवा माटे बिलकुल शाळाओ नथी, एम कहुं तो ते बिलकुल खोटुं नथी. तेथी कॉन्फरन्सनुं मुख्य कर्तव्य तो ए छे के, तेणे धार्मिक केळवणी पद्धतिसर बाल्यावस्थामांथी लइ शकाय एवी शाळाओ ठामठाम स्थापवानी योजना करवी जोइए.

वळी बाल्यावस्थामांथी धार्भिक केळवणी नहीं हेनारने मोटी उमरे तैवी के-ळवणी हेवानी इच्छा थतां केटही मुश्केही पडे छे. ते वात अत्रे बिराजेहामांथी कंइकना अनुभवमां आवी हरो; तेथी खरा जैनो जेओ मात्र आ जींदगीना सुखना करतां परभवनी अने खरेखर तो मुक्तिना सुखनी वांछा राखनारा होवा जोइए ते-ओए तो पोताना बच्चांओने तेओनी कुमळी वयमांथीज उंचा प्रकारनुं धार्भिक शि-क्षण अपाववानी खास काळजी राखवी जोइए.

साचु सुख कांइ वस्तुना उपभोगमां नथी परंतु ते वस्तु संबंधी साचा ज्ञानमां छे. साचा ज्ञानथीज गुण संपादन थाय छे. ज्यारे गुण संपादन थाय छे त्यारेज साचुं सुख प्राप्त थाय छे. गुणने अभावे साचा सुखनी प्राप्तिन नथी. तेवा गुणोनो खजानों कहो तो ते बीजो नथी पण मात्र धर्मज छे. जेथी निश्चय एज थाय छे के, मनुष्यने आ भवमां के परभवमां निरंतर सुख आपनार जो कोइ होय तो ते मात्र धर्मज छे.

99

ते धर्मने चार विभागमां हुं वेहेंचण करवा मांगुं छुं.

(१) धार्मिक श्रद्धा, (२) धार्मिक झान, (३) धार्मिक वर्तेणंक, (४) धार्मिक वीर्य.

प्रथम तो घर्मनी श्रद्धा थवी जोइए, अने ते पण शुद्ध घर्मनी श्रद्धा थवी जो-इए. ते उत्तम धर्म शिक्षकना सत्संगविना क्वचितज थाय छे. ज्यां सुधी सम्यग् श्रद्धा थती नथी त्यां सुधी धर्मनु ज्ञान गमे तेटलुं प्राप्त थाय तोपण ते अज्ञान याने कु-त्सिज ज्ञान सरखुंज छे. शास्त्रमां पण कह्यु छे के, ज्यारे आत्माने सम्यग् दर्शन प्राप्त थाय छे त्यारेज तेनुं ज्ञान सम्यग् ज्ञान केहेवाय छे. तेथी सम्यग् दर्शन पाने धा-IF श्रद्धानी प्राप्तिने माटे निरंतर धर्मगुरुना सत्संगमां वा उत्तम धर्म शिक्षकना सहवासमां रेहेवानी जरुर छे.

धार्मिक ज्ञान विना आत्मा के परमात्मानी कांइ पण खबर पडती नथी. अज्ञ माटे तो मारुं आ बोलवुंज नथी, परंतु तमो मध्येना जेओ, मात्र अंग्रेजी केळवणी लीधेला सुज्ञ छो, तेओ पण विचार कररो तो तेओना स्मरणमां आवरो के अंग्रेजी केळवणीनो अभ्यास करताना दरमियान आत्मा के परमात्मा वस्तुतः शुं छे ते सं-बंधी चिंतवन करवानो तेओए प्रसंग पण लीधेलो नहीं होय. मनुष्यना मवमां जे अवश्य कर्तव्य छे ते नानी उमरमां जे वखते उत्तम संस्कारो थवानो संभव छे, ते वखते अंधारामां रहे छे, ते खरेखर शोचनीय छे. एवुं धार्भिक ज्ञान पण सद्गुरुना सत्संगमां रेहेवाथी वा शालामां धर्मशिक्षक पासेथी वा तेवा प्रंथोद्वारा प्राप्त थाय छे.

धार्मिक श्रद्धा अने धार्मिक ज्ञान विना उत्तम सद्वर्तन याने धार्मिक वर्तेणुक होवानो छेश मात्र संभव नथी. धर्मनां ज्ञान अने श्रद्धाथी दूर रहेळा मनुष्यो कदापि सद्वर्तनथी चाळता होय तोपण ते मात्र सांसारिक सुखाभिछाधा माटेज चाले छे, एम समजाय छे. आत्मा, परमात्मा थाय एवी धार्मिक वर्त्तणुक, धार्मिक ज्ञानने सद्भावेज थाय छे. क्षमा, कोमलता, सरलता, संतोष इत्यादि गुणोवाळुं जे मुनिनुं असाधारण सद्वर्त्तन छे तेज आत्माने परमात्मा बनावे छे.

धार्मिक वीर्य तो आ काळमां छुप्तप्राय थइ गयुं छे एम कहुं तो ते विशेष

पडतुं नथी. श्रद्धा गमे तेवी सारी होय, ज्ञान गमे तेटलुं निर्मळ होय अने वर्त्तन पण उंचामां उंचा प्रकारनुं होय, परंतु ते सर्वे वीर्यने अभावे कार्य साधवामां समर्थ थइ शकतां नथी. हाल्लमांज आप जोशो तो धर्मनी श्रद्धावाळा अनेक जैनो छे. धर्मनुं ज्ञान संपादन करेला अनेक मुनिओ तथा श्रावको छे अने उत्तम चारित्र पाळनारा तथा सद्वर्तनवाळा बहुए साधुओ तथा श्रावको छे, परंतु धार्मिक वीर्यने अ-भावे, मीठा शद्धमां कहुं तो मंदताए वर्तमानमां चालता जैनमत सामिक्षाना केसमां आपणा श्वेतांबरी भाइओए केटलुं तथा केवुं शौर्य बताव्युं छे, तेनो स्वतः विचार करी लेशो.

#### ( < % )

# নিহাাणी ৩.

## भावनगरना ज्ञा. कुंवरजी आणंदजीनुं भाषण.

#### CA SALA -

मेहेरबान प्रेसीडेन्ट साहेब, जैन वर्गना प्रतिनिधिओ अने मायाछ बहेनो ! केळवणीना संबंधमां मारी अगाउना वक्ताओ घणुं बोली गया छे, तेथी जो हुं तेने ते बोलुं तो आपने पिष्टपेषण जैवुं छ गरो. मारो बोलवानो विषय खास धार्मिक केळवणीनो छे. हुं एम मानुं हुं के, आ कॉन्फरन्सनुं, आपणा जैन समुदायनुं अने आपणी दरेकनी जींदगीन मध्यबिंद धार्मिक केळवणीज छे. धार्मिक केळवणी शिवायनुं बीजुं बधुं निरर्थक छे. व्यवहारिक केळवणी गमे तेटली ल्यो, मोटी मोटी डीग्रीओ मेळवो, मोटा मोटा होदा मेळवो, मोटा वेपारी बनो, पांच सात मिलो कादो, ल्लाखो रुपिआना रमनारा थाओ, देशमां नाम काढो; पण जो तमे धार्मिक केळवणी छीधी नथी अने आफ्णा सर्वेत्किष्ट जैन धर्मनं स्वरुप समजी तेनापर अंतःकरणथी प्रीति लगावी नथी तो ते बधुं तमारुं नकामुं छै; एटलुंज नहीं पण तमारी ते जीदंगी पण नकामी छे फोगट भारभूत छे अने दुर्गतिमां लई जनारी छे. आपणे अहीं मळ्या छीए ते धार्मिक केळवणीन ने धार्मिक लागणीन परिणाम छे. नहीं के द्रव्यवान थयानुं अथवा सांसारिक केळवणीमां आगळ वध्यानुं आ परिणाम छे. हजू पण आ कॉ-न्फरन्सने तेओज आगळ वधारशे के जेना हृदयमां धार्मिक लागणी हशे. धर्म उपर प्रीति हरो, बीजी बाबतो करतां धर्मने वहालो गणता हरो. आवी लागणी, आवी प्रीति के आवी वहालप, धार्मिक केळवणीज उत्पन्न करी शकशे, माटे प्यारा बं-धुओे ! तमे तमारां बाळकोने बाल्यावस्थाथी धार्मिक केळवणी आपो, धर्मज्ञ करो, धार्भिक वृत्तिवाळां करो, जेथी आगळ उपर प्रमाणिक पण तेओज थुरो, पापनो भय तैमनेेज खागरो, दुराचारथी तेओज अळगा रहेरो, भक्षामक्ष ने पेयापेयनो विचार तेओनेज रहेरी. आपणे तेवा धार्मिक वृत्तिवाळाओनुंज काम छे. एवाओनुं काम नथी के जेओ अहीं तो शोभाना पुतळां थइने अथना डाह्याडमरा थइने बेसे, अने बहार जइने भक्षाभक्षनों के पेयापेयनो विचार पण न करे. हालमां इंग्रेजी केळ-वगोने परिणामे मसामझ ने पेयापेयनो विचार तद्दन नाश पाम्यो छे. एवा चोळा-

चोळ ( विचारणा ) नकामी ( निरर्थक ) गणाई छे, गमे ते खावुं, पीवुं अने जैन-धर्मी कहेवावुं एम चाल्लवा लाग्युं छे, पण जैनधर्मना कायदा सख्त छे, एमां तेवुं चाली शके तेम नथी. ए कायदा हाल तो जो के तेमने सख्त लागे तेवा छे खरा, पण ते तेमने दुर्गतिमां जता अटकावनारा छे, आगामी दुःखने रोकनारा छे, अने जगत्मां तमारी वास्तविक कीर्तिने फेलावनारा छे.

आ कॉन्फरन्स तरफ सहज पण लागणी धरावनारना हृदयमां तेवा दीपकनो सद्भाव समजवो, अने जेओ आ कॉन्फरन्स तरफ अभाव अप्रीति बतावनारा छे तेओना दिल्लमां धर्म बुद्धिनोज अभाव समजवो; कारण के, आ कोइ खानगी मंडळ नथी, स्वार्थी मंडळ नथी, पक्षपाती मंडळ नथी; मात्र जैनधर्मनी ध्वनी फरकावनार, जैनधर्मनी उन्नत स्थितिनुं सर्वने भान करावनार, जैनशासननो उद्योत करनार मंडळ मेळववा पाछळ करेलो प्रयास अने खर्चेला पैसा पूरेपूरा सार्थकज छे.

आवी सर्वोत्तम धार्मिक केळवणी बाल्य वयथी मळेली होय तो तेनुं परिणाम आत्मश्रेयमां आवे छे, ते हुं एक नाना सरखा दृष्टांतथी सिद्ध करी आपीश.

पूर्वे ऋतुध्वज राजाने मदालसा नामे राणी हती. तेने अनुकमे सात पुत्रो थया हता. ते दरेक पुत्र ज्यारे बाल्यावस्थामां पारणामां सुता सुता रोता हता त्यारे मदालसा तेने हिंचकावती हिंचकावती कहेती हती के-मृत्योर्बिभेषी किं बाल ! ( हे बाळक ! र्यु तुं मृत्युथी ब्हीने रुवे छे के हुं जन्म्यो माटे हवे मारे मरवुं पडरो ! ). पण जो ते कारणथी तुं रोतो होय तो तेमां तारी मूल थाय छे. केमके स च भीतं न मुंचति (ते ब्हीए तेने मूक्ती देते। नथी) अर्थात् मृत्युथी बीए तेने पण मरवुं तो पडेज छे. परंतु एक रस्तो छे; ते ए छे के अजातं नैव ग्रहणाति ( जे जन्मे नहि तेने मृत्युं ग्रहण करी शकतुं नथी ) माटे हे पुत्र ! कुरुयत्नं अजन्मनि॥ ( जन्म न छेवो पडे तेवो प्रयत्न कर. ) अर्थात् एवुं धर्मसाधन कर के जेथी फरीने जन्मवुंज पडे नहि, अर्थात् आ भवमांज मोक्ष प्राप्त थइ जाय. एवो प्रयत्न एज छे के, ज्ञानदर्शन चरित्रनुं सम्यक प्रकारे आराधन करवुं, तेथीज प्राणी मोक्ष मेळवी शके छे. बाळकने पण संज्ञा पूरेपूरी होय छे. पोतानी माताना वारंवार बोछेछा आवां वचनो उपर इहापो करतां तेना दरेक बाळकने पोतानी बाल्यावस्थामां पारणा-मांज जातिस्मरणज्ञान थयुं, वैराग्य उत्पन्न थयो, अने उमर छायक थये दरेक चा-रित्र छइ छडने सद्गतीना भाजन थया.

आ नाना सरखा दृष्टांत उपरथी आपणे बहु धडो लेवानो छे. आवी मा-ताओ पण क्यां छे ! क्यांथी होय ! एनी कांइ जुदी खाणो नथी. ए बघुं स्त्री के-ळवणीनुं परिणाम छे. स्त्रीवर्गने विशेष आवश्यकता धार्भिक केळवणीज छे; एवी के-ळवणी लीधेली माताओ पोताना बाळकने आवो उपदेश आपी शके.

वखत बहु थोडो मळेळो होवाथी हुं वधारे कहेवा अशक्त छुं, पण टुंकामां एटलुं जणावुं छुं के, तमे तमारुं मध्य बिंदु जाळवजो. आ कॉन्फरन्स तमने मोटा व्यापारी थवा, मोटा अमल्रदार थवा के मोटा धनाढ्य थवा इच्छती नथी, पण त-मने मोटा धार्भिक थवा इच्छे छे. बीजा तो बधा धर्मरुप कल्पवृक्षना डाळां पांदडां छे, धर्मी पुरुषने ए तो बधुं स्वयमेव इच्छाविना प्राप्त थाय छे. माटे मारी छेवटनी प्रार्थना छे के, एकांत अद्वितीय सारमूत धार्भिक केळवणी जाणीने बाइओ ने भाइओ तमे धार्मिक केळवणी ल्यो, अने तमारां बाळकोने धर्मज्ञ करो-धार्मिक केळवणी आपो, के जेथी तमारुं अहिक ने आमुष्मिक बंने प्रकारनुं हित थाय. तथास्तु !

#### ( <७ )

# निशाणी ८.

## भरुचना शा. अनोपचंद मेळापचंदनुं भाषण.

मानवंता प्रमुख साहेब, प्रिय जैनबंधुओ अने बहेनो,

केळवर्णीना विषय उपर मारी अगाउना विद्वान वक्ताओ पासेथी आपणे घणुं सांभळ्युं छे अटले स्वभाविक रीते नवीन कहेवानुं घणुंज थोडुं छे. केळवणीनी दरखास्तने अनुमोदन आपवाने मने फक्त दश मीनीट आपवामां आवी छे तेथी पण हुं मारी जातने भाग्यशाळी मानुं छुं अने तेटला वखतमां आप महाशयोने जे कंइ हुं कहुं ते महेरबानी करी शांतताथी श्रवण करशो.

गृहस्थो! विचार करो के, आजना मांगळिक अवसरे आ महान मंडपमां आखा हिंहुस्ताननो समस्त जैन संघ भेगो थयो छे, विद्वान वक्ताओना भाषणो सांभळी तेने अनुमोदन आपी जैन कोमनी अने जैन धर्मनी उन्नति करवाने आपणे तत्पर थइ रह्या छीए. जे कॉन्फरन्से जैन कोमने झळकाटमां आणी छे, जेना कार्यों विषे छांबो वखत थयां न्युसपेपरद्वारे विवेचन चालु छे ए बधानुं उपादान कारण ज्ञं ?

े एनं उपादान कारण एने जन्म आपनार आपणी सनमुख बीराजेळा कॉन्फरन्सना एक जनरल सेक्रेटरी जैन कोमना हीरा, कॉन्फरन्स पिता कहीए तोपण चाले एवा एक विद्वान नररत्न मि. ढढूा छे. एमनी उंची केळवणीना प्रतापेज आपणे आ महान कार्य आरंभवाने अने बीजा धनवान अने विद्वानोनी मदद्यी धीते के दीनप्र तिदीन फतेहमंदीयी पार पाडवाने शक्तिवान थया छीए. आ केळवणीथी थता लाभनो एक प्रत्यक्ष दाखलो छे.

महाशयो ! दूरना देशो तरफ अने आपणी भाइवंध कोमो तरफ नजर करीशुं तो आपणने मालम पडशे के, देशोच्नति, धर्मोच्नति, कोमना उच्चति अने प्रत्येक कु टुंबना मुखीपणानो आधार केळवणी उपरज छे. ब्रिटीश शहेनशाहत आपणा उपर जे सर्वोपरिसत्ता भोगवे छे ते तेमनी केळवणीनाज प्रतापे अमेरिका देश धंधा हुचरनी खीलवणीथी धनवंत थतो जाय छे. पच्चीश वर्ष उपरनुं नानकडुं जापान केळवणीनाज बळे वधी जइ महान् रशीअन राजनी सामे टक्कर झीली रह्युं छे. पारसी कोम पण केळवणीने लीधेज आजे आगळ वधेली छे. देशसेवा बजावनार मानवंता दादाभाइ नवरोजजी अने फीरोजशा महेता जेवा नर रत्नो पेदा कर्यी छे. जे कुटुंबना माणसो केळवाएलां होय छे तेओ पोतानो संसार केवो सुखमां गुजारे छे तेना जोइए तेटला दाखलाओ हरनीश आपणी नजरे पडे छे.

भाइओ! केळवणीनो ज्ञानीओए **तृतीय लोचनं** अर्थात् त्रीजी आंख कहेडी छे. आ बे बाह्यचक्षुवडे तो आपणे फक्त चीजनुं रुपज जोइ शकीए छीए पण के-ळवणीरुपी अंतर चक्षुवडे तो तेनुं खरेखरुं स्वरुप जाणी शकीए छीए.

केळवणी बे प्रकारनी कहेवामां आवी छे. व्यवहारिक अने धार्मिक, व्यवहारिक केळवणी प्राप्त करवाथी आ संसारना सुखना साधनो आपणे सहेलाइथी मेळवी श-कीए छीए. अर्थ कहेतां पैसो अने काम कहेतां मननी इच्छाओ ए बे पुरुषार्थ के-टलाक दरज्ने व्यवहारिक केळवणीथी प्राप्त करी शकीए छीए.

धर्मनी केळवणी उपर छेछा चार पांच वर्ष थयां ध्यान अपाय छे. पण हजुं नोइए तेवुं नहीं. संसारिक सुख व्यवहारिक केळवणीर्था मळे छे, पण आत्मिक सुख तो धर्मनी पीछाणवगर मळवुं बहु कठण छे. धर्मथीज आपणा आत्मानुं खरू स्वरुप पीछाणवाने आपणे शक्तिवान् थइए छीए, अने निती अने धर्मनो उत्तम मार्ग पकडी आ भवश्रमणमांथी केटलेक अंशे मुक्त थइए छीए. माटे बाळकोने व्यवहा-रिक केळवणीनी साथे धर्मनी केळवणी आपवानी खास आवश्यकता छे. बंधुओ ! धर्मनी केळवणीनो समावेश फक्त पोपटनी माफक बे या पांच प्रतिक्रमण जीव-विचार, नवतत्व आदी सूत्रो मोढे बोलतां शीखवामां थते। नथी. जैन ते कोण, तीर्थकर कोने कहीए, आत्मा शुं छे, कर्म शुं छे, आवक कोने कहीए, आदी बा-बतोनुं ज्ञान दरेक बाळकने आपवुं अने तेथी पोताना धर्मनुं स्वरुप यथाशक्ति सम-जाय ए धर्म केळवणीनो हेतु होवो जोइए. एवा केटलाक दाखलाओ जोवामां आवे छे के, पांच प्रतिक्रमण मोढे आवडतां होय पण प्रतिक्रमण शामाटे करवुं तेने स्वाल पण न होय. माटे हाल्मां अपाती धर्म केळवणीनी पद्धत्तिमां विद्वानोनी संमक्तिथी फेरफार करवानी आवश्यकता छे. धर्मनुं संगीन ज्ञान आपवाने शिक्षकोनी खोट छे ते खोट पूरी पाडवाने मुनीमहाराज धर्मविजयजी अने वेणीचंदभाइ आदि आवकोए महा प्रयासथी बनारसमां एक मोटी जैन पाठशाळा स्थापी छे. ए पाउ-शाळामां हाल्लमां चाळीस जैन विद्यार्थीओ धर्मनो अभ्यास करे छे, ज्यारे ए वि-द्यार्थीओ पोतानो अभ्यास पूर्ण करीने बहार निकळशे त्यारे तेओ ४००० वि-द्यार्थीओने धर्मनुं खरुं ज्ञान आपी शकशे. हाल्लना जमानामां जैनोनी मोटामां मोटी पाठशाळा आज छे अने एने तन, मन अने धनथी मदद आपवी ए दरेक जैन बंधुनुं कर्तव्य छे. जे विद्यार्थीओने मेट्रीक सुधी अभ्यास कर्या पछी उंची केळवणी पात करवाना साधनो न होय, तेमने बनारस पाठशाळामां रहीने धर्मनो अभ्यास करवाथी अनेक फायदाओ छे एम मारुं मानवुं छे.

गृहस्थो physical education एटले तननी केळवणी विशे मारी पहे लंना वक्ताओए कंइ कह्युं नथी. तन मननी साथे घणो घाडो संबंध धरावे छे. जो तन, तंदुरस्त होय तोज मन पोतानुं कार्य घणी सहेलाइथी बजावी राके छे. माटे आपणे आपणा बच्चाओनी तंदुरस्ती जळवाय तेने माटे दरेक रीतनी संभाळ राखवी जोइए. शरुआतथी खोराक अने उंघनो नियम तेमने शीखववो अने कसरत कर-वानी अथवा ख़ुछी हवामां फरवा जवानी टेव पाडवी.

स्तीशिक्षणनी पण घणीज जरूर छे. आपणां केटलांक कार्योमां स्त्रीओ मददगार छे अने जो तेओ केळवायली हशे तोज आपणे आपणां धारेलां कार्यो वगर विलंबे पार पाडी शकीशुं. देशनो उद्धार केळवायेली माता उपरज छे एक विद्वान कहे छे के:----

> '' कहे नेपोळीअन देशने, करवा आबादान; सरस रीत तो एज छे, दो माताने ज्ञान "

स्त्रीशिक्षण एटले तेमने बी. ए. अने एम. ए बनाववी एम हुं कहेवा मां-गते। नथी. पण तेम्ब सरळताथी वांचतां लखतां आवडे, धर्मनुं ज्ञान कंइक थाय, गृहकार्य सारी रीते बजावी शके. एवुं शिक्षण आपी एक लायक स्त्री बनाववी ए मारो उद्देश छे. ते उद्देश पार पाडवाने ज्यां कन्याशाळाओ न होय त्यां तेओने माटे कोइ पण प्रकारनी गोठवण करवी.

मने बोल्लवाने १० मिनीट आपवामां आवी हती पण प्रमुख साहेवे बीजी ५ मिनीट वधु आपी छे तेने माटे तेमनो आभार मानी आप साहेवो आगळ वे बोल वधु कहेवा चाहुं छुं.

93

भाइओ ! आपणा महान कार्यनो पायो केळवणी उपरज रचवानो छे. एना बीजने धनरुपी जळथी सींची उछेरीशुं तोज एना वृक्षना अमृत फळ चाखवाने आ-पणे भाग्यशाली थइशुं. एक वृक्षथी बीजा हजारो वृक्ष उत्पन्न थशे अने तेनाज प्रतापे आपणे आपणो उद्धार करी शकीशुं.

बंधुओ ! अत्रे चर्चावाना विषयोमां केळवणी घणोज अगत्यनो अने महत्वता-वाळो विषय छे. केळवणी शिवाय आपणे आपणा जैन मंदीरो तेमां विराजता ति-धँकर भगवानो, जैन धर्मनां पुस्तको अने तेमां समायेल्लां भगवानना अम्रतरुपी वचनो, जीवदया ए जैन धर्मनो मुख्य सिद्धांत छे तेनुं खरुं स्वरुप, हानीकारक रीवाजोथी थता गेरलामो अने देव द्रव्य उचापत करवाथी बंधाता चिकत कर्में आदि बाबतोनुं खरुं स्वरुप समजवाने अने तेनी अवनति सुधारवाने आपणे केम शक्तिवान थइड्रां ? ज्यारे आपणा बाळको केळवणी मेळववाने पूरेपूरा भाग्यवान थरो त्यारेज आपोआप तेमनां अंतःकरणमां जीर्णोद्धार अने पुस्तकोद्धार करवाने तथा हानिकारक रीवाजो दूर करवाने अंकूरो फुटरो, अने जैन कोमनी अने जैन धर्मनी खरेखरी उन्नति तेओ करी बतावरो.

केळवणीनी बाबतमां पहेलुं कार्य बोर्डिंग हाउसीसं उघाडवानुं एटले विद्या-धींओने रहेवानी, जमवानी अने अभ्यासनी गोठवण करी आपवानुं छे. हालमां स्कुलो अने कॉलेजो जोइए तेटली छे माटे खास जैन स्कुलो अने कॉलेजो स्थापन करवानी जरुर जणाती नथी. धर्मनी केळवणीने माटे खास बोर्डिंग स्कुलोमां गो-ठवण राखवी अने ज्यां बोर्डिंग हाउसीस उघाडवानुं न बनी शके त्यां स्कुलोमां स्थानिक सरकार मारफते अथवा बीजा कोइ प्रकारे दररोज ओछामां ओछो अडघो कलाक जैन बालकोने धार्मिक शिक्षण मळे एवी गोठवण करी आपवी. ज्यां आ पण न बनी शके त्यां जैन शाळाओ उघाडवी. जो आपणुं केळवणी फंड घणुंज मोटुं होय अने बोर्डिंग हाउसीसना खरच काढतां बाकी शिलीक रहे तो विद्या-धींओने स्कॉलरशीपो आपवी अने त्यारबाद जैन स्कुलो अने कॉल्रेज स्थापवी.

मुंबाई जेवा मोटा शहेरमां जैन विद्यार्थीओने बोर्डिंग हाउसनी खास जरुर के एवुं चितनी शा. मोहनलाल हेमचंदे अतिशय श्रम लइ एक वर्ष थया लालबा-गमां बोर्डींग हाउस खोल्युं छे. एनो २९ विद्यार्थीओ लाभ ले छे, एने जोइए तेटली नाणांनी मदद नथी माटे आप सर्वे साहेबोने यथाशक्ति मदद आपवाने वि-नंती करुं छुं.

गृहस्थो ! ज्यारे आटला आटला कारणोथी जैनोमां केळवणीनो फेलावो करवाने सौथी पहेली अने अगत्यनी आवश्यकता जणाय छे त्यारे आपणे शा माटे विलंब करवो जोइए ? न्यातवरा करवामां अने मोटा मोटा वरघोडा काढवामां आपणे हजारो रुपीआ खर्चीए छीए पण तेथी आपणा जैन भाइओनुं लेश मात्र पण श्रेय आपणे करी श-कता नथी. संघो जमाडवा करतां खरी स्वामिभक्ति जो आपणे चाहता होइए तो विद्यादान जेवुं बीजुं कोइ दान नथी. विद्या जेवो अमुल्य अने अखूट दोल्तनो वारसो जैन बाळकोने आपवाने आपणी पासे बीजो कोइ नथी. माटे भाइओ ! जैनोमां केळ-वणीनो जोइए तेटलो केलावो करवाने तन, मन अने घनथी बने तेटली मदद आपी ज्ञाननां द्वार आपणा जैन बाळको अने बाळकीओने माटे खुछां करवां जोइए.

मने एक वधु दरखास्त मुकवाने सोंपवामां आव्युं छे ते ए छे जे, आपणे सर्वे भाइओए एकदीलीथी श्रीबनारस पाठशाळाना स्थापकने घन्यवाद आपवा.

आटलुं कही केळवणीनी दरखास्तने पूरेपूरुं अनुमोदन आपी, आप साहेबोए सांमळवाने जे तसदी लीभी छे तेने माटे क्षमा चाही रजा लउं छुं.

# निशाणी ९.

## कॉन्फरन्सना जनरल सेक्रेटरी शेठ लालभाई दलपतभाइनुं भाषण.

------

मे. प्रमुखसाहेब, गृहस्थे। अने बहेनो !

मने जे विषय सोंपवामां आव्यो छे ते अति जरुरनो छे अने ते जो आपणे सारी रीते पार उतारी शकीए तो जैन समुदायने आशिर्वाद रुप थइ पडे तेवो छे. ते ए छे के, जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्सनुं बंभारण शी रीते मजबूत करवुं ?

हालमां आपणे चार सैकेटरीओ नीमी काम चलावीए छीए तेमां घणाज सुधारा वधारा करवानी जरुर छे. पण ज्यां सुधी आ खातुं बाल्यावस्थामां छे त्यां सुधी तेम चलाववा शिवाय बीजो उपाय नथी; पण तेमां गइ सालमां अमने नडेली मुइकेली अमे सुधारवा मागीए छीए. अमे चारे जूदे जूदे स्थळे तेमां बे सेकेटरीओ घणे दूर होवाथी अमाराथी अमने सोंपेलां खाताने जोइए तेवो इनसाफ आपी शकायो नहोतो. तेथी हवे अमे एवा विचार उपर आव्या छीए के, जे काम करवानां छे ते बधां जे ते विभागना सेकेटरीए पोताना विभागमां करवानी तजवीज करवी. ते माटे आ सेकेटरीओ प्रोविन्सीयल सेकेटरीओ नीमी तेमज ते गृहस्थो बनती कोशीसे क-मीटीओ स्थापी कॉन्फरन्सना हेतु पार पाडवानी तजवीज करशे एवी धारणा राखी छे. काम नवुं अने घणुंज छे तेथी एकदम बधुं थइ शकशे नहि. पण दरेक जैन भाइ पोताथी बनतुं करे तो मुश्केल नथीज. आ कॉन्फरन्सने मारुं छे एम मानी दरेक जण वर्ते अने सुक्कत भंडारनी योजना अमल्मां आवे तो बधुं बनवा योग्य छे.

बीजी बाबत कॉन्फरन्स तरफथी एक मासिक बहार पाडवाने लगती छे. तेनुं कद बे फॉर्मनुं थरो. तेनी अंदर कॉन्फरन्सना हेतुओ अने लगती हकीकतो आ-वरो; आथी उमेद छे के, आपणा जैन भाइओने कंइक वखतोवखत अवलोकन करवानुं मळरो. तेनी फी वरस एकनो टपाल साथे रु. १ राखवामां आवरो. अने मने जणावतां आनंद थाय छे के, ते बहार पाडवानुं तंत्री तरीके काम करवानुं आपणा मि. गुलाबचंद्जी ढढ्ढाए कबूल कर्यु छे. (ताळीओ.)

हवे आपणे दर वर्षे आ रीते एकठा थवुं के नहीं ए सवाल थाय छे. ए संबंधमां कहेवानुं घणुंज छे. बीजा अने त्रीजा वर्षे तो आपणे आवे। आडंबर करी कॉन्फरन्स भेगु कर्युं. पण दर वर्षे आम बनवुं नथी. एमां घणो खर्च अने ते करतां बहुज विकट महेतन रही छे. जो आ मुजब दर वर्षे कर्या गया तो लांबो वखत नभावी शकवाना नथी. आपणामां साधारण रीवाज छे के, जे परोणा बे चार दिवसे जवाना होय तेमने मीठां मीठां भोजन पीरसवां. पण जे घरनां माणस होय अने जाधु रहेनारा होय ते तो सादुं जमणज ले छे. कॉन्फरन्सने पण आपणे घरना माणस जेवुं बनाववानी जरुर छे. नहितो जाथु नभरो नहि. आपणा गामोमां घॉळ अथवा जथो के चोखलुं भेगुं थाय छे तेमां आवो मोटो खर्च अने असाधारण महेनत लागतां नथी छतां तेओ पोतानुं काम मक्कमपणे लेइ शके छे. आपणे तेमनी रीत शीखवानी जरुर छे. अने कॉन्फरन्सना स्थायीपणाने वधु मदद मळे ते सारुं ह-वेथी कॉन्फरन्स भरती वखते दरेक डेलीगेट पासेथी बे रुपीया फी लेवानं नकी क-रवुं दुरस्त धारुं छुं. आपणे ठराव कर्या वगर कोइ गामवाळा ते छेवानी शरुवात कररो नहि; माटे तेवो ठराव जरुर प्रसार करवो जोइए. बे रुपीआ कदाच कोइ वधारे पडता गणे पण जे कार्य करवा आपणे उत्मुक छीए तेना प्रमाणमां ते कंडज नथी. ए रीते पैसानी मदद मळरो पण जो संप नहि होय तो आपणे कॉन्फरन्सने नभ वी शकवाना नथी. कारण पैसानी मदद करतां पण वधु जरुर संपनी छे. ते खातर आपणे दरेके झीणी झीणी बाबतोना मतभेद दूर करी एकन मुद्दा उपर आववं जोइए. जेमके आपणा परमपवित्र तीथों विगेरेनुं संरक्षण केम थाय अने आपणा समुदायनी स्थिति शी रीते सुधाराय तेनो विचारज मनमां छावी बनतुं करवुं. जो आपणने एम लागे के, आपणो अमुक भाइ अमुक चूक करे छे तो तेने ते बताववी ए आपणी फरज छे. तेम करवाशी ते सुधारे तो घणुं सारुं अने न सुधारे तो दरगजर करवी; पण ते बाबत विरोध करी तेनाथी जुदा पडवुं ते आपणने उचितज नथी. आवा बहोळा विचार शिवाय आपणे कंइ करी शकवाना नथी. एकवार एवी रीते आपणुं मन दृढ थयुं तो पछी कदी पण आपणे समुदायना विचार विरुद्ध वर्तवाने हिंमत करीशुं नहि. आवां बंधारणो उपरज हालना सुधरेला देशोमां राज्य वहिवट चाले छे. इंग्लंडमां मोटी मोटी कल्बो छे, जेमांनी केटलीकमां आपणा नामदार शहेन-शाह पोते पण मेंबर छे. त्यां देशनुं कल्याण केम करवुं ते विषे विचार चाले छे. आवा समुदायीक काममां अडचणो घणी आववानी पण जो दरेक जण एक कुटुंबना 1 1

मेंबर मुजब वर्ते तो कोइपण वखते गेरसमज नहि थाय. दाखला तरिके गरीब कुटुं-बमां अमुक मतभेद पडतां माणसो रीसाईने जतां रहेतां नथी ने वखते रीसाय छे तो तेने मुरब्बीओ समजावी ले छे. तेज तोरपर आपणे न्यातमां, संघमां अने कॉ-न्फरन्समां काम लेइशुं तो कदी पण खेंचताण थरो नहीं अने सदा नभ्या कररो.

केटलाक पूछे छे के, कॉन्फरन्सथी फायदो शो ? तेमने मारो एकज जवाब छे. कॉन्फरन्सनो उद्देश आपणो समुदाय पोतानी स्थिति सुधारे ए शिवाय बीजो कंइ नथी. केमके ते सुधार्या विना आपणुं एके कार्य थवानुं नथी. ते सुधारवा माटे संप अथवा ऐक्यता थवी जोइए. अने ते थइ तो पछी अमुक व्यक्ति के अमुक वर्ग आखा समुदायनुं हितचिंतव्या शिवाय मनस्वीपणे वर्ते छे एवो प्रसंगज क्वचित् आवशे. कॉन्फरन्सथी तेवो संप थतो जाय छे एम मने देखाय छे.

केटलाक तरफथी सूचववामां आवे छे के, जे डेलीगेटो आवे छे ते अत्रेथी जइने पोताना गाममां अमल करी शकता नथी. माटे डेलीगेटो आवे ते पावर लेइने आवे एम ठराववुं. आ कहेवुं तद्दन भूल भरेलुं छे. आप खात्रीथी मानजो के, जे बे हजार डेलीगेटो मेगा थइ हकीकत सांमळी जाय छे तेनी असर कमतीमां कमती पांच छ हजार माणसो उपर थया वगर रहेती नथी. ए असर कंइ नानी सूनी नथी.

कोइ कहे छे के, डेल्लीगेटोनी संख्या वधी जाय छे माटे तेनुं प्रमाण थवुं जोइए. हुं ते मतथी विरुद्ध छुं. हुं इच्छुं छुं के, हुं एवुं कॉन्फरन्स जोवा भाग्यशाळी थाउं के जेमां कमीमां कमी दश हजार जैनभाइओ भेगा थया होय. पण ते साथे आवुं खर्च कमी थाय ते हुं अंतःकरणथी इच्छुं छुं के जेथी ते कॉन्फरन्स आपणने बोजा-रूप थइ न पडे.

केटलाक सारा गृहस्थो एवो अभिप्राय घरावे छे के, गमे तेटली माथाझीक करो छो पण थाय छे शुं ? माटे अमे तो ए पसंदज करता नथी. तेवा महेरबा-नोने मारो जवाब ए छे के, तेटला माटे प्रयत्न बंध करवो ते आपणने उचित नथी. तमारा घरनो माणस तमारा विचारथी फेर वर्ते छे तो तेमे शुं तमे छोडी द्यो छो ? ना. त्यारे आपणा बीजाभाइओ प्रत्ये पण तेमज वर्तो, अगर बीजा केटलाक गृहस्थो भावी मानी बेसे छे तेम बेसो. पण तमारी खानगी जींदुगीमां तेम करवुं तमे ब्याजबी धारता नथी त्यारे शुं आमां तेम करवुं व्याजनी छे ? आ कॉन्फरन्सथी जे घणा फायदा थाय छे तेमांनो एक ए छे के, आपणा भाइओ क्यां क्यां छे अने ते केवा छे ते जाणवा आपणने तक मळे छे. तेम केटलाक खोटा विचारो पण दूर थाय छे. मारा मित्र **मि. ढढ़ुा** प्रथम आव्या त्यारे गूजराती साथे जमतां विचारमां पडता हता. ते आजेज गूजराती मेगा जम्या छे. आपणा जैनभाइओमां परस्पर घाडी प्रीति थाय तेवो पण आ कॉन्फरन्सनो हेतु छे अने ते फलीभूत थतो जाय छे, ए खुशी थवा योग्य छे.

हवे आपणा विद्यार्थीओ घणो खर्च अने महेनत करी अभ्यास करी डी-ग्रीओ मेळवे छे अने पछी नोकरीनां फांफां मारे छे; छतां पत्ते। लागते। नथी. तेमने शी रीते उद्यमे लगाडवा, आ पण एक मुद्दानो सवाल छे. तेनो निर्णय करवामां जमा-नाना बहोळा अनुभव अने सूक्ष विचारनी जरुर छे. मारा अंगत अभिप्राय प्रमाणे बीजी कोमोनी हारमां आपणो दरज्जो टकावी राखवा माटे वेपार जेम बने तेम आपणे हाथ करवानी जरुर छे अने तेमां वधारो करवा अर्थे तेमज विद्या हुन्नर कळा शीखवा माटे तेवा विद्यार्थीओने परदेश मोकल्लवानी खास जरुर छे. आ विषय उपर हजु एक मत थयो नथी तेथी हुं वधारे बोलवा इच्छतो नथी; पण हुं धारुं छुं के, तमे कवूल करशो के आ त्रीजी कॉन्फरन्सना एक स्तंभ अने रीसेप्शन कमी-टीना चीफ सेकेटरी डॉक्टर बाळाआड मगनल्हाल्डे पोतानो एक पुत्र जे प्रेज्युएट छे, तेने वेपार माटे चीन मोकल्यो छे; तथा बीजा पुन्नने पारीस मोकल्लवा विचार राखे छे, ते माटे तेमने सुवारकवादी घटे छे (ताळीओ). तेओ पोताना पुत्रने अधर्मी थवा इच्छे तेवुं मानवुं पण अशक्य छे.

छेवटे हुं मारुं भाषण बंध करतां इच्छुं छुं के, थोडा वखतमां आ आपणी कॉन्फरन्समां पधारेला भाइओ एवा उत्साहथी काम लेरो के, आपणे कॉन्फरन्सने एक संगीन खातुं बनावीने आखी जैन कोमना अभ्युदय माटे प्रयास करी शकीये. ( ताळीओ ). ( ९१ )

# निशाणी १०.

## अमदावादना डॉक्टर जमनादास प्रेमचंदनुं भाषण.

।। नमः श्री परमात्मने ।।

## प्राकारे स्त्रिभिरुतमा सुरगणै स्संसेविता सुंन्दरा सर्वाङ्गै मेणिकिङ्किणी रणरण ज्झङ्राररावैर्वरा ॥ यस्या नन्यतमा सुभ्रामिरअवद व्याख्यानकालैधुवं स आदेवजिने इवरोऽश्रिमतदौ भ्र्यात्सदा प्राणिनाम् ॥१॥

जे जैन प्रभुनी सभा ( सुभूमि ) निश्चय करीने व्याख्यान समयमां त्रण कोटने छीधे उत्तम, देव समुदायथी संसेवित, सर्वांगोथी मनोहर, मणिमय चुंवरुओना रणरणत झणकारयी करीने श्रेष्ट, अने अनुपम होती हुइ !—श्री जिनेश्वर देव, प्राणिओनां सदा वांच्छित फळने देवावाळा हो ॥ १ ॥

महेरबान प्रमुख साहेब, प्रतिनीधीओ, मानवंता धनाट्य परोपकारी स्वजाति अने धर्माभिमानी भाइओ तथा बहेनो !

त्रीजी श्वेतांबर जैन कॅान्फरन्सना योग्य बंधारण अने खरी फतेहना ठरावने अनुमोदन आपतां मने अती खुशाली थाय छे. आजे आपणे त्रीजी कॉन्फरन्सनी बेठकोमां पोतपोतानो अमुक भाग भजववा पोतपोताना गाम, नगर, शहेर अने ता-लुका डिस्ट्रीक्ट अने इलाकामांथी आपणा साधर्मीभाइओ तथा बहेनोनुं मलुं करवा माटे प्रतिनिधीओ तरीके चुंटाइ आव्या छीए. अर्थात कहेवानुं के, बीजी कॉन्फरन्स वखते साक्षेत्रना मला अने उद्धार माटे जे जे आपणा वक्ताओए उद्धारको तरीके ठरावो प्रसार कर्या हता, ते नक्की करेला कामोमांथी केटलां काम थयां ? केटलां थवानां अने थयां तेमने केवी रीते उछेरी मोटां करवां, तेमां सुधारो वधारो करवा माटे शा शा उपायो योजवा, तेना विषे खरा अंतःकरणथी ठरावो करी तेमने हमेशां चालती रहेती पाणीरुपी पैसानी शेरथी सिंचवां तत्पर थई आपणे अहींआं बनीठणी, झेर, वेरभाव, ढोंग, दूर मूकी शोभा तेमज फजेती जोवाना इरादाथी नहीं पण खरा दील्लथी तन, मन, अने बनतां धनथी मदद करी सात क्षेत्रनो उद्धार करेबी आच्या छीए, एम आपणे मानवुं जोइए. आ हेतु पार पाडवाने आ उरावमा चार विमाग करुं छुं.

(१) संप, (२) अकल, (२) धन, (४) व्यवस्था.

आपणा धर्मशास्त्र प्रमाणे जेम तीर्थंकरोनी परिषदमां अनेक जीवो पोतानां स्वाभाविक झेर, वेर दुर करी एकदिल थइ व्याख्यान श्रवण करी कर्म मुक्त थवा आवता हता, अने पोतपोताना आशय सुधारवा प्रमाणे कर्म मुक्त थता हता तेम आ कॉइफरन्सनी बेठकोमां प्रमुख साहेबथी मांडीने ते गरीबमां गरीब जैन भाइए आजना ठरावो कबूल राखी मनमां एम खरा अंतःकरणथी विचारी वर्तवुं जोइए के, आ ठरावे। मात्र अंहींआ सांमळी अंहींआज कागळपर छोडी न जतां तेमने बनतीं रीते तन मन अने धनथी पार पाडवाना छै. दाखला तरीके, सुतरना एक तारथी हाथी जेवा मोटा प्राणीने आपणे बांधी शकता नथी पण एवाज अनेक तार एकठा करी तेनुं मोटुं दे।रडुं करीए तो तेनाथी हाथी जेवा मोटा प्राणीने बांधवो कांइ मइकेल नथी. तेनीज माफक आपणे सर्वे जैन भाइओ भिन्न मान छोडी दुइ एक संप थइए तो आपणी आ कॉन्फरन्सने फतेह मळवामां कांइ पण शक रहेतो नथी. आ हरावी पास करवा सहेला छे परंतु पार पाडवा माटे एकते। अकल अने वीजो पैसो जरुरनो छे. अक्कलतो मळे पण पैसो क्यांय नथी माटे तेनुं दररोज ध्यान क-रवानं छे ते एवी रीतें के, आपणी कोमना धनाढ्यो आंगेवानो अने अम्रेसरो, ना-यको. अने वीररत्नो जे जे मोटी रकमो आपे छे अने आपरो ते तमारा ठरावेला कामो माटे पुरती नथी एम तमे। मारी माफक मानवा चुकशो नहि, कारण के ज्यारे आप. आ समामां बिराजमान थयेला गृहस्थो चर्मचक्षयी निहालशो तो एम मालम नहि पडरो के, एवो एक पण धनाट्य एकी वखते एक लाख रुपियाथी वधारे खरा मनथी कोमनी दाझ जाणी कोमना उद्धार माटे आपी दे तेवा वीररतन न होय, अगर तेवा होय एम मानीए अने कदाच उदारताथी आपी दे तो ते केटला वखत सुधी तमारा महत्व ठरावो माटे पुरता छे ते तमो विचार करी ल्यो. ते रुपिया मात्र एक खावोचीआना पाणी जेवा छे, तमारे तेथी लोभाइ न जवुं, तेम एम पण न मानवुं के हवे तमार

मसीब उघडी गयुं. तेओ जेवी राजीखुर्शाथी मोह दूर करी, पोताना सात प्रिय क्षेत्र माटे जे जे रकमो आपे, ते उपकार अने मान साथे तमोए कबुछ करवी. पण ते-ओए आपणी माफक एमज मानवुं जोइए के, धारेछा महत्वना ठरावो माटे टांकाना पाणी रुपी आवी रकमो पुरती नथी. माटे आपणे आपणी यथाशक्तिए खरा तन, मन, अने धनथी मदद करवाना इरादाथी एक सृचनारुगी नहि परन्तु एक ठराव रुपी ठराव तवंगर, मध्यम, तेमज कानिष्ट वर्भमां गणाता सर्व जैन माइओए पास क-रवो के, दरेक जैन मण्ड्ए पोतपोतानो हिस्सो जरुर कॉन्फरन्सनी हमेशनी फतेह माटे अने खरा पायापर छावी सारा अने मच्य मकानरुपी कॉन्फरन्सना ठरावो अ-मल्ठमां मूकवा माटे आपवो जोइए, जेथी कांकरे कांकरे पाळ बंधाय, अने टीपे टीपे सरीवर भराय ते कहेवाती कहेवत खरी पडे. आ नम्र सूचना आप प्रत्ये कही ब-तावी छे ते हवे पछीनी कॉन्फरन्समां ठरावरुपी छाववा चुकशो नहि एवी मारी उमेद छे.

सद्गृहस्थो सने १९०१ नी सरकारी गणतरी प्रमाणे श्वेताग्वर जैनो आ-शरे आठ लाख छे, ने तेमांथी दरेक चूलादीठ दरेक वर्षे एक रुपीओ आपवाथी ओछामां ओछा त्रण लाख रुपीआ एकठा थशे, अने आ रीते हमेशा चालती रा-खशो तो आशरे ३० वर्षमां तमारा धारेला कार्यों जरुर फतेहमंद थशे, एम हुं मानुं छुं. ने आप पण तेने मळता आवशो जेथी तमारे घनाढ्य गृहस्थोने वारेवडीए तस्दी न आपतां तेमज न शरमावतां तमो तमारी हींमतथीज तमारुं काम पार पा-डशो. ते काम जो तसो खरा दील्ल्थी उपाडी लेशो, तोज तमारी खरी फतेह थइ समजजो. माटे आ काम फतेहमंद करतुं होय तो कम्मर कसी एके अवाजे एवे ठराव करो के, आपणे दरेक चुलादीठ जैनकोममांथी गामोगामना अने नगरानगरना अने शहरोशहरना नगर शेठ अगर आगेवानोए एक रुपीआ प्रमाणे उघराणुं करी एक बे बेंकोमां कॉन्फरन्सनी फतेहना फंड माटे सोकल्वा अने तेनी व्यवस्था माटे तमारे जोइए तो हाल्टनी चाल्ती कर्माधीने सोंपो, अगर तो एक नवी कमीटी नीमी तेनी योजना घडी काढवी.

जो तमो एक रुपीओ दरेक वर्षे आपो तो दररोजनी लगभग अरवी पाइ जेटलुं पुन्य करी तमारा घणा सीजाता भाइओने तमो मदद करी पुन्य बांधो छो. आ प्रमाणे नहि वर्ती तो तमारे खात्रीथी जाणवुं के, पाणीना परपोटानी म,फक आ कॉन्फरन्स सुइ जरो. अत्यारथीज आवती कॉन्फरन्स क्यां लइ जवी, कोण लइ जरो अने ते केवी रीते उभी करवी एना विचारमां लोको पड्या छे. ए कांइ थोडी शोकजनक वात नथी; पण मारे अति ख़ुझी साथे जणाववुं पडे छे के, आपणी कॉन्फरन्सना मानवंता चीफ सेकेटरी शेठ लालमाइ दलपतभाइए पोताना भाषणमां जणाव्युं छे के, आ कॉन्फरन्सने कोइ पण रीते मरी गयेली जोवा इच्छतो नथी तेवा शब्दो सांभळीने मारी माफक सर्वे जैनमाइओ तथा बहेनोने अति हर्ष थयो हरो. वळी केटलाकनुं मानवुं एम छे के, कॉन्फरन्सथी कॉंग्रेसनी माफक शा शा फायदा थया छे, एवा एवा रोदणां रडवा लाग्या छे पण तेम मानवुं अने कहेवुं भुल भरेलुं, अविचारी, अने ह्रस्वटृष्टि वाळी वात छे, केमके कॉन्फरन्से केटलुं शुभ काम कर्युं छे ते बीजी कॉन्फरन्सना वार्षिक रीपोर्टपरथी रोशन थरो.

महेरबान साहेबो ! काँग्रेस तो दानीसरकार पासेथी पोताना दुःख दूर कर-बानी व्याजबी दाद मागे छे ते आपनी न आपनी सरकारना हाथमां छे; परन्तु कॉन्फरन्स तो पोतपोतानो हिस्सो आपी पोताना जाति भाइओनो उद्धार करवा इच्छे छे.

गृहस्थो! हवे आपणे अकल्लो विभाग तपासीए तो आपणी आखी श्वेताम्बर जैन कोम जे सने १९०१ नी सालनी सरकारी वस्तीपत्रकनी गणत्री मुजब आशरे आठ लाख थाय छे. तेमांना मुंबाई इलाकामां उंच केळवणी पामेला गृहस्थो केटला छे ते तपासतां मने नीचे प्रमाणे आंगळीना वेढापर गणी शकाय तेवी, नहिजेवीज शंख्या मालम पडे छे ते नीचे प्रमाणे.

| बी. ए. आशरे         | ३७ |
|---------------------|----|
| एम. ए.              | २  |
| बी. ए. एऌ. एऌ्. बी. | १६ |
| बी. ए. एस्. सी.     | १  |
| एल. सी. ई.          | 8  |
| डॉक्टरो.            | ৩  |
| बेरिस्टरो.          | २  |
| सॉलिसिटरो.          | \$ |

| ( १०० )                               |   |
|---------------------------------------|---|
| किंट्रोक्ट छिडरो.                     | Ę |
| एजन्मि हिडरो.                         | 8 |
| मुनसफो.                               | २ |
| वेंट्रिनरी सर्जन ( प्राणीओना डॉक्टर ) | १ |
|                                       |   |

কুন্থ < ০

आ उपरनी जुन शंख्या रजु करतां मने टीलगिरी साथ कहेवुं पडे छे के, जैन कोममां उंची केळवणी पामेला गृहस्थो घणाज थोडा छे.

माटे ओ मारा स्वदेशाभिमानी अने स्वजातिआभिमानी साधर्मिभाइओ अने बहेने। अने बिराजमान थयेछा प्रतिनिधिओ ! मारी अल्प अने नम्र प्रार्थना छे के असछी जैनोनी जाहोजछाछीवाळो वखत आवे एवी उचति माटे खरा दीछथी उठो, जागो, कम्मर कसो अने मदद माटे अक्कछ, अने पैसारुपी हथियारो हाथ करी कॉ-न्फरन्सना अंगे तमारा दुःखी बाळको, बाळाओ, भाइओ, बहेनोने सुःखी करवा तेमज टुंकामां सात क्षेत्रना ठरावो अमछमां छाववा माटे एकदम नहि, पण धिर-जथी धीमे धीमे अने पक्के पगछे प्रयत्न करो, अने असछ वाराना सूर्यी तरीके नाम मेळवी सारा कर्म बांधी शिव मंदीरमां प्रवेश करो—तथास्तु.

#### (१०१)

## निशाणी ११.

### जामनगरना जगजीवन मुळजी बनीयानुं

#### भाषण.

## आबा कॉन्फरन्स जेवा महान मंडळनी आपणा जैनो माटे अगत्यता छे तेनी कोइ पण ना पाडी शकशे नहीं. आपणो धर्म, आपणुं कर्त्तव्य अने आपणी कोम उच्च स्थितीए पहोंचे तेना वास्ते प्रयत्न करवा आपणामां परमार्थी पुरुषो घणा छे. तोपण परमार्थनी अगत्यता समजावनार अने परमार्थ कइ दिशामां केवी रीते करवो जोइए ते नक्की करी आपनार तथा आपणा सकळ संघ समुदायनी हाजतो जाहेर करनार आवा कॉन्फरन्सनी आपणा वास्ते खास जरूर छे. धन्य छे एवा मररत्नोने के, जेनी तन, मन अने धननी मददथी जैन श्वेतांवर कॉन्फरन्स जन्म पाम्युं, अने वळी धन्य छे ते पुरुषोने के, जेओ पोताना गाममां आवुं महामंडळ मरवाने खंत अने उमंगथी पैसा अने महेनतनो छोभ न करतां दीछोजानथी काम कर्या करे छे.

जे चीज आपणा वास्ते जरूर अने अगत्यनी होय छे ते चीज वधारे वखत केम टकी रहे तेनी आपणे घणी संमाळ राखीए छीए अने तेने साचववाना उपाय छइ राखीए छीए. जैन बंधुओनी उन्नति माटे कॉन्फरन्सनी जरूर अने अगत्य छे माटे ते वधारे वखत केम टके, तेना कामने फतेह केम मळे, तेना वास्ते बनतो दरेक प्रयास करवानी अने हरेक रीते तेने मदद करवानी कोइ पण तक न जवा देवानी दरेक जैनबंधुनी फरज छे.

माटे हवे कॉन्फरन्सनुं बंधारण केम संगीन थाय तथा तेनो कारोबार इप्ने रीते व्यवस्थित थाय तेनो विचार करवानी अगत्य छे.

कॉन्फरन्सना चालु कामने माटे एक वर्किंग ऑफीस मुंबईमां हाल छे तेमां सुधारो वधारो करी ते कायमराखवी जोइए. तेना वास्ते ऑनररी सेकेटरीओ उपरांत एक पगारदार प्रमाणिक अने हुंशीयार आसिस्टंट सेकेटरी अने तेना हाथ नीचे जरूर प्रमाणे क्वार्की राखवा जोइए. ते सेकेटरीए कॉन्फरन्सना दरेक मेळावडामां कॉन्फरन्से गया वर्षमां जे कामकाज करेल्ल होय तेनो रीपोर्ट वांची संभळाववो जोइए. जनरल सेकेटरीओना काम उपर चेक राखवाने जरूर जणाय तो एक बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल नीमवुं जोइए के जे कॉन्फरन्सने लगता सर्व कामकाज उपर देखरेख राखे.

दरेक जगोए आपणी उन्नति संबंधी हिल्चाल कायम राखवाने अने आपणने जागृत राखवाने मुंबईनी एक वर्किंग ऑफीस पहोंची राके नहीं. माटे दरेक जग्याए के ज्यां जैनोनी सारी वस्ती होय त्यां स्थानिक कमीटीओ नीमावी जोइए के जेओए त्यां स्थानिक फंड उमुं करी कॉन्फरन्सनी सूचनाओ अनुसार काम लेवा प्रयास करवो. तेवी कमीटी वास्ते कोइ ऑनररी के वॉल्टररी सेक्रेटरी मठ्ठों आवे बो ते, नहीं तो एक पगारदार सेक्रेटरी राखी कमीटीना कामकाजनी नोंघ तथा आवक जावकनो हिसाब तेनी पासे रखाववो.

कमीटीए करवानां काम. (१) दरेक पखवाडीए अथवा दरेक महिने पोताना संघनी सभा बोलावी पोते जे कंइ काम कर्युं होय तथा वर्त्तमानपन्नो उप-रथी अने मुंबइनी कॉन्फरन्सनी ऑफीस तरफथी अन्य जग्याना जैनो संबंधी जे हकीकत आवे ते भेगी करी संघ सन्मुख रजु करवी 'जोइए अने सारा दाखलानुं अनुकरण करवा संघने समजाववुं. पछी जे कामकाज के ठराव पोतानी सभामां थाय तेनो हेवाल कॉन्फरन्सनी ऑफीसे मुंबइ पहोंचाडवो. (२) स्थानिक सुधारा सगवड, अने व्यवस्थाने माटे स्थानिक फंड उमुं करता जवुं. ते सबस्कीप्शन अथवा हवे पछी हुं बीजी बे रीत सुचवीश ते प्रमाणे एकठुं करवुं जोइए. ते फंड जो पो-ताना गामनी हाजतोने पूरतुं न होय तो कॉन्फरन्सनी वडी ऑफीसनी मदद मा-गवी. (६) कया खातामांथी कोने केटली मदद करवी तेना कायदा जरुर जणाय ते प्रमाणे घडी कहाडवा जोइए अने संवनी अैक्यताथी काम करवुं जोइए.

आ प्रमाणे बंदोबस्त करवामां चालु खर्च वास्ते पैसानी जरुर छे, अने पैसो आपणा गजवामांथीज कहाडवानो छे. कॉन्फरन्स हजी तेनी बाळ स्थितिमां छे. जे जे फंड थयुं छे ते सर्व स्थळे पहोंची वळवा जेटलुं नथी. तेमां वधारो करवानी जरुर छे. आपणामांना धनाढ्य परमार्थ बुद्धिवाळा पुरुषो फंड उभुं करवा धारे तो तेओ एक मोटुं फंड उभुं करी शके, जेनो पुरावो आपणने गइ कॉन्फरन्सनी बे- ठैकमां थएल पैसानी वृष्टिथी मळेल छे के, ज्यां उदार पनन्य पर्या पतस्थोप वगर मागे पोतानी खुशी अने उमंगथी हजारोनी रकमो कॉन्फरन्सना जूदा जूदा खाताओमां अर्पण करी हती. पण डहापण मरेलुं अने वाजबी ए छे के, वारंवार बधो बोजो आपणा धनाढ्य भाइओ उपर न नांखता बधाओए फंडमां पोतानो य-थाशक्ति फाळो आपवो जोइए. जेथी ते कोइना उपर बोजारुप थइ न पडे, जे फाळो हुं सुचववा मांगुं छुं ते एटलो तो सहेलो अने निर्जीव छे के कोइने ते भारे पडरो नहीं. अहींआ कवि दल्पतरामनी बे लीटी याद करवानी छे.

### लाखो कीडीपर लाडवो, मूकेथी मरीजाय; भूको करी भभरावीए, खुखेथी सौ खाय

एवो फाळो वे रीते आपी शकाय. (१) जे जैन गृहस्थनी मासिक आवक रुपिया २० के ते उपरनी होय ते दरेक पोतानी वार्षिक आवकमांथी दरेक रुपीए एक पाइ प्रमाणे जे रुपीआं थाय ते दर वर्षे प्रमाणिकपणे पोतानी स्थानिक कमीटी अथवा कॉन्फरन्सनी ऑफिसे मोकल्टी आपे, आ प्रमाणे जो बधा जैने। पोतानी करज प्रमाणिकपणे अदा करे ते। लाखनी पाण ए हिसावे अवश्य फंडमां सारी कायमनी पेदाश थशे अने आ नाणां भेगा करवानी रीत कोइने भारी नहीं पडशे. दाखला तरीके जे माणस दर मासे रुपीआ २० कमातो हशे तेने दर मासे फक्त दोढ आनो आ मतलव सारु जुदो कहाडवो पडशे, अने एवी नानी रकमनी कसर गमे ते रीते घर खरचमां करकसर करवाथी नीकल्ठी आवशे, अने आयंदे कॉन्फरन्सनुं मोटुं फंड थइ जशे.

फंड करवानी बीजी पण रीत छे. कॉन्फरन्सना ठराव प्रमाणे जे जगोए संघ मरण पाछळ न्यातवरा बंध करवाने शक्तिवान थाय त्यां तेवा न्यातवराना खर्च-मांथी जे लोको मुक्त थाय तेओनी पासेथी संघे तेओनी स्थितीना प्रमाणमां अमुक रकम मरनारना धर्म अर्थे कॉन्फरन्सना स्थानिक फंडमां अपाववी. विवाह अथवा बीजा पण खुशालीना प्रसंगे अमुक रकम फंडमां आपवामां आवे एवो ठराव थाय तेमां पण कांइ खोटुं नथी, तेमां अवश्यकरी मरण पाछळना न्यातवरा बंध थाय त्यां तो फंडने वास्ते आवुं कांइक फरजीआत धोरण बांधवुं जोइए. आ काम वास्ते भाटीआ मित्रमंडळ दाखलारूप छे, तेनुं अनुकरण आपणे करवुं जोइए. कॉम्फरन्सनी मतल्बो पार पाडवाने जे जनरल फंड थाय तेमां बधाने लाम समायलो छे. आ बाबतमां कोइ एम सवाल करे के, फंडनो लाम तो मात्र गरीबोने छे पण सारी स्थितिवाळाने शी रीते तेना लाम मळी शके ? तो जवाब एटलोज छे के, माणसनी हमेशां एकनी एक स्थिति रहेती नथी. तडका पछी छायो अने छाया पछी तडको आव्याज करे छे. कोइ पण माणस खातरीथी एम नहीं कही शकशे के मारी ओलाद पेढीओपेढी आबाद स्थितिमांज रहेशे. अखो कवि कहे छे के,

### सुखीआं पलके दुःखीआं थाय, धन तन लज्जा फीटी जाय; रंक इता ते बनीआ राय, अखा एज माया महीमाय

माया एवी चळित छे. आज आपणे सारी स्थितिमां होवाथी कॉन्फरन्स तरफथी मदद हेवानुं आपणने स्वप्नुंए न आवतुं होय बछके आपणा हाथे बीजा-ओनो उद्धार थतो होय, पण काळचक्र के प्रारब्धने योगे आपणने नहीं तो आपणा कुटंबीओने के वंश वारसोने अमुक वखत पछी तेज फंड आवकारदायक अने आशिर्वादरुप थइ पडे, माटे आज आपणे कॉन्फरन्सना फंडमां मदद आपी हशे तो आपणे बीजा तरफ तेमज आपणा अने आपणी ओलाद तरफ आपणी फरज बजावेली कहेवाशे.

गृहस्थो ! कॉन्फरन्स तो अमुक विषयो उपर अमुक सूचना करी अमुक ठरावो करशे, पण तेनी मतल्लव त्यारेज पार पडशे के, ज्यारे ए ठरावो तमे अमल्लमां मू-कशो त्यारे. हम कहेतें हें तुम सुनते जाओ, ए प्रमाणे जो आपणे एक कानथी सांभळी बीजे कानेथी बेदरकारी अने प्रमादथी बधुं काढी नाखीशुं तो कॉन्फरन्स-रुपी वृक्षना अमृत फळ चाखवाने आपणे कदी पण शक्तिवान थइशुं नहीं.

कॉन्फरन्सना ठरावे। अमल्लमां मूकवानुं काम कॉन्फरन्सना हाथमां नथी, प-रंतु प्रत्येक संघना अथवा एम कहीए तोपण चाल्ठे के प्रत्येक माणसना हाथमां छे. ज्यारे प्रत्येक माणस दृढ मनथी ठराव करे के, फलाणो ठराव मारे अमल्लमां लाव-वोज त्यारेज कॉन्फरन्सनो हेतु पार पडे. हवे प्रत्येक जैन, कॉन्फरन्सना ठरावना पक्षमां थाय तेने वास्ते जरुरनुं छे के कॉन्फरन्सना खरा हेतु तथा उद्देशथी ते जाणीतो होय, ते माटे प्रत्येक माणस कॉन्फरन्सनां हाजर थइ राके ए बनवुं अज्ञत्य छे, तेथी ते लोकोनी तेवी जाणने माटे प्रत्येक गामना डेलीगेटोए अम लेवो जोइए.

an or

तेओए पोताना गाममां संघनी मोटी सभा बोलावी साधु महाराजो समक्ष कॉन्फें रन्सना उद्देशथी अने तेमां थयेला कामकाजथी बधाने वाकेफ करवा अने तेओने समजावी तेमां थयेला ठरावो पैकी कया कया ढरावो कइ रीते तेओ अमलमां लावी शके, तेनो रस्तो बताववो.

ए उपरांत आपणामांथी मि. लालन अने प्रोफेसर नथु मंछाचंद नेवा छत्साही नरोने चूंटी तेमने जूदे जूदे ठेकाणे कॉन्फरन्सना उद्देश अने ठरावो जाहेर करना तथा ते ठरावो अमलमां मूकवा आग्रह करवा तथा ज्यां ठरावो अमलमां मूकामा होय त्यांना दाखला बतावी जाहेर भाषण करवाने मोकल्या जोईए. तेमना वास्ते बधी सगवड कॉन्फरन्सना तरफथी थवी जोईए.

कॉन्फरन्स तरफथी वक्ताओ बधी जगोए पहोंची शके नहीं, केमके एटला बधा वक्ताओ आपणामां नथी. तेथी कॉन्फरन्सनो उद्देश तथा तेमां थता कामकाज अने ठरावो बधी जगोए जाहेरमां. मेलवाने कॉन्फरन्स तरफथी एक वर्तमानपत्र कढ वानी जरूर छे. ए पत्रद्वारा कॉन्फरन्सने लगती खबरो उपरांत जैन धर्मने ल्याता विषयो उपर लखाणो तथा तेने लगती हकीकतो कटके कटके दर अंके छपाववी जोईए. जूदी जूदी जगोए जैनोनी सभा मंडळो अने संघनी हीलचाल वगेरेनो पण ते पत्रमां समास थवा जोइए. ए पत्र अठवाडिक अथवा विगतनी न्यूनताने लीधे पखवाडिक थवुं जोइए. कदी पत्रनुं न बनी शके तो छेवट एक मासिक चोपानियुं कॉन्फरन्स तरफथी बहार पाडवुं जोइए.

आपणामांना नवा उगता जुवानोनी लखवानी अने बोलवानी शक्ति खीलववा तथा जेनामां ते खीलेली होय तेने उत्तेजन आपवा अर्थे तेओ पासेथी संसारिक व्यव-हारिक अने धार्मिक विषयो पर अमुक निबंधो लखाववा जोइए अने ते लखवा वास्ते इनामो आपी हरीफाइ कराववी.

आ प्रमाणे कॉन्फरन्सनुं काम संगीन करवाने मोटुं फंड,सारी व्यवस्था, डेली-गेटोए हेवो जोइतो श्रम, सारा वक्ताओनी देशोदेशनी मुसाफरी अने त्यां तेमणे आपवानां भाषणो, कॉन्फरन्स तरफथी वर्त्तमानपत्रनी जरूर, हरीफाइना निवंधों विगेरे विषे में इसारो करेल हे, पण आ बधा करतां प्रथम करवानी एक वात रही जाय हे के, जेनी कॉन्फरन्सनी फतेह वास्ते घणी जरूर हो. ते अगत्यनी वात संप

98

अने ऐक्यता छे. ज्यारे आपणा बधा स्वधर्भी भाइओ एक संघमां ऐक्यताथी काम करे छे त्यारे ते संघनुं काम थाय छे. एवीज रीते प्रत्येक संघ साथे रही काम करशे त्यारे आपणी कॉन्फरन्सनुं काम पार उतरशे. माटे बधा संघोनी ऐक्यतानी जरूर छ तेमज दरेक संघना जूदा जूदा माणसोमां पण संपनी जरूर छे, संप अने ऐक्यता वगर बधुं फोकट छे. कॉन्फरन्सना बंधारणने संगीन करवाना बीजा साधनोनो पण मोटे माग्ये संप उपरज आधार छे. एटला वास्ते कॉन्फरन्सनी फतेहना बीजा बधा साधनो करतां संप वधारे अगत्यनुं छे. संप विषे थोडुं घणुं बोलाई गयुं छे तोपण कॉन्फरन्सनी संगीनताना साधन तरीके हुं ते विषे आंही थोडुं बोलुं तो ते विषया-न्तर नहीं कहेवाशे.

दरेक मनुप्य, पछी जोइए तो ते राजा होय के रंक होय, जोगी होय के भोगी होय, गमे ते देशनो गमे ते जातनो अने गमे ते दरज्जानो ते होय, जोइए तो ते यूरोपखंडना एक सौथी सुधरेडा देशनो गोरो वतनी होय अथवा तो ते आफ्रि काखंडना एक सौथी जंगडी मुछकनो एक हवशी होय, पण ते सुखनो विद्यासी होय छे. तेना दरेक दरेक प्रयत्ननुं पृथकरण करतां माल्म पडशे के, एनी ताकणी सुख सिवाय बीजी कांइ नथी. आवा सुख वास्ते जे साधनो छे तेमां संप एक मुख्य साधन छे. संप विना सुख अने संपत्ति होयज नहीं, सुखनां बीजां साधनो छे, तेनो पण वणे दरजे संप उपरज आधार छे. ज्यां संप नथी त्यां माणसो पोतानी असली स्थितीमां छे एम समजवुं. कुसंप ए क्टेश अने पायमालीनुं घर छे, दुःख अने दरिद्रतानी निशानी छे. कोइ पण मोटुं काम आरंभवामां प्रथम संपनी जरुर छे.

ज्यां सुधी दरेक जग्याए रहेता जैन बंधुओमां आपस आपसमां संप अने ऐक्यता नथी, ज्यां सुधी बधा मळी एक मते काम करता नथी, त्यां सुधी कॉन्फ-रन्सने संगीन फतेह मळवी मुइकेल छे, त्यां सुधी स्थानिक फंड पण थवुं मुइकेल छे अने काम करवावाळा जन पण मळवा मुइकेल छे. पक्षापक्ष थवाथी एकनी वात बीजो तोडवामां रहे छे. कुसंप ए एवो दुर्गुण छे के, ज्यां तेनो वासो होय त्यां न्याया-न्याय अने सत्यासत्य जोवातुं नथी. सारुं इंग्र छे, व्याजबी द्युं छे, लाम शामां छे तेनी कोइ दरकार करतुं नथी. जे वात तरफ लक्ष मात्र आपवामां आवे छे ते एज के, आपणा सामावाळाओ इंग्र कहे छे, तेओ रां करे छे अने तेओ जे कहे के करे तेनाथी आपणे उलटुंज कहेवुं तथा करवुं. आम एक पक्ष पोते पाछळ रहे छे, बीजाने आगळ वधवा देतो नथी. पोते खातो नथी, बीनानुं ढोळी नांखे छे; एवी रांते पक्षो बंधातां बंनेने नुकसान थइ लाभ जीजाने थाय छे. जे माटे बे बिलाडी तथा वांदरानो दाखलो बंध बेस्तो छे. माटे कुसंप क्यांय पण संघमां न थाय अथवा ज्यां ते पेठो होय त्यांथी तरत ते दूर थाय तेवा उपाय दरेक जैन बंधुए लेवा जोइए. एवुं थरो त्यारेज फक्त कॉन्फरन्सना ठरावोरुपी बी संघरुपी खेतरमां ववारो अने योग्य वखतमां तेना फणगा फुटी तेमांथी मनमानतो पाक थरो, माटे दरेक जैन बंधुए हरेक वखते याद राखवुं के, ज्यां सुधी कुसंपना नकामा छोडवा संघना खेतरमांथी दूर नथी थया अने तेओ प्रबळ छे त्यां सुधी कॉन्फरन्सना भा-षणो अने ठरावोना पाणीनी गमे तेटडी वृष्टि थाय तोपण सुधाराना बी उपर ते पाणी पहोंच्या पहेलां कुसंपना नकामा छोडवान ते पाणी चुसी जरो.

संप अने ऐक्यताने जेटली अगत्य आपीए एटली ओछी छे. अंग्रेनीमां कहे छे के, United we stand, divided we fall ( ज्यां मुधी आपणे एकत्र छीए त्यां सुधी आपणे कोइनी पण सामे टकर झीली शकीरां, पण जो आ-पणामां फाटफुट थइ तो आपणी पडती आवी समजबी). रायथी ते रंक सुधी दरेक माणसने बीजानी गरज पडे छेज. दरेक माणसमां करवानी शक्ति होय छे, कोइ पैसाथी मदद कंइ करे, कंडनं तो कोड ज्ञान के विद्वताथी मदद करे, तो कोड़ अंग महेनतथी पोतानी मददनो फाळो आपे. कॉन्फरन्से हाथ धरेछ मोटा कामने पार उतारवामां आवा बधा Я-कारनी मददनी जरुर छे, जेम एक घर के मंडप जूदी जूदी चीजोना साथे मळी रहेवाथी उमां रही दाके छे तेम एक महान मंडळ के समाज पण <u>সু</u>दা সুবা माणसोनी जुदी जुदी जातनी मदद अने सेवाथी टकी शके छे. जे मंडप नीचे हमणां आपणे छीए तेनोज दाखल्लो लइए. ए मंडप शी रीते तैयार थएल छे अने एनी पडवानी धास्ती केम आपणने नथी ? प्रथम जाडा मजबुत थांभलाओ उभा खोड्या हरो, पछी तेनी आडा वळाओ बांध्या हरो, पछी छापरा वास्ते तेना उपर बीजा झीणा वळाओ तथा वंझीओ वगेरे नाखेल हरो. एम जूदा जूदा जाडा पातळा लाकडांओना भेगा थवाथी मंडप तैयार थयुं. कोइ उभा थांभलां बधायी विरोष वजन उपाडे छे तो कोइ आडा रहीने थोडुं वजन उपाडे छे अने केटलाक तो बी-जाने आधारेज पडी रहेला छे अने बीलकल वजन उपाडता नथी. पण तेनी पण जहर छे. तेवीज रीते आपणा सकळ संघमां आपणा मुरब्बी लक्षाधिपति गृहस्थे।

मौटा थांमला छै. बीजा विद्वान अने प्रतिष्ठित गृहस्थो वळाओ छे अने बाकीनी शाणी कोम ए वळाओ अने वंझीओ छे. तेओए दरेके कॉन्फरन्सरुपी मंडप उमुं करी ते कायम राखवा वास्ते पोतानी यथाशक्ति जूदा जूदा प्रकारनी मदद आप-वानी छे. घनाढ्योए पोताना द्रव्यथी, विद्वानोए पोताना माषणो लखाणो अने सम-जुतीओथी अने पैसा तथा विद्यारहित बाकीना भाइओए पोतानी जात महेनतथी पोतानी मददनो फाळो आपवानो छे. विरोष सरखामणी पूरी करवा मने कहेवा द्यो के, जेम मंडपना थांमलाओ वळाओ अने वंझीओ छुटा छुटा रही पोत पोतानी मददनो फाळो नथी आपता पण दोरीथी साथे बंधाइने आपे छे, जेथी मंडप पड-वानी आपणने घास्ती नथी. तेम आपणा जैन माइओए पण अलग अगल रही पोतानी मददनो फाळो आपवानो तथी पण स्नेहरुपी गांठथी साथे बंधाइ पोत-पोताथी बनती मदद आपवानी छे, के जेथी कुसंप थवानो भय आपणने रहे नहीं. आ प्रमाणे ज्यारे आपणी जींदगीना वहाणमां संप अने स्नेहरुपी सढ चड्या अने सद्गुणना हाथमां सुकान आव्युं अने कॉन्फरन्सरुपी सवळेा पुंठेरो पवन वायो एटछे जे बंदरे आपणने पहोंचवानुं छे त्यां सहेल्थी अने तरतज पहोंची शकीशुं.



#### (१०९)

# निशाणी १२.

### मुंबइना मि. मोहनलाल पुंजाभाइनुं

#### भाषण.

-\*-n2

मे. प्रमुखसाहेब, प्यारा बंघुओ अने बहेनो !

जे दरखास्त आपणा जनरल सेकेटरी मि. रायकुमारसिंहे मुकी छे तेने हुं मारा अंतःकरणथी टेको आपुं छुं अने तेना टेकामां नीचेनी वीगतो जणावी आपनुं योग्य ध्यान खेंचवा रजा लउं छ. मारो विषय जीर्ण मंदिरोद्धारनो छे. अने तेनो ए अर्थ थाय छे के, आपणां जे मंदिरो छे ते जीर्ण थाय छे अने थयां छे तेने स-मारवा हूं आ मंदिर एटले शुं छे तेना उपर प्रथम ध्यान खेंचीश. आ मंदिर एक सामान्य घर नथी. आ मंदिर राजमहेल नथी, पण आ मंदिर ए छे के जेमां जग-तना नाथ तीर्थंकर भगवान बिराजे छे, जेनी आगळ इंद्रादि देवो अने चक्रवर्ती जेवा राजाओ पण हाथ जोडी उमा रह्या छे अने तेनी प्रार्थना करी रह्या छे. आ मं-दिर ते जीन मंदिर कहेवाय छे. अने तेनुं कारण ए छे के, जेणे कोइनाथी न जिती शकाय तेवा अष्टकर्म रुपी शत्रुओने हरावी पोते जीनपद धारण करी रह्या छे ते-मनी मर्ति प्रतिमाने रहेवानुं ए स्थान छे. हवे आ मंदिर बंधाववा माटे केटलो खर्च थाय छे ते आप जाणो छो. बंधावनारनो हेतु पोताना एकला स्वार्थ माटे होतो नथी. मंदिरमां बिराजता जीन प्रभुनी दरेक जीव शुद्ध मन वचन अने कायाथी सेवा ब-जावी मोक्षरुपी नगरीमां प्रवेश करी शके तेने माटे बंधाववामां आव्यां छे. आपणा बधाना एकसरखा लाभने माटे बंधावनारे ते बंधाव्यां छे तेम छतां ते जीर्णवस्थाने केम पाम्यां छे अने केम पामतां जाय छे ते हवे विचारवानुं छे तेनां मने त्रण कारण देखाय छे.

- १ रोगादि भयने लीधे केटलांक शहेरो उजड थइ जवाथी.
- २ मलेच्छादि राजाओना राज्यना जूलमथी.
- ३ आपणा प्रमार्थी.

#### (११०)

पहेलां ने कारणो माटे कंइ विरेाष नोलवानी जरूर नथी पण आपणो पोता-नोज प्रमाद छे ते संबंधमां हुं कंइक आपनुं ध्यान खेंचुं छुं. आपणा मंदिरोना जे जे अमेसरो होय छे तेओ पोतानुं धर्णापणुं पुरेपुरुं धरावे छे अने तेनी पेढी पण चलावे छे. वखत जतां केटलाक तो ते पेढीनुं धन स्वाहा करी जाय छे, तेमांथी सट्टा विगेरेना वेपारो थाय छे, ने पोतानी नबळी स्थितीए उपयोग छेवामां आवे छे. पोते वहीवट-दार होय छतां ते मंदिरमां शुं समारकाम छे, केवी रीते जीन प्रतिमानी स्थिती छे, केवी रीते तेनो सामान वापरवामां आवे छे ते तरफ तद्दन बेदरकार होय छे. आ उपरांत पोतामां चालतो खानगी द्वेष भावनो कजीओ देराशरमां लावे छे अने घणी वखत तो झंवडामांने झंवडामां देरासरना पैशा उडावी नांखी मंदिरने खराब स्थितिमां मकी दे छे. आ ते तेना संभाळनार के कोण ? जुओ, आपणा आब उपरनां मंदिरो. ते बं धाव्यां हरो त्यारे तेनी स्वच्छता केवी हरो ? अने हाल तेनी स्थिती शुं छे ? आबु जेवा तीर्थनी रक्षा करवा तथा तेने समारकाम करवा माटे ज्यारे सरकारनुं ध्यान खेंचाय छे अने ते केम जळवाई रहे तेने माटे प्रयत्न करे छे, त्यारे आपणे लांबा थइ उंघीए छीए. हुं तो खरेखर कहुं छुं के, आपणे पोताना बापने एक सुंदर महेलमां बेसाडी तेने आपणे पोतेज सळगावी देवा तैयार थएला तेवा दष्ट पत्रो छीए. हाल जे छे तेनो जीर्णोद्धार तो करी शकता नथी अने ज्यां जरूर नहि त्यां नवां नवां बंधाववा बहार नीकळीए छीए ते केवुं कहेवाय १ दिनपर दिन तळीएज बेसतां जवानो ए रस्तो छे. खरूं कहीए तो आ कॅान्फरन्स थवानुं कारण पण आवी आवी बाबतोनो सुधारो करवो ए छे. कॅान्फरन्से केम सत्वर आ काम हाथ धराय तेने मादे बनतुं करवानी जरूर छे. ( ताळीओ ).

### ( १११ )

## निशाणी १३.

### 

€\_12.502.50.D

#### सभापतिने नमस्कार.

आ देश देशनो मळेले श्रीसंघ जोइने आनंदित थाउं छुं. अने श्रीसंघने नमस्कार करु छुं. मने ज्ञाननो जीर्णोद्धार करवानी बाबतमा जे दरखास्त मूकवानी परवानगी मळी छे ते आपनी आगळ निवेदन करु छुं.

क्षत ज्ञान छे ते भगवंते अर्थरुपे प्ररुष्युं छे अने ते गणधर महाराजे गाथारुपे ग़ुंथीं द्वादशांगीनी रचना करी छे. अने अंगमांथी उपांग पयन्नादिकनी रचना साधवीजी प्रमुखने सारु मुनि महाराजाओए करी छे. ते सूत्रो तीव स्मरण शक्तिथी पूर्वाचार्य महाराजोए कठे राख्या हतां. बार दुकाळीयो पडवाथी ज्यारे विसर्जन थवा लाग्यं त्यारे श्रीदेवर्धि ग-णि क्षमा श्रमणजी महाराज विगेरे ए पुस्तको छख्यां, हाल्ने ते आधारेज धर्म चाले छे. ए पुस्तकोथीज आत्माना गुण शुं छे, यथार्थ शुं छे, आत्माने शुं करवा योग्य छे. जुं नहि करवा योग्य छे, आत्मानो स्वभाव जुं छे, आत्माने विभाग जुं छे, आ-त्माने कर्मनो संजोग हेम पाषाणनी ऐक्यतानी पेठे रह्यो छे ते केम जुदो थाय, केम आत्मानो स्वधर्म प्रगट थाय, ए सर्वे बाबतो श्रुतज्ञानथी जणाय छे. अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान ए बे आत्म प्रत्यक्ष छे पण तेथी आत्मानुं अरूपी स्वरूप जाणी शकातुं नथी. तेथी क्षपक श्रेणिवंत मुनि महाराज पण शुकल ध्यान श्रुत ज्ञानथा ध्याय छे ने केवळ ज्ञान पामे छे. माटे सर्वे धर्म पामवानुं साधन श्रुत ज्ञान छे. ते श्रुत ज्ञाननुं जो रक्षण ना करीए तो जे जीवोने धर्म पामवो छे तेनो आधार रहेरो नहि. पूर्वेना आचार्य महाराजे पोतानो अमूल्य वखत काढीने पुस्तको छत्त्वय छे अने केटलाएक राजाओए तथा भाग्यशाली धनवंत पुरुषोए धननी मूर्छा उतारी करोडो रुपीआ खर्ची-पुस्तको छखाव्यां छे. जुवो कुमारपाळ राजा, हेमचंद्र आचार्य पासे गया ने त्यां कागळो उपर पुस्तको छखातां जोयां ते वखते हेमचंद्र आचार्ये

महाराजने पूछ्युं के, महाराज आ पुस्तक कागळ उपर केम छखावो छो ? ताडपत्र पर केम नथी लखावता ? आचार्य महाराजे कह्य जे हाल ताडपत्र मळता मथी. ते हकीकत सांभळीने कुमारपाळे तुरत ानियम कर्यो के, ताडपत्र पूरां न करूं त्यांमुधी अन्न पाणी न लउ. ते वखते प्रधाने कह्युं जे ताडपत्र बहु दूर देशथी आवे छे माटे आ नियम आष बंध राखो. पण कुमारपाळ राजाए स्वनियमने विषे दृढ रही कह्युं जे मारी प्रतिज्ञा फरे नहि. ज्यारे ताडपत्र पूरां करीशा त्यारेज अन्नपाणी छइश. एम निश्चय करी ते बागमां गयो त्यां खडताड हतां ते बधां तेना दृढ निश्चयना प्रभावथी ताडपत्र ेथइ गयां अने तेना उपर पुस्तक ऌखायां. जुवो, ज्ञान उपर तेमनो केटले आदर हतो जे ज्ञानना प्रभावथी तेमणे गणधर पद उपार्जन कर्युं छे. वळी संग्रांम सोनीए सोनाना अक्षरे पुस्तको लखाव्यां हतां. आवा आवा अनेक भाग्यशाळी पुरुषोए ज्ञान वृद्धिने अर्थे पुस्तको छखाव्यां अने साचवी राख्यां तो आजे मार्ग चाछे छें. जो पूर्व पुरुषोए ए ज्ञान छखाववानी तथा साचववानी उपेक्षा करी होत तो आज जे पुस्तको जोइए छीए ते देखवा वखत पण न आवत. आपणा वखतमां केटलांक पुस्तको जीर्ण थइने नष्ट थइ गयां, केटलांएक पुस्तको मुसलमानोए नष्ट कर्यां ने जुन रह्यां तेमांथी एक लाख साडत्रीस हजारने आसरे विलायत गयां. हवे जुन पुस्तक रह्यां छे. तेनो जीणोंद्धार नहि थाय तो शासन पृवृति शी रीते चालरे तेनो उंडो विचार करवो जोइए. धर्मनो आधारज शास्त्र छे. माटे ए काम उपर बहुज लक्ष देवानुं छे. आत्मानो मुख्य गुण केवळ ज्ञान छे. ते गुण अवरायो छे, ते आवरण क्षय थवानां साधन ज्ञान भणवुं, ज्ञान भणाववुं, भणवामां सहाय आपवी, ज्ञानवंत पुरुषोनो विनय करवो, बहुमान करवुं, ज्ञान लखाववुं, ज्ञाननी संभाळ राखवी अने ज्ञान सदाकाळ अवस्थित रहे एम करवुं ए छे. एथी ज्ञानावरणीय कर्म क्षय पामरो ने आत्मानो गुण प्रगट थरो. जे जे सुख आ दुनियामां मळे छे ते पण शास्त्र आधारे पूर्वे शुभ करणी करी छे तेनांज फळ छे. हवे पण शास्त्र आधारे करीशं, तो फळ मळरो. आवां सुख आपवानां निमित्त जे शास्त्र छे ते शास्त्र आपणने परम प्रियवल्लभ होवां जोइए, तो पछी तेनुं रखोपु करवाने केम मनन थवुं जोइए. जेने थोडा काळमां ज्ञान थवानुं छे तेने तो ज्ञानना काममां द्रव्य खर्चवानु अवइय मन थरोज. जेने ज्ञान प्राप्त थवाने छांबो काळ छागवानो हरो तेनेज बीजा काममां र्फ्चवानु मन थशे. जेनुं चित्त कर्म खपाववा विषे वर्त्ते छे. ते पुरुष तो पोतानुं खर्च

काढतां जे पैसा वधरो ते ज्ञानना काममा खर्चरो. खर्च करवो ते पण विधियुक्त करवो जोइए. पुस्तको ऌखाववां ते शुद्ध ऌखाववां. पुस्तकोना बालावबोध हाल थाय छे ते अशुद्ध थाय छे. पूर्वाचार्यना अभिप्राय करी जाय छे. तेवा न्याचना प्रंथोनां जे तत्व छे ते तत्व फेरफार थइ जाय तो धर्मनुं स्वरुपज फरी जाय. ब्राह्मणो भाषांतर करे छे पण तेमने जो खरां तत्व समजायां होय तो ते अंगिकार केम न करे ? पण खरां समजायां नथी तेथी अंगिकार करता नथी. तो ते लोक भाषांतर पण खरां केम करी शकरो ? माटे आपणां तत्वो जाळववा सारु न्यायना ग्रंथोनां भाषांतर कराववांज नहीं ने करावशो तो डाभने बद्छे टोटो थरो. चारित्रादिकनां भाषांतर कराववामां मारो विचार वि-रुद्ध नथी. माटे आत्मार्थीओए जरुर जेम सारी रीते ज्ञाननो उद्धार थाय तेम उद्यम करवो. आपणे त्यां वराना प्रसंग आवे छे, त्यारे पासे पैसा नथी होता तो देवुं क-रीने पण वरो करीए छीए. जो सांसारिक काम करतां आपणने धर्म वछभ होय तो ज्ञानना काममां आपणी पासे पैसा होय ते छतां केम न वापरीए ? माटे वछभतानी खामी छे. हवे ते खामी काढवी होय तो तन मन अने धनथी ज्ञाननी बह मानता करवीज जोइए. मारी नानी उमर हती, त्यारथी ज्ञानना काममां पैसा खर्चवानी मने इच्छा थती हती, तेना प्रतापेज आ कांइक बोलवानी शक्ति आवी छे. माटे आप साहेबने विनंती करुं छुं के, जे माणस धनवान छे तेमणे धननो व्यय करी ज्ञान वृद्धि थाय तेम करवुं अने बीजा माणसो छे तेमणे ज्ञाननुं रक्षण थाय एवी रारीरनी महेनत करवी. हवे जीर्णोद्धार करवा सारु कॉन्फरन्स ठराव करे छे ते ठरावने अमलमां मूकवा माटे आपणे मदद करवी जरुर छे, माटे जे जे गामना प्र-तिनिधियो अत्रे पधारेला छे, तेमणे पोताना गामनां पुस्तकोनी टीप तैयार करवी ने तेमां पुस्तकनुं नाम, पुस्तक कत्तीनुं नाम, जे साल्यमां पुस्तक रचायुं होय ते साल, जे वरसमां पुस्तक लखायुं होय ते साल, जीर्ण थयुं छे के सारी स्थितीमां छे, एवा आसन राखवां अने एवी रीतनां छीष्टो तैयार करावीने जनरल सेक्रेटरी साहेबने मोकली आपशो तो पछी ते सर्वे एकत्र करीने एक बुक छापशे. तेथी जे जे देशमां जे जे पुस्तक नहीं हरो ते मंगावीने तेनी नकले कराववी, अगर छपाववी सुगम पडरो. आ फरज डेलीगेटोने जरुर बजाववानी छे. माटे आपणा देशमां जइ पोताना गाममां तथा आसपासना गाममां ज्यां ज्यां पुस्तको होय त्यां त्यांन लीष्टो तैयार 94

#### ( ? ? ? )

करवाने उजमाल थवुं जोइए. अने पछी जे जे पुस्तको जीर्ण थयां छे ते लखाववां जोइए. न्यायना ग्रंथो अने सूत्रो मूल तथा निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी अने टीका साथेज जे भाषामां छे तेज भाषामां शुद्ध करी छपाय तो ते सारी वात छे. तन मन ने धनथी ज्ञानेदारना काममां जे उजमाल थरो ते थोडा काळमां ज्ञानावरणीय कर्म

नष्ट करी केवळज्ञान केवळ दर्शन पामी मोक्षनी पदवी मेळवरो. ( ताळीओ. )

### (११९)

# निशाणी १४.

## जुनागढना मि. दोलतचंद पुरुषोत्तम बरोडीआनुं भाषण.

------

### -श्रोक∙

### स जयति परमात्मा केवळ ज्ञान मूर्त्तिः दलित निखिल कर्मा शाश्वतानंद मग्नः हृदय कमलमन्त र्यः सदालोक्यमानः वितरति च मुमुक्षो मौंक्षलक्ष्मी प्रसन्नः

आ त्रीजी जैन कॉर्न्फरन्समां आप साहेबोनी हजुर प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन शिल्लालेखो उपर वे वोल्ल वोल्लवाने मने श्रीमंत सेनाखासखेल समशेर वहादुर महाराजा शीयाजीरावनी राजधानीमां अवकाश मळ्यो छे तेथी हुं अत्यंत भाग्य-शाल्री तथा आंनदित थयो छुं. दुनिआना कोइ पण देशनो इतिहास जाळवी राखवा माटे तेमज तेमां थइ गयेला राज्यादिकना वर्णनमां अजवाळुं पाडवा माटे शिलालेखो, पुस्तको, सिक्काओ, मकानो ताम्रपत्रो विगेरे घणांज अगत्यनां साधनो छे. मीसर देशना पीरामीड जेवा गंजावर दुनिआमां नवाइ उत्पन्न करे एवां मकानो पण सर्वे भक्षी अनयातने काळने आधीन थाय छे तो बीजां बांधकामोनी तो शी गणना ? पीरा-मीड जेवी पण आश्चर्यकारक वस्तुओ जेने आपणे हाल आ जगत्मां हयाती ध रावती जोइए छीए ते पण हजारो वर्ष पछी जमीनदोस्त थइ जशे अने तेनी एक पण निशाणी रहेशे नहीं. राजाओनी निशाणीओवाळा सिक्ताओ पण दटाइ घसाइ नाश पामे छे. पुस्तको अने लखेलां पानांओ पण काळांतरे काळने वश थइ तेनो पण नाश थाय छे अने तेज प्रमाणे प्राचीन अने अर्वाचीन शिलालेखोनुं पण तेवीज रीते निर्मूछन थवानो संभव छे. अने ताम्रपत्रो पण काळने आधीन थाय छे. आ **वा**वतमां मनुष्यजात काळ सामे टक्कर झी**ळवाने माटे गमे तेटला प्रयत्नो क**रशे तोपण ते बधां निष्कळ थवानां. आ मंडपनी अंदर हजारो भाइओ तथा बहेनोए **पोतानी उमदा हाजरी आपे**ळी छे तेमांनुं एक पण मनुष्य सो वरस पछी हरो ?

जे मव्य मंडप आपणे जोड़ने आपणी आंखोने ठारीए छीए ते मंडपनो थोडा दिवस पछी कंइ पत्तो रहेरो ? हालमां दुनियामां हजारी रोहेर अने लाखी मकानो तेमज करोडो मनुष्योनी स्थिति आजथी पांचेक हजार वरस पछी केवी थरो तेनी चितार आपणा रुयालमां आवी शकतो नथी. पण एटलुं तो खरुंन छे के, धर्म फक्त निश्चळ छे अने धर्मथीज सुखर्ना प्राप्ति थाय छे अने परंपराए स्वर्ग अने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. शिलालेखोनो जणिद्धिार करवो, तेनी नकलो कराववी, तेनां भाषांतर करवो. अने पुस्तकना आकारमां छपाववां ए आपणी फरजोमांनी एक फरज छे. आ शिललेखोथी आपणी कोमना इतिहासमां तेमज गुजरात आदि देशोना इतिहासमां अने आपणा देरांसरो तथा तेमने लाखो अने करोडो हपियाना खर्चे बंधावनार पुरुषोना झतिहासमां आपणने घणं जाणवानुं मळे छे, तो आवा शिलालेखोनुं संरक्षण करवुं अने तेनी असल जेवीज नकलो अने भाषांतरो तैयार करवां ते जरूरनुं छे. अने मुंबईनी बीजी जैन कॅान्फरन्स तेमज वडोद्रानी आ त्रीजी जैन कॉन्फरन्समां मारा भाषणनों पण एज उद्देश छे. गये वर्ष मारा हाथमां लीघेला विषय विषे में केटलुंक विवेचन कर्युं हतुं तेमज मारी मासे जे शिलालेखों छे ते बीजी कॉन्फरन्सना प्रमुख साहेबने अने ते वखतनी रिसे-प्शन कमीटीना प्रमुख साहेबने अने बीजा आगेवान गृहस्थोने बताववामां आव्या इता अने ते संबंधी मद्द आपवा केटलाएक उदार झेठीआओए पोतानी इच्छा द्र्शावी हती पण अफसोस ! के मरहुम रोठ फकीरचंद प्रेमचंद के जे आपणी जैन को-मनो एक हीरो हतो तेना अचानक परलोक गमनथी मारी आशामां एक मोटं विघ आवी पड्युं तो आशा छे के, बीजा संगवित गृहस्थो आ काममां मने तन, मन अने धनधी मदद आपशे तो आ काम यथाशक्ति हुं पार पाईी शकीश एवी मारी खात्री छे. छारण के आ विषयमां जो के लेख उतारवामां, तेने एकठा करवामां अने भाषांतर करवामां घणां वर्षथी हुं प्रयत्न करूं छुं अने मारी साथे संबंध धरावनारा अनेक सत्पुरुषोनी संमत्ति अने सहायता छे, अने तेओ दिन प्रतिदिन मने उत्तेजन अने अनुमोदन आपता आव्या छे. तोपण आ काममां द्रव्यनी खास जरूर छे. हालमां मारी पासे श्री शत्रुं जय, गिरनार, राणकपूर विगेरेना शिलालेखो छे अने तेनां भाषां-तरो पण में जाते करी मारी पासे तैयार राखेलां छे तो तेने छपाबी जाहेरातमां छाववाथी घणोज फायदो थशे. माटे आ विषय उपर हुं प्रमुख साहेवनुं, तेमज हिंदु-स्तानना जुदा जुदा प्रदेशमांथी आवेला डेलीगेट साहेबोनुं खास ध्यान खेंचवानी रजा छउं छं अने अरज गुजारू छं के, हरेक प्रकारे आ काममां मदद आषी आ काम जैम बने तेम जलदी पार पडे एवी गोठवण यथाशक्ति करशो. आ वखते मारे आपने जणाववुं नोइए के, श्रीआबुजीना शिलालेखो मेळववाने माटे में वणो प्रयत्न करेले छे, अने श्रीआबुजीमां ते लेखोने वांचीने तेनी नकल करवानुं काम में उठाव्युं हतुं पण केटलीक अगवडने लीधे ते काम बनी शक्युं नथी. आबुजीना शिलालेखोनी नकले मेळववा माटे शीरोहीना श्रीसंवने तेमज मरहुम मि. फकीरचंद प्रेमचंद तथा शेठ लालभाई दलपतभाई तथा मि. बाळाभाई मंछाराम आदि सद्गृहस्थोनी मारफत पत्रो लखावी तेमज भलामण करावी में आजसुधी मेहेनत करेल छे. तो आशा छे के. ते संबंधी लागतावळगता साहेबो ते शिलालेखोनी नकले मने मळे एवी मेहेरबानी करशे एवी उमेद राखुं छुं. (ताळीओ).

00000000

# ( ? ? < )

# निशाणी १५.

ॐ नमो तिथ्थरस.

प्राचीन शोधखोळनी जरूरियात विषे मोरबीवाळा मि. मनसुख कीरतचंदे आपेऌं भाषण.

मे. प्रमुख साहेब, स्वधर्मी बंधुओ अने बहेनो !

प्राचीन शोबखोळनो विषय जेटलो विकट छे तेटलो अगत्यनो छे. समस्त जैन कोमना प्रतिनिधिनी बनेली आ मव्य महासभामां मारे आ विषयपर कंइ बोलवुं पडरेा एवो मने स्वप्ने पण रूयाल न हतो. पण ज्यारे पावित्र श्रीसंघनी मने अणचिन्तवी आज्ञा थइ त्यारे ते हुं माथे चडावुं छुं. अने मने आशा छे के, तीर्थंकरने पण बह मान्य एवा पवित्र श्रीसंघनी कृपाथी एनी आज्ञा पार पाडी राकीश. बंधुओ ! प्राचीन शोघखोळनी जरूरियात बाबतमां आपणा बंधु मि. बरोडीया दरखास्त ब्राव्या छे; तेने अनुमोदन आपवा शिवाय बीजुं विषेश करवानुं मारे नहि रहे. बंधुओ ! मनुष्यभव बहु दुर्ऌभ छे, एं दुर्ऌभ भव कदाच मळे पण तेनुं सार्थक करवं एथी पण दुर्लभ छे. आ देहनी अंदर रहेल आत्मानो कर्मथी मोक्ष करतो, ए आ अमुल्य दुर्लभ मनुष्यदेहनुं परमसार्थक छे. बंघुओ ! जगतितळ उपर वर्तता बधा धर्मो आवी रोते उपदेशे छे. अत्रे हुं तत्वज्ञाननी उंडी खीणमां उतरवा मागतो नथी; पण आपने कहेतुं योग्य छे, अने आप खचीत मानजो के, मनुष्य भवना यथार्थ सार्थक माटे कोइपण धर्म यथार्थ अविरोधी अविच्छिन बोध आपतो होय तो ते पवित्र श्रीजैनधर्म छे. बंधुओे! आवा एक पवित्र धर्मने अंगे रहेली प्राचीन शोध खोळो खंडिएरो, शिललेखो, हस्तपत्रो, ताम्रपत्रो, शिक्का, मंदिरो, गुफाओ आ-दिनी शोधखोळो केटली बधी उपयोगी थशे ए आपे विचारवानुं छे. बंधुओ! ए शोध खोळो जैनोनी तेना धर्मनी पाचीन तवारिख उपर, तेनी स्थिति उपर, जाहोजलाली उपर, खचीत अजवाळुं पाडरो. गृहस्थो ! प्राचीन ताम्रपत्रो, शीलालेखो आदि इतिहासिक बाबत जेमां आपणे पछात छीए, तेमां घणो उपयोगी भाग आपरो. तीर्थंकर भग-

वाननी प्रतिमाना पद्मासन निचेना भागपर जे जे छेखो होय छे, छांछन होय छे, ते ते तीर्थंकरनी ओळखाण आपवा उपरांत ते बिंब क्यारे भरायां, क्यां भरायां, कोणे भराव्यां, कया आचार्ये, ए आदि विगत पुरी पाडतां होवाथी, आपणने ऐति-हासिक मोटो लाभ थरो. विषेश, बंधुओ ! कागळपत्र उपर लखाएल्य लेखो एकदम नाश पामे खरा, पण पथ्थर के धातु उपर कोतरेला तेमां पण आरसामां कोतरेला लेखो षणा काळसुधी टके छे, अने तेथी तेओ कागळपर छखाएछी नोंधो करतां वधारे उपयोगी होय छे. तो बंधुओ ! एवा लेखो आदिनी शोधो कराववी बहु आवश्यक छे. बंधुओ ! ए शोध खोळोथी प्राचीन स्थितीनां ज्ञान उपरांत पुद्गलीक अनित्यतानो रूयाल आवशे; जे परम कल्याणना एक अमोघ कारणरुप थशे. बंधुओ ! वळी शोध खोळमांथी घणुं धणुं अवनवुं जाणवानुं, सत्यासत्यना निर्णयनुं बनी आवशे. आ स्थळे मने अत्रे भराएला लाक्षणिक प्रदर्शनमां मूकेली चार संजीवनी न्यायना दृष्टांतनी छवी याद आवे छे. बंधुओ ! आपे बधाए ए छवी जोइ हरो, ए जोवा आपने भलामण करवी योग्य छे. गृहस्थो ! कळीकाळ सर्वज्ञ श्रीमद् हेमचंद्राचार्यने एक वखत गुजरातना राजा महान् सिद्धराज जयसिंहे प्रश्न कर्युं के, महाराज ! ज-गतमां आटला बधा धर्मो छे ते बधा धर्मनो ने तत्वनो उपदेश करे छे तो तेम सत्य तत्व शुं अने ते शामां छे? श्रीमद् हेमसूरी जे जैनना अनन्य पवित्र आचार्य हता, तेओ धारत तो एकी अवाजे कही शकत के, सत्य तत्व श्रीजैनधर्ममां छे. अने राजा सिद्धराज ए अंगिकार पण करत, पण समयना जाण अने निष्पक्षपात बुद्धिना धणी निरपेक्षी एवा श्रीमद् हेमचंद्राचार्ये रांखपुराणमांथी आपने जणावेळ चार संजीवनी यशोमतिनी वात कही संभळावी. गृहस्थो ! मरहुम डॉ. पीटरसने पुनानी डॅकन कॉल्रेजमां पोताना शिष्योने आ वात लेक्चररुपे नव वरस उपर कही हती. कोइ यशोमति नामनी स्त्रीने तेनो धणी तेनी बहेनपणी साथे यथेच्छ वर्तवा दे नहीं, तेथी ते बहेनपणीए तेने पोताना पतिने बळदमां वैक्रिय करवानी औषधि बतावी. यशोमतिए औषधिना प्रयोगथी पोताना पतिने वृषभ करी नांख्यो; पण गमे तेवी तोए पतिपरायण स्त्री होवाथी ते पस्तावा मंडी. वृषभ थएछा पोताना पतिने फरी पुरुषनुंरुप आपवानुं ते के तेनी सखी जाणतां न हता. आथी यशोमति बहु बहु खेद पामवा लागी. पछी पत्निधर्म मुजब हमेशा खेद पामती ते पोताना पतिने वनमां चरवा छइ जती. एक दिवस अंतरीक्षमां कोइ विद्याधर पोतानी स्त्रीने वात वातमां कहेतो हतो के, आ अमूक झाड तळे, औषधि-

यो छे तेमां एक औषधी एवी छे के, जानवर ते चरे तो मनुष्यरुप क्षेत्र, यशोमतिए आ वात सांभळी लीधी अने पोताना बळद थयेल पतिने ते झाड तके चराववा लइ गइ. ते झाड तळे रहेल झाडपान चरतां विद्याधरे जणावेल औषधी फण ते बळ-दना चरवामां ञ्जावतां ते पोतानुं पूर्वे पुरुषरुप पाम्यो. तेम जगत्ना वधा धर्मोनुं लक्ष-पूर्वक शोधन दोहन करतां तत्व मळशे. बंधुओ ! श्रीमड् हेमचंद्राचार्ये चार सं-जीवनीनी कथा सिद्धराजने कही तेनो उपनय आपणी शोधखोळनी बाबतने पण घणो उपयोगी छे. शोधखोळथी पण तत्व तरी आवशे. माटे बंधुओ ए अति अ-गत्यनी छे. प्राचीन शोधखोळनो विषय हिंदुस्तानमां नवा जेवोज गणी शकाय. तेमां पण आपणे जैनो तो ए बाबतमां बहु पछात गणाइए. ए बाबतनी शरुआतनुं तेम तेने हिंदमां थोडुं घणुं दाखल कर्यानुं मान यूरोपियन पंडितोने, एइयांटिक सो-साइटीने अने थोडा घणा हिंदु शोधकने घटे छे. गृहस्थों ! जनरल कनिंगहाम, डा. बुल्लर, लुइराइस, डॉ. वीबर, डॉ. होर्नेल, आदि विद्वान पंडितो, आ बघाए प्रा-चीन शोधखोळोपर घणुं अनवाळुं नांख्युं छे. हिंदमांथी पण महूम डॉ. भगवानलाल. डॉ. भाउ दानी, डॉ. भंडारकर, मि. रतिराम दवे, शास्त्री हरि दत्त, महाराज श्री आत्मारामजी, तेमज यूरोपियनेामां, डॉ. पीटरसने आ बाबतमां बहु उपयोगी फाळो आप्यो छे. इन्डियन एन्टीक्वरी बोम्बे एइयाटिक सोसाइटीना रिपोर्टी विगेरे अने डॉ. भाउ दाजीना एन्शन्ट रीसचींस आ वगेरेए प्राचीन इतिहास आदि उपर घणो प्रकाश नांख्यो छे, छतां गृहस्थाे ! प्राचीन शोध खोळनुं एटलुं बधु बहोळुं अने वि-शाळ क्षेत्र पड्युं छे,----उपर जणावेली बाबतो तो घणी घणी ओछी गणाय.

गृहस्थो ! मथुरामां एक जीन मंदिरमां जनरल कनिंगहामे एक लेख शोध्यो छे तेमां वीरमगवानना निर्वाण पछीनो तरतनो काळ लखेल छे. श्रीमद् आत्माराम-जीए लखेल प्रश्नोत्तरोमां आ आखो लेख आपेल छे. मारवाडमां श्रीवीरप्रभुना जीनालयमां एक लेख वीरप्रभुजी पछी सीतेर वरसनो छे अने तेमां कोइ रत्नशेखर-सूरिनुं नाम छे, तेमां कांइ उपदेश छे. गृहस्थो ! आ बधी शोधोथी एक बीजो षण अगत्यनो निर्णय अने समाधान थाय एम छे. आपणा स्थानकवासी बंधुओ प्रतिमानो निषेध करे छे, अने प्रतिमा के जीन मंदिर नहीं होवानो घणा लांबा काळनो दावो करे छे; अने कहे छे के, प्रतिमा आराधकतो हमणांज थया छे. तेमने आ लेखो घणा बोधनुं अने सत्यना निर्णयनुं, अने कदाग्रह छोडी दई परम उपकारक एवां प्रति- माना आलंबननुं निश्चय करावनार कारण थवा योग्य छे. बंधुओ ! शोधखोळ विनान सहेजे उपली बाबता मळी आवी छे, तो खास हेतुपूर्वक जो शोभो थाय तो घणो लाभ थाय. बंधुओ ! आपे श्रीभद्रेश्वर ( कच्छ मुद्रार्थी छ गाउ ) जोयं हरो; अथवा एनं नाम सांभळ्यं हरो. त्रण दायका उपर तो त्यां टींबा टेकरा ने खंडियरो देखातां हतां, पण अनायासे त्यांथी पसार थता कोइ यतिने ए मंदिरनो भाग जोवामां आव्यो, ने खोदावतां हाल एक प्राचीन भव्य मंदिर तेमांथी मळी आव्युं छे. तेमां वीरप्रभुनी प्राचीन भव्य प्रतिमा छे. जीर्ण देरीयो फरती छे ते हाल समरावी छे. मंदिर जमी-नमां उंडुं पेसी गयुं छे. गृहस्था ! पाटण, वळा पूर्वनी कल्बाणक भूमि, कावी~गांधार आदि अनेक प्राचीन स्थळो छे के ज्यांथी अवार नवार प्राचीन हेखो प्रतिमाओ शिका आदि मळी आवे छे. आवां स्थळोनी शोधस्रोळ करावी, ते शोधस्रोळना रिपोर्टी बहार पाडवानी, ते शोधखोळो जाळवी राखवानी, समराववानी बहु बहु अगत्य छे. बंधुओ ! मुंबई पासेनी कॅनेरी केव्झ ( गुफाओ ), ॲल्फन्टा केव्झ, एजन्टा केव्झ, ए वगेरे पण घणो प्रकाश आपे एम छे. मदास पासे कोंजेवरमथी त्रण माइल छेटे एक प्राचीन भव्य जीन मंदिर छे. आ मंदिर दिगंबरी छे छतां तत्वनी दृष्टिए दिगंबर श्वेतांबरमां भेद न होवाथी एनी खोळ बहु लाभकारक छे. त्यां विक्रम संवत पहेला सैकामां थइ गएल महान कुंदुकुंदाचार्यनां पगलां छे; अने तेना वखतना लेखो छे. त्यां पंदरसो वरसनी जुनी एक श्रीकल्प सूत्रनी प्रत छे. अजायबी जेवुं ए छे के, हिंदमां आवेलां एवां प्राचीन जैन स्थळनी आपणने हींदी जैनने खबर नथी, ज्यारे ज्यारे त्यां खास जोवा खातर फान्स, अमेरिका, वेर दूरथी ॲन्टी कवेरीयन्स ( शोधलोळ करनारा) आवे छे. गृहस्थो ! दक्षिणमां तांजोरमां एक प्राचीन पुस्तका-लय छे, त्यां छ हनार ताडपत्र उपर लखेला प्राचीन लेखो छे. ते पुस्तकालय बधा माटे खुल्लुं छे. तेनेा त्यां उपयोग थइ शके छे; त्यांथी लइ जवा देता नथी. मैसुरमां बेंग्लेर पासे अवण बेल्गुल स्थान छे, त्यां श्री बाहुबळ स्वामीनी ( गोमट्टेश्वरनी ) अति अद्भुत भव्य महान प्रतिमा ( colossal statue ) छे ते सतिर फोट----चौद मांथोडां उंच छे. जंगलमां भव्य देखाय छे. ते काउसग मुद्रा छे. तेनी बन्ने बाजुए प्राचीन लेखो छे. ते मैसुर गवर्मेन्टना सेकेटरी लुइ राइसे इंग्रेजीमां मूळ साथे प्रगट कर्या छे. गृहस्था ! जे भव्य प्रतिमानी आपणने खबर नथी. तेना पद्मासनना वचला भागमां उभा रही विदेशी लोको फोटोप्राफ पण पडावे छे. गृहस्थे, ते गोमट्टेश्वरना पगनो अंगुठो नाळीयेर जेवडे। छे ए उपरथी आप ख्याल करशो के, ए

٩Ę

प्रतिमा ते केवडी भव्य हरो. गृहस्थो ! आतो स्थळ जाणितुं थयुं, पण अणजाण्यां एवां अनेक स्थळ हशे, के जे हजी अंधारामां छे, ते बधानी शोधो करवी आवश्यक छे. बंधुओ ! आ अत्रे भरायेला प्रदर्शनमां केटलाक हस्त लेखो छे ते लगभग १००० वरस उपरांतना छे. ते आपणने एक नवी बाबत शीखवे छे; ते ए के पुस्तको घणा लांबा कालपूर्वे पण लखातां. डॉ. जेकोंबीने पण ए शंका थड छे के, जैनशास्त्रो क्यारे लखायां हरो. बंधुओ ! आनो आपणे कंइ चोकस निर्णय करी राकीये एम नथी, पण आवी शोधखोळो आपणने अमुक निर्णय करवामां सहाय थाय छे. प्राचीन शोधखोळो आपणा हक्कमां पण मोटेा भाग बजावे छे. अकबर तथा जहांगीरना वख-तमां जैनोने मळेला ताम्रपत्रो जो हैयात नहत, अथवा न मळ्यां हत, तो पावित्र तीर्थ श्रीसमेतशिखर पासे उघडेछुं चरबीनुं कारखानुं कदाच बंध न थात, अने जैनोने। हक, दयामय हक कदाच त्यां तो डूबत. बंधुओ ! आम प्राचीन छेलो, शीछा छेलो, ताम्रवत्रो आदि बहु उपयोगी छे; तेनी शोधलोळो विषेश उपयोगी छे, अने ते शोध-खोळ जाळवी राखी तेने समराववुं विषेश विशेष उपयोगी छे. गृहस्थो, पूर्वना धनाढ्य पुरुषोए आमन कर्युं छे; जावडशाह, विमलशाह वस्तुपाळ आदिए आज कम लीघो छे. श्री धंधुका ज्यां श्रीमद् हेमसूरि जन्म्या हता, त्यां तेनुं पालणुं ए नामे स्थळ छे; त्यां हाल मसीद छे. श्री खंबातमां एक मंदिर हतुं, तेने बदले हाल मसीद छे; जामनगरमां एक मंदिर बदले शिवालय छे. वढवाणमां पाडावसीमां पाडापेळमां एक प्राचीन देरासरनी जग्याए हाल एक मसीद छे. बंघुओ ! आ बधी शोधले।ळथी खबर पडी छे. ए जो बने अने उद्वारी शकाय तो कल्याणनुं कारण छे. आपणे श्री सिद्धा-चळ आदि घणां स्थळोनां मंदिरोपर मसीदनो आकार जोइजुं. आ आपणने आपणा जैन भाइओनां डहापण, समयसूचकता, अने धीरजनो खसुस पुरावो पुरो पाडे छे. ज्यारे एम धार्युं के, मुसलमानो मंदिर तोडरो त्यारे समय विचारी तेओए मसदिनी आकृति दाखल करी. गृहस्था, शोधलाळने अंगे आपणे आ जाणी शकीये छीए. बंधुओ ! आम प्राचीन शोधखोळनी अगत्यता, ते जाळवी राखी, ते समराववानी अग-त्यता बतावी छे हवे आपणे ए माटेना उपायो मूचववा योग्य छे.

गृहस्थो ! आपणा बंधु मि. कापडीयाए गइ काले 'फाइलोलोजीक लेकचरो ' अर्थात भाषा आदि संबंधी भाषणो कराववानुं सूचव्युं हतुं; तेमज ते साथे प्राचीन शोधखोळने लगतां भाषणो अपाववां जरुरनां छे. गृहस्थो ! इंग्लंड यूरोपमां आ विषयतो एटलो बचे। अगत्यनो गणाय छे के, ते माटे खास प्रोकेसरो राखे छे. तेने सारा पगार आपी तेओ पासे जाहेर भाषणो करावे छे. आपणामां प्राचीन शोधखो-लगे ख्याल पण नथी; पण हवे केळवणीना प्रचारथी एवी कदर आपणे समजता थइशुं. गृहस्थो ! पाश्चात्य विद्वाने। आ बाबतने एटली वधी अगत्यनी गणे छे के नीचेनो एक दाखलो आपणने एने। सहज ख्याल आपशे. आपणा मुंबई इलाकानो एक आगलो हाकेम सर जेम्स फर्ग्युतन खंबातमां कोइ सादा गृहस्थने घेर प्राचीन लेखो मेळव्वा तथा शोधवा जाते पधार्या हता. आ वात आपणा एक हितेषी डॉ. बुल्हरना वखतमां बनी हती. गृहस्थो, आवी अगत्यनी बाबत तेओ ' शोधखोळ 'ने गणे छे माटे.

(१) प्राचीन शोवलोळनी लेकचर शीपो स्थापती.

(२) जैन विद्वानोने सारा पगारथी खास आ शोधखोळ माटे राखवा, अने तेमनी पासेथी रीपोर्टी करावी तेनां भाषणो अगाववां तथा ते बाहार पाडवां.

(२) प्राचीन शोवखोळने छगता इनामी निर्ववो छखाववा अने सारा निर्वधवाळाने इनाम आपी ते छपावी प्रगट करवा.

( ४ ) छेवटे, बंधुओ ! मुंबई के अन्ने एक प्राचीन शोवखोळने लगतुं तेना साहित्यनुं एक ' म्युझीयम ' करतुं ( Museum for antiquaries archælogy &c. ) गृहस्थो, हिंदमां आवां खातानी बहु खोट छे. यूरोपियन के देशी पांडेतने खास हिंदनी प्राचीन बाबतोनो अभ्यास करवो होय तो तेने जर्मनी के इंग्लंडमां British Museum नो लाप लेवो पडे छे. अर्थात त्यां हिंदनी प्राचीन बाबतो लगतां एटलां बधां प्रदर्शनो, तथा साहित्यो छे के, खुद हिंदनी बाबत माटे त्यां जतां लाभ थाय छे. बंधुओ ! जो के हिंदनी जे जे शोधखोळो करवी जोइए, ते जो थाय तो जे थह छे, ते कांइ लेखामांज न आवे. माटे शोधखोळनी बहु जरूर छे. अने मुंबईमां के नामदार सयाजीरावना आ राजधानीना स्थळ वडोदरामां एक शोव-खोळने लगतुं ' म्युझीयम ' स्थापवानी जरूर छे. नामदार गायकवाड जेवा सुज्ञ विद्याविलासी प्रजाप्रिय सर सीयाजीराव आपणने चोकस मदद आपशे, अने एओ-श्रीना राज्यमां भरायेल आ कॉन्फरन्सनुं स्मरण पण रहेशे. माटे एतुं ' Museum' स्थापवुं योग्य छे. केल्ह गीथी आ मे सामान्य उपाये बताच्या छे. केल्ह गीथी आ वंधु नर आववा योग्य छे. छेवटे आ बधी शोवसोळोनुं सरूं सार्थक तो त्यारेज थशे के ज्यारे आ देहमां घणा काळथी संताइ रहेलुं आत्म द्रव्य प्रगट थाय, तेनी शोध थाय, अने ते प्राप्त थइ अखंड सुख मेळवी ले. बंधुओ ! प्रभु कुपाथी ए थशे, अने प्राचीन शोधसोळनी जरूरियातना आ मारा अनुमोदनमां आप एकी अवाजे माग छइ मने बेसी जवा रजा आपशो ( ताळीओ )

## (१२९)

# निशाणी १६.

# डीरेक्टरी विषे मि. भगुभाइ फतेहचंद कारभारीनुं भाषण.

#### CAR.SR

आने मारा हाथमां डीरेक्टरीना संबंधनो ठराव कॉन्फरन्सनी विषय मंडळी तरफथी मूकवामां आव्यो छे. गया वरसे आज सवाल में हाथमां घर्यो हतो अने ते वखते डीरेक्टरी एटले वही विगेरे में कह्युं हतुं. आर्धा डीरेक्टरीनी केटली जरुर छे ते पण में ते वखते कह्युं हतुं अने ते माटे अत्रे पिष्टपेसण न थाय तेटला सारं आप साहेबने अहेवाले कॉन्फरन्सनुं पानुं १६४ तेमज कॉन्फरन्स तरफथी छपाएला रिपोर्टनुं पानुं १३३ वांचवा हुं मलामण करुं छुं. आपणी कॉन्फरन्स तेमज जैन समाज अने जन समाज आवी डीरेक्टरीओनी आवश्यकता विचारवा लागी छे. आ सवाल आजे पंदर मासनो जुनो थयो छे अने आपणी कॉन्फरन्सनी ऑफिस तर-फथी आवी आपणी जैन डीरेक्टरी करवा वर्तमानपत्रोद्वारा जाहेर खबरो आ-पवामां आवी हती अने हुं आशा राखुं छुं के, आ कार्य कॉन्फरन्स तरफथी ज-लदी पार पडरो.

आपणा प्रेसिडंट साहेबे पोताना आरंभना भाषणमां पण डीरेक्टरीना संब-धमां कह्युं छे अने तेम कहेतां तेमणे भावनगरी भाइओना प्रयासने वखाण्यो छे. अल्लतां दरेक गामवाळा आवा प्रयास करे तो ते स्तृत्य छे. पण मारे कहेवुं जो-इए के दरेक गामवार डीरेक्टरी जुदी छपाववानी जरुर नथी केमके आवा नानां चे-पानीयां घणो वखत रहेतां नथी अने ते साचववां मुराकेल्ल पडे छे. ते साथे जोइती माहिती मेळववा माटे अनेक चोपानीयां जोवां पडतां होवाथी वखतनो पण ल्य वधारे थाय छे, आना संबंधमां कॉन्फरन्सद्वारा जे गृहस्थ के गृहस्थो डीरेक्टरी बनावे तेओ तरफ आवा गामो तरफ अमुक फॉरमो मोकल्लवामां आवे अने ते जो तेओ नमुना प्रमाणे भरी मोकलावे तो आ काम जल्लदी पार पडे.

भावनगर डीरेक्टरी बहार पड्या पछी केटलाक गामोवाळाए आवी डीरेक्टरी

षोते तैयार करवानो विचार कर्यो छे. अने तेना संबंधमां साणंद, खेडा विगेरेना के-टळाक गृहस्थो मने मळ्या हता. हवे ज्यारे आम छे त्यारे आवी डीरेक्टरीनी ज-रुरियात निर्विवाद साबीत थाय छे.

डीरेक्टरीमां वस्तीनुं प्रमाण हाल जो ते तैयार करवानां आवे तो नकी क-रवं महाकेल छे माटे ते संबंधमां अंदाज वस्तीन महवी. बली तमाम तीथींनी ह-कीकत तेना वहिवटदारी अने तेना वहीकट संबंधी धारा जॅन तेना अंगे. जालतां फंडो, वळी जूदी जूदी समाओ, तेमना आश्वको वगेरेनो तेमां समावेश थवा जोइए. बळी जूदी जूदी जातना जे जे जैनो तेमां रहेता होय ते संबंधी अने तेमना लग्न वि-गेरेना घाराओनं टंक वर्णन पण तेमां आवतुं जोइए. वळी धंघावार वर्गणी पण तेमां समाववी जोइए. आ साथे तमाम मुनिराजो, अने तेमना गच्छ विगेरेनी माहिती पण तेमां अवरुय आववी जोडए. वळी आपणा धर्मादा खाताओ, पांजरापोळो वि-गेरेनां फंडो, तेना वहीवटो अने तेना अंगे चालती व्यवस्थानुं सघळं ब्यान आवा पस्तकमां जरुर जणाववुं जोइए. आ साथे दरेक गामवार हकीकत तेमां गाम क्यां छे, तेनी हवा केवी छे अने तेमां व्यापारि स्थिति केवी छे ते विगेरे बताववुं. आ बधं कार्य करवामां एक माणसनुं काम नथी पण ते बधी हकीकत मेळववामां बधा भाइओनी जरुर छे अने आवी रीते ज्यारे सहाय थाय तोज आपणो डीरेक्टरीने बनावनार फतेहमंद नीवडे. वळी आवी डीरेक्टरी मारा समजवा प्रमाणे ८०० पःनानी ओछामां ओछी थाय अने ते एकवार छपाया पछी दर वर्षे के अमक वर्षना अंतरे ते बहार पाडवामां आवे तो घणुं सुगम अने उपयोगी थाय. छेत्रट आशा राखुं छूं के, आपणे चोथी कॉन्फरन्स माटे फरी मळीए ते पहेलां आ डीरे-क्टरी बहार पडेली जोवा आपणे भाग्यशाली नीवडीए. आटलुं कही हुं तमारी रुवरु नीचे प्रमाणे ठराव रज़ करुं छूं जे तमो तेने अनुमोदन मळ्या पछी स्वीकारशो. आ-पणी दरेक प्रकारनी स्थितिनो ख्याल आववा सारुं आपणा तीर्थो, मंदिरो, प्रतिमाओ, ज्ञानभंडारो. ग्रंथो, पाठशाळाओ, पुस्तकालयो, सभाओ, मंडलो, साध, साधवी, श्रावक अने श्राविकानी संख्या विगेरे बाबतनी एक डीरेक्टरीरुपे वखते। वखत नोंध थयानी आ कॉन्करन्स घणी जरुर धारे छे. ( ताळीओ )

## ( ७१७)

# নিহাাদা ৭৩.

डीरेक्टरीनी दरखास्तना टेकामां मि. जीवराव ओघवजी दोशीनुं भाषण.

मानवंत प्रेसीडेन्ट साहेब, भाइओ अने ब्हेनो,

आपणी आर्थिक ( Material ) सांसारिक ( Social ) अने धार्भिक स्थितिना यथावस्थित बोधने अर्थे जैन डीरेक्टरीनी खास आवश्यकता छे. आपणा जाहेर स्थेळोनी माहिती अर्थे पण डीरेक्टरीनी तेटलीज आवश्यकता छे. संसार अने धर्म संबंधी चोकस वर्तमान स्थिति जाण्या सिवाय उन्नतिना साधन योजवा तत्पर थवुं तेवा लुका ( Sand ) रेती—ना पाया उपर इमारत चणवा जेवुं छे. दरेक सुधरेली प्रजा अने कोमोमां आवा रीपोर्ट बहार पडे छे अने तेओनी उन्न. तिना साधनोद्वाराज शोधी कढाय छे.

आवी डीरेक्टरी एकज वखत करी अटकवानुं नथी, परंतु अमुक अमुक वरसने आंतरे करवाथी आपणी भूत अने वर्तमान स्थितिनो मुकावलो करी सकाशे. सरकारी वस्तीपत्रकमां जैन कोम माटे जुदुं मथाळुं राखवामां आवे छे परंतु आखा हिंदुस्ताननुं वस्ती पत्रक होवाथी भूलचूक थवानो संभव छे. विशेष आपणने उपयोगी घणा विषयो-मंदिरो ज्ञान भंडार आदि-संबंधी बिलकुल माहीती आपणने तेमांथी मळी शकती नथी. माटे जैन डीरेक्टरी जुदी थवानी खमुस जरुर छे.

डीरेक्टरीमां नीचली हकीकत नोंधावानी जरुर जणाय छेः—

# ( क ) लोको संबंधी.

(१) ज्ञाति. (२) गच्छ. (२) माणसनी कुल संख्या. (४) पुरुष, स्त्री, छोकरां, छोकरीओ. (९) कुंवारा, वरावेल, परणेल, विधुरस्त्री माटे योग्य शद्वो. (६) गुजराननुं साधन धंधो, नोकरी. (७) केळवणी. व्यवहारिक, धार्मिक. (८) अन्य रीमार्कस शारीरिक खोड विगेरे.

## (124)

# (ख) जाहेर स्थळो.

(१) मंदिरो. (२) ज्ञान मंडार. (२) उपाश्रयो. (४) जैन शाळाओ. (९) जैन सभाओ. (१) धर्म आचार्य.

(ग)

(१) साधुवर्ग. (२) साध्वीवर्ग. (२) यतिवर्ग.

पहेला खानामा जणावेल हकीकत जाणवाथी आपणी सांसारिक स्थितिनुं आपणने दिग्द्रीन थरो, अने बीजा खानामां दर्शावेल हककित उपरथी आपणा लोकोपयोगी स्थळोनुं यथायोग्य वर्णन मळवाथी ते गाईडरुपे थई पडरो.

जैन डीरेक्टरीनुं कार्य फतेहमंद उतारवा माटे घणी योजनाओ सूचववामां आवेछ छे. परंतु मारा मन प्रमाणे अमल जो केळवायेल अने उत्साही वर्ग माथे ले तो थोडा वखतमां अल्प खर्चे थइ शकशे. भावनगरमां थयेल डीरेक्टरी सभानुं बंधारण खास अनुकरण करवा योग्य छे. आटलुं वोली बेसवानी हुं रजा लउं छुं. (ताळीओ)

# वर्तमानपत्रोना अभिप्राय.

# **આ**ત્માન દ પ્રકાશ

માગશર, સંવત. ૧૯૬૧.

જૈન કોન્ફરન્સના તૃતીય વિજયુનું ગીત હરિગીત.

37 + Lo-

શ્રી જૈનના જયકાર નાદે ગગન ગાજ્ય ંગર્વથી, બનિ સુખદ સુ દર સત્સમાજે \* સરસ શાેભા સર્વથી; થઇ વિંજય વાઁણી વિજય વાજા વિજયકારી સાજનાે, વઽપત્તને વઽથી બન્યેા છે વિજય જૈન સમાજનેા. શુભ સંઘ ભારતવર્ષના એકત્ર થઇ આવી રહ્યો., સુધસિંહજી બહાદુર જેવા પ્રમુખથી ગાજી રહયેા; અતિ હર્ષથી ઉત્કર્ષ કીધા જૈનના હિત કાજના. વટપત્તને વટથી બન્યેા છે વિજય જૈન સમાજના. રંગે ઉમંગે મંડપે મહારાજ આપ પધારિયા. ગુર્જરપતિ જ્ય ગર્જનાથી પ્રેમ સાથ વધાવિયા; ત્યાં થઇ રહ્યાે જયકાર ગાયકવાડના શિરતાજનાે. વટપત્તને વટથી બન્યો છે વિજય જૈન સમાજના. યુવરાજ કત્તેહસિંહરાવતણા સુભાષિત બાેધથી, આભારી થઇ આહેત સમાંજ સ્વધર્મના શુભ શાધથી; આશ્રય મલ્યે৷ યશકારી ઉત્તમ સર્વ ગુર્જર રાજનાે, વટપત્તને વટથી બન્યેા છે વિજય જૈન સમાજનેા. કરૂણા કરી શ્રી કમલવિજયાચાર્ય આપ પધારિઆ. દિલદાર ડેલિગેટ ભારતવર્ષના સહુ તારિચ્યા; ઉપદેશથી આભાર માનાે સર્વ એ મુનિરાજનાે, વટપત્તને વટથી બન્યેા છે વિજ્ય જેન સમાજનાે. શ્રી વીરવિજયે તમ વિદારયું ધર્મના સુખદાયકે, જયવાંત કીધું જૈન શાસન જગ્તમાં મુનિ પાઠકે;

## ( ? 20 )

પરિવાર વિજયાન દના ઉપકારી સર્વ સમાજના; વટ્યત્તને વટથી બન્યો છે વિજ્ય જૈન સમાજના, ગાજ્યા ગિરાથી ગુર્જરેા હિંદી વધા ઊત્કર્ષથી, સાૈરાષ્ટ્ર વીરાે સુસ્વરે ઉચ્ચાર કરતા હર્ષથી; મરૂવીર ઢઢ્ઢા વાણીના નવરંગ જામ્યાે આજનાે, વટપત્તને વટથી બન્યેા છે વિજય જૈન સમાજના. સત્કાર કીધા સ્નેહથી વટપત્તને શ્રાવક જને. સાધમી<sup>©</sup> સેવા આચરી અતિર ગથી ઉજ્વલ મને; ડંકાે બજાવ્યાે દેશમાં કરી ચકિત સર્વ સભાજના, વટપત્તને વટથી બન્યાે છે વિજય જૈન સમાજના. ઘડી નિયમ નિર્મલ ઉદય કીધા જૈનના બહુ સંમતે, સંસારિ ધાર્મિક ઉન્નતિ કરવા મથે શુભ સંગતે; તે નિયમથી સહુ વર્ત્તજો જિન ભક્ત ભારતના જનેા, વટપત્તને વટથી બન્યો છે વિજ્ય જૈન સમાજના. મહનીય મંગલ રૂપ શાસન દેવતા જય આપંજે, જયવાંત જૈન સમાજ કેરા વિં<sup>દ</sup>ન સર્વે કા**ય**ેજા: અણહિલ્લપાટણમાં થજો અતિ વિજય જૈન સમાજના, વરપત્તને વરથી બન્યા છે વિજય જૈન સમાજના.



# અમદાવાદ તા ૪ ૧૨-૦૪. વડેાદરા ખાતે ત્રીજી જૈન ત્લેતાંબર કૉન્ફરન્સની ફત્તેહ. જૈન સાસનનાે વિજય.

ગુજરાતના વીરક્ષેત્ર શહેર વડાેદરા ખાતે ગયા મહીનાની તા૦ ૨૭-૨૮-૨૯ મી તારીખાએ મળેલી ત્રાજી જૈન શ્વેતાંબર કાેન્દ્રરન્સનાે હેવાલ અમે અન્યસ્થળે આપ્યાે છે તે ધ્યાન પૂર્વક વાંચવાની અમારા જૈન બધુઓને ભલામણ કરીએ છીએ. તેમાં થયેલા ઠરાવા તથા અપાયલાં ભાષણાે પૈકી શેઠ લાલભાઇ તથા મી૦ ગુલાબચદજી ઢઢુાના વિચા-રશીલ ભાષણાે વાંચવાથી હરકાઇ સુત્ર વાંચક તાે કાેન્દ્રરન્સની કૃતેહ થએલી ગણી જૈન શાસનતા વિજયજ થએલા ગણશે. એ અપૂર્વ કાેન્દ્રરન્સમાં સ્વામીભાઇઓની માેડી

\* સજ્જન ગૃહસ્થાેના સમાજમાં.

હાજરી અને ના• મહારાજા સયાજીરાવ જેવા નિપુણ રાજ્યકર્તાનું પધારવું તથા તે નામદાર જેવા એક કાબેલ નૃપતિનું જૈન ધર્મની પ્રાચીનતા અને શ્રેષ્ટતાને લગતું અભિપાયરપ સર્ટીક્રીકેટ કયા જૈન ખંધુને ગર્વીષ્ટ નહીં કરે ? હુમણાં સુધીએમજ અધારામાં કુટાલુ હતું કે જૈન ધર્મ બાહ ધર્મની શાખાજ છે. અને તે હમણાજ નીકળ્યાે છે. પરંતુ નાજ મહારાજા જેવા એક સ્કાલર ગણાતા રાજપતિએ જૈન ધર્મને બાહ કરતાં જીના જ-**ણાવી જૈન ધર્મના અભ્યાસિ વિદ્વાનાના મતને પુ**ષ્ટી આપીછે,તેમજ 'અહિ સા પરમાે ધર્મ'' આ મહા સુત્ર જે ધર્મનાે દ્રઢ સિદ્ધાંત છે તેવાેધર્મ અનાદિ અને અનુપમ હાે⊎ હજારોે કાળ⊷ અક્રની ઉથલપાથલે! થયા છતાં જૈન શાસન હળ્યુ તેમનું તેમ પોતાની સ્થીતિમાં કાયમન રહ્યું છે તે તેનેા વિજયજ સચવે છે. રાજમહેલમાંજ દુનીયાનેા છેડાે માનનારા નહીં પશુ સુરાપ અમેરિકા જેવા દેશમાં બ્રમજ કરી અંગ્રેછ સાહિત્યના મેદાનમાં ખેલનારા એક વિદ્વાન મહિપાલના આ મત જૈનાને વધુ મગરૂર બનાવવાને વાસ્તે બસ છે. મહારાજા ત્તથા યુવરાજે કાનકરન્સમાં ભાગ લેઇ જૈન શાસન તરક પાતાની લાગણી ખતાવી છે તે **દરેક રાજ્યકર્તાએ અતુકરણ કરવા જેવી છે. આ કાન્કરન્સમાં કેળવણ**િ અને કાન્કરન્સના **મ**ંધારણના એ મહત્વના સવાલાે ઉપર એવુ<sup>\*</sup> અજવાળું પાડવામાં આવ્યું છે કે તેની નકલ અન્ય કાર્યક્રશ્ન્સોને કરવાના વખત મળશેજ કેળવણીના વિષય એવીતા અચ્છી ઢયમાં વિચાર-શીલ શૈલીમાં ચર્ચાયા છે કે જે સવાલ આજે **લ**ણી કામાનુ લક્ષ ખેંચી રહ્યા છે તે સવાલ-નું વાસ્તવિક નિશકરણ આ કાન્કરન્સે કર્યું છે, અને જે ખામી બીજાઓને જણાઇ છે તે ખામી પુરી પાડવાના રસ્તા લેવાતું કાનકરન્સે મેહા રૂપમાં સ્વીકાર્યું છે. ઉંચી કેળવણી લેઇ નાકરીતી લાલચમાં કસાતા ગ્રેજ્યએટાતે ગુલામીમાં ન ખધાવા અવાજ ઉઠાવી કોમના ગ્રેજ્યુએટાને ચેતવણી આપી છે તે એવા ગ્રેજ્યુએટા માટે વ્યાપાર તે પરદેશ જઇ ધર્મની પ્રવૃત્તિ કરવાતે બાેધ આપ્યા છે. પરદેશ ગમનતા જે સવાલ ધર્શા વર્ષોથી હિદુ સંસાર સુધારા સમાજે ઉઠાવ્યા છે તે જેતું મનમાનતું છેવટ લાવી શકાયું નથી તે સવાલ આ કાેન્ફરન્સમાં એવી તાે ઢળમાં ચર્ચાયેહ છે કે જૈનાેને પરદેશ ગમનનાે પ્રતિભાંધ સુળમાં નડતાે નહાેતા પણ ચોડાઓના મનમાં જે વસવસાે ઉત્પન્ન થતાે હતા તેનું નિરાકરણ થઇ ગયું છે. સંસાર સુધારા સમાજે બીજા જે સવાલા હાથ ધર્યા છે તે પૈકીના બાળલગ્ન, કન્યાવિ-ક્રય, રડવા કુટવાનાે રીવાજ, લગ્ત તથા મરણ પછવાડે ખર્ચ કરવાતા રીવાજ વીગેરેતા અટકાવ કરવાના ડરાવા પસાર થયા છે; એટલુંજ નહી પણ તેના અમલ કેટલેક ઠેકાણે થઇ પણ ચુક્યો છે. જૈન કામ સામાન્ય રીતે સુખી છે પરંતુ જે જૈનભાંધુઓ નિરાધાર હેાઇ કેળવણી મેળવી શકે નહીં તેઓને મદદ આપવાની યાેજના કરવાનાે હરાવ પણ કરવામાં આવ્યાે છે. કેળવણીના વિષયમાં શિક્ષકા ત્તથા વાંચનમાળાની માટામાં માટી સુશ્કેલીતા પગુ આ કાન્કર સે કડચા કરી નાખ્યો છે. એ બેશક ઘર્ણ ખુશી થવા જેવું છે. જૈન સાહિત્ય કે જે સાહિત્ય આ દેશની પૂર્વ સ્થીતિપર સાર અજવાળું નાંખે છે તેના પ્રચાર કરવા અને પ્રાચીન જૈન પુસ્તકાના ભંડારા ઉધાડી તેના લાભ લેવાની યાજના અમલમાં મૂકવામાં આવી છે ને તેમાં વધુ મદદ કરવાના હશવ પસાર થયે છે એ એકલા જૈને એજ નહી પણ આ દેશની તમામ કોમે ખુશી થવાનું છે કારણ કે જૈન સાહિત્યમાં અનેક અમુલ્ય રત્ના છુપાયાં છે તે કાંઇ નવું કહેવાનું નથી. ખીજ ઢરાવેા જીણાંહાર, ચૈત્યાહાર, અને સીલા લેખાના ઉદ્ધાર કરવાને લગતા થયા છે. આ

દેશના ઇતિહાસમાં શીલા લેખાે એ તવારીખ જાણવાનું સયળ સાધન છે, અને શીલા લેખા આપણા છર્ણ દહેરાસરા દારા મળી આવે છે. આપણાં દેલવાડાનાં વસ્તુપાળ તેજપાળનાં ભબ્ય દેરાસરાે સુધારવા તથા તેને તેની જાહાેજલાલીમાં રાખવાની ના. લાેર્ડ કર્ઝન જેવા હાકેમે જરૂર જોઇ છે તે તેમાં દેરાસરાતે કાયમ રાખવાતી આપણી આ ક્રાન્કરન્સે જરૂર સ્વીકારી છે તે કાંઇ એાછી ખુશીની વાત નથી. શીલા લેખો એ આપણા ધર્મની છુપી ધજાએ છે જે દેશના દરેક સ્થળમાં કરકી રહી છે, તે શાધી કાઠી તેને અજવાળામાં લાવ-વાતું કેન્ક્રન્સતું આ પગલું ધણાજ ધન્યવાદને પાત્ર છે. શીલા લેખાે જે ભાષામાં લખાયલા છે તે ભાષાના પણ આથી ઉદ્ધાર થશે અને આપણાં ધર્મ પુસ્તકાના ભાંડારની ઉન્નતિ પણ **ચરો. શીલા લેખોના સંબંધમાં જીદા જીદા વક્તાઓએ આ**પેલી બાતમાં આપણને હરખાન વનારીજ છે. હવેથી શીલા લેખા શાધવાનું તથા તેને અજવાળામાં મુકવાનું કામ શરૂ થશે એ ખુશી થવા જેવું છે. ના૦ સરકાર પણ આવું એક ખાતું નભાવે છે ને આપણા તરકથી પણ આવે કરાવ પસાર થયે છે જેના એકત્ર પ્રયાસથી જૈન દહેરાસરા અને પ્રાચીન ખંડીયરોની શાધ થતાં દેશના એકત્ર ઉદયમાં મદ્દદગાર થઇ પડશે. આ પત્રના માલેક અને અધિપતિ તરકુથી જૈન ડાયરેકટરી બનાવવાની દરખાસ્ત રજી થઇ હતી જેના સમર્થનમાં તેમણે તેનાં કારણા બતાવ્યાં હતાં. જે દરખાસ્ત સર્વાનુમતે પસાર થઇ ઠરાવ કરવામાં આવ્યા હતાં કે એવી એક ડાયરેકટરી ખનાવવી કે જેથા આખા જૈન સમુદાયની સધળી માહેતી મળી શકે. આવા સાધન વગર જૈનેાની સ્થિતિ તથા તેની વસ્તી ક્યાં અને કેવી હાલતમાં છે ને તેઓને સુધારવા, મદદ કરવા, તથા ઉત્તેજન આપવા કેવાં સાધને હાથ ધરી શકાય તેની ખત્યર પડે નહીં. આ પુસ્તક તૈયાર થયા વગર તેની ક્વામત થઇ શકે તેમ નથી કેમ કે એ એટલું . ઉપયાગી થઇ પડશે કે હાલતાં ચાલતાં તેની મદદ મળી શકશે. સાચું કહીએ તા એ પુસ્તક એક ગાંધડ કે ભાેમીયા તરીકે થઇ પડશે, અને તેથીજ કાેન્કર સે જૈન કામના લાભને નજરમાં રાખી આ પુસ્તક તૈયાર કરાવવાની અગત્ય સ્વીકારી છે. ક્રોનકર સતે৷ મુખ્ય હેતુ જૈન કામમાં સ પતી વહિ કરી સઘળાના અકય બળવડે જૈનકાેમની તથા જૈન શાસ્ત્રની ઉન્નતિ કરવાનાે છે. તે તપાસતાં અમારે આનો સાથે કહેવું જોઇએ કે કેાન્કરન્સ જેમ જેમ માટી થતી જાય છે તેમ તેમ એ હેતુ પણ થેાડે થેાડે અંશે સધાતા જાય છે. એજ તેની અંતીમ કૃતેહની અચુક નિશાની છે. પંજાપી, ખંગાળી, દખણી, ગુજરાતી, મારવાડી અને સીંધી જૈન ભાઇએ એક પ્લેટ-ફ્રેાર્મ ઉપર એકજ વિચાર ચલાવતા થયા છે, અને છેાશ તજીતે એકજ બાણે જમવા લાગ્યા છે, જે પ્રતાપ કાન્કરન્સનાજ છે. એક ધર્મ એક નાતને એકજ ભાષા એ એક્યનાં સભળ અંગે છે જે અંગે જૈનામાં પ્રભળ રૂપે પ્રવર્ત્યાંછે તેથીજ અમેરતે ખાત્રી છે કે ભવિષ્યમાં જૈન કામના ઉદ્દયરૂપ સૂર્ય શિરોબિંદુએ આવતાં વાર લાગશે નહી અને આ સ્થળે એક સૂચતા અમારા જૈત બધુઓતે કરવી યેાગ્ય માતીયે છીએ કે તે-એોએ મંડળ મંડળના વાંધા વચકા જૈન સમુદાયરૂપ મહા મંડળમાં લાવવા નહીં, અને જ્યાં મહા મંડળની વાત આવી ત્યાં તે। આપણે સઘળા વીર પરમાત્માનાજ તનુજો છઇએ એ વિચાર અગ્રે કરી કામ લેવું જોઇએ ને તેવે રસ્તે કામ લેવામાં આવશે તે આપણો ૬દય સમીપમાં થવાની અમે તે ઝાંખી કરી શકીએ છીએ ક્રોન્પ્રરન્સ ત

કામ હાર પાડી તેને વિજયી બનાવવા વડેાદરાના નાના સ'ધે જે મહાન પરાક્રમ કરી બતાબ્યું છે તે ખાતે તેને ધન્યવાદ આપતાં અમે ગામેા ગામના સ'ધને તેનું અનુ-કરણ કરવા આચહ કરીએ છીએ. વડેાદરાના સ'ધને જેમ ડભાઇ, પાદરા વીગેરેના આળુવાજીના સ'ધે મદદ આપેલી છે તેવીજ મદદ આપવા સકળ જન સમાજ વખત મળે તત્પર થશે તા જૈના શું નહી કરી શકે. અશક્ય શબ્દ હીમતે બહાદુરના શબ્દકોષમાં ન હોવા જોઇએ, અને આપણે પણ મહાવીરનાં સ'તાના હાવાથી વી-રત્વ એ તા આપહ્યું ખમીરજ છે. માટે આવાં કામોમાં ઐક્યથી જોડાઇ સકળ જન સમાજને આપણા દાખલાથી ઉત્તેજીત કરવાની આપણે પહેલ કાઢી છે તેને સાંગા પાંગ વિજયી બનાવવા વડાદરાના સ'ધે જે શ્રમ ઉઠાવ્યા છે તેવા ઉઠાવવા અમારા ઠામા ઢામના જૈન બ'ધુઓ હમેશાં તત્પર રહેશે એવી અમા આશા રાખીએ છીએ.

ગુજરાતી

## સુખાઇ તા. ૨૭-૧૧-૦૪.

હિંદુસ્તાનની જીંદી જીદી પ્રજામાં પાેત પાેતાની કામનું હિત આગળ વધારવાના જે ઉત્સાહ કેટલાક સમય થયાં પ્રવર્ત્યા છે તેના ક્લરૂપ જૈના તરકથી જૈન કેાનફરન્સ. મેળવવામાં આવતી તેમની કાનક્રરન્સ છે. આગલે વર્ષે એ કાનક્ર-રન્સ સુંબઇમાં ભરવામાં આવી હતી. આ વર્ષે તેવું સદર સ્ટેશન

વડેાદરામાં ન ખાયું છે. ના ગાયકવાડે આ કાેનક્રરન્સને જોઇલી મદદ આપી છે, અને વડેહદરા રાજ્યના જૈન ગૃહસ્થેાએ કાનક્રરન્સનું કાર્ય નિર્વિધ્તે પૂર્ણ થાય તેને માટે જો⊌તા શ્રમ લીધો છે. કાેનક્રરન્સનું કાર્ય આજથી ત્રણ દીવસ ચાલનાર છે, અને તેના પ્રમુખ **સુદ્ધસિંહ**જી દુધોડીયા બહાદુરને નિમવામાં આવ્યા છે. પ્રમુખનું મૂળ વતન બંગાળામાં આવેલા મુર્શિરાબાદ તાબે આજીમગજ છે અને તેઓની ઉપર લગભગ ૫૬–૫૭ વરસની છે. જીન ધર્મની તેઓએ ધણી સારી સેવાઓ બજાવી છે; જીના દેવળાના જાણેહાર કરા-વ્યેા છે; કેટલાક સ્થળે!માં મૂર્તિઓ પધરાવી છે; ધર્મશાળાઓ બધાવી છે, અને સદાવતા પણ ઉધાડયાં છે. જૈન ધર્મના જે જીના વિચારના પુરૂષો છે તેમાં ના રાય ખુદ્ધસિંહજી એક છે, તે સ`ગે વળી તેઓ વિધાના ઉપાસક છે અને વિધાના કાર્યમાં સહાય આપનારા પણ કહેવાય છે. એ ગૃહસ્થ વડેાદરાની જૈન કાનક્રરન્સના પ્રમુખાસનપર બિરાજ જૈન ધર્મની અભિવૃદ્ધી માટે જે કાંઇ ખાસ વિચાર બતાવશે તે જૈન ધર્મીઓને મનન કરવા જોગ તેા થઇ પડશેજ. આ કાનકરન્સમાં જે કાર્યક્રમ રાખવામાં આવ્યા છે તે કાર્યક્રમમાં જીના પુસ્તકોના રક્ષણતે માટે એક ઠરાવ મુકવામાં આવનાર છે, ને તેના સંબધમાં અમા-રે ખાસ સુચના એટલીજ કરવાની છે કે જે જે જૈન ભ**ં**ડારામાં **જીના** પુસ્તકાના સંગ્રહ છે તે સધળાએાની એક સંપૂર્ણ સુચી તૈયાર કરાવી. પ્રજાની જાણને માટે તે કાર્ય સામ.ન્ય પ્રજાતે એટલું ભધું ૬પયેાગી થઇ મૂકવી. પડશે Z હાલની જૈન કાનકરન્સ, જે માત્ર એક દેશી છે તે સર્વ દેશી યઇ પડશે.

ભારત ખેડની પ્રજ્ પણ જૈન લોકોએ જે ઉપકાર કીધો છે તે લુલી શકે તેમ નથી. પ્રાચીન <mark>ગ્ર ય</mark>ોની સાચવણી કરી મહત્વનું કાર્ય તેઓએ ક્વીધું છે. અને એજ પ્રયોપરથી મધ્ય કાળના ઇતિહાસત ક્રાંઇક સ્વરૂપ અને રાજાએાના જીવન વત્તાંતા પ્રજા જાણી ચાડી છે. આ કોનકરન્સના સંબંધમાં એક બાબતનાે આ વરસથી वधारे। ચયેા છે અને તે જૈન લાક્ષણિક પ્રદર્શન ઉધાડવાને લગતા છે. એ પ્રદર્શનમાં જૈન ધર્મને લગતાં કેટલાંક ચિત્રા, તત્વ સુચક ઉપદેશક દેખાવા, પવિત્ર પદાર્થો તથા જેમાં **મર્ક સ**'ખ'ધી બા<mark>ધ ન</mark> આવે એવા દેશી બનાવટના પદાર્થો મુકવામાં આવેલા છે. તેમજ પ્રાચીન તાડ પત્રાપર તથા સખડ પત્રપર લખાયેલા લેખાે પણ દાખલ કરવામાં આવેલા છે. જૈત બાઇઓએ બહારની પ્રજાતે પોતાના આ મેળાવડા તરપ લક્ષ ખેંચવાના આ જે ના-તાશા પ્રયત્ન કર્યો છે તે પણ અભિવંદન આપવા જોમ છે. ગયા ગુરૂવારે એ લાયણીક પ્રદન્ ર્શન યુવરાજ કત્તેહસીં હરાવે ઉપાડયું છે, તે પ્રસંગે તે નામકારે સમયને યાેગ્ય એક સુંદર ભાષણ આપ્યું હતું. તેમાં ભરતખંડના ઉધાગ હુવરની ચઢતીને માટે તેમજ સંસારીક **મા**ર્ગીક સુધારાના સ બ ધમાં કેટલાક અગત્યના વિચારાે પણ ખતાવ્યા <mark>હતા.</mark> એ ભાષણમાં તે નામદારે જણાવ્યું હતું કે આ દેશના શાધક પુરૂષોએ અત્યાર સુધીમાં જે કાર્ય બજાવ્યું છે તે એવું છે કે ભવિષ્યના બજાવવાના કાર્ય આગળ નિરજીવ છે, અને તેવું કાર્ય પૂર્ણ કર-વા માટે ઉદ્યોગી પુરૂષોએ ખંતથી મંડયા રહેવું જોઇએ, અને જ્યાં સુધારાની જરૂર હાય તે કાર્યમાં પાછળ પડવું જોઇએ નહિ પ્રિન્સ કતેહસીંહરાવે જીત ધર્મના અહિંસા ધર્મ ની સારી પ્રશ સા કીધી હતી અને જે છન ધર્મે પ્રત્યેક પદાર્થમાં આત્મતત્વ સ્વિકાર્યું છે એવા છત ધર્મના સિદ્ધાંતને વખાણ્યું હતું. છેવટે સર્વ જૈન ભાઇઓને બાધ કીધા હતા કે મ્રમીષ્ટ થાએ પણ ધર્માંધ ન થાએક કેમકે સર્વ ધર્મ ઇશ્વરના માર્ગદેખાડનારા છે તે લુ• લી ન જાવ. પ્રત્યેક ધર્મ માતે છે કે મારાે ધર્મ સાચાે છે, તેથી ખધુત્વતા ભાવ ભલી જવા દેશા નહિ-એ વિચાર પર જૈન બંધુઓ સારી રીતે ક્રક્ષ આપશે એવી આપણે આ-શા રાખીશ. જે ઉત્સાહથી જૈન ભાઇએ પોતાની કામને ઉન્નતિના સ્થાનમાં લઇ જવાનો પ્રયત્ન કરે છે. તેજ ઉત્સાહથી સમય દેશની પ્રજાએ નિર્ધારેલાં ઉન્નતિનાં સ્થાનમાં પ્રવેશવા-ની જે યાજના કરેલી છે તેમાં પણ એવાજ ઉત્સાહથી સામેલ થશે એવી સંપૂર્ણ આશા સાથે આ ત્રીજી જૈન કાનકરન્સની અમે કતેહ ઇચ્છીએ છીએ.

#### તા. ૪-૧૨-૦૪.

ગયા રવિવારથી પ્રારંભ થએલી જૈન કાન્ફરન્સની એઠકા મંગળવારે સમાપ્ત થઇ છે. એ કાન્ફરન્સના મહત્વમાં વધારા કરનારી વાત ખાસ એજ છે કે મહારાજા ગાયકવાડે પાતાની પ્રજાના એક વિભા-સમાપ્તિ. ગના તાેષાર્થ, કાન્ફ્રન્સમાં હાજરી આપી એટલુંજ નહી પણ

કાૅન્કરન્સના કાર્ય સંભ'ધે પાતાના વિચાર બતલાવી, કેટલીક અગત્યની સુચ્ચના કરી છે, જીપરાંત પાટવી કુંવર કૃતેહસિંહરાવે સંસાર સુધારા વ્યવહાર સંબ'ધી કેટલાક વિચારા દર્શાવો જૈતોને સંતુષ્ટ કીધા છે. બહારાજા ગાયકવાડે જે વિચારા દર્શાવ્યા છે તેમાં ખાસ એક વાત પુરા તત્વેવેત્તાઓને લક્ષમાં લેવા જોગ છે. અઘાપિપર્યંત વિદ્વાન વર્ગમાં અને યુરાપી પંડીતામાં આવી માન્યતા છે કે બુદ્ધ ધર્મમાંથી જૈન ધર્મને. પાદુર્ભાવ

થયે<mark>ા છે.</mark> મહારાજ શિયાજીરાવ જણાવે છે કે તેમ નથી-જીન ધર્મ એથી પણ પુરત**તન** છે. મહારાજાએ જે વિચાર દર્શાવ્યા છે તેઉપરથી એમ સિદ્ધ કરી શકાતું નથી કે ધર્મની જે વ્યવસ્થા સાંપ્રતમાં પ્રવર્તેલી છે તે સુદ્ધમં પૂર્વેની છે કે છત જીનધર્મના સિદ્ધાંતે। પૂર્વેના છે જો સિદ્ધાંતે। સંબંધે મહારાજાનાે નિર્દેશ હોય તે તે ઉપર આપણે સાબોતી માંગીશું નહિ; કારણ કે, વાલ્મિકી રામાયણના અયોધ્યા કાંડમાંથી તે સિદ્ધાંતાના સુત્રા મળો અ વે છે પરંતુ સાંપ્રત જીન ધર્મ નીંબ્યવસ્થાના નિર્દેશ ક્રીધા હાેય.તાે તેને માટે ઘણી મજણત માન્ય રહે તેવી સાળીતીઓ જોઇશ પોતાના ભાષણમાં મહારાજશ્રીએ જૈન **ય**ંધુઓના કાર્યની પ્રશંસા કરી સાહાનુભુતિ દશાવી છે. અને સુચન ક્રોધું છે કે જીનધર્મીઓએ ધર્મના ઉદય સાથે સ સાર વ્યવહાર અને રાજ્ય કાર્યના ઉદયમાં પણ તત્પર રહેવુ' જોઇએ. મહારાજાનુ' ભાષણ સ'ક્ષિપ્તમાં પણ સુચક હતુ', ને તેપર જીનધર્મીઓ લક્ષ આપશે એવી આશા આપણે રાખીશું. મહારાજાનું ભાષણ સન માપ્ત થયા પછી રાય બા. બુદ્ધસિંહજી દુધારીયાએ પ્રમુખ પદપરથી સુંદર ભાષણું આપ્યું હતું. ભાષણુ ઉત્તમ, બાેધક, તત્વમય, સારભૂત, અને સંક્ષિપ્ત હતું. જે સુદ્દાઓ પ્રસુખે જીનધર્મીના ઉદય માટે દર્શાવ્યા છે, તે બહુ અંશે માન્ય રાખવા જોગ અને સર્વ દેશી છે; અને કાઇપણ વર્ગે પાતાના વ્યવહારીક કાર્યમાં કેવી પહ્લિથી કામ લેવું તેના એક ઉત્તમ માર્ગદર્શક જેવું છે. ભાષ્રણ સાર્વજનિક છતાં જીનધર્મના આગમા નેમ્ળ સિદ્ધાંતાને અંતુસર• તું હતું. એક ખાસ બાબત એ ભાષણુમાં લક્ષ દેવા જોગ છે; અને એજ બાબત કાઇ પ્રસ-ગે મહત્વના કાર્યનું નાશ કરનારી થઇ પડે છે. દરેક વ્યક્તિ એમ સમજે છે કે જનમંડ-ળના કલ્યાણના કાર્યમાં કે નાતિ સમસ્તના હિતના કાર્યમાં જે વિચાર હું દશાવું છું, તેજ વિચાર જનસમાજે માન્ય રાખવા જોઇએ અને તેને સાહતુભૂતિ આપવા જોઇએ. આવા વિચારના મમત્વથી ઘેરાએલી વ્યક્તિના વિચાર અમાન્ય થવાથી તે આખા વર્ગને નિંદી કાઢી, તેનાથી પ્રતિકુળ થઇ બેસે છે, આખા વર્ગના કેાઇ પણ કાર્યપર દાષારાપ ધરે છે, આખા વર્ગે આરંભેલું કાર્ય પૂર્ણ થવાતું નથી એમ ધારી તેની સામા કમર કસે છે; એટલુંજ નહિ પણ તે કાર્યને તાેડી પાડવાને પણ પ્રયત્નશીળ થાય છે. આ એક બહુ માેટા દાષ છે, પણ તે જન પ્રકૃતિ છે. એ જન પ્રકૃતિના અમલ જૈન સમાજમાં ન થવા પામે તેવા ઉંચ્ચ ઉદેશથી રાં; ખા. દુધારીયાએ બીજા જે જે વિચારા દર્શાવ્યા છે તે તે મતા વયતે, અનુભવતે, ડાહપણને અનુકુળ હતા એમ કહેવામાં હરકત નથી. વડેાદરા જૈનસમા-જે પ્રમુખની જે પસંદગી ક્રાધી હતી તે યાગ્ય હતી, ને તેને માટે ખરેખર તેને અભિનંદન જ આપવું જોઇએ.

જૈન સમાજમાં જે ઠરાવા જૈન વર્ગના અભ્યુદયાર્થે સુકવામાં આવ્યા હતા તે બહુ અ'શે પસ'દ કરેલાજ હતા. જૈનામાં કેળવણીના ફેલાવા કરવા; દરખાસ્તા. ૨ડવા કુટવાની ખ'ધી કરવી; ગ્ર'થાના પુનરાહાર કરવા, દેવાલયોના જર્જ્યોહાર કરવા, પરદેશ ગમનના વિચાર કરવા અને પાલીટાણાના

દેવાલયાેના સંબ'ધમાં ત્યાંના સત્તાવાળા સાથે જે ભિન્ન મત ચાલે છે તે સંબ'ધે–એ આદી ઘણા અગત્યના ઠરાવાે સભાજનની સાહનુભુતીથી પસાર થયા હતા. આ ઠરાવાેમાંના કેટલા-કા સ'બ'ધે હમા ગયે વર્ષે બાલી ગયા છીએ, અને તેના સ'બ'ધમાં હજી સુધી જોઇએ તેવા

વધારા જૈન વધુઓએ કર્યા નથા એ ખેદકારક છે. જૈનબાઇઓએ <mark>ધથમ કામ જે કરવાનું છે તે જૈન ડીરેકટરી તૈયાર</mark> કરવાને લગતું છે. <mark>અને તેને અંગે પ્રાચીન ગ્ર'થ</mark>ેાની સુચી પ્રગટ કરવાનું કાર્ય વિશેષ અગત્યનુ શ્યને મહત્વનું છે આ સંયંધી દરખારત મુંબઇમાં મળેલી જૈનસમાજમાં રજા થઇ હતી. પણ ખાર માસ વિત્યા છતાં એમાં છવ જેવે৷ વધારાે થયે৷ નથી. જૈનભાઇએાએ ખાસ જાણવું જોઇએ કે જીતેશ્વર ભગવાનની જે અસયતા માન્ય રહી છે અને આજે જે ધર્મ બહુલની સ્થિતિ ને ધર્મમાં મહુલનું સ્થાન તે ભાગવે છે તે એ ચંધાને આભારી છે. તેવા <mark>ગ્ર'થ</mark>ેાને ખાર'<mark>એ ન નાખતાં, અને ભ'ડાર</mark>ોમાં પડી રહી ઉધાઇનેજ ખાવા ન દેતાં, <mark>પ્રજાની જાણમાં લાવવા સરખુ</mark>ં બીજીું કાઇ પણ વધારે મહત્વવાળું કાર્ય હાેઇ શકે નહિ. મ્યાખા ભારતવર્ષના પંડીતા અને તત્વવેત્તાએા, આ અપતિમ ગ્રંથોના સંબંધમાં જૈનસ-માજ શું કરે છે તેના પ્રતિ એક લક્ષી છે; એટલુંજ નહિ પરંતુ પાશ્ચાત્ય પંડીતા પણ એન ટ્લીજ ઇચ્છાથી જોય છે, અને તે તેમની ઇચ્છા જેમ સત્વર પૂર્ણ થાય તેમ કરવાના મેાટા પ્રયત્ન થવાે જોઇએ. દિપાંતરગમનની કરખાસ્ત આ જૈન સમાજમાં અધુરી ગઇ છે. એ વિષય સ′ખ'ધે સ'પૂર્ણ ઉહાપાેહ કરી એક નિર્ણયપર આવવાની ખાસ જરૂર છે: અને અમે નથી ધારતા કે જે જૈન સમાજ એક પારસીને જીનધર્મનાે અનુયાયી કરવાનું શાસ્ત્રથી સ મત માને છે, તે જૈન સમાજને આ વિષયમાં યહિ ચિત પણ બાધ નડતા હાેય. દિપાં-તરગમનનાે કદાચ કાઇને અધિકાર ન હાેય તાે તે ધર્મના આચાર્યો અને દેવપુજકાને હાેય: પરંતુ જેએ વૈશ્ય વૃત્તિથી આજીવિકા ચલાવનારા છે, તેએાને માટે દ્વિપાંતરગમન નિ:સ-શય બાધકારક નથી એમ જૈન ધર્મશાસ્ત્રપરથી જાણી શકાય છે. ઉપરાંત એ વિષયનું નિરા-કરણ ચવાથી દેશને અને એ વર્ગને પણ વિશેષ લાભકારક હતું. તેથી દ્વિપાંતરગમન સં-**ખ**ંધી ધટતા અંકુશા સાથે ખંદાેત્યરત કરી જેનબંધુઓને તેની છુંટી આપી દેવી હતી. એ કાર્યથી જૈવબધુસમાજ માટી કીર્તિતે પાત્ર થતે, હજી પણ કંઇ વહી ગયું નથી. ચાથી જૈન સમાજમાં એ વિષય સ'્ય'ધે નિર્હય કરવાની ત્રેવડ જૈન સમાજના લાગતા વળગતા કરશે તેા તે પણ તેટલું જ પ્રશંસાવાળું અને માનપ્રદ ગણાશે. શ્વેતાંબર જૈન ભાઇઓએ છેવટનાે કરાવ પાલીતાણાના રાજાના કાર્ય સંબંધે ખેદ દર્શા તનારાે કીધા હતાે.

# કેસરી.

पुणें ता॰ १३-१२-०४.

-37846-

बढोद्यास भरलेल्या श्वेतांबर जैन परिषदेचें काम मोठ्या थाटानें पार पडलें ही समाधानकारक गोष्ट होय. कायस्थ वैष्णव वगैरे लोकांच्या ज्या आती जाती करितां स्वतंत्र सभा आजकाल होउं लागल्या आहेत त्यांतच जैन परिषदेची गणना आहे. परंतु जैन परिषदेचें काम इतर परिषदांपेक्षां निराळ्या मकारचें आहे. जैन लोकांचा हल्डी जो समाज आहे तो प्रायःव्यापारी लोकांचा

आहे. पूर्वकाळी जैन पंथांत पुष्कळ विद्वान लोक होऊन गेलेले असूनव्याकरण, न्याय किंवा तत्वज्ञान त्यांनवर त्यांनीं लिहिलेले अनेक ग्रंथ आज उपलब्ध आहेत. परंतु आदि शंकराचार्यांनी वेदांत मत्ताची स्थापना केल्यानंतर जैन लोकांतील विद्वत्व परंपरा नाहींशी झाली, व हडी त्यांच्या ग्रंथांचें परिशीलन करणारे विद्वान लोक फारसे आढळून येत नाहींत. धर्मदृष्टचा पाहिले झणजे ही उणीव दूर करणें हैं जैन लोकांचें कर्तव्य होय; व हछींच्या काळांत या कामीं त्यास बाह्मण लोकांचेंहि साह्य मिळणें शक्य आहे. रा. रा. टिळक यांनीं भाषणात सांगितल्या प्रमाणें जैन लोकांचें तत्त्व ज्ञान जरी आज प्रचारांत नसले तरी जैन लोकांच्या आहिंसादि आचारांची छाप आज बाह्यण धर्मावर पूर्ण-पणें बसलेली आहे. शंकराचार्यांनीं बाह्यण धर्माचें जरी पुनः स्थापन केंडे तरी जैन आचारांची बाह्यण धर्मावर बसलेली छाप कबूल करूनच त्यांस आपलें काम करावें लागलें. जैन धर्म आणि बाह्यण धर्म यांच्या संबंधाची ही गोष्ट अत्यंत महत्वाची असून जैन व वैदिक धर्मी या दोघांनीही नेहेमीं ती लक्षांत ठेविली पाहिने. जैन पंथांत वेद प्रमाण मानीत नाहींत हें खरें आहे. पण त्याचें कारण श्रीत धर्मातील हिंसा होय. वैदिक धर्मपरंपरं बद्दल अनास्था नव्हे हें आसी नेहेर्मी ल्क्षांत बाळगलें पाहिजे. रामायण, महाभारत किंवा पुराणें यांतील कथा किंवा देवता आणि योग शास्त्रांतील तत्त्वें जैन लोकांस आमच्या प्रमाणेंच मान्य आहेत, किंबहुना जैन धर्मी होक हे हिंदुस्थानांतील आर्य लोकांचेच भाउबंद आहेत, परकीय देशांतांल आलेले नाहींत. एकदा तर अशी स्थिति होती की वैदिक वर्मातील लाक जैन वर्मात आणि जैन वर्मातील लोक वैदिक धर्मांत स्वेच्छने केव्हांही जात एत असत. हा प्रकार अद्यापही थोडा बहुत सुरू आहे; व कांहीं जैन वेष्णव आणि कांहीं वैष्णव जैन झाल्याचीं ताजी उदा-हरणें आहत. सारांश जैनधर्म जरी वैदिक धर्माहुन भिन्न असला तरी त्यांताल भेद खिस्ती धर्मातील एस्टाब्लिस्डचर्ड ( प्रस्थापित खिस्ती धर्म ) आणि डिसेंटर्स किंवा नॉनकन्फारमिस्ट ( प्रस्थापित झालेला पंथाहून भिन्न ) या दोन भेदा प्रमाणेंच राष्ट्रीय दृष्टचा गौण होय, हें जैन व वैदिक धर्मी या दोघांनी हीं एकसारखेंच लक्षांत ठेविलें पाहिने. दोन्हीं धर्म एकच शरिराचे उनवा डावा हात आहेत, व दोवांसही पसंत झालेल्या अहिंसादि तत्त्वाचा जगभर प्रसार करण्याचे काम जर एक विचारानें दोवेही हातांत वेतील तर अहिंसा

धर्माची ध्वजा पृथ्वीतील सर्वे राष्ट्रांत उभी राहण्यास कोणतीही हरकत येणार नाहीं. एकाकाली हिंदुस्तानांतील या दोन धर्मांत थोडासा विरोध होता. पण त्या विरोधाने जी कामगिरी व्हावयाची ती झाली असून हर्छीचा असा काल आला आहे की वैदिक धर्मी लोकही आचारानें जैन धर्मी आणि जैनधर्मी लोकही तत्वज्ञानानें वैदिक धर्मी झालेले आहेत. ही स्थिती लक्षांत आणून जर दोघांनीही आपल्या उन्नतीसाठीं प्रयत्न केला तर तो अधिक फलदूत होईल हें आह्मी सांगावयास पाहिने असे नाहीं.

अशा दृष्टीनें विचार केला म्हणजे जैन परिषदेनें काय काम करावया-**चें याची दिशा आपे। आप ठर**ली जाते. वैदिक धर्मांतील लोकां मध्यें रूढ असले ल्या सामाजिक चाछी सुधारण्याचा हडी जो प्रयत्न चालु आहे त्यां पैकी वराच भाग जैन लोकांस लागु पडत नाहीं. बालविवाह किंवा ज्ञातीमेद हे जैन समाजांत रूढ नाहींत. स्त्रीशिक्षण किंवा परदेशगमन यां बद्दल थोडी बहुत चळवळ करा-वी छागेछ; पण त्यांस जैन धर्माचा कोणताहि प्रत्यवाय नाहीं. उर्छटे पूर्वी पासून या धर्मांची शिस्तच अशी आहेकीं, दुसऱ्या धर्मतीिल लोक या धर्मात घेतां येतात. परदेशगमन जैन धर्मीयांस निषिद्ध आहे अशी जर कोणाची समजूत असेछ तर ती चुकीची आहे; किंबहुना अहिंसातत्त्वाचा सर्व जगभर प्रसार करणें हें जैन धर्माचें, आणि त्यांचा आचार जर वैदिक धर्मीयोर्नी घेतला आहे तर त्यांचेंही कर्तव्य होय. या करितां जैन परिषदेस आमची अशी सूचना आहे कीं, हे काम त्यांनी नेटानें हातांत् ध्यावें. राष्ट्रीय प्रगतीस मांसाहाराची अपेक्षा आहे असे जें कित्येकांचे मत आहे तें अगदी चुकीचें आहे. हर्वेटेस्पेन्सर सारखें तत्त्वज्ञानी या सही एकदां आहेंसा तत्त्व मान्य झाळेळें होतें. पण देहास लागलेला पिढीजाद सवय त्यांच्या हातून सुटेना. अहिंसा धर्माची योग्यता एबढ्यावरूनच कळून ये-णार आहे, व आमची अशी खात्री आहे कीं, याचा 'सर्वत्र प्रसार करण्याची जर जैन धर्मी आणि वैदिक धर्मी लोकांनी केली खटपट तर त्यांस यश आल्या खेरीज कधींही राहणार नाहीं. हिंदुस्थानांतील लोकांस बाटविण्यास रोमन केथोछीक किंवा प्रोटेस्टंट छोक ज्याप्रमाणे एक होतात तसें अहिंसा धर्माचा प्रसार करण्यास जैन व वैदिक धर्मी या दोवानींही एक झाले पाहिजे

धर्म ग्रंथांचा उद्धार व अम्यास, मंदिरांचा जीणोंद्धार आणि अहिंसा धर्मांचा प्रसार यां लेरीज जैन परिषदेनें हातांत घेण्यासारला विषय म्हटला म्हणजे व्यापार हा होय. जैनधर्मी लोक हे प्राय:व्यापारी आहेत. हे वर सांगितलेच आहे. व्यापारी असल्यामुळे ह्यांची सांपत्तिक स्थिती ब्राह्मणांपेक्षां पुष्कळ बरी आहे हे खरें पण तेवव्या वरच त्यांनी संतुष्ट राहून उपयोगी नाहीं. उद्योग धंदे व व्यापार याचा इंग्रेजी अमलाखाली जो प्हास होत चालला आहे त्या प्हासा-मुळे जैन लोकांची आज जी सांपत्तिक स्थिती आहे तो पुढें कायम राहिल असा नियम नाहों. यासाठीं आमची त्यांस अशी सुचना आहे कीं, जगड्व्याळव्यापा-अधिकाधिक जितका हातात पडेल अग्र राचा भाग प्रकारची द्वारा किंवाँ अन्य रितिनें शिक्षण तजवीज त्यांनी करण्यास झटलें पाहिने. हा प्रश्न व्यापाराचा आहे. रानकीय नव्हें: करितां राज्यक-त्यींकडूनही या कामीं मदत व सहानुभूति मिळण्याचा संभव आहे. जैन परिषदेने हर्छी ने विषय हातीं घेतले आहेत त्यांत या विषयास जितकें प्राधान्य मिळावयास पाहिने तितकें मिळालेलें अद्याप दिसत नाहीं. करितां ही सचना आज मुद्दाम आह्या करित आहों. तसेंच जैन धर्माच्या प्रंथांचें परिशाल्टन व उद्धार करण्याच्या कामीं जर्मनीतील पंडित जर आज परिश्रम करीत आहेत तर जैन धर्मी य्याजु-ऐटांनी ही त्याची काहीं लाज बालगून आपल्या धर्म प्रयांचे आस्थार्पुवक अध्य-यन करण्यास लागावे अज्ञी त्यांसही आमची विनांती आहे.

# રાસ્ત ગોફતાર તથા સત્ય પ્રકાસ.

## સંબાઇ ૪ થી ડીસેમ્બર.

જૈન સંઘની બલિહારી છે. જ્યાં એક દિલી અને એક સ'પ હોય ત્યાં હરકાઇ કામ કાવી નિકળે. ઇસ્વી પૂર્વે ૫૦૦ વર્ષ ઉપર સુદ્ધ ધર્મની સ્થાપના થાય તેની પણુ પૂર્વેના જૈન ધર્મના આજના ઉપાસકા આજ હડી હજારથી વધારે વર્ષો જેટલા પાતાના પુરાણા ધર્મને તેની પ્રાચીન સાદી સ્થિતિમાં જાળવી રાખી શક્યા છે એ એક ચમત્કાર સમાન વાત છે. જૈનેા બીજી હિંદી કોમા કરતાં વધારે ધનાઢય છે. વેપારી પ્રકૃતિના હાવાથી એ પ્રજામાં પૈસાના સારા સંગ્રહ થયા છે, અને એ દ્રવ્ય આખા હિંદ પ્રદેસમાં વહેંચાઇ ગયું છે, કેમકે જૈનાની વસ્તી એક શહેર, એક પ્રાંત કે એક ઇલાકામાં નહિ પણ આખા હિંદુસ્તાનમાં ચાન

તરક કરી વળેલી છે. આ જૈને જાતે ખહુજ દયાળુ છે. જીવદયા તેમના ધર્મના મૂળ પાયા સમાન છે. મહાવિર સ્વામી નામના મહા દયાળુ હિંદુએ આ ધર્મની સ્થાપના બુદ્ધ ધર્મના જન્મની બે સદી આગમજ કીધી હતી. આ સ્થાપન્ય આગમજ હિંદુઓમાં પોતાના સંખ્યા **બ**ંધ દેવતાઓને સ<sup>\*</sup>તાખવા માટે યત્રરૂપે પ્રાણીવધનાે ચાલ હતાે. જેને આપણ સાધારણ રીતે ભાગ આપવા કહીએ છીએ તે ચાલ તે જમાનામાં પ્રચળિત હતા. આ ભાગ બીજા પશુઓ જોડે ગાય અળદ જેવાં અતિ ઉપયેાગી પ્રાણીતાે પણ અપાતા હતા, જો કે આ <mark>ચાલ હજી સુધી ર</mark>જપુત વગેરે દેશી રાજ્યામાં કેયે કેયે ચાલુ છે, પણ પ્રાચિન કાળમાં તાેતે હિંદ પ્રજામાં સામાન્ય હાેય એમ જણાય છે. આ કામને નિર્દય ગણીને મહાવિર સ્વામીએ દયાના કાનુન ઉપર હિંસા વિરહ્લનાે પાતાનાે નવાે ધર્મ ચાલુ કીધાે, અને ગાયાે વગેરેના વ-<mark>ધથી થતાં ધા</mark>તકીપણાંથી ક**ં**ટાળી રહેલા હજારાે લાેકોએ એે જીવદયાના ધર્મ તરફ પ્રસન્નતા **બતાવી. આ પછી** એ ધર્મના પુસ્તકાે રચાયાં, નીતિની શીખામણેાના ગ્રાંચાે બન્યાં, અને ધર્મ સંસારની કાયદાપેાથીએા હસ્તીમાં આવી. ઠામ ઠામ કીમતી મંદીરા બંધાયાં અને એ <mark>દે</mark>વાલયેા અતિઉત્તમ કારીગરીનાં તથા તેવીજ ઉમદા વસ્તુએાંના **ત્ર**ંધાઇને તેમાંની પ્રતિમા એાને હજારા અને લાખા ૨પીઆની વસ્તુઓથી ધનવાંન બનાવવામાં આવી. જૈતાની શ્રેષ્ટા-⊌ના સમયમાં બીજાં અનેક રડાં કામે**ા થયાં. પ**ણ પાછલથી સુદ્ધ ધર્મનું બળ વધી ગયું અને સુસલમાનાના અમલથી રીતભાત બદલાઇ ગઇ. ઘુમટા વગેરે ચાલા જે પ્રથમ ન હતા તે જૈનામાં દાખલ થયા, અને બીજા અનેક કચાલોએ જન્મ લીધેા. આમ લાંબા કાળ સુધી ચાલ્યું, અને એ અરસામાં પ્રાથમિક જૈન સદધર્મમાં ઘણાએક ભેળ થઇ એ સાદા ધર્મ બિગન ડવા માંડયેા. મંદિરાે અને દેહરાંની અવ્યવસ્થા ચાલી, પુરાણાં પુસ્તકોનેા અભ્યાસ બંધ પડયેા. જાના લેખાે ઇત્યાદી ભૂલાઇ ગયા, અને મામલાે તદન ફેરવાઇ ગયાે. અવ્યવસ્થાનાે આ કાળ કેટલોક સમય ચાલુ રહ્યા પછી જૈતામાં પાછું શુર છુટવા માંડચું. છવદયા 'તરક પાછું લક્ષ દાેડ્યું. પુરાણાં પુસ્તકોને ભચાવવાપર ધ્યાન ખેં ચાયું. મંદિરો અને દેવાલયોની શાર્ધ ચલાવી તેમને**ા આે**હાર કરવાનું મનપર લેવાયું. કુચાલા તરફ કામની સારી લાગણી ઉસ્કેરાવા લાગી, અને એ રીતે આજે જૈનભાઇએ પોતાના પુરાણા સાદા ધર્મને પાછે તેનાં અસલ તેજમાં દીપતાે થયલાે જોવાને સચેત થયા છે.

જૈતા સચેત થયાછે અને પાતાના પ્રયત્ન તેઓએ આજ ત્રણ વર્ષ થયાં કાન્ક્રરન્સ અથવા સંઘ મેળવીને કરવા માંડયા છે. પહેલાં કરતાં બીજાં વર્ષનું કૉન્ક્રરન્સ બહુજ ક્રતેહમંદ નિવડવું હતું, અને સુંબઇ પછી આજે વડાદરા ખાતે ત્રીજી જૈન મંડળ ભેશું કરવાના પ્રસંગ થયા છે. આ મંડળનાં સ્તુતિપાત્ર કામ તરક અમે ગયે વર્ષ અમારી માટી પ્રસન્નતા જાહેર કરી હતી, અને આજે તેને પાછી પ્રદિપ્ત કરતાં અમને માટા સંતાષ થાયછે. સુંબઇ, મધરાજ, પંજાબ અને બંગાળ ઇલાકાનાં અનેક શેહરા ખાતેથી શુમારે ૬૦૦૦ જૈન પ્રતિનિધિઓ આ મંડળમાં ભેગા થયા હતા, જેનું કામ ત્રણ દિવસમાં અનેક ભાષણા, અનેક ઠરાવા, અનેક ભાઇબંધીનાં કાર્યો પછી ખલાસ થયું છે. વડાદરાના નામદા-દાર ગાયકવાડ સર સયાજીરાવ. યુવરાજ ક્રતેહસિંગરાવ, દીવાન શેઠ કેરશારપજી દાદા ચાંદજી, અમાત્ય મીર્ગ્ રામેશચંદ્ર દત્ત, વિદ્યાધિકારી શેઠ જમશેદજી દલાલ, અને બીજા ઇંગ્રેજ હિંદુ, પારસી તથા સુસલમાન અધિકારીઓ અને શેઠ સાહુકારોની સમક્ષ આ

કૉન્કરન્સનું કામ ચાલ્યું છે, અને પુરતી કૃતેહ સાથ તેનેા અંત આવ્યો છે. ધણા ઘણા ધનવાન જૈનેાએ આ મંડળમાં ઠેકઠેકાણેથી હાજર થઇ ભાગ લીધોછે, અને જાહેર થયા સુજભ સુંભઇ. સુરત, ભરૂચ, અમદાવાદ<sub>,</sub> વઢવાણુ, રાજકોટ, જામનગ<mark>ર, ભ</mark>ાવનગર, જીનાગઢ, મેારયી, પાહલનપુર, રાધનપુર, કરાંચી, લાહાેર. મુરશીદાયાદ, કલકત્તા, મધરાજ, **ભરમા વગેરે ધ**ણાંએક શેહરાે ખાતેથી આવીને જૈન પ્રતિનિધિએ વડેાદરા ખાતેનાં આ ત્રીજા જૈન મંડળમાં શામેલ રહ્યા હતા, અને પ્રમુખ રાય ખુધસિંગજી બહાદુર અને બીજા ધનાઢય ગૃહસ્યોનાં ભાષણે৷ અને બાેધ વચને৷ પછી ધર્મની અને વ્યવહારૂ કેળવણી સ્ત્રી કેળવણી, જૈન સાહિત્યના ઉદ્ધાર, જૈન પાઠમાળા, પુરાણાં પુસ્તકોને **ક્રરીથી પ્રગટ કરવા,** પુરાણું મંદિરાને જાળવવા, લેખાે વગેરેની શાધ ખાેળ ચલાવવા, સંસારી કુચાલ તજાવવા, વગેરેના ઠરાવેા કરી ઉઠયા હતા. આ ભવ્ય મેળાવડા વેળા મહારાજા સર સયાજીરાવે અને તેમના યુવરાજ કૃતેહસિ ગરાવે ભાષણા કરી જૈન સ ગતે ઉપકારી બનાવ્યા, હતા. ગાયક-વાડે પાેતાનાં ભાષણમાં જૈન ધર્મની સ્તુતિ કરતાં તેને સુદ્ધ ધર્મ કરતાં બે સદી જેટલાે પુરાણાે જણાવ્યાે છે, પણ સાથે એક હર્ષ પેદા કરનારી વાત કહી છે તેથી **એકલા જૈનાે**જ નહિ પણ પારસી જેવી કાેમ કે જેમાં ન્યાતજાતનાે તકાવત નથી તે પણ ખુશી થયા વિના રેહશે નહિ. ગાયકવાડ મુજબ જૈન ધર્મતી બે મૂખ્ય ખુયી છે, જેમાંતી પેઢલી છવદયાતી એ મુખ્ય ખુબી છે, જેમાંની પેઢલી જીવદયાની અને બીજી એ કેામમાં ન્યાતજાતના ક્રર્ક નથી તે છે. જૈન ધર્મ સુજખ ન્યાતજાતનું જીદાપણું વાજખી નથી. કદાચ આ બીજી ખુબીની વાત ધણાએક જૈનેાને અચરત કરશે. પણ સર સયાછરાવે તેમને આચઢ ક્રાધોછે કે આ વાત એમનાં પાતાનાં પુરાણાં પુસ્તકામાં છે, માટે તેઓમાં શાધ ચલાવીને તેઓએ પાેતાની ખાત્રી કરીલેવી. શાધકયુદ્ધિના જૈનાને આભણેલા રાજવ'શી તરક્રનુ' નાેતરૂ' છે. અને જો નામદાર ગાયકવાડે જાહેર કરેલીઆ વાત સાચીજ હાેય તા જૈનાની કર્જ છે કે ચાેથી જૈન મંડળ વેળા એક ખાસ ઠરાવ પસાર કરીને તેઓએ ન્યાતજાતનું જીદાપહું કાહડીજ નાખવું.

#### EVIL CUSTOMS AMONG THE JAINS.

મહારાજ ગાયકવાડની એક શીખામણ સાેનાનાં મૂળની ગણી શકાશે. સર સયાજી-રાવે ભેગા મળળા હજારા જૈનાને ધીલી લાગે એવી વાતા કરતાં કહેવાની હિમત કીધી છે, અને તે વાજબીજ છે, કે તેઓ દાલતમ દ કાેમ છે તાે ભલે છે, પણ એ કાેમે પાતાના દ્ર-વ્યના સદ ઉપયાગ કરવા જોઇએ. જનલાેકનાં ભલાંને માટે તેમજ પાતાની કાેમના સ સારી સુધારા વધારાને માટે એ દાલતના ખર્ચ કરવા જોઇએ. અમા પ્રરીથી કહીશું કે આ લાખ રૂપિયાની શિખામણ છે. ત્રણ ચાર દિવસના વાર્ષિક મેળાવડા પછી ઘરે જઇ બેસવામાં લાભ કશા નથી. હિંદી કૉંગ્રેસના પિતા મી૰ એ. આ હ્યુંમ કૉન્ગ્રેસના આવા ત્રણ દિવસના મેળાવડાથી રાજી થતા નથી. જૈન કૉન્કરન્સની વડાદરા ખાતેની આવકાર આપનારી કનિ-ટીના પ્રસુખ મી૰ કતેભાઇ અમીચદના સખુના પણ એજ મતલળના અમે વાંચ્યા છે. ઠરાવા કરવા માટે ભેગા થવું એ તાે સા ઠીકજ છે; સુધારા વધારા વગેરે માટે લાંમાં લાંબાં ભાષણે કરવા ઉભા થવું એ બી બહુ ગળ્યું કામ છે; પણ બાેલેલાં વચના અને કરેલા ઠરાવેાને યોગ્ય રસ્તો આપવા, તે ઠરાવા અને તે વચના પ્રમાણે વર્તન કરવું, એ સુશ્કેલ કામ છે. એ કામ બજાવવાના આ સમય છે. મહાવિર સ્વામિને જૈન ધર્મ સ્થાપતાં પડેલી મહેનત અને નડેલી મુક્ષ્કેલીઓ આગળ આજના જૈન સુધારકાની જે હિંમત વિસાત વિનાની ગણાશે. એટલા માટે સંસાર સુધારાના જે ઠરાવા આ જૈન મંડળામાં કરવામાં આવે છે તે જ્યાંસુધી કાગળ ઉપર નાધાઇને અબડાઇ ઉપર ધળ ખાતા પડે સાંસુધી મહારાજા ગાયકવાડે આપેલી સાનાના સુળની શિખામણુની કીમત બેબદામની પણ અંકાવાની નથી. જો આપણા જૈન બધુઓએ પાતાનાં ધનના સદઉપયાગ કરવાજ હાય તા તેઓએ બીજાં અગત્યનાં કામા જોડે સંસાર સુધારાનાં કામાના પાતેજ કરેલા ઠરાવાને અમલમાં સુકવા જોઇએ, કુચાલાને તાડવા જો-ઇએ, અને કૉન્ક્સ્ટન્સ બરવાના સુધરેલાં પગલાંને સફળ કરવું જોઇએ.

**જેન <sup>હ</sup>વેતાઝ્બરની** ત્રીજી કાન્ક્રરન્સનેા મહાન મેલાવડેા વડાેદરામાં મલ્યે**ા હતા**. આ સમાજે ધર્મને છાજતા તથા વહેવારીક ઠરાવેા કરી જે કામ બજાવેલું છે. તે માન્ય ભ-રેલું લખ્યાયલું છે. પ્રમુખ રાય **બહાદુર યુદ્ધિસીંગના પ્રમુખ પ**ણા નીચે થયલા કામકાજના ચીતાર પ્યહુ પ્રિય થઇ પડેલા હાેવા જોઇએ. આ મહાન માંડળમાં વિવિધ પાષાકના, વિવિધ ભાષા ખાલનારા અને વિવિધ વિચારના પ્રતિનિધિયાએ હાજરી આપી હતી, તે એ સમાજ-ના ભવ્ય દેખાવનું એક ચીન્હ કર્તું. સમાજ તરકથી જે જે ખાતાં સ્થપાયા છે, તેને સારી સ્થિતિમાં લાવવાને શ્રમ તથા નાણાની અગત્ય છે એ બે વસ્તુઓને પુરી પાડવામાં મંડળના સુકાનિયાંએ જે સહાસ ઉઠાવાે છે તે ભવિષ્યમાં કલદાયક નીવડયા શિવાય રહેશે નહિ. જૈન સંપ્રદાયમાં વિદ્વાન વર્ગ હસ્તી ધરાવે છે. તેમ એમાં ઘણા લક્ષ્મી પુત્રા પણ છે તેઓની ઉ-દારતા ભરેલી મહેનત અને સખી હાથને લઇને આ મંડલતું કામ મંગલકારી નીવડયા શિ-વાય રહેશે નહિ. બહુ સ તાયની વાત છે કે, આ મ ડલમાં રાય બહાદુર બદ્રીદાસ, રાય બહા-**૬**૨ સુદ્ધિસ**ંગ અને શેઠ વીરચ**ંદ દીપચંદ સી. આઇ. ઇ. જેવા વૃદ્ધ ંગહરયો આગળ પડતા ભાગ લઇ જે શ્રમ લે છે, તે આ કાન્કરન્સને વિશેષ ભાગ્યશાળી ખનાવવાનું પ્રયાેજન સચ-વાય છે. આ કાન્ક્રરન્સને જન્મ આપનાર જયપુર રાજ્યના જાણીતા માછસ્ટ્રેટ મિ. ગુલાબ-ચંદ ઢઢાને ધન્યવાદ આપતાં અમાને સ તાેષ ઉપજે છે. તેમણે જે આ પવિત્ર બીજ વાવ્યુ હતું, તેના રડા કળના લાભ લેવાના પ્રસંગ જૈન ભાઇઓને મલતા જાય છે. એ સંતાય કંઇ એાછેા મનાશે નહિ. વડેાદરા નરેસે આ સમાજને જે જોઇતી મદદ આપી છે. અને એ નામદારે સમાજના મંદીરમાં પધારી જે ભાષણુ કર્યું હતું, તે સાૈ એક ફડા રાજ્યપતિને શાભા આપનાર મનાશે. અમેા આ સમાજના જય ચહાઇએ છીએ.

> ગુજરાત મિત્ર તથા ગુજરાત દર્પણુ. સુરત તારીખ ૪ થી ડીસેમબર સને ૧૯૦૪. ત્રીજી જૈન શ્વેતાંબર કાનફરન્સ.

નાર્ધીક જૈન કાનકરન્સનું કામ વડેાદરા જેવા ગુજરાતનાં છત્રપત્રી રાજ્યમાં સર-વાર્ધીક જૈન કાનકરન્સનું કામ વડેાદરા જેવા ગુજરાતનાં છત્રપત્રી રાજ્યમાં સર-ભમ ઉતર્યું છે. ગયે વર્ષ એ કાનકરન્સ સુવ્ય⊎માં ભરાઇ હતી; છેલ્લી કાનક્રરન્સને વડેાદરાના

## ( ( 83))

મહારાજાશીએ સારી મદદ આપવાથી તેને ઉત્તેજન મળ્યું છે. એ કાનકરન્સતું કામ તેના પ્રમુખ રાયબહાદુર યુદ્ધસિંહજી દુધેરીયાના પ્રમુખપણા નીચે ગયા રવીવારથી ત્રણ દીવસ ચાલ્યું હતું આ પ્રમુખ બંગાળના મુર્શીદાબાદના આજીમગંજના વતની છે. અને તેઓ પહ વર્ષની વયના છે તથા ઘણા ધર્મચુસ્ત જૈન તરીકે વિખ્યાતી પામેલા નર છે, તેમજ વિઘાનાં કામને મદદ આપવાની વૃતિ ધરાવનારા છે.

આ કાનક્રરન્સના સ બધ્ય પ્રે જૈન લાક્ષણીક પ્રદર્શન ઉધાડવાથી તેની મહત્વતામાં વધારા થયા છે. જેમાં જૈન ધર્મનાં ચિત્રા, દેખાવા તથા દેશી બનાવઢના પદાર્થોના સારા સ ગ્રહ બેગા કર્યો છે. એ ચીજો જૈન ધર્મને બાધ નહીં આવે એવી છે. એ પ્રદર્શન વડા-દરાના યુવરાજ શ્રી ક્લેહસિંહરાવે ખુલ્લું મુક્યું છે, જેઓએ સમયાનુસાર બાષણ કરીને હિંદુસ્તાનના ઉદયાગ હુવરની ચઢતીને માટે તેમજ સ સારીક અને ધાર્મીક સુધારા વધારા કરવા માટેના વિચારા એ ઉછરતા રાજવ'શીએ જણાવ્યા હતા. આ યુવરાજે જૈનધર્મની અહિંસા થતી અટકાવવાના ધર્મની સ્તુતી કરી હતી.

કાનકરન્સમાં મહારાજા શ્રીસિયાજીરાવ, પ્રમુખ, મી૦ ગુલાભચંદ ઢઢા, શેઠ લાલભાઇ દલપતભાઇ, પ્રેાફેસર નથુ મંછાચંદ મી૦ કતેહચંદ લાલન અને પાટવી કુંવર શ્રીમંત ક્લેહસીંહરાવે અક્યતા, જૈન ધર્મ, કેળવણીની આવસ્યતા, કાનકરન્સના આડંભર એાછા કરી થેાડા ખરચે કામ કરવાની જરૂર, બાળલબ્ન, વૃદ્ધ વિવાહ તથા બીજા હાનીકારક રીવાજો દુર કરવાની જરૂર, અને સ્ત્રીઓને છુટાપણાની હીમાયતમાં બાેધરૂપી કરેલાં ભાષ-ણોથી કાનક્રરન્સમાં હાજર રહેલાઓ ઉપર સારી અસર કરી હતી અને તે વખતે જે લાગણી ફેલાઇ હતી તેવી લાગણી કાનક્રરન્સ છાેડી જવા પછી પણ જૈના ઉપર **યા**લુ રહે તેા એ કામમાં સારા સુધારા થવાની આશા રહે છે.

કાનક્રરન્સ ભરવામાં હાલ થતાં આંડળર બનાવનારા ખરચ્યી કાનક્રરન્સ ભવિષ્ય-માં ૮ઙી સકશે કે નહીં તે વીશે તેના સુકાનીએામાં ચીંતા ઉભી થઇ છે અને તેથી હવે પછીની કાનક્રરન્સ ક્યાં ભરવી તે સવાલના છેલ્લા દીવસની બેઠક સુધી નિર્ણય થઇ શક્યા નહોતો, માટે શેઠ લાલભાઇએ કરેલી સુચના મુજળ કાનક્રરન્સ ભરવાના ખરચ ઓછો કરવાથી ક્રાનક્રરન્સની જીંદગી ટડી સકશે. દરેક કાર્ય આરંભનાં તે માટેની યોજના અગાઉથી થાય છે તેમ કાનક્રરન્સ જેવાં માટાં મંડળના બધારણની જરૂરીયાત ધારી ચાલુ વરસની કાનક્રરન્સમાં તે માટે એક ઠરાવ પસાર કર્યો છે, ડેલીગેટા માટે હવે પછી ર. ર ની પી લેવામાં આવશે અને તેથી જે ઉપજ થશે તે કાનક્રરન્સના ખરચ-માં મદદ કર્તા થઇ પડશે, અને કાનક્રરન્સ ભરનારાઓ ઉપર ખરચના વધુ બોજો પડતાં અટકશે. છેલ્લા ૩૦ વર્ષ દરમ્યાન જાપાનીસોએ જે સુધારા વધારા કરી હાલમાં નામના મેળવી છે તેના હાખલો આપી કેટલાક ભાષણકર્તાઓએ જાપાનીસાની માક્રક જૈનાને સુધારા વધારામાં આગળ પડવાનો આગ્રહ કર્યો હતો અને વેપાર તથા ધર્મના ફેલાવા માટે પરદેશ ગમન કરવાની આવશ્યકતા બતાવી હિંદુ સ'સાર સુધારા ઉપર સાર' અજવાળું પાડયું છે અને એ સવાલો કાન્ક્રરન્સમાં રજી થવાથી હવે પરદેશ જઇ આવનારા જૈના સ'બ'ધો જે મતબેદ ઉઠે છે તે નિર્મળ થઇ તેના છુટથી લાભ લેવાનો માર્ગ બીજાઓ માટે ખુલ્લા કરી આપવામાં આવશે. તેા તે દેશને અને એ કાેમને ભવિષ્યમાં ઘણાે લાભ કર્તા થઇ પડશે. એ કાેમનું અનુકરણ કરી બીજી કાેમાે પણ પરદેશ ગમન તરક હાલ જે અભાવની લાગણી ધરાવે છે તે રક્ષ્તે રક્ષ્તે દુર થવા પામશે તેા તે કાેમાે પણ પાેતાને ધણાે ક્ષાયદાે કરી શકશે.

કાન્ફરન્સમાં વદ્ધક્ષગ્નો અને બાળલગ્નોને લગતો ધણો ચર્ચાયલો સવાલ હાથ ધર-વામાં આવ્યો હતો અને તેમાં વૃદ્ધ લગ્નો તરક ખેદ બતાવી પૈસાને ખાતર કેટલાક લેાભી માભાપો પોતાની બાળકીઓની જીંદગીના ભવિષ્યના સુખને કેવી રીતે ઠેલી મેલે છે તેનેા સારો ખ્યાલ શ્રેાતાઓને આપ્યો હતો તેથી એ રીવાજ જેજે ઠેકાણે ચાલુ હાય તે તે ઠેકાણે એ હાનિકારક રિવાજ નાવ્યુદ કરવાને મી૦ નથુ મંછાચ દના જણાવ્યા સુજબ દરેક ન્યાતે ખંદોબસ્ત કરવાને બ્હાર પડવાની જરૂર છે. બાળલગ્નો દેશને હાનીકારક હોવાથી શ્રીમંત મહારાજ શ્રી ગાયકવાડે પસાર કરેલા કાયદા તરક પ્રસંશાનો લાગણી બતાવવામાં આવી હતી અને એવા લગ્નો નાવ્યુદ થાય એવી ખાએશ જહેર થઇ હતી. પણ બાળલગ્નની ઠરા-વેલી હદ જોતાં જ્યાં સુધી બાળકોના મનને ખીલવી તેમના મનમાના માઠા વીકારોને નાવ્યુદ કરવાના ઇલાજો લેવાય નહીં ત્યાં સુધી ઉમરની ઠરાવેલી હદનાં લગ્નો શું. પરીણામ નીપ-જવી શકે તે સવાલ વીચાર કરવા જોગ થઇ પડેલે જણાવવામાં આવે છે એટલે બાળકોના મનમાન્યા માઠા વીકારા દુર થાય અને તેમની વૃતિ લાયક ઉમરે પુગતાં સુધી સારી રહે એવા પ્રકારની કેળવણી તેઓને આપવી ધટે છે કે જેથી તેઓ પોતાની ક્રરજ શું છે તે સ મજતાં થશે ત્યારે બાળલગ્ન અટકાવવાનો હેતુ તેની મેળે પાર પડશે એવી દલીલ ઉઠાવવા-માં આવે છે.

# THE GUJARATI PUNCH. AHMEDABAD 4th December 1904.

## The Jain Conference at Baroda

The Third Jain Conference held its sittings at Baroda, in a spacious Mandap opposite the Laxmi Vilas palace. It was presided over by Rai Bahadur Budhsingji. The Conference had the full sympathy of the Baroda state authorities. Prince Fattesingrao in a nice speech opened the Exhibition held in connection with the Conference; while H. H. the Mahraja Gaekwad and H. H. the Mahrani Saheb attended by the state officers graced the assembly with their presence on the opening day. About 2000 delegates attended the Conference. After the President of the reception Committee had finished his address of Welcome, His Highness the Mahraja Gaekwad rose

to open the proceedings of the Conference in a short but felicitous speech. His Highness felt a great pleasure to attend the Conference; he had come there more to hear the speech of the President-elect, than to make one himself. The Conference had his full sympathy. His Highness felt confident that an attempt would be made to give a practical effect to the resolutions passed by the conference. His Highness remarked that the Jain Religion was a very ancient religion. It was also a simple religion; in fact Jainism was more ancient than Buddhism. Mahavirswami flourished two centuries before Buddhism came into existence-the Jain religion had two outstanding features. The first was that prior to the establishment of the Jain religion, the slaughter of animals was generally in vogue in India by way of sacrifice to the Gods-the Jain faith rightly set itself against the system. The second feature in the opinion of His Highness was that according to the Jain faith the caste system was unjustifiable. That was an astounding statement for the Jains to hear and His Highness himself was not quite sanguine about it. He, however, hoped that the Jains would carry researches about the matter in their ancient religious books and if as a result it should turn out to be a true one they would accept it in practical life. The cardinal principle of the Jain faith that the non-slaughter of animals was the greatest duty of man ( आहेंसा परमोधर्मेः ) was a very fascinating one and an attempt should be made to spread it by booklets & The Jains were a mercantile community and genepreaching. rally in well to-do circumstances. His Highness advised them to use their wealth for the public good and social reform. After His Highness had concluded his speech, the President rose amidst cheers to deliver his address. The address was a very long one and embraced a variety of topics such as religious and secular education-female education-the spread of Jain litera. ture-the publication of ancient Jain works, the preservation of ancient Jain temples, antiquarian researches, the abolition of injurious social customs and the necessity of a Jaina directory, The lecture was full of interest to the Jaina community

and will afford them an ample food for reflection for some time to come. The President said that he trusted that his remarks would be carefully considered by the Jaina community and that they would make progress socially and morally every year. If they forgot the objects and aims of the conference from their minds as soon as the present proceedings had ended, the vaste expenditure incurred in connection with the conference would be quite useless. The President congratulated several Jaina Sanghas npon doing a practical good work during the past year. After the conclusion of the speech by the president the Subject-Committee was appointed & several influential speakers addressed the assembly on various topics. One of the most important speech made in the conference was that of our esteemed citizen Sheth Lalbhai Dalpatbhai who boldly advocated foreign travels. His speech elicited much applause. After passing a number of useful Resolutions the conference was dissolved.

It is a gratifying sign of the times that our Jaina brothers are wide-awake and alive to the amelioration of their social and religious condition. It is a pleasant spectacle to see delegates from various parts of India meet together once a year, in common harmony and brotherly love to discuss and exchange views for the moral advancement of their own community. The Conference is certainly to be congratulated upon doing a really useful work, we hope our Jaina brothers will bear in mind the words of Prince Fatehsinrao that "only a hundredth part of the sacred books of the Jaina has yet been brought to light and that such conferences and exhibitions would induce young Jain scholars to dig deeper into the mines of learning and bring out valuable ore now huried and hidden."

# ગુજરાતી પંચ

અંમદાવાદ. તા. ૪ થી ડીસેમ્બર સતે ૧૯૦૪. ગુર્જર ભૂમિ ઉપર એક વધુ દિગ્વિજય.

ચડતી પડતીના ચક્રના ઝપાટામાં આવેલી, સુવર્ણ સમાન લેખાયેલી ગુજર ભૂમિતુ' ભાગ્ય હવે ઉધડતું જતું જણાય છે-દેશ તથા કામના ઉત્કર્ષ માટે યત્ન કરતા સંજ્જના

જી જરાતમાં હીલચાલ કરવા લાગ્યા છે. આવા પ્રકારતેલ ચંતન કરવોની શરૂઆત આજવી વર વર્ષ ઉપર ગુજરાતના પાટનગર તરીકે પ્રખ્યાત થયેલા આ અમદાવાદ, શહેરમાં પ્રાંતિક ઑન્કરન્સના રાજદારી મેળાવડા સરાઇને થઇ હતી. તે વખતથી ગુજરાત કાંઇ વિશેષ નામના કરશે એવી આશા રાખવામાં આવી હતી અને તે પ્રમાણે લગભગ આડ નવ વર્ષ ઐમતે એમ વહી ગયાં હતાં એટલામાં આ દિન પત્રે જન્મ લઇ સુજરાતમાં કાંગ્રેસ ભરવા-ેના એક ઘણા દુર્ઘટ સવાલ હાથ ધર્યા હતા. તે માટે શરૂઆતમાં તાે કાેઇ કાેઇ બાળ્ય ત્તરકથી આ બાલ પત્રની મળ્યક કરવાતું નિંદાપાત્ર કર્મ કરવામાં આવ્યું હતું પરંતુ સમા-રાે સવાલ સાર્વજનિક હિતતા હાેવાથી સમજાનું જનાએ અમારા લેખાતે લક્ષપૂર્વક વાંચવા માંક્ર્યા. અને અમારા પત્રમિત્રાએ અમારા કાર્યતે પુષ્ટી આપી તથા પરિણ્<mark>યમે નેશન</mark>લ કોંગ્રેસના મહાન રાજકિય મેળાવડા આ શહેરમાં ભરાઇ તેણે વિજય ધાેષ કરી મુક્યે જીતા: નવા જમાનામાં ગુજરાતની ખ્યાતિ કરાવનાર' બીજી કાર્ય સવાતન ધર્મના સ'રક્ષ-આર્થે કોંગ્રેસની અગાઉ ભરાયેલું પરિષદ ગણીએ તે⊨ તેવું ત્રીજીં કાર્ય કોંગ્રેસ હતું. તે પછી ચાેશું કાર્ય ગયા અકટાેબર માસમાં આ શહેરમાં મુસલમાન ભાઇએાની પળેલી કાે-ન્કરન્સના મંડપમાં કોન્કરન્સનું કાર્ય પરિપૂર્ણ થયા પછી વૃત**ેજેવી રાજદારી મંડળી**ની જે સ્થાપના થઇ હતી તે થઇ ના હોત તા કાન્કરન્સના વિજય રંગ કાંઇ એારજ જામત. પરંતુ મુસલમાન કામના માટા ભાગ અભણ હાવાથી થોડી ખુહિવાળા છે તેથી તેને સમ-ચના વિચાર થયેા નહીં અને લગ્ન પ્રસ ગે રાજ્યા ગાયેા ! તેથી થેકડી થવામાં ભાકી રહી નહીં. મુસલમાન કામમાં કેળવણીના પ્રસાર થવાની જરૂર કેટલી ખધી છે તેને એ દિલગી-રી ભરેલા ખનાવ ખહુ મઝેના નમુના છે તેથા તે કામના કેળવણા કાન્કરન્સે ખીજી કાે⊎ પ્છીલચાલ હાલ કરવી પડલી મૂકી કેળવણીના પ્રસાર વિષે સાથી પ્રથમ લક્ષ આપવાની જરૂર છે. સન ૧૮૯૨ થી માંડી સન ૧૯૦૪ સુધીનાં ૧૨ વર્ષની અંદર ગુજરાતમાં આ **પ્રમાણે જે જાણવા લાયક ચાર જાહેર મેળાવકા થયા તે તમામ કુક્ત અમદાવાદ શહેરમાંજ** ચયા હતા. અમલવાદ શહેર ગુજરાતની રાજધાની હોવાથી સાથી પ્રથમ પગલુ તેણે ભરવું જોઇએ અને પોતાની તે કરજ તેણે બજાવી તે સંતાષકારક છે પરંતુ તેથી કાંઇ એમ તથી ઠરતું કે ગુજરાતમાંનાં અન્ય શહેરાએ સસ્તાઇમાંજ પડી રહેવું. આવાજ કારણને લીધે આ ઇલાકાની પ્રાંતિક ક્રાન્કરન્સ એક બે વર્ષથી સુરત શહેરમાં ુભરવાની ભલામણા થાય છે પરંતુ ગરીય સુરત–આગ મરકી અને રેલથી પાયમાલ થઇ ગયેલું સુરત ફાંકડું અને રંગીલું સુરત-પ્રચ્છા છતાં દૈવકાપના જોસને લીધે ડાક ઉંચી કરી શકતું નથી. સુરતની એની સ્થિતિ હેાવાથી તેને ખાજી ઉપર મૂકીએ તેા આપણી નજર ભરચ કે વડાદરા તરક જાય છે. ભરચ-ભ્રગુપુરતી અસલતી જાહોઝલાલી હવે નાશ પામી છે અને તેની પ્રતિદિન ભાગતી થઇ છે. અને શ્રીમ ત સરકાર ગાયકવાડની રાજધાની વડેાદરા સુધારા વધારામાં આગળ વધતું જાય છે તેથી ભરૂચના કરતાં વડેાદરા તરકથી કાંઇ થવાની આશા પ્રથમ રાખી શકાય તે આશા ગુજર ભૂમિના ઘન્ય ભાગ્યે અને ઇશ્વર ં પ્રતાપે આ વર્ષે પાર પડી છે જૈન કાેન્ક્રરન્સના ત્રીજા વાર્ષિક મહાત્સવને લીધે વહેાદ<del>સ</del> શહેર કેટલાક દિવસથી હળામળા રહ્યું હતું અને તેણે ગયા અડવાડીઆમાં પૂર્ણ ગજના કરી છે. તે વિષેના ખાસ હેવાલના ડુંક સાર આજના અંકમાં અન્ય રથળે આપેલા હેાવા-

થી અત્રે તેનું પુનરાવર્તન કરવું અવાસ્તવિક વિચારીએ છીએ. તાેપણ સ્પષ્ટ થવાને એટલું તા કહેવાની જરૂર ધારીએ છીએ કે એ કાત્કરન્સ એકલા શ્વેતાંબરીએાતી હતી. કાન્કરન્સ વખતે પ્રમુખે તથા અન્ય વક્તાએાએ જણાવેલા વિચાર બહુ સારા છે. અને ેતેમએ કરેલા ડરાવેા પણ સ્વકામની ઉન્નતિઅર્થે ઘણા ઉપયોગી છે. વડાદરાના મહારાજા શ્રીમાંત સયાજીરાવે તથા તેમના પાટવી કુંવર પ્રિન્સ કૃત્તેહસિંહરાવે કાન્કરન્સ પ્રત્યે જે ભાવ દર્શાબ્યેા છે અને પોલાના વિચારા જાહેરમાં જણાવવાની કૃપા કરવાનો તસ્દા લીધા છે તે માટે જૈન કામે તે નામદારાના થાેડા આભારી થવાનું નથી. તે નામદારાનું અતુકરણ કરવાતું અન્ય દેશી રાજ્યકર્તાઓ શીખે એજ આપણે ઇચ્છવાતું છે. આ કૉન્કરન્સની વિશેષ કત્તે તેની સાથે ભરવામાં આવેલા લાક્ષણિક પ્રદર્શનને લીધે થઇ છે. નેશનલ કોંગ્રેસ જેવા દેશના રાજક્રિય પરિષદની સાથે હુત્રર ઉદ્યોાગને લગતું પ્રદર્શન ભરવાની રીતિ છેલ્લાં ચાર વર્ષથી શરૂ થઇ છે અને તેમ કરવામાં લાભ સમાયેલા સમજવામાં આવ્યા હે ત્યારે તેવા શુભ માર્ગનું અનુકરણ જૈન કાન્કરન્સે કર્યું છે તે જોઇ સ'તાષ થાય છે. પ્રદર્શ-નમાં રજા થયેલી ચીજો માટે જે થોડા ચાંદ તથા ઇનામ અને સર્ટાધીકેટ આપવામાં આવ્યાં છે તે લપર નજર નાંખીએ છોએ ત્યારે તેમાં મી. માતીલાલ કશલચંદ શાહ અને વૈઘ સ. જઠાશ કર લીલાધર જેવા આ શહેરના નામાંકિત ગહસ્યોનાં નામ જોઇને અમને વિશેષ હવે થાય છે. કાન્કરન્સનું કામ સંપૂર્ણ થયા પછી જૈન ગ્રેજ્યુએટસ એસોસીએશન-ની થયેલી સ્થાપના અન્રે ભરાયેલી મેહાેમેદન કેળવણી કાન્કરન્સ પછીથી સ્થપાયેલા પેલા થાહું યાદ કરવા લાયક મંડળનું સ્મરણ કરાવી બંનેનો સરખામણી કરવાને લલચાવી સારા નરસાની પરીક્ષા કરાવે છે, એ પરીક્ષા કરવાનું કામ સહેલું હોવાથી તે વિષયે વિશેષ વિવેચનની આવશ્યકતા નહીં હોવાથી સુત્ત વાચકોને અમે સાથે લઇતે ઇચ્છીએ છીએ કે જે હેતથી ગ્રેજ્યુએટસ એસાેસીએશનની સ્થાપના થઇ છે તે શુભ હેતુઓ પાર પડા અને જૈન અધુઓના ઉત્તરાત્તર જય થતા રહા. તાપણ છેવઠમાં આ સંબધમાં જૈન બધુઓ સમક્ષ એ હું કો વિન તીઓ છે. તેમાંની એક એ છે કે જે કરાવે તેમણે કર્યા છે તેમને અમલ કરવા ઉપર અવસ્ય ધ્યાન આપવું જોઇએ; અને બીજી વિન તી એ છે કે કોન્ક્રરન્સ ક્રક્ત શ્વેતાંબરીઓની નહીં કરતાં દિગ બરીઓને પણ તેમાં સામીલ કરવા જોઇએ. એ બે ભાખતા ઉપર લક્ષ અપાશે તેા આ કાન્ક્રરન્સને "જૈન કાન્ક્રરન્સ " કહેવામાં બિલકુલ **માધ આવશે નહીં અને જૈન કાેમનાે ઉત્કર્ષ વિશેષ સારી રીતે કરી શકા**શે. દેશમાંની એક કામનું પણ એ રીતે સંપૂર્ણ કલ્યાણ થાય તે৷ તે ઘણું હર્ષ દાયક થઇ પડશે.

zzástatelete - Autor units a suger o provi

## ( १8९ )

## THE PRAJA BANDHU.

AHMEDABAD; Sunday 4th December 1904.



The Jain Conference-One of the most important events of the last week of November was the Jain Conference held at Baroda. Respectable Jains from all parts of the country assembled in large numbers, and on the three days of their conference viz.; 27th, 28th, and 29th passed resolutions. touching their special religious and social interests. The conference unanimously recognized the necessity of imparting religious instruction to Jain pupils, along with secular education, or prior to it. The second resolution of the conference urged the importance of diffusing the Jain literature. Another resolution affirmed the necessity of having a special series of text books for the use of Jain pupils, and the necessity of forming a Jain religious association of men versed in Jain lore in order that it may direct with additions and improvements the course of religious instruction in Jain schools. The conference fully recognized the necessity of searching for, acquiring and publishing old Jain writings. The necessity of repairing and preserving old Jain temples all over India was also duly acknowledged. The institution of an archæological research for the purpose of collecting data for the construction of an authentic history of Jainism was next dwelt upon, and the conference unanimously voted its importance. The conference also passed a resolution in favour of collecting funds for the maintenance of poor Jains all over India, remarking that by the tenets of their faith such Jains cannot ask for charity, and that their support should form a charge upon the whole community, The maintenance of institutions like the Pinjrapole where dumb beasts may be treated for diseases and taken care of was unanimously recognized as a duty of the community as laid down by the doctrines of the Jain faith. To promote mutual good will among the members of the community, the preparation of a Jain directory for the whole of India was earnestly recommend( 290)

The conference also unanimously passed a resolution at certain pernicious social customs should be stopped or discouraged viz., early marriages, the marriages of old persons, the sale of girls in marriages, feasts on account of deaths, weeping and beating the breast at deaths and unnecessary expenditure on social ceremonies.

The Jain's number about 15 lacs in the whole of India, and by their prominent commercial position, great wealth, and their strong attachment to their faith, they form one of the most important communities of India. Their religion does not recognize caste distinctions, though in practice they observe them like the orthodox Hindus. The resolutions passed by them do credit to their sound common sense, and many of them are such as other communities may with advantage adopt. With the purely sectarian resolutions, the public at large is not likely to concern itself. Complete toleration and sympathy is the spirit which every educated Indian, be he a Hindu, a Mahomedan, or a Parsee, will show towards them. Though religious tenets are divurgent, truth is one, and all sincere lovers of the latter are now agreed that the interests of truth will be best served, if each religious community honestly looks into the foundations of its faith, their compatibility with other branches of knowledge, and the reason for and against each tenet. There are however other resolutions of the conference, where it is on common ground with the followers of other faiths. The necessity of a proper system of industrial training is one of these, and here the Jains have every thing to gain by making common cause with the rest of India. The education of women is another of these subjects, and here too we think that they cannot detach themselves from the rest of India, In the matter of stopping pernicious customs the Jains are in the same condition as the majority of the people of India, but we think the desired end will be best attained, if they pursue methods which appear to them best calculated to accelerate their pace. One of the prominent speakers at the conference dwelt upon the great importance of physical culture, and here too the Jain

## ( ? ? ? )

is on common ground with the rest of his fellow-subjects in India. The conference was taken as a whole a great success. The presence of the intelligent Ruler of Baroda, and the Yuvraja added to the dignity and importance of the gathering.

One of the speakers dwelt upon the necessity of husbanding the resources of the community, and on the great expense incurred by these gatherings. While we admit the general weight of the observation, we think it essential to draw the attention of the public to the principal that moral, political and educational, gains are not to be measured by the rupees, annas and pies they cost. The propagation of sound ideas, or the promotion of national union are ends invaluable in themselves, and no sensible person will count the cost in mere rupees without reflecting on the immense moral acquisition we make by such sacrifices. Of course mere pageantry ought to be shunned as also those accessories which simply feed empty vanity, We ought also to remember that public agitation on a large scale has a priceless educational worth and that it promotes general objects in a way which schools and libraries would fail to secure in a generation. We are of course speaking generally; and would not be understood as encouraging extravagance in any form. The Jains are a shrewd practical people, and must be left to decide for themselves, whether their object can be achieved by less costly methods. Some times of their programme are such that nothing but well considered and well organized action is needed. It is for the community to decide whether instead of holding a conference next year, they may not with advantage apply their energies for two or three years to the accomplishment or initiation of some of the excellent resolutions they have passed at the late conference.

# ( १९२ )

## પ્રજાબંધુ.

-4-

અમદાવાદ તા. ૪ થી ડીસેમ્બર સતે ૧૯૦૪. વડાદરા ખાતે મળેલી ત્રીજી જૈન શ્વેતાંબર કેાન્કરન્સ.

વડાદરા ખાતે ગઇ તા. ૨૭, ૨૮ અને ૨૯ મીએ મળેલી ત્રીજી જૈન શ્વેતાંબર કાન્કરન્સનો મેળાવડા કત્તહમંદા સાથે પસાર થયેા છે. એ મેળાવડામાં થએલા કામકાજને લમતો હેવાલ અમે અન્ય સ્થળે આપેલા છે તે ઉપરથી વાંચક ગણ કહી શકરો કે જૈન ભાઇએ કામના અભિવૃદ્ધિ માટે બાલીનેજ નહીં પણ કાંઇક કરીને ખતાવવાની શરૂઆત કરવા માંડી છે. કાન્ક્રરન્સની સ્વાગત કમિટીના પ્રસુખનું ભાષણ અંતઃકરણની લાગણીનું **અને ચર્ચાવાના વિષયોની પસ**ંદગીનાં કારણા ઉપર અજવાળું પાડે તેવું હતું. તેમાં એક **ઢેકાણે એવુ**' જણાવેલ છે કે ''વળી ઘણી ભા**યતાે એકી વખતે ઉપાડવા જતાં એકે**નું સાર્થક થઇ શકતું નથી અને ઉલટા ગાટાળા થાય છે. '' પ્રમુખના આ શખ્દા બહુ ગંભીર છે ને તે તરક જાદી જાદી કેાન્પરન્સોએ ધ્યાન આપવાની ખાસ જરૂર છે. જૈન ભાઇએ વેપારી કામ હાવાથી જે ભાભતમાં નકા મળે તેજ ભાભતને હાથ ધરે એ વ્યવહારિક ડહાપણ તેમણે દ્રષ્ટાંતિક રીતે રજી કર્યું છે તે ખુશ થવા જેવું છે. આવી કાન્કરન્સા ભરવાના મુખ્ય **હેતુ લાંભાલચ ભાષણાથી** શ્રાેતાઓને પુશ કરવાનાે નહીં પણ થાેડું પણ કામ કરી બતાવી કાેમને કાયદા કરવાના હાેય છે. કાન્કરન્સના પ્રમુખ રાય બહાદર બુહસિંહજીના ભાષણમાં કાેન્ક્રરન્સમાં ચર્ચાવામાં આવેલા વિષયાનું દિગૃદર્શન કરેલું છે અને તેમાં કેળવણીને માખરે મુકવામાં આવી છે એટલુંજ નહીં પણ સ્ત્રી કેળવણીને વધુ વજન લાગુ પાડવામાં આવેલ છે. એ લંખાહ ભાષહ ઉપરથી જોઇ શકાય છે. કે કાન્કરન્સનાે ખાસ હેતુ જૈનાની સામા-છક અને ધાર્મિક કેળવણીની ઉત્રતિ કરવાનાે છે. અને તેમાં કંઇ પણ વ્યવહારિક પગલાં ન લેવામાં આવે અને માત્ર વાણીવિલાસજ થતે। હેાય તેા તેનું કળ શું ? એવા વાણીવિ-લાસને અવકાશજ ન મળે તેટલા માટે આ વખતની કાેન્કરન્સમાં ગયા વર્ષના અનુભવથી જૈન આગેવાનોએ કાંઇક કરી બતાવવાની પહેલ કરી છે. અમાને જણાવતાં સંતાષ થાયછે કે કેાન્કરન્સતું હાલતું ભંધારણ જે કુકત ડાેળ અને દમામખાતર બાદશાહી ખર્ચ કરાવનારૂં છે તેને કેરવી નાખી સાદી રીતે અસલના પંચના રીવાજ ઉપર કામ લેવાને৷ ડરાવ અત્રેના **શે**ક લાલભાઇની દરખાસ્તથી કર્યો છે. વ્યવહારિક રીતે દેશી સાદી રીતભાતને વળગી રહીને આવી કેાન્કરન્સો ભરવાની શેઠ માસુકે હિમાયત કર્યાથી ત્રણ દિવસના મેળાવડા પાછળ ખર્ચાતા હજારા રૂપીઆના બચાવ કરવાતું ડહાપણ આખરે જૈન જેવી કરકસરમાં પાવરધી ગણાતી કામે જોયું છે જે અન્યકોમાેએ અનુકરણ કરવા જેવું છે. આ કાનકરન્સમાં વધુ ધ્યાન ખે ચનારાે ખનાવ તાે ના. મહારાજા સર સયાજીરાવ તથા તેમના યુવરાજની સામેલ-ગીરીજ છે. કાર્ન્કરન્સના પહેલા અને છેલ્લા દિવસે આ બન્ને પિતાયત્રે પધારી સામાજીક તથા ધાર્મિક બાબતામાં પાતાની પ્રજાને તથા તેમના અન્ય બંધુઓને ઉત્તેજન આપી અન્ય રાજ્ય કર્તાએાને તેએાની કરજ વિષે જણત કરેલા છે. ના. સર સયાછરાવ જેવા સધરેલા વિચારના છે તેનું જ પ્રતિભિ બ તેમના યુવરાજમાં એવી તાે આબાદ રીતે પડયું છે કે "બા-પ તેવા ખેટા વીગેરે " કહેવત આ ઉપરથી સાચી ઠરે છે.ના. મહારાજના ભાષણમાંથી તેમ-

ના જેવા અન્ય જોખમદાર રાજકર્ત્તાઓએ એવે બાધ લેવાના છે કે આ જમાતા સર્વ ધર્મ તરક સમાનતાની નજરથી જોવાને શીખવે છે. તેવીજ રીતે આ દેશની જીદી જીદી પ્રજા એાએ પણ ધર્માધપહ્ય તજી દેઇને ભાઇચારાની લાગણીથી વર્તા દેશનું એક્ય કરવાના કામમાં ઉદાર થઇ ઐકય વધારવું જોઇએ, કે જે વગર આજે આપણે હોલની સ્થિતિએ આવી ચઢયા છીએ. આ મેળાવડાના છેલ્લા દિવસે યુવરાજ ક્રતેસિંહરાવે કરેલું ભાષણ સારા વિચારોથી ભરપુર છે. એ જીવાન રાજ્ય કુમારશ્રીએ કેળવણીને પ્રથમ હાથ ધરી, વ્યવહારિક ત્તાન આપનારી કેળવણીને વિષે દીલગીરી જણાવી, લોકો એ ખામી જોઇ શક્યા તે માટે આશા ખતાવી હતી. બાળલગ્ન, કુરીવાજો ,નાત જાતનાે પ્રતિબ ધ, સ્ત્રીઓને છુટ, ઐક્યતા ધર્મનું છુટાપ**હ્યું, ગુજરાતીઓ અને ગાયકવાડના વ**'શને৷ સંબ'ધ વિગેરે વિષયો ઉપર પ્રસ ગોપાત ખાેલી પાેતે પણ ગુજરાતી હાેવાની હિમાયત કરી હતી. આ કાેનક્રરન્સનાે મેળા વડેા ભવિષ્યમાં ઘણાં વર્ષો સુધી યાદ રહેશે, કેમકે આ બન્ને અપક્ષપાત પિતાપુત્રના વખત પહેલાં ગાયકવાડી રાજ્ય મરાઠા અને દક્ષણીઓ માટે હતું. પણ તે સ્થિતિ હવે મદલાઇ ગઇ છે તે એ રાજ્ય કુટુ બ ગુજરાતીનું પણ ગુજરાતી છે એવી આપવામાં આવેલી ખાત્રી માટે આપણે યુવરાજ કત્તેસિંહરાવનાે ઉપકાર માનવાે યાેગ્ય છે. જૈન કાેનકરન્સનાે આ મેળાવડાે આ વખતે કાંઇક વાસ્તવિક રીતે કરીને અરખાસ્ત થયાે છે તેથા તેને પ્રતેહમંદ હતરેલાે કહેવાને કાંઇ હરકત નથી. અને તે માટે તે કામના આગેવાના તથા નાંગ મહારા જાને ધન્યવાદ ઘટે છે. જૈન ખંધુઓનું અન્ય કામા અનુકરણ કરશે તાજ આવા મંડળા ભરવાના હેત્રઓ ખર આવશે.

# ધી કાેરાેનેશન એડવરટાઇઝર. અમદાવાદ તા. ૧ લી ડીસેમ્બર સને ૧૯૦૪. વડાદરા ખાતે મળેલી જૈન કાેનકરન્સ.

વડેાદરા ખાતે આખા હિંદુસ્થાનના જૈન ભાઇઓની મળેલી કાનકરન્સ ગયા માસની તા. રહ મીએ મળી છેવટના દીવસે પુરી થઇ છે. આ કેાનકરન્સ કત્તેહમ દ ઉતારવા માટે જૈન ભાઇઓને ધન્યવાદ ઘટે છે તેની સાથે ભરેલા લાક્ષણિક પ્રદર્શનની શરૂઆત કરી એ કાનકરન્સે પાતાની કામનીજ નહીં પણુ એક રીતે દેશની પણુ સેવા બજાવી છે. આ કાનકરન્સના પ્રમુખ અજીમગંજવાળા પ્રખ્યાત રાય યુદ્ધસિંહજી બહાદુરતે કાનકરન્સ તર-કથી જે અસાધારણુ આવકાર આપવામાં આગ્યા હતા તે કાનકરન્સ તરકની જૈની ભાઇ-ઓની ઉલટજ બતાવે છે, અને તેમની એ ઉલટને ઉત્તેજન મળે તેવી દરેક મદદ મહારાજા ગાયકવાડ તરકથી આપવામાં આવેલી હતી. જેના દાખલો અમારા અન્ય દેશી રાજ્યકર્તાઓ લેશે એવી આશા રખાય છે. લાક્ષણીક પ્રદર્શન યુવરાજ શ્રી કત્તેહસિંહરાવે ઉધાડતાં દેશની ઉદ્યાંગ હુત્વરની સ્થિતિ તથા તેને મદદ કરનાર આવાં પ્રદર્શનાની આવસ્યકતાં ખતાવી હતી તેની પણ અમારા દેશી રાજ્યકર્તાઓ નોંધ લેશે તેા તેઓ દેશના એ કામમાં ધર્ણ કરી શકશે. એ કાનકરન્સમાં મહારાજા ગાયકવાડે પધારી કાનકરન્સના કામને આપેલું વજન તથા ઉત્તેજન ખાસ અન્ય રાજ્ય કર્તાઓએ અનુકરણ કરવા જેવું છે. મહારાજા ગાયકવાડ

પાતાની રઇયતને આગળ પાડવા કેટલું કરેછે તે આ ઉપરથી જોવાનું છે અને જ્યારે દેશી રાજ્યકર્તાઓ આવી રીતે પોતાની પ્રજાને ઉતેજન આપતા થશે, ત્યારેજ દેશાદયના કામમાં સહેલાઇ થવા પામશે. હવે આપણે કાનકરન્સમાં થએલા કામકાજતી ટુંક તાંધ લેઇશું તે જણાશ કે તેમાં બધા મળાને ૧૮ સવાલા રજા, થયા હતા જે સવાલા અમે ગયા માસની તા. ૩ જીના અંકમાં આપી ગયા છીએ, તેથી તેની આ સ્થળે આવત્તિ કરવાની જરૂર નથી તાેપણ એ સંઘળા સવાક્ષેમાં કયા કયા સુધારા હાથ ધરવામાં આવ્યા છે તે તપાસવું આવશ્યક છે. પહેલાજ સવાલમાં કેળવણીને ઉતેજન આપી તેને માટે <mark>બોર્ડ સ્થાપવામાં આવ્યું છે</mark>. બીજી જરૂરીયાત જૈન બાળકા માટેનાં પુસ્તકા સારૂ કમિટી તથા પ્રાચીન પુસ્તકાહાર કરવાના ડરાવા થયા છે. જૈન ચૈત્યાહાર તથા પ્રાચીન શાધખાળના તરાવ પસાર કરવામાં આવ્યા છે. ધર્માદાખાતાનાં હિસાખની ચાખવટ, તથા તપાસણી, આ ડરાવેાથી જૈને કાેમમાં સામાન્ય તથા ધાર્મિક કેળવણીનેા ફેલાવેા કરવાની જરૂરીયાત કાનકરન્સે સ્વીકારી છે, એ ખુશી થવાં જેવું છે. કેમકે ધર્મનીતિની કેળવણીને માટે આજે સઘળી કાેમાે સુમા પાડે છે, કેમકે એવી કેળવણી ન મળી શકવાથી તથા ઇંગ્રેજી ભાષાતા એકલા અભ્યાસથી અન્ય પરદેશી ધર્મવાળાએા ઘણા કાવી જવા લાગ્યા છે તેને અટકાવવા માટે તથા કામનાં ભાળકા દારા ધર્મની રક્ષા કરવા બીજી કામાની માકક જૈનકામાએ પણ આ પગલું સમયોચિતજ ભરેલું છે. સામાછક સુધારણા કરવા તરષ્ટ જૈન કોનકરન્સે આ-પેલુ ધ્યાન ખેશક ધન્યવાદને પાત્ર છે, કાેમમાં ચાલતા હાનીકારક રીવાજો દુર કરવા ઠરાવ પસાર થયે। છે તેની સાથે નિરાશ્રીત જૈનેાને મદદ આપવાના તથા કામમાં ઐક્ય વધારી કામનુ કલ્યાણ કેવી રીતે થાય તેવા માર્ગ લેવાના પણ ઠરાવેા કરવામાં આવ્યા છે, વળી આ ડરાવાને કાગળ ઉપરજ નહીં રહેવા દેવાં તેને અમલમાં મુકવાની યાજનાને લગતો ડરાવ પણ થયેા છે. જૈન ધર્મનેા મૂળ સિંહાંત જે જીવદયા તે વિષે પણ ઠરાવ કરવામાં આવ્યા છે. વળી ઉત્તેજનની ખાતર જે ગામ કે શહેરના જૈનાએ બીજી કાનકરન્સના ડરાવેા અમલમાં મુકયા છે તેઓને ધન્યવાદ આપવાના ડરાવ કરી કાનકરન્સે ઉત્સાહીઓના ઉત્સા-હ વધે તેવા રસ્તાે લીધે: છે. જૈનાને લગતી તમામ માહેતી મેળવી શકાય તેવી એક જૈન ડાયરેકટરી ખનાવવાના ડરાવ થયા છે. ત્યાર ખાદ ના. શહેનશાહ અને શહેનશાહખાન તરકની વકાદારી દર્શાવનારા તથા આ કાેનકરન્સના ઠરાવાને અમલમાં મુકવા જે મુનિમહા-રાજોએ શ્રમ લીધા હાેય તેમને ધન્યવાદ આપવાનાે તથા કાેનક્રરન્સના જનરલ સેક્રેટરી શેઠ કકીરભાઇના મરણનાે શાક દર્શાવનારાે ઠરાવ અમલમાં મુકાયા હતા, ને ગયા વર્ષની કાન-કરન્સના ઠરાવાને ખહાલી આપી આ કાેનકરન્સનું કામ ક્રતેહમંદી સાથે પુરૂં કરવામાં આવ્યું હતું. પસાર થએલી કાેનકરન્સમાં જીદા જીદા વકતાઓએ આપેલાં ભાષણા જૈતાેની પોતાની કેામને આગળ વધારવાની ઉલટ કેવી છે તે દેખાડનારાં હતાં. આ કેાનકરન્સમાં એક નવી વાત સાંભળવામાં આવી હતી તે એવી છે કે ખાનદેશમાં પ્રાંતિક જૈન કાેનકરન્સ ત્યાંના આગેવાનાએ ભરવાની યાજના કરી છે ખેશક આ પગલું વધુ ઉત્તેજનને પાત્ર છે. પણ જો એવી પ્રાંતિક કાનકરન્સા આ મહાન કાનકરન્સના તાબામાં રહીને કામ કરશે તાજ તેનાથી સારુ' પરિણામ આવશે. પશુ જો એવી પ્રાંતિક કાેનકરન્સાે વખત જતાં મળવા લાગશે અને સ્વતંત્ર રીતે રહી કામ કરવા માંડશે તેા તેમાંથી બીજા નવા નવા કૃષ્ણા પુટશે જે આ કાનકરન્સના હેતુની વચ્ચે આવી પડે તેવેા અમેાને ભય લાગે છે માટેજ સમજી જૈન

ભાઇએાએ પોતપોતાના વિભાગમાં આ કાનકરન્સની શાખા તરીકે પ્રાંતિક કાનકરન્સા સ્થાપિ કામ કરવામાં જોકે હરકત નથી પણ લક્ષતો આ કાનકરન્સના હેતુઓ ખર લાવવા સાથે આ કાેનકરન્સને દરેક મદદ આપવાથી કદી પછાત પડવું જોઇતું નથી. પ્રથમ તા કામતુ એક્ય સાધવાને માટેજ સર્વનાે ઉદ્દેશ હાેવા જોઇએ અને એ ઉદ્દેશ આ કાેનક્રરન્સ• થી પારપાડી શકાય તેવા છે. ડાહ્યા જૈનાને આ ખાખતમાં આટલાજ ઇમારા કરવા ખસ થશે, પસાર થએલી કાનકરન્સને કૃતેહમ દી સાથે પાર ઉતારવા વડેાદરાના જૈન સ ઘે લીધેલી મહેનત તેમને ધન્યવાદ આપવા જેવી છે. તેવીજ રીતે જૈનકામના ડેલીગેટાએ જે સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી તે પણ પ્રશ'સા પાત્ર હતી, આ અ'ગે અમે એકજ સચના કરવા માંગીએ છીએ અને તે સૂચના સંખંધમાં કાનકરન્સે ઠરાવ પણ કર્યા છે. તે એ છે કે જમાનાંના પવન પ્રમાણે સભાઓ. સમાજો વીગેરે મેળવવાને અમુકમંડળ કે કામ દેખાદેખી અનુકરણ કરવા લાગી છે એ જો કે ખુશીની વાત છે, છતાં આપણે એવી સ્થિતિમાં છઇએ કે વાતેા કરવા કરતાં કાંઇક સંગીન કામ નહીં કરીએ તે આપણી ઉલટી હાનીજ થશે, માટેજ કેાનકરન્સે કરેલા ઠરાવે! અમલમાં મુકવાની યાજના કરવા કાનકરન્સે કરેલા ઠરાવને અમે ઘણી અગત્ય આપીએ છીએ અને એ ડરાવ તેના અક્ષરે અક્ષરમાં અમલમાં મુકાયેલે৷ જોવાની દરેકજૈન હિતેચ્છુને ભલામણ કરીએ છીએ, અને આમ કરવા સાર ગામેા ગામના જૈન સંધના આગેવાને એ કાનકરન્સના રડાં કામાને અમલમાં સુકી કામ તરકની કાળજી પુરવાર કરવી જોઇએ છી-એ. ભાષણો એતા માત્ર એવા રીત રીવાજોનાં સ્વરૂપ તથાતેને દુર કરવાની દલીલાે દર્શ-વનારાંજ છે, અને એ સાંભળ્યા પછી તેનું મનન કરી તેને વહેવાર રૂપમાં મુકવાથીજ હર કાેઇ કાેમને કાયદાે કરી શકે છે. એ ભુલવું નથી જેઇતું. કેટલાક નઠારા સંસારીક રીતરીવા-જો જૈન કેામમાં પણ ઘર કરી પડયા છે તેમાં સુધારા કરવા માટે દરેક નાતજાત ને તડાંના વડીલેાને આગળ કરી તેમનીજ સ મતી સાથે શ્રમ લેવામાં આવસે ત્યારેજ તે પુરા રીવાજો નાબુદ થશે. આ રીવાજોમાં રડવા કટવાના ચાલ હિંદુ લોકોમાં એક કારસ જેવા છે તે પહેલાે અટકાવવાની જરૂર છે અને તે અટકાવવા માટે સ્ત્રી કે ૧૫ શીની ખાસ જરૂર છે જે, પાછળ કાનકરન્સે પુરતું ધ્યાન આપવાનું છે, તેવાજ અલકે 🕕 પણ સુરા કેટલાક જૈનામાં બીજી કાેમાની માકક કન્યાવિક્રય કરવાનાે જાણે ધંધાજ ૫ 🕔 યાે છે તેને અટ-કાવવાની પણ એાછી જરૂર નથી અને તે સારૂ ધંધા ઉદ્યોગની ગરીય જૈનોને જોગવાઇ કરી આપવાની આવશ્યકતા છે. ગુજરાતના કાઠીયાવાડ પ્રાંતમાં આ રીવાજ કાંઇક વધુ જોવામાં આવે છે તે તેનું મુળ ગરીબ હાલતમાંજ છે તે ગરીબાઇ દુર કરવા કેળવણી અને ધ'ધા ઉપયોગની જોગવાઇ કરી આપવાથી અટકી શકશે ને તે જરૂર પણ કેાનકરન્સે રવીકારી છે. હદ ઉપરાંતના નાતવરા કે લગ્ન પ્રસ ગની ધામધુમ પાછળ ખર્ચાતા પૈસામાં નિયમ ખાંધવામાં આવે તાે કાેમની ગરીખાઇ અટકાવવા સહેલાઇથી મદદ કરી શકાય તેવુ કુંડ થઇ શકે તેમ છે. છેવટે અમે જૈનભાઇએાની ઉતરાત્તર આ કામમાં કત્તેહ ઇચ્છીએ છીએ અને વડેાદરાની કાનકરન્સ ક્રતેહમંદ ઉતારવા ત્યાંના સંધે તથા કાનકરન્સના લાગતા-વળગતાઓએ જે શ્રમ લોધેા છે તેને માટે તેમને ધન્યવાદ આપી તેવાજ ઉત્સાહથી ભવિષ્યમાં કામ લેવાની તમામ જૈનભાઇઓને ભલામણ કરીએ છીએ, કારણ કે હિંદુ કામરૂપ વક્ષની જૈતા માત્ર એક શાખા છે તેથી એ શાખામાં સુધારા થવાથી વક્ષની વદ્ધિ થવા સાથે બીજી શાખાએ। પણ પાેષણ મેળવતી થશે.

# त्रीजी जैनश्वेताम्बर कॅान्फरन्समां बिराजवा माटे पसंद थयेला प्रतिनिधियोनी

# गुजरात.

यार्टा

अंकलेश्वर.

शा. दलीचंद मुलजंद. माणेकचंद वमळचंद सोमचंद लालचंद अंगारेश्वर शा. दीपचंद कशल्चंद शा. खुबचंद पांनाचंद अणखी. दीपचंद जीवचंद शा. मोतीलल पीतांबरदास अबामा. वीरचंद नथुभाई केराभाई मोरारजी शा. गेलाभाई गोपालजी शा. खुमचंद गेलाजी अमदावाद. सेठ चंमनभाई लालभाई सेठ वीमलमाई मआभाई

सेठ वीमलमाई मआभाई सेठ कस्तूरमाई मणीमाई सेठ कालीदास उमामाई

सेठ लालभाई भोगीलाल रोठ मणीभाई दल्पतभाई रोठ मणीभाई जयसंगभाई रोठ साराभाई डाआभाई अने।पचंद रोठ मगनभाई माहासुखभाई शा. नेमचंद ल्लुभाई हाजी शा. भोगीाडल हर्लुभाई शा. हरीलाल जेमामाई शा. ऌलुंभाई रायचंद झवेरी शा. जमनादास सवचंद रोठ मोहोनलाल ल्लुभाई হাঁত ভাৰ্তমাई चুনীৰাৰ रोठ दुलपतभाई मगनभाई रे।ठ मोहोलाल्भाई मुळचंदभाई हेाठ साकल्चंद मोहोलालमाई रे।ठ अमरतलाल वाडीलाल होठ लालभाई त्रीकमलाल शा. अमरतलाल चुनीलाल शा. मुलचंद साकळचंद ,, केसवडाल मगनलाल ,, साकळचंद रतनचंद

,, નારામાર્ર નથુમાર્ફ

( १९७)

मणीलाल बालामाई " डाह्याभाई उमेदचंद " मनसुखराम रवचंद 5 7 रावजी दोलतराम सुरजमङ मंछाराम वाडीलाल छगनलाल हेमचंद हरी छाल 57 मोहोललभाई मगनलल 37 हरीलाल मंछाराम ,, पोपटलाल ललुभाई ,, परसोतमदासः जेठाभाई " रतनचंद छोटालाल " शाराभाई वाडीलाल ,, महासुखराम ढलुभाई " मफतलाल छोटालाल ,, चुनीलाल गोकल्दास भोगीलाल वीरचंद " मगनलाल ठाकरशी ,, छगनलाल बेहेचरदास ,, चुनीखाळ पीतांबरदास डाह्याभाई प्रेमचंद वकील मगनलाल रतनचंद ,, मोहोकमभाई छोटालाल शेठ अंबालालभाई साराभाई मयाभाई नथभाई ,, चमनभाई नगीनदास शा नथभाई दोलतराम प्रेमचंद परसोतमदास बेहेचरदासं कस्तुरदासं ,, रतनचंद मुळचंद 1, वाडीलाल ताराचंद

डॉक्तर जमनादास प्रेमचंद्र शा. डाह्याभाई नथुभाई हेमचंद्रभाई जेअचंद्रभाई 57 भोगीलाल त्रीकमलाल ,, छगनलाल ललुभाई " डाह्याभाई वरजीवनदास \*\* डाह्याभाई रणछोडदास नाथाभाइे हरगोवनदास वर्कील छोटालाल कालिदास फुलचंदुभाई ककलमाई शा. उमेदराम दोलतराम डाह्याभाई रतनचंद " डाह्याभाई चुनीलाल " मोतीलाल चुनीलाल " डाह्याभाई मगनलाल \*7 चमनलाल नथुभाई " मंगलदास गगलदास छेनाभाई चुनीलाल लल्लुभाई नथूमा**ई** " खेमचंद दोलतराम " मनसुखराम उमेद्चंद शेठ फतेचंद चकल्रदास शा. हरीलाल मगनलाल कंतरारी वाडीलाल त्रीभोवनदास वाडीलाल रायचंद " वाडीलाल कालीदास गटाभाई चुनीलाल शेठ हरसदराय बालाभाई वकील सोमाभाई हिराचंद मेहेता चिमनलाल पोपटलाल

शा. वखतचंद उमेदचंद दलाल जेसंगभाई साकलचंद शा. मोहोनलाल चुनीलाल मेहेता चिमनलाल मोहोलाल शा. मणीलाल मुळचंद केसवछाल बापुजी छगनलाल भगवानदास ,, फतेचंद प्रेमचंद ,, त्रिभावनदास धनजी डाह्याभाई हीराचंद ,, सांकरचंद दुलसुखराम ,, भिखाभाई रतनचंद ,, मोतीलल उमाभाई रोठ मोहोलालभाई मुळचंदभाई झवेरी साराभाई वाडीलल मास्तर हीराचंद ककल्माई शा. हठीशंग दामोदरदास. कंट्राक्टर मगनलाल छगनलाल शा. परशोत्तम इच्छाचंद कंटाक्टर ढालभाई मगनलाल शा. चुनीलाल जेठासा डाह्याभाई मनसुखराम " सांकळचंद घेलाभाई " भोगीलाल तलकचंद = 1 छगनलाल कस्तुरचंद ,, ्लालमाई दुलपतमाई श्वेठ गटाभाई मोहोकमलाल लालभाई मुळचंद मणीलाल मोहोलाल केशवलाल त्रीभोवनदास

मणीलाल छगनलालं जेसंगभाई मगनटाल वाडीलल सांकळचंद हरीलाल मुळचंद धोळीदास दोलतराम केशवलाल गेहेलाभाई रोठ अमरतलाल वाडीलाल केशवलाल मगनलाल ,, कीलाभाई उजमसी चोकसी ,, ललभाई हीराचंद " शा. मंगळदास दोलतराम भीखाभाई रतनचंद " रवचंदभाई छगनलाल " भगुभाई चुनीखाल 19 ल्खमीचंद लल्लुभाई " वाडीलाल मनसुखराम केशवलाल छगनलाल शा. बालाभाई हकमचंद बालाभाई फतेचंद " मनसुखराम छोटालाल " मणीखाल अमरतलांब " उमेदलाल दलीचेंद ,, नानालाल मगनलाल वकील पोपटलाल अमथाभाई शा. चीमनलाल अमथाभाई मी. केशवलाल प्रेमचंद मोदी चीमनलाल परसोतमदास बोकर ( १९९ )

मणिकलाल प्रेमचंद मणीलाल लल्लुभाई जमनादास हीराचंद जमनादास चुनीलाल खेमचंद दोलतराम डाह्याभाई हठीसंग पीतांबरदास मगनलाल उत्तमचंद पानाचंद सकरचंद लल्लुभाई मनोरदास मणीलाल वाडीलाल खेमचंद मगनलाल धोळीदास डुंगरसी छोटालाल काळीदास वकील मनसुखराम नहानचंह हरीलाल हकमचंद भीखाभाई परसोतम नगीनदास पानाचंद वाडीलाल काळीदास बाबजीमाई कुवरजीभाई नगीनदास करमचंद सांकळचंद खेमचंद फतेचंद दोल्तचंद वाडीलाल लल्लभाई नागजीभाई कुवरजीभाई शा. डाह्याभाई नथुभाई प्रेमचंद मनसुखराम ,, मोहनलाल मुळचंद 1) फुल्लंद करमंचंद जेसंगभाई छगनलाल जेसंगभाई चकुभाई जवेरी छोटालाल लल्लुभाई

दलमुखभाई लल्लुभाई ,, भोळाभाई दुलसुखभाई , , शा. रतनचंद्र छगनलाल पोचामाई गोकळदास " मनसुखराम हरीलाल ,, नाथालाल छोटालाल " त्रीकमलाल हठीसींग ., जवेरी साराभाई दलमुखभाई रोठ मणीभाई बालाभाई हीराभाई हठीसंग ,, जवेरी मोहनलाल डाह्याभाई शा. मोतीलाल रतनंचद भुदरदास उजमसी " वाडीलाल नगीनदास " रोठ साराभाई डाह्याभाई शा. लालभाई मगनलाल शा. मोहोनलालं छोटालाल झवेरी परसोतम चमनलाल शा. जेसंगभाई मगनलाल पोपटलाल कसळचंद नेसंगभाई छोटालाल शा. हरगोवनदास ओतमदास. शा. भोगीलाल सांकळचंद. शा. मोतीलाल ललुभाई. शा. पोपटलाल मनसुखराम. शा. छोटालाल वीरचंद. शा. पुंजामाई हीरामाई. शा. पोपटलाल मोहकमचंद. शा. मनसुखभाई अनोपचंद. शा. बालाभाई ककलभाई. **छ**ल्रभाई सुरचंद सेकेटरी.

( ? 笔 0 )

चमनलाल वाडीलाल. शा. मगनलाल हठीसंग शा. जेसंगभाई मोतीलाल

#### अमनगर.

सेठ. वखतचंद कस्तुरचंद. शा. डोसल्ठ हाथीभाई. गांधी. चुनीलाल अमथाराम. ,, हकमचंद सीरचंद. शेठ. वाडीलाल मोहनलाल वेारा. खुशाल पुंजाराम. वखारीआ फतेचंद मोतीाचंद. शा. नाथालाल हाथीभाई. ,, मगनलाल केवलदास. ,, वखतचंद रेवाजी. ,, पानाचंद केशवजी.

#### आकडेाद.

शा. बुंला ओटाजी. ,, देवा ओटाजी. ,, मोती ओटाजी. ,, तोरा पनाजी. ,, हीराचंद नाथजी,

#### आखज.

शा. हरगोवन अमीचंद. ,, हरचंद अमीचंद. ,, तरमोवन ऌखभीचंद.

## आंकुलाब.

" मलुकचंद हीराचंद

- ,, चुनीलाल गेलाभाई
- ,, जमनादास रागचंद

,, ड्रारचंद फुल्लचंद
,, खेमचंद नालचंद
,, भाईलाल प्रेमचंद
,, नाथा दयचंद
,, मोहनलाल उमेद

#### आंट.

शा. भीखा नानाजी. ,, नेमचंद गोवनजी. ,, रायचंद भगवानजी. ,, कश्चन डाह्याजी.

## आबलीयारा.

शा. रतनचंद हकमचंद काम-दार उर्फें कारभारी. शा. अंबालाल गीरधरलाल रेविन्यु कामदार.

#### आमोद.

नगीनलाल मोतीलाल आसोद्र. शा. नागरदास वीरचंद ,, ललुमाई मगनलाल

#### इडर.

वकील वर्धमानदास सरुपचंद हेमचंद छगन दोशी. दोसी छगन वर्धमान रेाठ मोहनलाल नाथाभाई ,, दलसुख मुळचंद शा. भाईचंद पदमसी. ,, भवान पदमसी. ,, हेमचंद छगनलाल ,, वर्धमान सरुपचंद

## ( १९१)

#### उंझा.

शा. नगीनदास छगनलाल ,, वाडीलाल नागरदास ,, चुनीलाल हकमचंद ,, मूळचंद धरमचंद ,, सरुपचंद जेचंद ,, लल्लुभाई मगनचंद ,, चुनीलाल मयाचंद तलाग्री उनावा.

शा. माधवजी छगन, ,, नाहालचंद माधवजी. ,, जगजीवन केवलदास. ,, मोहनलाल माधवजी. ,, हरगोवन लीलाचंद.

#### उमता.

शा. नगीनदास फतेचंद. ,, डुंगरसी कस्तुर. ,, परशोतम वखतचंद.

#### उमेटा.

रे।ठ. स्वरूपचंद छगाभाई. ,, सकराभाई केशरीसींग. शा. हीराचंद भाईचंद. ,, हरजी हरखचंद, ,, रतनचंद साकरचंद. ,, अमीचंद नाहानचंद. ,, रतनचंद नरोतम. शे. फुल्लभाई मानभाई. शा, नरोतम हेमचंद. चमाराना. ,, डाह्या त्रीभोवन. चमाराना.

#### ओड.

शा. वेचर सामळजी. ,, छोटालाल गोवनजी.

ओलपाड.

शा. कस्तुरचंद मंंजी. ठा. भांडुत वकील मगनलाल परशोतमदास बदामी. ठा. ओलपाड. शा. हीराचंद गोवनजी. ठा. मंदरोई शा. नवलचंद नानचंद. ठा. दामका.

## कटोसण.

सूळचंद जेठीदास लाडकचंद वीरचंद त्रीकमलाल गोपाळ मनसुखराम केवळदास मोतीराम जिवणदास

#### कठलाल

लक्ष्मीचंद करमचंद मास्तर

## कठोर.

शा . मोहनलाल लखमीाचंद डाक्टर शा. छगनलाल उत्तमराम शा. कपुरचंद नेमचंद शा. नेचंद कस्तुरचंद कडा

" दोलतचंद सुरचंद

## कडीं

शैठ जेठाभाई मनसुखभाई संघवी चुनीलाल जोइतादास शा. नाथालाल दलसुख मणियार बलाखी प्रेमदंद जुगलभाई मोहनलाल शाह

#### कडोद.

रोठ मोतीचंद भलाजी ,, देवचंद जगंनाथजी ,, मोतीचंद खेताजी ,, झेवरचंद भगाजी ,, झवरचंद मोतीजी ,, फकीरचंद ओपाजी ,, मोतीचंद देवचंदजी ,, रणछोड भिखाजी शा. वीरचंद हकमाजी ,, गुलावचंद गोवनजी ,, कस्तुरचंद मोतीजी

#### कपडवणज.

शेठ प्रेमाभाई केंवल्लभाई मेहेता शंकरलाल छोटालाल शा. वाडीलाल लींबाभाई दोसी जमनादास खुशालदास शा. हिराचंद नगीनदास

#### करजण.

शा. प्रेमचंद करशनदास ,, गुलाबचंद अमथा ,, अमीचंद लखमीचंद ,, प्रेमंचद जुठा करबाटीआ पीपळदर. मंगळभाई नथुभाई महेता. करशमळ. ऌलुभाई रायचंद.

#### कराडा

फुल्लचंद जीवणजी. देवचंद नानाजी. मोतींचंद पेमाजी. मगनीराम धुराजी. रायचंद लखाजी. जवेरचंद जेचंद.

#### कलोल.

रोठ. गोवरधन अमुलख. ,, मोतीलाल हकमचंद.

#### कामरेज.

शा. ख़शाल भगाजी. ,, हीराचंद भगाजी. कालीआवाडी. शा. रायचंद दुल्लभजी. गांडा भवाजी. शा. केसुरचंद प्रेमाजी. ,, सुल्चंद रतनाजी. ,, खुमचंद लखमा ,, फुल्ल्चंद चंबाजी ,, देवचंद मोतीचंद ,, रायचंद वीरचंद कावीटा.

शा. जवेरभाई भगवानदास

# (१९२)

# अ रतनचंद लाधाजी काशंदरा. काशंदरा. काशंदरा. काशं अमथाभाई पितांवरदास ज्र डाह्याभाई मुल्लवंद कीशनाड काश्वामाई मुल्लवंद कीशनाड काश्वामां कालांदास आ भाषत्वाल रेवाजी ज्य भाषित्वास अमथाजी आ भाईचंद माणेकचंद

#### कुकवाव

मेता उकाभाई मानचंद शा. पानाचंद जेचंद

#### कुंवर

डॉक्टर मोतीलाल मंछाचंद शा. न्यालचंद लाडकचंद झवेरी वाडीलाल मंछाचंद ,, जेठाचंद हेमचंद शा. पोपटचंद गोवींदजी

#### केरवाडा.

शा. हरीचंद हरलोचंद ,, रतनचंद सवाईचंद पारेख ,, वमलचंद मलुकचंद पारेख " नाथा मलुकचंद

## कोठ नगर.

संगर्वा हीमचंद परसोतम शा. उजमशी ठाकरशी ,, हठीसंग गगाभाई ,, जसराज हठीसंग मास्तर मोहनळाळ नगीनदास शा. फुल्रचंद हीमचंद ,, चतुर गोकळभाई ,, मोहनलाल नगीनदास मास्तर ,, हरीलाल रतनशी ,, मफतलाल पोपटलाल शा. पोचालाल रघुजी ., उतेळीआवाळा हरीलाल खीम-चंद

#### कोसंबा.

शा. छोटालाल मोहनलाल ,, प्रेमचंद नहानचंद्

#### खंबात

नगरशेठ दलपतभाई दीपचंद रोठ पोपटभाई अमरचंद ,, बकोग्दास पीतांबररास दीपचंद पानाचंद वखतचंद कशळतंद वीरचंद कस्तुरचंद दिापचंद फुल्लचंद दलमुखमाई फुल्लचंद वाडीलाल छोटालाल पोपटचंद मुळचंद देवचंद रणछेाडदास मुळचंद

## ( १९४)

पुंजाभाई सुरचंद मोतीलाल कशळचंद नगीनदास साकळचंद

#### खेडा.

रोठ भाईलाल अमृतलाल राठ माणेकचंद रतनसी शा. बालाभाई कांनदास रोठ रायचंद केवलसी शा. मोतीलाल फुल्चंद रोठ बोलाभाई भाईलाल रोठ रतनशी हरगोवनदास रोठ छोटालाल त्रीकमदास राठ मोहनलाल प्रभुदास रोठ चुनीलाल मगनलाल रेाठ हरगोवनदास कसनदास पटेल वाडीलाल हरगोवनदास शोठ नानालाल वीरचंद सोमचंद छोटालाल छगनलाल आशाराम • • रतीलाल मोहनलाल सेकेटरी सोमचंद पानाचंद • • मनसुख जसराजसी 99 मणीलाल कहानदास ज्ञा. माणेकलाल नरोतमदास . छोटालाल नथुभाई सकरचंद अमीचेद वाडीलाल डाह्याभाई ,, मोहनलाल मोतीलाल ,, सुरचंद डाह्यामाई र्शेठ मोहनलाल कहानदास

शा. भाईलाल सुरचंद खेरवा. शा. केशवलाल पुंजाभाई ,, रणछोड लालचंद ,, मोहनलाल देवचंद

## खेराळु.

राठ खेमचंद वीरचंद मेता टोकरलाल छगलाल रोठ मंगळनी भीखामाई मेता हठीसंग त्रीभोवनदास रेाठ गोपाळ छगनलाल मेता पुरस्नोतम लल्लु दोसी रवचंद मंगळनी मेता फकीरचंद टोकरलाल ,, कालीदास लल्लु ,, बाधर हाधी दोशी नाहलचंद पानाचंद महेता शंकरलाल सवचंद दोसी मगनलाल मंछाराम मेता रतनचंद बलाखी

# गणदेवी.

" छगनलाल दीपचंद झवेरी गंभीरा.

शा. आशाराम फुल्रचंद ,, नाथाभाई हरीलाल ,, हिराचंद केशवजी

- " पीतांबर फुल्ल्चंद
- ,, लाल्चंद प्रभुदास

#### गरा.

छगनलाल लखाजी शाहा

गवाडा.

शा. मोतीलाल हीराचंद ,, मोहनलाल शवचंद वखारीया कालीदास साकळचंद शा. हकमचंद सांकळचंद

#### गांगड.

शाः दीपचंद हीराचेद ,, छगन डुंगरसी **वोरा** भीखा छगनलाल सलेति डाया झवेरचंद ., वालजी संघजी शा. सकरचंद चुनी छाल

## गुंजा.

दोसी रायचंद ललुभाई ,, हठीसंग अनोपचंद शा. हकमचंद ललुभाई

## गुंदी.

शा. चतुर गोकळ

## गेरीता.

शा. साकरचंद सुरचंद मोदी त्रीभोवनदास देवचंद शा. मगवनलाल अखेचंद ., देवचंद अनोपचंद मंगल नांनचंद

# गोधार्वा

शा. परशोतम डायाभाई ., प्रेमचंद पुनम देसाई पीताबर झवेरचंद केशवलाल छगनलाल ,, सांकळचंद जमेदचंद " प्रेमचंद जोइताराम हरीछाछ वीरचंद "

# घडीया.

शा. नगीनदास माणेकचंदः ., पोपटभाई खीमचंद ,, चुनीलाल अमीचंद

- - - चांदोद.

शा. दोल्त पीतांबर जसाणी अमृतलाल मुळचंद

## चुणेल.

रांकरलाल वीरचंद मंगलदास रायचंद काछीदास केवलदास

# छोटाउदेपुर.

शा. छोटालाल चतुरदास पुनमचंद प्रागचंद " ,, शंकरचंद अमुलखदास

# जघडीआ. शा. मोहोलाल हीराचंद छगनलाल कशळचंद

(pri)

( ? \$ \$ )

## टेटुदाणा

शा. कालिदास नागरदास सुरचंद उमेदराम कीसोरदास बेहेचरदास ,, मोसनलाल हाथीभाई

#### थान.

संघवी उजमशी दलीचंद

#### दासज.

गांधी बलाखीदास माणेकचंद रोठ मोहनलाल हकमचंद गांधी मुळचंद माणेकचंद राठ अंबालाज रवचंद ,, गोकळदास पुरशोतम

## दाहोद.

नाजर जेसींगभाई ठाकरशी (अम-दाबादवाळा )

# देकावाडा.

शा. डोसाभाई हेमचंद

## देहेगांम.

तलाटी मथुरदास छगनलाल शा. वाडीलाल नाथाभाई ,, छगनलाल मोतीचंद कामदार परीख आशाराम नाहालचंद तलाटी छगनलाल खेमचंद शा. नरोतमदास खेमचंद ्चुनीलाल नारायणदास केशवलाल गुलाबचंद

प्रेमचंद धरमचंद

जंबुसर. शा. गोरधनदास बेहचरदास ,, मंगळदास खुबचंद जलसण. शा. छोटालाल रईनीशा " लल्लुभाई वस्ताजी जलालपोर. शा. फुलचंद रामाजी ,, डाह्या रामजी ., नेमचंद रामजी ,, फुल्लचंद गोपाळजी जेतलपुर. शा. मगनलाल रायचंद " प्रेमचंद वरधमान झणोर. शा. खुबचंद पानाचंद " वज्लाल दीपचंद " हिमचंद मोहनलाल झांझरवा. र्टाटोड. दोशी गुलाबचंद लीलाचंद्र

शा. बालचंद रतनशी वोहोरा मगन जेमल मोदी मगन त्रीकम परीख मुलचंद खेमचंद गांधी कोदरछाल मुलजी ,, मगनलाल वेणीचंद बहोरा रेवचंद गिरधर

(१९७)

नार.

शा. ललुभाई तलकचंद " खीमचंद ओगडचंद पटेल शंकरमाई जेठाभाई ,, मुळजीभाई डुंगरभाई वावजीभाई रांकरभाई "मनोरभाई गणेशजी "गीरधरभाई गणेशजी नीकोरा. शा. तलकचंद पीताम्बर ,, बापुलाल अम्मरचंद परतापनगर. शा. मोहोलाल हीराचंद प्रेमचंद नंदलाल हरीलाल नेमचंद ,, बेचर हीराचंद " वीरचंद बेचरदास प्रांतीज. डाह्यालाल दलपतराम मणीलाल चतुरभुन पोचालाल डुंगरसी केसवलाल त्रीकमदास हीमतलाल फुलचंद मगनलाल गोवरधनदास परीआ शा. रायचंद केसुरजी " वीरचंद पानाजी पाटण. रो. हेमचंद वस्ताचंद " पुनमचंद करमचंद ,, मंगळवंद उतमचंद शा. हालाभाई मगनचंद

" हरगोवन गोवरधनदास केशवळाळ मगनळाळ चुनीलाल मनसुखदास दंहेज हरीचंद माणकचंद धरमज. शा. हीराचंद बकोरदास लल्लुभाई भाईजीमाई भाईछाल दलीचंद मइजीभाई नरोतमदास मथुरभाई ललुभाई आशामाई माणेकचंद रायचंद गरबडदास नडीयाद. मास्तर झवेरभाई गरबडभाई शा. हिराचंद कीलाभाई पा. छलुभाई मथुरभाई नडोद. शा. दीपचंद गुलाबचंद जगा भगवानजी शा. पानाचंद खेताजी नरसंडा र्शेठ चुनीलाल तारांचद शा. मगनलाल वसराम ,, दलपतभाई मानचंद भाईलाल दलीचंद 77 मथूर बापूजी " नापाड.

शा. फुल्चंद दीपचंद

www.jainelibrary.org

| ,, रामचंद नगीनचंद         | पेटलाद.              |
|---------------------------|----------------------|
| ,, ललुचंद वस्ताचंद        | शा खीमचंद की शामाइ   |
| " पेमुशा उनमचंद           | ,, चतुरभाइ खुबचंद    |
| वकील वाडीलाल वीरचंद       | ,, पानाचंद लालचंद    |
| ,, मगनलाल हरीचंद          | ,, छोटाराल ुळवंद     |
| ,, रतनचंद वस्ताचंद        | " छगनलाल खीमचंद      |
| रो. पानाचंद जेअचंद        | पेथापूर.             |
| ·,, वाडीलाल पानाचंद       | मेता कशवलाल हठीचंद   |
| शा. वीरचंद रायचंद         | " चंद्र यल हाथी चंद  |
| संधवी ऌलु सरुपचंद         | वकील डोसलचेद जमनादास |
| शा. चुनीलाल मगन           | शाः सोमबंद नाहाळचंद  |
| शोडशरा नगीन मगन           |                      |
| शा. नगीनचंद झवेरचंद       | परी चंदू आह छोटाहाह  |
| ,, वाडीलाल हीराचंद        | शा. चुनीलाज गोपाळदास |
| पालणपुर.                  | ,, नगीनदास पुनमचंद   |
| महेताजी हाथीभाई ईश्वर     | गांधी मणीलाल रवचंद   |
| कोठारी सोभागचंद वेलुभाइ   | मेता सकरचंद का छीदास |
| परी. दल्र्छाराम रामचंद    | मेता मकाभाई ऌलुभाई   |
| कीनखाबवाळा बालामाइ गटामाइ | मेता अमथालाल टेकचंद  |
| दोसी मगनलाल ककल्माई       | शा. मनसुखभाई रवचंद   |
| वकील ककलभाइ लवजीभाइ       | परी हिराटाल मोतीचंद् |
| वकील हाथीभाइ माणकलाल      | वदरखा.               |
| र्पीडापा.                 | शा. फुल्रचंद भीखाभाइ |
| काळीदास रणछोड             | " डुंगरभाइ छगनलाल    |
| मोतीराल लल्लु             | " मणीटाल डाह्याभाइ   |
| झवेर छगनलाल               | ,, पुंजाभाइ झवेर     |
| पींपळी.                   | ,, माधवलाल गोतमदास   |
| रोठ वाडीलाल गगामाइ        | ,, त्रीभोवन पोपटलाल  |
| शा. बकोर प्रेमचंद         | , केसवलाल भीखाभाइ    |
|                           |                      |

( १९८)

( १६९ )

" चुनीखाल दलीचंद बरवाला. ,, मगनळाल जेसंग ., त्रीभोवन पितांबर पारील छाटालाल बापुभाई शा. मगनलाज जवेरदास बारडोली. ,, भोगोलात्र माईलाल ज्ञा. जीवण देवाजो बौधान. गमनाजी खुशालजी पेमाजी कसनजी झवेर जीवाजी मोती चंदाजी बारेजा. पना खुशालजी भरुच. अनुप वेद मलुकचंद माणेकचंद लखमीचंद शा. अमरचंद जगजीवनदास गगढभाइ रायचंद नाहनचंद छलमीचंद दाहाभाई दलपतभाई बीडज. शा. छगनञाल खुबचंद ,, छगनलाल नाहनचंद " मुलचंद जीवचंद वोरसद. " रतनचंद केसवजी भान्डु. शा. मुलचंद मगनलाल भात. शा. गिरधर मनसुख ,, नागरदास मगनलाल " रतनचंद लक्ष्मीाचंद् भालक. मोतीलाल हरगोवनदास शा. भुद्र जीवराम पटवा सांकळचंद हीरालाल

वोरा ऊजमसी लालवंद मेता वनमाळी झवेर मेता असृतराज देवचंद ज्ञा. धनजी हीरा**ंद** 

कस्तुः चंदं लखमाजी 43 नरसई हरजी 39

मंछ उमाजी "

गुलाबचंद केसवजी ,,

शा. फकीरचंद केवळदास देवचंद दोलाभाइ . 79 चुनीलाल अनेापचंद " खेमचंद मंछारांम "

97 वाडीलल ओघडभाइ "7

क्षां. केवटदास <mark>सुंदर</mark>जी

सुरचेद हरगोवनदास फुल्चंद नाथासाई मन<u>स</u>ुख नानत्रंद नाथामाई छगनबाढ हरीाल जेसंगभाई शा. मगनलाल हरगोवनदास ., कीलामाई जेठामाई ,, फकीं चंद त्रीकमदास

मोतीराड तलकचंद

शा. नाहलचंद छगन " पुंजीराम वेचर ., मणीलाल सुरचंद " नागरदास भाई चंद भालेज. बोहरा ऌलु गुलाबचंद शा. बापुजी सीवदास मांगरोलवाधरी. शा. हरजीवन राजाजी छगनलाल नरोतमदास सांकरचंद फुलचंद द्वारकांदास वनमाछीदास ,, मगनलाल लक्ष्मिचंद केवलचंद गीरधरदास " छगनलाल झवेरचंद गोरधन मगनलाल ,, दुराजी नंदाजी केवळदास मुनादास दीपचंद तलकचंद महीज. ,, माडोधर. शा. कचरामाइ नाथामाइ গা. चुनीलाल ललु ,, छोटालल कुंवरजीभाइ सवइ नरोतमदास महुधा. नगोनदास मोहोलाल परी ल्लुभाई मगनलाल माणता. शा. जीवामाई बोधामाई शा. हाथी मुळ बंद परी अंबालाल नगीनदास ,, बलाखीदास संरुपचंद देसाई ठाकरसी डाह्याभाई " बाल्चेद अनोपचंद शा. शंकरलाल पानाचंद "माधा अमथा जी दोसी सामलदास मुलजीभाई " सरुपचंद मयाचंद देसाई अनोपचंद माणेकचंद ,, चकालाङ जेचंद दोसी बालाभाई वीरचंद परी ललुभाई जेवंदभाई " छगनलाल वाहाळचंद "भुद्र अमुलेख महुवा. **शा. बेहेचर दु**खवदास ,, छगनलाल गुलावाचंद " सरुप वंद उगरचंद महेरवाडा शा. कालीदास हरखलाल ,, माणकेलाल जेवंद ,, डोसा मगनलाल " जिवराज रवचंद **,, म**णीलाल मगनलाल ,, कालियास वेणीवंद ,, जीवराम करमचंद ,, हीमचंद् जेठाराम ,, हीराचंद करमचंद वकील मनसुखराम मुळचंद

200

"

,,

"

"

www.jainelibrary.org

गलाबचंद शीवलाल दीपचंद नरसीदास चुनीलाल मोहोलाल मंहेरा. गांधी मोहनखाल मुलचंद दोशी परशोतम हरचंद मणीआर सवचंद साकरचंद शा. त्रीकमलाल मगनलाल दोशी खेमचंद देवचंद " ऌऌू पानाचंद मेऊ. शा. डुंगरदास देवचंद खोडीदास फतेचंद ,, मगनलाल दीपचं द 37 मेसाणा. परसोमतदास वस्ताराम डाह्याभाइ काळीदास परसोतमदास गोतमदास कस्तुरचंद वीरचंद अमथालाल घेलाभाइ दलींचद हीराचंद मुलचंद हरगोवनदास उतमचंद परभुदास रवचंद वजेराम ळ्ळुभाई किसोरभाई रामचंद्र हरगोवन गलाबचंद बेचरदास हालाभाई उगरचंद परभुदास राअचंद जयचंद दीपचंद

( १७१ )

के सवलाल साकळचंद शा. जेचंद तरमोनदास " प्रतापचंद फुलचंद "माणेकडाल दीप वद् " पसतोतम हीराचंद मांडल. शेठ. शत्रचंद धरमशी शा. हीरावंद धरमशी ,, लखमीचंद छगनडाल दोशी मोहन त्रोकम ,, ताराचंद चतुर शा. मगन परशोतम दोशी नाहनचंद नागजी मातर. शा. मनसुख कस्तुरचंद वेलामाइ खुसालदास ,, काळीदास धरमचंद . 7 पानाचंद कपुरचंद " फुलचंद पीतांबरदास " मीयांगाम हे।ठ नेमचंद पीतांबरदास शा. धरमचंद केवळदास कल्याणचंद पीतांबर ., कीकाभाइ दलसुख दोशी वरजलाल दुलवदास शा. लालचंद वरजलाल हीमचंद भगवान ,, मुजपर. वुजलाल सवचंद

हरगोवद रणछोड

हाडोल. शा. नथुभाई जेठामाई ,, चुनीलाल दलीचंद लींच. शा. हठीसंग रतनचंद , भायचंद जेठीदास ,, रवचंद मानचंद ,, मनसुख छगनलाल लिंबोदरा-शा. प्रेमचंद ताराचंद , हालाभाइ गुलावचंद , माणकचंद उगरचंद , नगीनदास गिरघर

## "नगानदास गिरधर छीभेट. शा. झवेरचंद देवाजी "हीराचंद राजाजी

लुणवा. शा. डोसामाई उगरदास " नाथालाल जेठाराम " चुनीलाल माधवलाल " दल्लाराम लगनलाल

## वटादरा.

शा. फुलचंद अभेवंद ,, सोभाग्य कीशोर ,, चुनीलाल मुळजी ,, कपुरचंद कुवरजी बडनगर सेठ फतेचंद सांकळचंद पारी नगीनदास वरधमान

नाहाल्रचंद माणेकचंद शा. मुल्लचंद अमथाराम परीख परभुदास जेसंगदास गांधी दल्लाराम झवेरदास शा. ल्लुभाई उमेद्राम ,, पोपटलाल काळीदास ,, पाणकलाल काळीदास ,, माणकलाल काळीदास बोहरा छोटालाल माणकचंद शा. वेणीचंद सुरचंद ,, कस्तुरचंद वीरचंद ,, कस्तुरचंद वीरचंद ,, स्लुभाई हरीचंद पोगर. शा. जिवाभाई हरीभाई

शा. जिवाभाई हरीभाई " माईचंद कस्तुरचंद " केसवटाल भिखाभाई " मणीलाल गिरधरभा<sup>इ</sup>

#### राषपुर.

शा. वीरजी कुंवरजी ,, मणीलाल ललुभाई दोशी पोपटलाल सुरवंद शा. नजलाल दीपचंद दोशी. मोहनलाल सुरचंद

## रांदेर,

शा. फकीरचंद मेळापचंद ,, छगनळाळ केक्ळचंद ,, छगनळाळ डाह्याभाई ,, लल्लुभाई डाह्याभाई ,, ताराचंद खुसाळचंद ( १७२ )

( १७३ )

वाहांज शाः खुमा छखमाजी ,, कपुरा खुशाद जी ,, डाहाभाई देवाजी " फकीरचंद नानचंद " नाथामाई डाहामाई ,, ळखमां जठाजी विजापुर. छलुसाई जीवराज कालीदास सुरचंद वकील नगीनदास जेठाभाइ शा. मंगळदास मगनलाल ., छगन मोतीचंद नगीनदास झवेरचंद दोसी नथु मंछाचंद शा. रीखवदास अमुलख वकील " बेहेचर पुररसेतम भोखाभाई ललुभाई विरमगाम. र्शेठ छगनलाल चतुरदास ,, छलुभाई मावजी " परसोतम मलुकचंद ,, डोसाभाई वीरजी ,, कचराभाई कस्तूरचं**द** ,, हकमचंद नथुभाई झवेरी उजमशी वीरचंद शा. हकमचंद शांतीदास " तलकसी करमचंद ,, केशवजी राजपाळ मास्तर रतनचंद मुळचंद

मेता भीखाभाई जीवराज शा. नगीनदास जेठाभाई " नरोतमदास मगनलाल वडाली **दोसी अखे**चंद फुलचंद मेता कोदर गेहेलाभाई धरु डाह्या नरोतम वरण. शा. चतुर फुलचंद वलण. प्रेमचंद भरोतम वलाद. शा. खेमचंद्र पीताम्बरदास ,, नागरदास ताराचंद वसो. रोठ मुल्ज्वंद्रभाई सुरचंद शा. जेठाभाई नरोतमदास ,, डाह्याभाई लालचंद वालवेाड शा. रुगनाथ दीपचंद वावोल सोमचंद भगवानदास केशवलाल भगवानदास रहेरचंद मलुकचंद वेदशी स्रोकम मोतीलाल हकमचंद वासद.

शा. कालीदास मगनलाल ,, वीरचंद छगनलाल ( १७४ )

शा. केशवलाळ छोटालाल ,, छगनलाल मनसुखगम गांधी वाडीलाल काळीदास शा. दली बंद बहेत्रर " सांकळचंद छगन साउंबा. शा. अमरतलाल नाथजी ,, मननलाल देवचंद शिनोर. रोठ बेचर हरगोवनदास गुळाबचंद मणीराम मोतीचंद धरमचंद नंद्रखाल लालचंद् " गुलाबचंद शीवलाल नगरजेठ हरगोवंन नरोतम शा. नरे।तमदास शंकरदास ,, नाथाभाइ नरोतमदास ,, छलु नरसीदास ,, हरगोवन वर्धभान ,, हरगोवन नरोतमदास " अमरचंद धरमचंद शा. मगनेलाल ललुभाइ ,, नहानचंद हरगोवन ,, गरबड शीवळाळ ,, फुलचंद शीवलाल ,, प्रेमचंद नंदलाल साणंद. रोठ उजमशी मुळचं**द** गोविंदजी उमेदभाई मोहनलाल पदमशी मगनलाल हठीसंग

पारेख छोटालाल त्रीकमलाल झवेरी धनजीभाई छगनलाल गांधी वाडीलाल हठीसँग शा. परसेातम खालचंद वोरा वाडी लाल परसोतम वांसनगर. राठ मणीलाल गोकळभाइ ,, महासुखभाइ चुनीलाल मनसुखळाळ सुरजराम , करसनखाल मोतीलाल झवेरी मोहनडाल छगनलाल ,, जमनादास छगनलाल रोठ नगीनदास केशरीराम ,, वनलाल छोटालाल वेजलपुर. दोशी दलसुख काळीदास गांधी शंकरछाछ दोलत माहामुख नाथजी नाथजी मोरारजी गांधी माहासुख मगनलाल " माहासुख वसनजी ,, छोटालाल पाना वंद ,, माणेकळाल जेचंद रामनी शा. अमरचंद जठाभाइ " दलपत लखमी चंद सरसपुर.

गांधी मुळचंद मनसुखराम ,, अंबालाल गीरघरलाल ,, झवेरलाल भानाभाई ( १७९ )

राघवजी अमृतलाल पद्मशी जेठामाई मेता वाडीलाल खुशाल रोठ गुळाबचंद गगलभाई मता रायचंद रवंचद शा. त्रीमोवन मलुकचंद ,, रवचंद काळीदास सरखेज. सा. मगनलाल गुलावचंद ,, रतनचेद् राघवजी ,, जेचंद दलसुखराम सरभोडा. रोठ जवेरचंद रुपाजी " पदमाजी नाथजी "गजा प्रेमाजी सांतळपुर संघवी रायचंद सांकळचंद ,, मकनजी फुल्चंद " प्रेमचंद सांकळचंद सांयण शा. मलुकचंद लखमीचंद ,, पानाचंद नाहानचंद " भोगीलाल दलीचंद सारता शा. जीमाइ गुळाबचंद ., जेभाइ नरोतमदास सीतापुर

शा. वाडीलाल मगनलाल ,, चुनीलाल पुरुषोतम

सोधपुर. गांधी मुल्चंद उमेदराम ., बेहचर उमेदगम ,, छगन उमेदराम परिख अमथालाल मगनलाल भावसार वारचंद लवजी सीसोदरा. शा. मोतीचंद दलाजी ,, सरदारमल अमचंद<mark>जी</mark> ,, फुल्रचंद खुसालजी ,, भगवान चंदाजा ,, पेमा वधाजी सुणाव. शा. चुनीछाल जेसंग**दा**त पटेल. उमेदभाइ जेठाभाइ सुरत. डाक्टर पोपट लालभाई सरचंद परशोतमदास बदामीआ मि. मगनलाल नवलचंद कोकाभाई सुरचंद डाह्याभाई चुनीखाल हीरा बंद जीवणजी भाईलाल छगनलाल शा. कपूरचंद मेलापचंद ,, रीखवडाळ जेच**ंद** "नरोमदास हीराचंद ,, चीमनळाल वजे बद मोतीचंद तागचंद दा. अनुपर्चद शा. नवछचंद मोतीचंद

शा. गुळावचंद हीराचंद ,, नवळचंद घेळाभाई

शा. मुळचंद फुल्डचंद

" पुनमचंद रायचंद

हथोडा.

## ( १७६ )

#### काठीयावाड.

गोघा.

ारेख छोटालाल ओधवजी सोनी नीआलचंद लखमी वद सा. केशवलाल रतनजा मी. रायचंद ल्लुभाइ शा. केवळंचद दोखतचं र वोरा छालंचद हीराचंद. जामनगर. शा. नाराणजी त्रीकमजी रोठ गलाबचंद संघराज झवेरी ताराचंद प्रागजी शा. काळीदास मुळजी ,, काळीदास नेमचंद ,, कस्तुर कुशळचंद ,, प्रेमचंद जेचंद ,, डोसाभाई कुवरजी वकील चतुर्भुज गोवीं**दजी** ,, चतु∢दास घेञाभाई यास्तर जगजीवनदास मुळजी शा. पानाचंद काळीदास मेता खीमचंद हीराचंद ,, वीरजी वीरपाछ

# राठ गोविंदनी डोसामाई ज़ुनागड

सा. वीरचंदभाइ त्रीभोवनदास सेठ हरखचंद जेचंद मास्तर देाळतचंद पुरषोतम

अखीआणा डुंगरशी चतुर्भुज शाह अगत्राइ शा. मेघनी शामनी अजाब शा. जीवण लखमीचंद " रवजी मुरारजी ,, काआं मणी ,; देवकरण प्रागनी अमरेली मेता हंसराज मावजी " त्रीभोवन जसराज घरु हेमचंद झीणा शा. वीरचंद जीवामाइ उबराळा शा. माणेकचंद फुल्वंद " जेठालाल कुवरजी ,, छगन मेराज ,, छगन पीतांबर कंडळा सा. सामजी सुरचंद रा. मूळजी गोवर देासी कुंवरजी वीर नी ,, खुसाल इयामजी जादवजी जेराम

कुतीयाणा मेहिनखाळ गभरुचंद

आणंदजी हरजीवन बकील नागनी मदनी रा. खुसाळ आणंदजी जेसर दोसी जुठा नेमा ,, डालचद काळा ,, मेधजी वेला ,, हीराचंद नागजी नोर्डाया मा. प्रेमचंद नेचंद टीकररणनी मेता रामजीभाइ हंसराज संघवी डाया डामरदास लोदरिया माणेकचंद मोरार मेहेता मणीळाल वखतचंद सा. त्रेमचंद मुळचंद ठळीआ, दोसी भगवान परसोतम .. द्वीपचंद जराज सा. प्रागजी सामजी महेता खोडी दास प्रेमजी सा. माणेकंचद बेचर तळाजाबंदर होठ हरजीवनदास भीखाभाइ शा. हीराचंद ताराचंद ,, केशवलाल मोतीचंद ,, सामजी कलाण

त्रापज. वारीया नारण झवेरजी

Jain Education International

धामी हीराचंद धनजी वोरा जसराज हरजी वारीया धरमशी झवेर .. वालजी विठल शा. हीराचंद हरजी ,, त्रीभोवन फुल्क्वद वारीया रणछोड दिपाजी থান संघवी उजमसी दलीचंद थानगढ कुंवरजी हंसराज दबासंग. सेठ राइसी लाखाणी ,, वीरपाळ हीराणी "मेपा पेथराज ,, कानजी मेपा ,, काळीदास खेतसी ,, जादवजी पानाचंद देवेछा. दोशी मुळचंद माला शा. केशवजी मोहन दोसी लालचंद ओधवजी ., गोवरधन अमरशी धोराजी. जा. मणिकचंद करसनजी भ्रांगधा. वकील उजमसी खीमचंद शा. छगनलाल नानचंद गांधी मुखलाल कस्तुर ,, भुरा पोपट

" उजमशी भुद्र शा. हरीलाल जेठाभाई ਬ਼ੀਡ. शा. माणेकचंद मुळचंद निगाळा. शा. नागर जसराज ,, जेमल चकु "भगवान वल्लभ शा. रायचंद जीवराज पाछीताणा. रोठ कीसनचंदनी हरिालालजी शा. कस्तुरचंद वीरचंद ,, शा. वेणीचंद सुरचंद " परमानंद मुळचंद ,, बाळाभाई दलसुख ., धरमसी गोविंदजी ., नारणजी अमरसी " महासुखलाल परमानंदुजी हरीचंद करसन ,, बालामाई गीरघर ., हठीचंद रतनचंद

## पोरबंदर.

नागरदास जगजीवन कल्याणजी मोहनजी रुघनाथ मुळचंद प्रेमजी घरमशी होराचंद वशनजी शा. वल्लमजी हीरजी ( १७८ )

बजाणा. रा. रा. मोहनलाल जीवणलाल अमृतलाल छगनलाल " बलदाणु. सा. अमथालाल भाइचंद ,, सामजी देवसी बाळंमा महेता त्रीभोवन कुंवरजी बेला. पारेख डोशाभाइ रामजी दोशी ताराचंद प्रेमचंद बोटाद. बंगडीया ललुभाइ भाइचंद सलेत छगनआल मुल्चंद सा. केशव गढ वेटसी सा. सवचंद पानाचंद देशाइ हरखचंद चंतूर भावनगर. वोरा अमरचंद जसराज ,, हठीसींग झवेरदास दोशी कुंवरजी आणंदजी **शेठ रतन**जी वीरजी शा. राइचंद हीराचंद ,, जुठाभाइ वालजी वोरा ताराचंद ठाकरशी ,, त्रीभुवनदास भाणजी ,, अमृतलाल पर शोतमदास वारा गोवरधन हरखचंद मास्तर नानचंद बहेचरदास

# ( १७९ )

., मोतीचंद झवेरचंद ., जीवरान ओधवजी वकाल परभुदास मोतीचंद ,, मुळचंद नथुभाइ 🛺 बकोरदास ककऌशा चोरा जुठाभाइ सांकळचंद शा. झवेरभाइ भाइचंद संघवी पोपटलाल नेमचंद शा. जगजीवन वरधमान रेाठ दीपचंद गांडा ञा, करसनजी डाह्या ,, फुलचंद मीठा ,, शा. घनजी त्रीकमजी मास्तर ऌखुभाइ भायचंद शा. मणीलाल हठीसंग वोरा नरोतम गोरधन शा. लीलाधर चांपशी जीवराज भीखाभाइ मास्तर छखुभाई भाईचंद शा. माणेकलाल हठीसंग वोरा नरोत्तम गोरधन जा. लीलाधर चांपसी पारेख शामजी रामजी ,, दुलभजी रुगनाथ शा. दुल्लभजी हाउजी ,, नरसीदास गांडाभाइ नरसीदास जगजीवन गांधी जमनादास अमरचंद शा. नरोत्तम हरजीवन कापईाया उत्तमचंद गीरधर शा. रायचंद फतेचंद ,, लक्ष्मीचंद जीवराज कापडीया नेमचंद गीरधर नानचंद बेच (दास दोशी मोतीचंद झवेरचंद मेहेता जिवराज ओधवजी शा. गुलाबचंदजी आणंदजी गांधी वछभदास त्रिभोवनदास शा. भाणनी गुलाबचंद शा. प्रेमचंद फतेचंद संघवी मणीलाल धेलाभाई सलेत जगजीवन फुलचंद वोरा वेळचंद साकरचंद शा. कुंरवनी आणंदनी जा. रतनजी वीरजी शा. अमरचंद घेलामाइ शा. गीरधरहाल देवचंद मास्तर नानचंद नेचरदास शा. गिरघरलाल आणंदजी मास्तर जिवराज ओधवजी शा. त्रीभूवनदास भाणजी मोतीचंद गीरघरलाल मोतीचंद ओधवर्जा जवेरमाई माईचंद डाह्यालाल हकमचंद ठाकरसी पद्मसी भगवानलाल हरजीवन •• परभूदास रामचंद " शंघवी नानचंद कुंवरजी वोरा नरोतम हरखचंद

शा. नानचंद हरीचंद वकील मूळचंद नथुभाई शा. दामोदरदास हरजीवनदास " जगजीवन धरमचंद वोरा गिरधरहाल गोरधन " जुठाभाई साकरचंद महूवा. रोठ गांडालाल आणंदजी दोशी अभेचंद झवेर ,, সাবুবর্সা বান্তসী घांची माणजी आणंदजी प्रोफेसर नथुभाई मच्छाचंद भोरा दुईम छलमीचंद शा. दुर्छभदाम प्रागजी वासा लखमीचंद दीयाळ संघवी माणेकचंद इंसराज दोसी कपुरचंद झवेरचंद शा. परमानंददास मुळचंद दोसी परमानंद अभेचंद ,, नथु रवजी शा. बेचर कालीदास संघवी नागर्जी कमळसी दोसी अमरचंद गुलाबचंद शा. वनमाळी गंभीर ,, कडा सूरचंद मांगरोळ

र्शेठ छोटाखाल प्रेमजी "प्राणखाल वलमजी "ह्रेमचंद अमरचंद " मुळजी रामजी मुळी शा. जेचंद वेल्सी , मगनलाल चतुर , हरजीवन शामजी कोठारी भुदर पुरषोतम दुल्लमजी जेचंद माणेकचंद पानाचंद सांकरचंद मगनलाल मोहनलाल फुल्ज्वंद मोरवी संघवी कानजी सुंदरजी रायचंद्र लखमीचंद

## राजकेंंाट-

रा. रा. वकोल्ठ तुळशीभाइ डाह्याभाइ रा. रा. जसाणी गुळचंद देवसी

## राणपुर.

शा. उजमसीभाइ पुरुषोतमदास ,, जगजीवन नेमचंद मोदी छगनलाल त्रीकमदास शा. डुंगरसी दीपचंद ,, मणीलाल वरधमान ,, ब्रजलाल दीपचंद लखतर.

संघवी नेणसी फुल्ल्चंद मेहेता वछभदास नेणसी

लाठीदड. संघवी पुरूशोत्तम भुदर

## लालपुर. मोतीचंद पानाचंद शा. सवजी कचरा लींबडी. दोसी. केसवलाल लालचंद दोसी. केसवलाल लालचंद दोसी. केसवलाल लालचंद शा. पोपट गुलावचंद शा. पोपट गुलावचंद शा. पोपट गुलावचंद शा. भोखाभाइ सोमचंद रा. अमुलख चंदरभाण वोरा मोहनलाल नानचंद पारी. उमेदचंद नानचंद वकील हरखचंद सुंदरजी वढवाणकांप. वकील मुल्चंद चतुरभाइ , जीवणलाल फुल्चंद

जावणलाल फुलचद
 खुसा चंद लखमीचंदभाइ
 हरखचंद हेमसीभाइ
 हरखचंद तीकमलालभाइ
 जीवराज डुंगरसी
 जीवराज डुंगरसी
 जमीचंद झीणाभाइ
 मास्तर खेतसी पानाचंद
 कोठारी नागरदास उमेदचंद

वढवाण शहेर. शा. नारणनी अमरसी ,, मोहनलाल वाघनी ,, तेजपाळ घेलाभाइ ,, उजमसी भुदर ,, धनजी बोबा ., शविलाल राजपाळ

वंथली. लाधाभाई जीवणजी वळा. गुलाबर्चद जीवाभाइ महेता वांकानेर. मेता खोडीदास बाबजी शा. अनोपचंद गलाबचंद मेहेता नानचंद मणीचंद बढेरीआ माणेकचंद डुंगरसी मेता मोहोनलाल अमरचंद शा. दीपचंद कडवा मेता परशोतम जगजीवन मेहेता सोमचंद पुंजामाई .. रेवाशंकर सेमचंद दीपचंद मकनजी तेलीया मुळजी नेमचंद शा. वाल्म फुलचं**द** 

वढवाण सीटी. रोठ ओघडदास ठाकरसी राा. त्रिभोवनदास मंगळजी ,, ताराचंद नथुभाई ,, छगनलाल जेराज रोठ ओघडदास खेतसी दोसी वखतचंद फुल्चंद राा. मोतीचंद हंसराज ,, सुखलाल कल्याणजी दोर्सा कानजी वलुमाई वोरा पनजी कपुरचंद राा. मुळचंद जशाराज  गोविंदजी मकनजी
 झवेरचंद गुलावचंद
 गुलावचंद वारपाळ वेरावळ.
 रोठ कल्याणजी खुशाल , मेघजी जगजीवन सायला.
 डामर नथुमाई
 सोमचंद काळा वोरा नरसीदास नथुमाई

> कच्छ. —≪्≪्≋्र≫— कोडाय

शा. खजी देवराज 37 गांगजी हेमराज

#### मांडवी

शा. हंसरान राजसी हीरजी मोमाइआ. केशवजी लघा जीवराज वसाइआ भोजराज भाणजी कुंवरजी भाणजी खीअशी भाणजी वेलजी तेजपाळ श्वामजी गेल्ला सिंध. –≪ाह्याः करांची खेतसी वेल्सी रोठ भगवानदास नवल्मल ,, भेरवदास गुमानचंद

( १(२)

## दक्षिण.

- 168 3334 अगात्ती शा, पानाचंद केवळभाइ ,, जगजीवन नेमचंद अमलनेर शा. छगनदास मंगळदास भोगीलाल रतनचंद सोभागचंद छगनदास दक्षीण मांतीक सभा तरफथी शा. चुनीलाल नाहालचंद केापरगांव शा. रुपचंद रामचंद गराडे. नवलमल खीवराज नेमीचंद पुनमचंद धीरजमल रूपचंद धीरजमल खुबचंद नानचंद भगवानदास मालचंद भीकमचंद जिवराज किसनदास

(१८२)

,, भुखणदास मोहनचंद नवळीहाल. मेता अखेचंद पदमसी शा. रायचंद अमरचंद मेता काळुचंद रतनजी गांधी धरमचंद मूलचंद नीपाणी रावजी परमचंद वखारीया भीमचंद माणीकचंद दीवाणी आकाचंद पदूचंद मेता. मेता काबुचंद रतनजी निफाड. रेाठ घोंडिराम तुकाराम जीवराज पेमराज " पाचोरा. शा. छगनलाल भगवानदास शेठ रूपचंद रामचंद देशपांडे शंकर वामन शेठ मगनलाल भगवानदास शा. लालचंद छगनलाल रेाठ वछराज रूपचंद आँकारदास हजारीमंछ भीखचंद दोलतराम ,, ,, नथमल्लजी भावाजी यती बाळचंदजी मास्तर मोहनलाल अमरसी पालघर. शाः चुनीलाल जेसंगदास पांपळवरी. बाबरभा पीतामर हाथीभाइ दोसी परसोतम जयचंद

टीकाराम मगनीराम ल्छीराम गुलाबचंद जुनेर. बाळुमाई मानचंद नथूभाई देवचंद तलजाराम हरखचंद् बापुटाट टालचंद चुनीलाल रवचंद तळेगाम ढमढेरा. शा. बाळूशा प्रेमचंद वीरचंद नेमचंद शामचंद केवळचंद ,, जुनीलाल गणेशचंद \*\* ., बल्लभदास उमेदराम अंबाइदास गणेश " "ानमचंद बापु नगीनदास बुधराम मास्तर शा. बाळु रिखवदास वधूशा भुखणदास ,, ताराचंद भाईचंद मोतीचंद शाकरचंद दौड. शा. चतुर हाथीभाई ,, उमेद नहालचंद धुर्छीया भोगीलाल गुलाबचंद ल्धाधुराम धनराज शा. उमाचंद राघवजी शा. नथू सीवजी फोजमल बाधमल

( १ ( 8 )

कंकुचंद रायचंद पारी. सरुपचंद मुळचंद 95 मोहनलाल मोतीचंद शा. ककल्चंद वेणींचंद ,, **ऌल्लुभाई** शोभाराम **9**7 पुना. डुंगरशी वीरचंद " मानचंद नगाजी হা रोठ. मोतीचंद भगवानदास बालचंद लाधाजी नानचंद मगवानदास वीरचंद कृष्णाजी चुनीलाल नाहालचेद रतनाजी डोंगाजी छगनलाल गणपतदास " मोतीजी जेताजी छगनलाल वखतचंद छगनलाल नानचंद बहादरपुर शा. कस्तुरचंद करमचंद बालुभाइ मनछाराम ,, सोमचंद केशरीचंद भीकुभाइ मुळचंद मगनलाल लखमीचंद मसूर मोहनलाल सोभागचंद गोवींदभाइ अमुलख बेचरदास सीवचंद मलुकचंद खेमचंद माणेकचंद बळाखीदास तलकचंद उजमचंद गगलभाइ हाथीभाइ वीरचंद उजम मुळचंद दुल्लाराम बाळाराम अमुलख बालुभाइ पानाचंद शा. हरािचंद मनोहर मगनलाल दीपचंद ल्लुभाइ नथुराम गंगाराम रघनाथ जमनादास मोहकमचंद मालेगांव शाः भूषणदास जेठाशा कीसनदास नेमचंद बालचंद हिराचंद धनजीभाइ प्रेमचंद मोहनचंद नानचंद भोगीलाल नगीनचंद माहीम चुनीलाल प्रेभर्चद तलकचंद नथाजी रतनचंद रामचंद नरोतमदास मगनलाइ मुबई. रोठ. रतनचंद खीमचंद मोतीचंद दिपचंद मगनलाल ,, हीराभाई नेमचंद बाळुमाई भगवानदास

,,

"

"

77

97

"

"

,,

39

79

"

"

37

"

"

"

97

"

"

"

"

"

( 929)

" कल्याणचं र सोभागचंद " डाहाभाई शरुपचंद मोतीचंद रुपचंद नानाभाई तलकचंद मास्तर फुलचंद कस्तूरचंद ल्लुभाई धःमच**ं**द हिराचंद मोताचंद रायचंद खुशालचं द नगीनदास कपुरचंद ,, कस्तुः भाई झवेरचंद नगीनभाई मंछभाई साकरचंद माणेकचंद ,, देवचंद ढांछभाई गुलाबचंद धरमचंद " घेलाभाई उतमचंद ,, डाहाभाई उतमचंद झवेरीलाल माणेकलाल ,, हीराभाई मछुभाई ,, मगनलाल नगीनभाई ., रवचंद उजमचंद ,, अमरतलाल कवळदास शा. माणेकचंद कपूरचंद अंबालाल बापुभाई " चंदुलाल गोकलदास ,, डल्डुभाई करमचद वाडीलाल सांकळचद वोरा मगनलाल कंकुचंद 23 मोहनलाल चुनीलाल मोहनडाल हेमचंद

,, वीरचंद दीपचंद

| " भोगीजाल वीरचेद    |  |
|---------------------|--|
| ,, वाडीलाल पुनमचंद  |  |
| " चुनीलाल वीरचंद    |  |
| ,, मणीलाल मोहनलाल   |  |
| ,, रतनलाल मंगनलाल   |  |
| ,, रायचंद केसरीचंद  |  |
| ,, केसरीचंद भाणामाई |  |
| ,, मणीलाल बकोरचंद   |  |
| ,, साराभाई वीरचेद   |  |
| ., दलसुखभाई वाडीलाल |  |
| , फतेचद कपुरचैद     |  |
| ,, छोटालाल प्रेमनी  |  |
| ,, हेमचंद अमरचंद    |  |
| ,, मोहनलाल पुंजाभाई |  |
| ,, मकनजी जुठा       |  |
| ,, प्रेमचंद भीमजी   |  |
| ,, हरखचंद वर्धमान   |  |
| ,, मेधजी जगजीवन     |  |
| ,, अमीलल जाइँवजी    |  |
| ,, त्रिभोवन भांणजी  |  |
| ,, रतनचंद जेचंद     |  |
| ,, हरीचंद थोमणदास   |  |
| " मोहनलाल खोडीिंदास |  |
| ,, माणेकचंद हंसराज  |  |
| ,, मोतीचंद गीरधर    |  |
| ,, नरोत्तम भाणजी    |  |
| ,, गणेशमल शोभागमल   |  |
| ,, बालचंद कनीराम    |  |
| <u> </u>            |  |

,, छोगमल अमुलखचंद्

,, अमरचंद पी. परमार

(१८६)

" उजमचंद लखमीचंद ,, रायचंद नानचंद ,, रामचंद्र वीरचंद चंदुलाल खुसाल ,, हरगोवन केशरी ,, नागर खेतची ,, सरुपचंद ल्लुभाइ ., ककलभाइ जेसंगभाइ " टलुभाइ जेचंद ,, धनराज झवेरचंद परपार पानाचंद खुसालचंद " जेठाभाइ डोसा उमेद्चंद कंकुचंद " मुळचंद हीरजी ,, मोहनलाल चुनीलाल ,, हरगोवनदास केश्वरीसंग " नागरदास खेतसी ,, सीरचंद नानचंद ,, हीरालाल बकोरदास ,, भोगीलाल सांकळचंद वजेचंद ताराचंद " मनसुखलाल कचरा " ऌलुभाइ गुलाबचंद ,, हीराभाइ डाह्याभाइ जेशंगभाइ साराभाइ मंगळदास छगनलाल ., प्रेमचंद वीरपाल जवेरभाई गुलाबचंद बकोरभाई उजमसी केशवलाल रतनचंद

भोगीलाल चुनीलाल भुदुर छवजी मोहनलाल मगनलाल ,, नांनचंद केशवळाळ गुलाबचंद मलुकचंद जादवजी जेरांम रेरुभाई चुनीलाल महासुखराम वेलाभाई ,, हाथीभाई कलाणजी दांमजीभाई कलाणजी मंबई. जेठाभाई नरशी केशवजी जठाभाई दामजी मेगजी देवजी खीअशी शामजी टोकरशी लालनी निसननी स्यामजी जीवराज खीमजी हीरजी कायाणी टोकरशी नेणमी छोडाया देवनी खीयशी नागडा कानजी करमशी मास्तर जेठामाई आणंद्जी देवजीभाई वरसंग जीवराज रतनसी देवर्जा गोविंदजी हीराजी व्रधमान देवजी रागवनजी माणेकजी जेठा भाई अधमान तेजसींह भीअशी दामजी भाणजी भींअज्ञी लखमशी हीरजी मैशेरी

गोविंद जी मुलजी महेपाणी धनजी लीलाधर शे. वीरचंद दीपचंद जेठाभाई दामजी हीराचंद मोनीचंद रतनशी आंमजी बालाभाई गुलावचंद ल्लुभाई करमचंद वाडीलाल सांकळचेद कल्याणचंद सौभाग्यचंद बाळाभाई जेचंद अमरतलाल केवळदास साकरचंद माणेकचंद रेाठ हीराचंद नेमचंद नगीनचंद फूलचंद नगीनभाई मछुभाई मणीलाल लहेरचंद ,, केसरीचंद भाईचंद 🕔 भाईचंद झवेरचंद मगनभाई मंछुभाई सोभाग्यचंद माणेकचंद मगनभाई नगीनदास जीवणचंद मानचंद हीराभाई मंछभाई बापुभाई सरुपचंद फकीरचंद खीमचंद नेमचंद घरमचंद बालुभाई मैलुभाई ेत्रमचंद सरुपचंद फल्चंद कस्तरचंद

डाह्याभाई फुल्टचंद जयचंदभाई मंछुभाई भुरीआमाई जीवणमाई नगीनचंद करमचंद लालभाई मगनलाल रोठ मेघजी खेतसी गुलाबचंद अमीचंद दामोदर झवेरचंद वोरा ,, घीया लक्ष्मीचंदजी त्रीकमचंद वस्ताचंद परमाणंद रायचंद " जमदास मोरारजी " ,, अमरचंद कानजी चत्रभुज गोरधन ,, देवकरण प्रेमजी गंगादाश अंदरशी मणीलाल मोहकमचंद मणीलाल पानाचंद रोठ वरानजी त्रीकमजी , त्रिभोवनदास भाणजी माणेकलाल घेलांभाई मोतीचंद देवचंद ,, प्रेमचंद रायचंद डायाभाई सरुपचंद वजेचंद ताराचंद वीठलदास वाडीलाल ,, मोहनलाल हेमचंद ,, भगवानलाल **पन्ना**लाल ,, नानतजी जेठा

,, रतनलाल मगनलाल झवेरी

माहनलाल पुंजामाई " देवकरण मुळजी ,, मकनजी जुठा झवेरचंद कल्याणजी "नेमचंद भौमजी " मुलचंद हीरजी नरोतमदास जगजीवन ,, अमीलाल जादवजी , केशवजी देवजी धरमशी गोविंदजी ,, झवेरचंद चंदरजी अमरचंद तलकचंद "मकनजी कानजी ,, नागजी मोतीचंद ,, हीराचंद वरानजी ,, हरीचंद थोभणदास ., देवराज टोकरर्जा ,, लखमीचंद माणेकचंद ,, रायचंद नानचंद मा. षनाजी भीमाजी ., जिमाजी भीमाजी ,, देवजी कुवरजी ,, भिमजी दरजाजी ,, गुळाबचंद भीमजी शेठ वालुभाई मुळचंद

,, रायचंद केशरीचर

1 गुलावचंद अवचिंद

फतेचंद कपुरचंद प्रेमचंद केशवजी

,, हेमचंद अमरचंद

अमरचेद् केलाणचंद " चुनीलाल बालुमाई नगीनभाई करमचंद मोतीलाल कशळचंद फकीरचंद केशरीचंद छोटुभाई भगवानदास छगनलाल सोमचंद ,, पनालाल बलुभाई राठ धरमशी गोविंदजी ,, मणीलाल परशोत्तम नेमचंद् गोविंद्जा " शवचंद नेमचंद ,, જ્રુમાર્દ્ર નથુ जादवजी वीरजी ,, বুনীভাত তগনতা ত ,, हरीदास जीवराज मि. मकनजी जठा नागजी धनजी ' वलभदास मोरारजी त्रिभावनदास परुषोतम केशवजी हरीदास ,, धरमशी संदरजी नगीनचंद प्रतापचंद जीवणचंद शाकेरचंद लालभाई नानाभाई तलकचंद छोटुभाई नेमचंद रोठ गुलावचंद घरमचंद झवेरी. "भगुभाइ हीराचंदमलजी ,, अमरचंद मुलचंद झवेरी

" चीमनलाल नथुभाइ कापडीया

$$(\langle \langle \langle \rangle \rangle)$$

.. हीराचंद नेमचंद ,, हीरामाइ बेहेळामाइ झवेरी छलुमाइ धरमचंद कस्तूरचंद झवे वंद ,, मोतीचंद खुबचंद झवेरी भाइचंद कस्तरचंद शेठ मोहनलाल हेमचंद ., भोगीलाल वीरचंद " हेमचंद मोतीचंद ,, दुल्लमजी कल्याणजी ,, गुलाबचंद मोतीचंद का. " रोठ धीरजलाल पानांचंद ,, मगनळाळ केंकुचंद " ललुभाइ करमचंद दलाल शा झवेरलाल माणेकलाल रोठ मोहनलाल खोडीदास " केशवलाल सांकळचंद " नारणजी अमरसी शाह ,, पंडीत फ. क. लालन "मोतीचंद गीरधर ., माणेकलाल त्रीकमलाल शा. नानचंद सामजी झवेरी सुरजमल लेरचंद चुनीलाल नारणदास शा. मणीलाल पानाचंद रोठ देवजीभाइ वरसंग ,, दामजीभाइ वीरजी ,, नरशीभाइ कल्याणजी ., दामजी शामजी

, देवशी सामजी

" कानजी भीमसी ., धीरजलाल पानाचंद ,, ধঁৰুতাত ৰাণুমাহ झवेरी वीरचंद दलाल रोठ फकीरमाइ प्रतापचंद ,, भोगीलाल सांकळचंद जगाभाइ भोगीळाल भोगीलाल मोहनलाल ,, गुलाबचंद नेमचंद ,, हीरालाल डाह्याभाइ कलाणचंद भाइचंद मोहनलाल मगनभाइ चुनीलाल हीराचंद बाळभाइ अमरचंद केशवलाल साकलचंद मीठाचंद लाधालल गोकळभाइ जमनादास झवेरी नगीनदास कपुरचंद झवेरी हाराचंह मोती खाल मनसुख कीरतचंद तेजशी माअसी , मंगलदास छगनलाल रोठ जीवणचंद धरमचंद ,, मोतीचंद रुपचंद " मोहनलात्र हेमचंद शा. मगनशल वाधनी ,, हीरालाल मोतीलाल संघवी गोवनजी वीरपाल महासुखभाइ दीपचंद হ্যা. ,, ककलभाइ मुदरदास

,, गुलाबचंद बुदमलजी ,, अशराला मी पीताजी ,, वर्जींगजी गुमनाजी बाइ नानी अतार खेमाजी शा. मनसाराम नथाजी राई भाईदर. प्राणजीवनदास पुरुषोतमदास मोरारजी रुगनांथ येवळा. शा. दामोद्र बापु मगनदास लालचंद शा. साकरचंद बाळ्सा माणेकचंद वीरचंद संगमनेर. शा. कस्तूरचंद सीरचंद सोलापुर दलमुखभाइ वाडीलाल वीरचंद मणीलाल मोहोलाल चुनीलाल जयचंद चांदा. भट असकरणजी इंदरचांद

,, अमरतलाल छगनलाल

,, मगनलाल मेलापचंद

शाह परशोतम रतनचंद

शा. पेराज लाधांजी

,, मुलचंद वेलाजी

. वेलाजी नेमचंद्रजी

,, नवलराम खुबचंद्रजी

,, माधवलाल वेलाजी

मालुणकरण खूबचंद मा. सधिकरणजी अगरचांद भ. उदेचंदनी सुगनचंद तेल्हाराः शा हरखचंद गुलाबचंद नरसांगपुर. हजारीमल लुनावत छडेगमल रोखर हमीरमल लुनावत केशरीमल कटारीया नाहरमळ कोचर बालापुर. शा. हवशीलल पानाचंदजी " कनयालाल हेमचंद्जी ,, इश्वरदास अमीचंदजी ,, लाल्चंद ख़ुसालचंदजी ,, मोतीचंद गोतमंबालजी ,, मगनचंद जगुलालजी " हीगबाल सीवलालजी ,, तीरमकदास मोहनचंदजी बागलाल मनुलालजी खीमजीभाई हीरजी उन्हेळ. नाथसींहजी मानसींहजी रामनारायणजी चोधरी नानुरामजी जाटमसींहजी पनालाल केसरीमल्जी मवालालजी नथमल

( ? ? ? )

मुनालालजी दीपचंदजी षुवर्चेदजी र्बेब

#### भोषाळ.

गोडीदासजी साहबकाट्या हरीलालजी साल्लवानी रतनलालजी साहब तातेड पुनमचंदजी साहब कक्कड कल्यानमलजी साहब भंडारी

#### मुरार.

सेठ राजमतनी प्रेमराजजी जोधकरसाजी खेमराजजी

## अजमेर.

रायबहादूर सेठ सोभामगल कल्याणमल्जी साहिब ढढ्ढा मास्तर भुराडाल्जी साहिब वकील सीरमल्जी साहिब केसरीचंदजी लुणीया घनराजजी काष्टीया हमीरमल्जी साह सोभागमल्जी हरकावत आबुरोड शा. माणेकचंदजी ,, सुराजी उन्हेळ. शा. मानसांहजी रामनारायनजी नानुलालजी नाथुसींहर्जी खुबचंदजी रुपचंदजी इजारीमल्ठजी बिरदीपचंद जेपुर. खीमचंद सुजीनमल चांदमल लखमीचंद सीरोही. चेाधरी तिलकचंदजी झाली हुकमीचंद्जी झाली गुळराजजी

### धंगाळा.

कल्ठकत्ता. बाबुराय कुमारसिंघनी भुकीम अझीमगंज. रायबहादुर बुधसिंघनी दुधोडीआ बाबु विजयसिंघनी दुधोडोंया बाबु सीतापत्तंदर्नी दुगड विगेरे

> वायव्यप्रांत. —≪ू≋≪ू— दिल्ही

लाला माठुमल्जी

## ( १९२)

खुर्शाराम सोनी अबदुराम देरागाजीखान भाई परतापचंदजी पुज सरुपचंदजी भाई शंभूरामजी ,, रणजीतमल्जी मुलतान शेठ ठाकरदासजी सीरसा शामलाल नौका बलुचीस्तान बेत्रुटा

भयटा शाह जेठालाल डाह्याभाई महेता जसराज देवचंद

पंजाब गुजरानवाला गुजरानवाला गुजरानवाला गुलरानवाला गुलरानवाला गुलरानवाला गुजरानवाला गुजरान गुजराज गुजरान गुजराज गुजराज

झीरा

मोलामल दीनाथा खुशीराम



श्री जीजी जैन श्वेतांबर कोन्फरन्समां भरायेलां नाणांनी यादी.

| नाम.                                                                     | गाम.           | कोन्फरन्स नी<br>भाव फंड. | मुस्तकोद्धार. | जीणोंद्धार.          | निराभित.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | जीवद्या.                  | केळवणी.    | જુલ.         |
|--------------------------------------------------------------------------|----------------|--------------------------|---------------|----------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|------------|--------------|
| श्रीमंत ग(यकवाड सरकार<br>तरफथी                                           | वडोदरा         | ٩000                     | ø             | ø                    | 0                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 0                         | ö          | १०००         |
| रायवहादु∈ बुद्वीसींगजी<br>रायवहादुर बुद्धीसींगजीनी<br>पत्नी तरफथी        | आजीम गंज<br>)) | 0<br>0                   | 900<br>0      | <b>५००</b><br>२५००   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 400<br>0                  | 9 0 C<br>0 | २५००<br>२९०० |
| न्त्या तर्गम्बा<br>बडोदरा खाते वगर चीठीए<br>रुपीआ आवळा जेमना नाम<br>नथी. |                |                          |               |                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                           |            | 3 . 6 11     |
| नया.<br>श्री वडावलीना संघ तरफथी                                          | वडावली         | •                        | 9             | ٩                    | ٩                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | q                         | G          | ३०६॥<br>२५   |
| अनापचंद थोभगदास                                                          | अमदावाद        | 0                        | G             | 9                    | ،<br>ج                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | 4                         | G          | २५           |
| हरगोवन वरजीवनदास                                                         | गंभीरा         | २                        | 8             | 8                    | 8                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 8                         | १          | 9            |
|                                                                          | वडोदरा         | २५                       | 20            |                      | E Contraction of the second se |                           |            | १२५          |
| साकरचंद फुलचंद                                                           | वेळाछा         | 8                        | 0             | २                    | १                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | q                         | n          | १५           |
| खीमचंद दीपचंद                                                            | वडोदरा         | 0                        | 209           | 1                    | 0                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 0                         | 0          | 808          |
| गोकळभाइ दुलभदास                                                          | ,,             | 0                        | 90            | 90                   | 90                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | 90                        | ५१         | 298          |
| भवान फतेचंद                                                              | कागवाड         | 0                        | २०            | २०                   | २०                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | २०                        | २१         | 202          |
| बाई काशीबाई                                                              | ,,             | 0                        | 20            |                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | <b>१</b> ०                |            | 298          |
| धनजी अनोपचंद                                                             | षावळा          | रुः।                     | 8             | 9                    | १                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | १                         | 2          | 99           |
| राठ हरजीवन वमळचंद                                                        | कोसंबा         | 0                        | 1             | 8                    | १                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | १                         | १          | ٩            |
|                                                                          | ( भरुच )       | }                        | İ             |                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                           |            |              |
| ; दीपचंद भिमाजी                                                          | सगरामपुर       | 0                        | 1             | १                    | 2                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | १                         | . ?        | 9            |
|                                                                          | (सुरत)         |                          |               |                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                           |            |              |
| ,, छऌुमाई वीरजी                                                          | कोचनेआ         | 0                        | 8             | 8                    | 8                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 8                         | 8          | २०           |
| जेचंद केसुरजी                                                            | कठेार          | 0                        | ٩             | ٩                    | q                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | ٩                         | ٩          | २९           |
| रोठ. उमेदचंद नानचंद                                                      | लींबडी         | 0                        | २             | २                    | २                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | २                         | २          | १०           |
| ,, केशवळाळ ळाळचंद                                                        | ,,             | 0                        | <b>N N N</b>  | <b>r</b><br><b>r</b> | 2                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | <del>ل</del> ر الحر<br>ال | २          | १०           |
| " हरखचंदु झवेरचंद                                                        | ,7             | 0                        | २             | २                    | २                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | २                         | २          | Şa           |

# पाछळथी बसुल आवेलानी यादी.

1

|                                            | •           |                       |                  |             |            |        |        | and a second |
|--------------------------------------------|-------------|-----------------------|------------------|-------------|------------|--------|--------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| नाम.                                       | गाम.        | कोन्फरन्स निमाव<br>फड | जिनैपुस्तकोद्धार | मंदिरोद्धार | निराभित    | जिवदया | केळवणी | कुल,                                                                                                           |
| शेठ लखमीचंद खेंगार                         | जामनगर      |                       | 0                | १७          | 8 19       | १७     | 4 c    | 808                                                                                                            |
| " छल्लुभाइ भाइचंद                          | बोटाद       | 0                     | G                | G           | q          | ંલ     | q      | ેરવ                                                                                                            |
| , अर्धुगार गारपप्<br>बाइ पोपट ते राठ दलसुख | अमदावाद     | 0                     | 0                | 29          |            | 0      | 0      | १९                                                                                                             |
| छल्लभाइनी पत्नी                            | -1.1.21 m.2 | _                     |                  | , ,         |            |        |        | , -                                                                                                            |
| राठ कुंदनजी कपुरजी                         | प्रतापगढ    | २५                    | २०               | २०          | २०         | २०     | २०     | १२५                                                                                                            |
| " छालचंद परभुदास                           | गंभीरा      | 0                     | १                | १           | १          | . 8    | Ş,     | . <b>G</b>                                                                                                     |
| " बालाजी चुनीलाल                           |             | 0                     | n                | 208         | 0          | 208    | ှ      | २०२                                                                                                            |
| बाइ मणी ते राठ पोचीलाल                     |             | 0                     | 0                | ? 9         | ०          | 0      | ٥      | १५                                                                                                             |
| गुलाबचंदनी विधवा.                          |             |                       |                  |             |            |        |        |                                                                                                                |
| रोठ अंबालाल मणीलाल                         | बारेजा      | 0                     | 0                | २०          | २०         | c      | 0      | 80                                                                                                             |
| बाइ केशर ते शेठ वाडीलाल                    | अहमदनगर     | 0                     | २०               | २०          | २०         | 20     | २०     | १००                                                                                                            |
| हाथीभाइनी पत्नी                            |             |                       |                  |             |            |        |        | Настания<br>Поляго (1996)                                                                                      |
| राठ कपुरचंद छलमीचंद                        | वेरावळ      | . 0                   | २०               | २०          | <b>२</b> ० | २०     | २०     | १००                                                                                                            |
| ,, नरशीभाइ तेजसीभाइ                        | पानडी       | 0                     | २०               | २०          | - 20       |        | २०     | १००                                                                                                            |
| (भुसावळ) श्री पानडीना                      | ,,          | 0                     | 87               | ११          | 8 8        |        | ११     | 99                                                                                                             |
| संघ तरफथी                                  |             |                       |                  |             |            |        |        |                                                                                                                |
| रोठ हाथीभाइ झवेरचंद                        | पुना        | 0                     | 98               | ંલ્ડે       | ५१         | 0      | • •    | १९३                                                                                                            |
| ,, मोताचंद रुपचंद                          | मुंबाइ      | •                     | ९०               | ९०          | ९१         | ९०     | ९०     | ४५१                                                                                                            |
| ,, भाइचंद फूलचंद                           | वडोदरा      | 0                     | 8                | \$          | १          | 3      | १      | ٩                                                                                                              |
| " तलकचंद्र पीतांबर                         | नीकोरा      | 0                     | 0                | १           | १          | . १    | १      | 8                                                                                                              |
| " जमनादास सांकळचंद                         | सुरत        | 0                     | 0                | 0           | . 80       | 0      | 0      | 20                                                                                                             |
| ,, चुनीलाल दीप <b>ंद</b>                   | अमदावाद     | २९                    | 0                | 0           | २५         | 0      | 0      | ९०                                                                                                             |
| ,, नरसींहदास हरजीवन                        | गोध्रा      | 0                     | 0                | २           | १          | 0      | 0      | ર                                                                                                              |
| ,, डाह्याभाइ नानचंद                        | मालेगम      | 0                     | १                | १           | १          | १      | १      | 9                                                                                                              |
| " चुनीलास दलछाचंद                          | रंगुन       | 0                     | २०               | २०          | २०         | २०     | २१     | 808                                                                                                            |
| ,, चुनींछाछ राय <b>ं</b> द                 | _           | •                     | 0                | • •         | G          |        | 1      | 1 -                                                                                                            |
| श्री पाचेाराना संघ तरफथी                   | पाचोरा      | 98                    | C C              | 90          | ७५         | 1      |        | 329                                                                                                            |
| शेठ चुनीलाल दीषचंद                         | अमदावाद     | 0                     | 4                | १०          | 20         | G      | २०     | 1                                                                                                              |
| गांधी लींबाभाइ, गुलाबचंद                   | कपडवंज      | 0                     | 8                | 8 8         | 8          | 4      | 8      | २१                                                                                                             |
| 9                                          |             |                       |                  |             |            |        |        |                                                                                                                |

# श्री वडोदरा खाते भराएळी त्रीजी जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स वखते नीचे प्रमाणे सदग्रहस्थेाए पांच खाते नाणां रोकडा भरेला तेमनी नामवार यादी.

|       |                              |            | रकम. |     |                |
|-------|------------------------------|------------|------|-----|----------------|
| नंबर. | नाम.                         | <b></b> হ. |      | षा. | गाम्           |
| २     | मा≀वाडी पुनमचंद बळदेवदास     | ५१         | 0    | 0   | <b>मु</b> लतान |
| ર     | भोपाळना डेलीगेटो तरफथी       | 88         | 0    | 0   | मोपाळ          |
| Ę     | श्री प्रांतीजना डेलींगेटो ,, | 8.2        | . 0  | 0   | प्रांतीज       |
| 8     | रोठ धनराजजी डाघा             | ٩          | 0    | 0   | गद्रवाडा       |
| G     | ,, नरसी मंछकाभाइ             | २५         | 0    | •   | भौखावडी        |
| ्ह्   | ,, तेजसाभाइ भामसाभाइ         | ७          | 0    | 0   | मुंबाइ         |
| 9     | ,, नरसीभाइ गोवाजी            | २५         | -0   | 0   | खेरलाव         |
| <     | ,, नरसीभाइ डायाजी            | २          | <    | 0   | ৰগৰাভা         |
| ् ९   | ,, पनाभाइ लखमाजी             | २          | C    | 0   | <b>77</b>      |
| 20    | " टलुभाइ राजेजी              | ٩          | 0    | 0   | खिल्वाडा       |
| 28    | ,, पराग जेताजी               | ٩          | 0    | 0   | कापछी          |
| 12    | ,, दलामाइ ओधाजी              | ٩          | 0    | 0   | सुरत           |
| १३    | " उमेदचंद खीमचंद             | ٩          | 0    | 0   | 33<br>33       |
| १४    | ,, मोतीचंद जेचंद             | २          | 6    | 0   | राता           |
| 29    | " देवचंद जेचंद               | २          | <    | 0   | 7)<br>7)       |
| १६    | ,. फकीरभाइ फताजी             | q          | 0    | . 0 | अंचाम          |
| १७    | श्री बोरसदना ओसवाल डेलीगेटो  | 90         | 0    | 0   | बोरसद          |
|       | तरफथी                        |            |      |     |                |
| . १८  | शेठ हरजीवन कुंवरजी           | १०         |      | 0   | गंभीरा         |
| १९    | ,, पुंजाभाइ मानचंद           | 89         | . 0  | Ö   | खेरवा          |
| २०    | "छगनलाल धरमचंद               | २५         | 0    | 101 | वासद           |
| २१    | ,, बापुभाइ धरमचंद            | 29         | 0    | 0   |                |
| २२    | ,, फुलचंद ललुभाइ             | ٩          | 0    | 0   | चमारा          |
| २३    | ,, चुनीलाल बहेचरदास          | १          | 0    | 0   | 73             |
| २४    | " फतेहचंद मनोरदास            | १०         | 0    | 0   | बरिजा          |

| २५          | ,, देवचंद दोलाभाइ            | 29  | 0   | 0     | "         |
|-------------|------------------------------|-----|-----|-------|-----------|
| २१          | ,, अमथाभाइ छखमीचंद्          | ٩٥  | 9   | •     | ,1        |
| २७          | " आशाराम फुल्रचंद            | १३  | •   | •     | गंभीरा    |
| २८          | ,, हरिाचंद केशवजी            | 20  | 0   | 0     | 37        |
| २९          | ,, नगीनदास झवेरचंद           | १५  | 0   | ٥     | पाटण      |
| ३०          | शाह खाते                     | १०  | 0   | 0     | "         |
| ३१          | शेठ नागरदास रामचंद           | १०  | 0   | ۰     | "         |
| ३२          | " रुगुनाथदास दीपचंद          | २५  | •   | 0     | पऌतुरा    |
| ચસ          | ,, कुबेर काळीदास             | 8   | C   | 0     | पाल्ल्बाड |
| 38          | ,, जेचंद वस्ताजी             | 3   | 0   | 0     | ,,        |
| त् <b>५</b> | ,, प्रेनचंद वस्ताजी          | २   | 0   | 0     | ,,        |
| ३७          | ., वृजलाल पोतांबर            | 9   | 0   | 0     | मीयागाम   |
| रेज         | श्री सागरगच्छना संघ तरकथो    | ११२ | Q   | o     | पथापुर    |
| <b>R</b> <  | रेाठ गातम छीलाचंद            | २५  | 0   | · 0   | गढडा      |
| ३९          | ,, साकरचंद रायचंद            | G   | 0   | Q     | 39        |
| 89          | ,, कचराचंद रायचंद            | G   | •   | o     | 33        |
| 88          | ,, साक्रचंद उतमचंद           | 9   | 0   | ٥     |           |
| ४२          | ,, परशोतम छीलाचंद            | Ę   | 0   | 0     | ,1        |
| ષ્ઠર્       | ,, देवचंद ऌी∻ाचंद            | 9   | 0   | , 0   | गेरीता    |
| 88          | ,, सरुपचंद छगामाइ            | ५१  | 0   | 0     | उमता      |
| 89          | ,, डाह्याभाइ त्रीमोवनदास     | १०  | 0   | •     | चमारा     |
| ୫୧          | " नरोतम हेमचंद               | 20  | . 0 | o     | "         |
| 80          | ,, मकनजी फुल्रचंद            | 20  | 0   | 0     | साजलपुर   |
| ४८          | ,, रुपचंद सांकळचंद           | ર   | 0   | 0     | ,,        |
| 36<br>B     | श्री कुकडीयाना संघ तरफ्थी    | 39  | 0   | •     | कुकडीया   |
|             | ्रोठ अमथालाल देवानी          |     |     | ,     |           |
| 90          | शेठ महोकमचंद पानाचंद         | २५  | 0   | Q _   | पाटण      |
| 98          | बाइ दीवाळो                   | 0   | 8   | 0     | कोलाद     |
| ५२          | राठ रामदास मुलाभाइ चुरेल संघ | १९  | a   | ° Q , | चरेल      |
| ५२          | आं माणसाना डेलीगेटो तरफथी    | 22  | 0   | o     | माणसा     |
| 98          | राठ वच्छराज रूपचंद           | 200 | 0   | 0     | पाचेारा   |
| <u> </u>    | 1. भगवानदास अनोपचंद          | 88  | 0   | 0     | पुना      |
| ५६          | ,, घेलाभाइ हाथीचंद अमनगरना   | 29  | Q   | . 0   | अमद्नगर   |
|             | ् संघ् त∢फथी                 |     | -   |       |           |
| ९७          | राव रामचंद कराळचंद           | 88  | 0   | ø     | अमनगर     |

| ९८                                                                                             | श्री अमनगरना पंच तरफशी         | 89         | 0   |     |                |
|------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------|------------|-----|-----|----------------|
| ٩٩                                                                                             | देाठ पदमाजी जेताजी             | 2          | 6   |     | देगाम          |
| ६०                                                                                             | ,, हीराचंद नाथाभाइ             | 80         | 0   | 。   | संगपुरः । ः    |
| \$ ?                                                                                           | ,, भीमाजी राजाजी               | 20         | o   | Ö   | अंकलेश्वर      |
| इ २                                                                                            | ,, खुबा मोताजी तथा तोरा पनाजी  | ġ          | 0   | 0   | रेटीआकरर       |
| ६३                                                                                             | ,, डाह्याभाई भवानीदास          | १०         | Q   | 0   | पालेज          |
| ६४                                                                                             | श्री. शीनोरना पंच तरफथी        | २०         | 0   | 0   | शीनोर          |
| हद                                                                                             | श्री. पेटलादना डेलींगेटो तरफथी | ५१         | ø   | 0   | <b>पेट</b> लाद |
| ĘĘ                                                                                             | रोठ बीरचंद नथुभाई              | २५         | •   | 0   | अब्राम         |
| <b>ę</b> 9                                                                                     | ,, रायजी वस्ताजी               | ?          | ,   | 0   |                |
| ६८                                                                                             | श्री. पंजाब जीरा जैन सभा तर-   | १०         | 6   |     | जीरा           |
|                                                                                                | फथी                            | •          |     |     |                |
| <u>د</u> و                                                                                     | रेाठ गुलाबचंद राविलाल          | 9          | 0   | 0   | शीनोर          |
| 90                                                                                             | ,, मोहनलाल हीरा-ँद             | q          | P   | .0  |                |
| 90                                                                                             | ,, साकरचंद अमीचंद              | 6          | 0   | 0   | खेडा           |
| ७२                                                                                             | ,, फुल्चंद बेहेचरदास           | 3          | 0   | Ó   | अरणीआव         |
| ७३                                                                                             | ,, त्रांकम मोतीचंद             | ્ર         | 0   | 0   | 77             |
| 98                                                                                             | ,, छगनलाल आसाराम               | ٩          | 0   | 0   | खेडा           |
| 99                                                                                             | ,, मुळचंद पानाचंद              | ٩          | 0   | Q   | पाटण           |
| હદ્                                                                                            | ,, हरीखाल जुठाभाइ              | १०         | 0   | Ģ   |                |
| ७७                                                                                             | ,, हीमचंद माणेकचंद             | ٩          | م   | . 0 | महुधा          |
| ৩૮                                                                                             | ,, जमनाडास खुसालदास            | २१         | 0   | 0   | · · ·          |
| ७९                                                                                             | ,, ऌलुभाई मथुरभाई              | २०         | 0   | .0  |                |
| ٢٥                                                                                             | ,, छगनलाल देवचंद्              | १०         | .0  | 0   | वडनगर          |
| </td <td><b>,, રુપ</b>લંદ રાંમુનાથ</td> <td>80</td> <td>0</td> <td>Ø</td> <td>देरागाजीखान</td> | <b>,, રુપ</b> લંદ રાંમુનાથ     | 80         | 0   | Ø   | देरागाजीखान    |
| ८२                                                                                             | ,, रणजीतमल पन्नालाल            | २          | 0   | 0   | "              |
| ८३                                                                                             | शाह खाते.                      | 8          | ٥   | Ø   |                |
| 68                                                                                             | <b>शे</b> ठ गुलाबर्चद डाह्याजी | २          | p   | 0   | सरभाण ( सुरत ) |
| ८९                                                                                             | ,, भुदरदास डाह्याजी            | ्र         | 0   | 0   |                |
| <٩                                                                                             | रा. गु. पे. लक्ष्मीचंद मोहनलाल | . <u>G</u> | Ø   | 0   | बरनगर          |
| ٧٦                                                                                             | रोठ बहेचरभाई झवेरभाई           | 8          | ٥   | 9   | डमोइ (पेटलाद)  |
| <i>८९</i>                                                                                      | "मुळजीभाई खेमचंद               | Ģ          | ø   | 0   | मह्धा          |
| ८९                                                                                             | ,, बालचंदजी                    | १०         | ٥   | o   | देरागाजीखान    |
| ९०                                                                                             | ,, खेमचंद पीतांबरदास           | ર          | , o | 0   | ववाद           |
| ९१                                                                                             | ,, हीमतबाल अमरचंद्             | 5          | ø   | 0   | चमारा          |
| ,                                                                                              | · ,                            |            | • • |     | i 17           |

| ९२         | 1, मगनलाख कसनदास                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 8     | 6  | . o | जंबुसर                                                                                                          |
|------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|----|-----|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <u>९३</u>  | ,, गुळाबचेंद पीतांबर                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | २०    | 0  | 0   | र्लीबडी                                                                                                         |
| ९४         | मता आमजी हैसराज रणनी ठीकीम                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | १०    | 0  | o   | भ्रांगधा 🔐                                                                                                      |
| २५         | शहेर मुझ्तानना गृहस्थ तरफथी                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | १०    | 0  |     | मुलतान                                                                                                          |
| ९६         | शेठ छाल्लचंद्र खंभातवाळा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |       | 0  | 0   | खंगात                                                                                                           |
| <b>९</b> ७ | शहेर मुछताननी बाईयो तरफथी                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | े २ : | 5  | Ö   | मुलतान                                                                                                          |
| ৎ૮         | रोठ छछुमाई भाईचंद                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | २ -   | o  | 0   | ओगणज                                                                                                            |
| ९९         | शाह खाते वेजलपुरना                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | २०    | 0  | Ö   | वेजलपु <b>र</b>                                                                                                 |
| १००        | राठ अम्हतलाल नाथजी                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | २     | 0  | Ö   | सांठवा                                                                                                          |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     |                                                                                                                 |
|            | ेउपर प्रमाणेना कुल्र.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          | १४६१  | १२ | 0   |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     | , ,                                                                                                             |
|            | तेनी वीग्त.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | ž     |    |     |                                                                                                                 |
|            | श्री कॉन्फरन्स निभाव फंड खाते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  | ८९    | 0  | 0   |                                                                                                                 |
|            | श्री पुस्तकोद्धार खाते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | २७०   | 0  | 0   |                                                                                                                 |
|            | श्री मदारेद्वार खाते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | २८३   | 0  | 0   |                                                                                                                 |
|            | आ नीराश्रीत खाते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | २३१   | 0  | o   |                                                                                                                 |
|            | श्री जीवदया खाते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | २७२   | 0  | 0   |                                                                                                                 |
|            | श्री केळवणा खात                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | ३२०   | १२ | o   |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     |                                                                                                                 |
|            | $\mathcal{M}_{\mathrm{eff}} = \mathcal{M}_{\mathrm{eff}} + \mathcal{M}_{\mathrm{eff}$ | १८९९  | १२ | 0   |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     | l a ser a |
| ı          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 1     |    |     |                                                                                                                 |
|            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |       |    |     |                                                                                                                 |

## श्री आफ्रीका खंडना डेळगोवावेमांथी रोठ कालीदास जेठामाई तरफथी जुदा जुदा ग्रहस्थोनो केळवणी खातासारू चेक मोकल्या हतो ते नीचे मुजब.

| नंबर. | नाम.                                           | पौंड.                                   | शीलींग  | ष्ठीया गाम.                                                                            |
|-------|------------------------------------------------|-----------------------------------------|---------|----------------------------------------------------------------------------------------|
| 8     | रोठ नथुभाइ वणारसींदास                          | 8                                       | १       | दीवभंदरना                                                                              |
| २     | " परसोतम अमरचंदनी कु.                          | 8                                       | ঽ       | 9 <b>9</b> .                                                                           |
| 3     | ", नानजी दुल्रभदासनी कु.                       | 8                                       | १       | भोमीआवद्                                                                               |
| 8     | ,, धरमसी वारचंदना ,,                           | ર્                                      | 2       | दीवबद्र                                                                                |
| q     | ,, दुलवदास भगवानदास                            | 2                                       |         | 3 <b>7</b>                                                                             |
| Ę     | ,, छाटालाल वाडीलाल                             | २                                       | ्र<br>१ | अमदावाद                                                                                |
| é     | ,, काळीदास जेठाभाई                             | 8                                       | १       | छतीपुर जाम.                                                                            |
| <     | ,, पानांद माणेकचंद                             | 8                                       | १       | वणथळी                                                                                  |
| ٩     | ,, खुसालचंद आणंद जी                            | 8                                       | 8       | <b>?</b> )                                                                             |
| 80    | " मावजी त्रीकमजी                               | 8                                       | १       | "<br>भाणवाड                                                                            |
| 88    | ,, नागरदास पानाचंद                             | 0                                       | १५      | शंखवड दीव                                                                              |
| 22    | ,, नारणदास त्रीभोवनदास                         | 8                                       | २       | उना                                                                                    |
| १३    | " रायचंद जेाज                                  | 8                                       | 8       | दीववाळा                                                                                |
| 89    | ,, नानजी करसनदास                               | 8                                       | 8       | कोठार(कच्छ)                                                                            |
| 88    | होरमसनी एदलजी                                  | २                                       | १       | दीव                                                                                    |
|       | कोठारी जटासंकर पानाचंद                         | ર                                       | 2       | सरधार राज.                                                                             |
|       | शेठ नेमचंद नकदास                               | १                                       | 8       | दीव                                                                                    |
| 22    | ,, नरोतम शोभागचंद                              |                                         | 20      |                                                                                        |
| १९    |                                                | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | 0       | "<br>अंकलेश्वर                                                                         |
| 20    | •                                              | 8                                       | १       | जामनगर                                                                                 |
| २१    | ,, गाकळदास मुख्चद<br>,, हुसेनभाई दुल्रभदास कु. | 2                                       | 8       |                                                                                        |
| ``    | 1) GUILIS GALAUU A.                            |                                         |         | <b>14.</b><br>No. 1997 - Angelander State (1997)<br>No. 1997 - Angelander State (1997) |
|       |                                                | 89                                      | ₹       |                                                                                        |
|       |                                                | l I                                     |         |                                                                                        |

उपर प्रमाणे चेकथी पैंड ४९-३ शी.ने आवेळो तेना रु.६७०-१०-० उपज्या इता ने ते केळवणी खाते जमा कर्या छे.

# रोड फलेभाई गांधी साथे जे छीष्ट माकल्युं हतुं ते विगतवार लष्टि.

| नंबर.      | नाम.                                | रुं. | आ.  | षा, | गाम.         |
|------------|-------------------------------------|------|-----|-----|--------------|
| ۶          | रोठ नाथाभाइ मातीचंद                 | १५   | 0   | 0   | अमदावाद      |
| 2          | ,, केषवछाऊ गीरधर                    | લ    | o   | 0   | 77           |
| १          | ,, केषवलाल गीरधर                    | ৩    | 0   | 0   | 7*           |
| . 8        | " नेमाजि अमराजि                     | १    | 0   | 0   | पेढीआ        |
| ٩          | " हरगोवन अमाचंद                     | १०   | 0   | 0   | आपज          |
| Ę          | " न।गरदास की क्षाजी.                | १    | •   | ٥   | पेढीआ        |
| ৩          | बाई दीवाळी गाम चाणसरवाळी            | १    | 0   | 0   | चाणसर        |
| ۲          | , जेठाराम खुशालदास                  | १०   | ٥   | 0   | उनावा        |
| ৎ          | ,, फतेहमाइ परसेातम                  | ર    | ٥   | 0   | मेउ          |
| १०         | "दवचंद सवजीभाइ                      | ٩    | ٥   | 0   | 71           |
| ११         | जे आसामीओनां नाम तथा गाम            | ३२   | o   | 0   |              |
|            | नढीं माल्लम पडवाथी लखायां<br>नथी ते |      |     |     |              |
| १२         |                                     | G    | 0   | o   | गोधा         |
| २२         | •                                   | ٩    |     | 0   |              |
| १४         |                                     | Ę    | 0   | 0   | 1            |
| १५         | " नरसींहदास हरजीवन                  | १    | 0   | 0   |              |
| 2.8        | " झवेरभाइ मुळजाभाइ                  | १    | 0   | -0  | "            |
| <b>१</b> ७ | ,, धरमचंद जगजीवन                    | १    | 0   | 0   | 77           |
| १९         |                                     | १    | . 0 | 0   | <b>73</b>    |
| શ્ર        |                                     | १    | · 0 | 0   | "            |
| २०         | ,, दलसुंखभाई बापुजी                 | 0    | १२  | 0   | 37           |
| २१         | ,, मनसुखभाइ नथुभाइ                  | 0    | 6   | 0   | 97<br>7*     |
| २२         |                                     | १    | · 0 | 0   | y•           |
| २३         |                                     | १    | 0   | 0   | ) -<br>71    |
| २४         | ,, मनसुखमाइ देवचंद                  | ર્   | o   | 0   | "            |
| २५         | शहेर गोधाना परचुरण छो. आवे.         | ર    | ૧૨  | 0   |              |
| २१         | रोठ मुखचंद गीरघरलाल                 | લ    | 0   | 0   | ''<br>पोर    |
| २७         | ,, मोतीलाल पानाचंद                  | ५    | 0   | 0   |              |
| २८         | ,, मोरारजी काळीदास                  | G    | 0   | 0   | 77<br>77     |
| २९         |                                     | ५    | 0   | 0   | 37           |
|            | ,, त्रीभोवनदास हरगोवनदास.           | લ    | 0   | 0   | ,''<br>भीलाड |
|            | उपर प्रमाणे श्री कोन्फर्न्स निभाव   | 888  | 0   | 0   |              |
|            | फंड खाते भरायळा ते.                 |      |     |     |              |

